Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह पुरानी कापी है इसमें
तमाम पूजा पाठादि प्रयोगादि
भरे हैं।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ता· २४-६-८२ को बनारस स्टेट में ५०० जो
किये एकाउन्ट नं· ३६६५ | ३०५/१२
कमला जी वैष्णव वैरागी के नाम की बुक है।
कमला सरकार

[illegible] प्रकाश शास्त्री
[illegible] ८५०२ घर का है
कुशा हरि ॐ आश्रम शास्त्री ज्योतिषाचार्य
१५/२११ के नगर ११९२/३३१
कानपुर

बलदेव सिंह नैयर
३०६८ सेक्टर नम्बर ३२ D
चण्डिगढ़

श्री आर· जी· दुबे चीफ हेड आफिस
सेविंग बैंक ब्रांच लखनऊ
फो· नं· ८२५०२

श्मा[illegible] को लल्ला से बनवाना है।
एक्यूपियन्स सर्टीफिकेट
८-८-८० से १५-१२-८१ तक का
बनेगा
1. P. D. कह मांगो पोस्ट आफिस
से ४) रु· एक फार्म देगा
11) लिफाफा लेलेना

सुरानन्द (ललन) [illegible]
सरोजनी देवी धर्मशाला
हैवट रोड नं· २

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

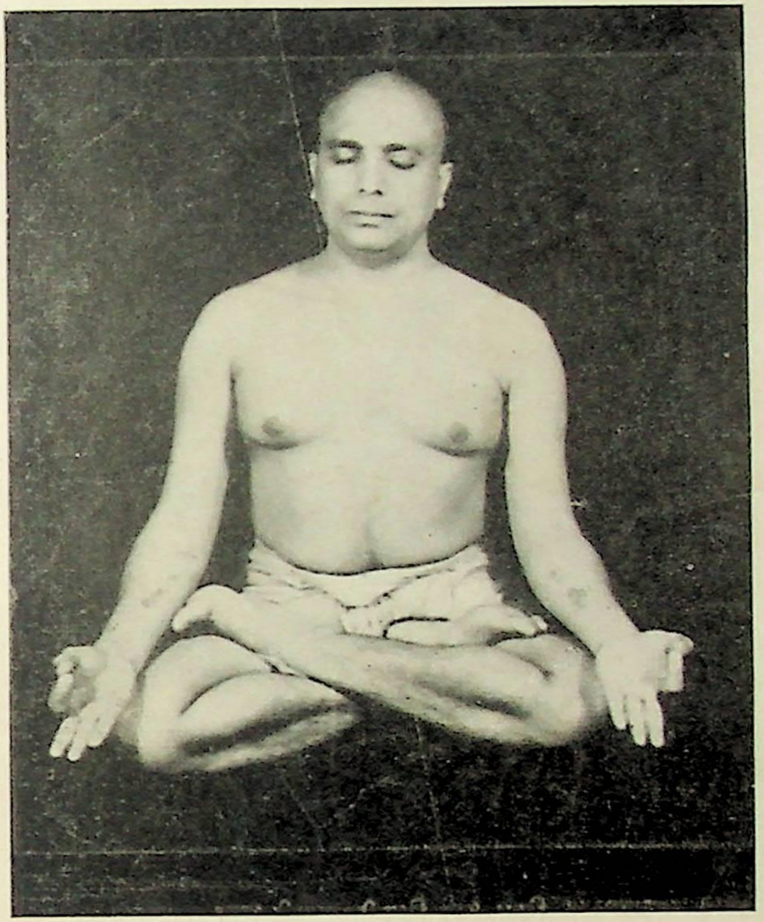

चित्र २   पद्मासन, ज्ञान-मुद्रा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

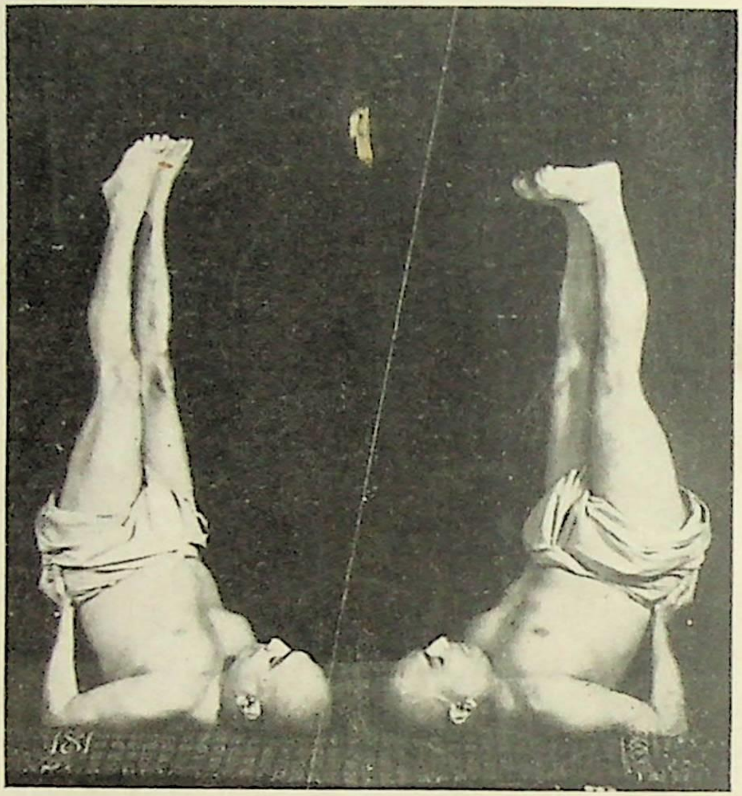

चित्र १   विपरीतकरणी मुद्रा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नीलम कुम्भ तुला वालों को
प्रीति लाभ कारी रहता है। वृष
मकर वालों को साधारण लाभ
मिथुन कन्या वालों को साधारण
धन मीन वालों को कभी २ लाभ

सूर्य = अरिष्ट में = माणिक पहनो।

चन्द्र =	"	" =	मोती ८ रत्ती का।
भौम =	"	" =	मूंगा ८ रत्ती का।
बुध =	"	" =	पन्ना ८ रत्ती का
गुरु =	"	" =	पुषराज ८ रत्ती का।
शुक्र =	"	" =	हीरा ५ रत्ती का
शनि =	"	" =	नीलम ६ रत्ती का
राहु =	"	" =	गोमेध ६ रत्ती का
केतु =	"	" =	लहसुनिया ६ रत्ती।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विनियोग:

ॐ अस्य श्री सदाशिव मन्त्रस्य वामदेव ऋषि: पंक्तिश्छन्द: श्री सदाशिवो देवता ॐ बीजं नम: शक्ति शिवाय कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोग:

ऋष्यादिन्यास = ॐ वामदेवाय नम: – शिरसि, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नम: – मुखे, ॐ श्री सदाशिव देवतायै नम: – हृदि, ॐ बीजाय नम: – गुह्ये ॐ नम: शक्तये नम: – पादयो, ॐ शिवाय कीलकाय नम: सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यास — ॐ अंगुष्ठाभ्याम नम: / हृदयाय नम:

ॐ नं तर्जनीभ्याम नम: / शिरसे स्वाहा /

ॐ मं मध्यमाभ्याम नम: / शिखायै वषट्

ॐ शिं अनामिकाभ्याम नम: / कवचाय हुं

ॐ वां कनिष्ठकाभ्याम नम: / नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्याम नम: / अस्त्राय फट्

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यदि रत्न ना पहन सके तो
जड़ी पहनने का बिधान है।
सूर्य अरिष्ट में बेल की जड़ पहने।

वीर्यरूपा शैलपुत्री मध्यस्थाने विराजता ॥
ब्रह्मविष्णुशिवश्रेष्ठा योनिर्मां पातु सर्वदा ॥५॥
योनिमध्ये महाकाली छिद्ररूपा सुशोभना ॥
सुखदा मदनागारा योनिर्मां पातु सर्वदा ॥६॥

काल्यादियोगिनी देवी योनिकोणेषु संस्थिता ॥
मनोहरा दुःखलया योनिर्मां पातु सर्वदा ॥७॥
सदाशिवो मेरुरूपो योनिमध्ये वसेत् सदा ॥
कैवल्यदा कामयुक्ता योनिर्मां पातु सर्वदा ॥८॥

सर्वदेवस्तुता योनिः सर्वदेवप्रपूजिता ॥
सर्वप्रसवकर्त्री त्वं योनिर्मां पातु सर्वदा ॥९॥
सर्वतीर्थमयी योनिः सर्वपापप्रणाशिनी ॥
सर्वगेहे स्थिता योनिः योनिर्मां पातु सर्वदा ॥१०॥

मुक्तिदा धनदा देवि सुखदा कीर्तिदा तथा ॥
आरोग्यदा वीररता पञ्चतत्त्वयुता सदा ॥११॥
योनिस्तोत्रमिदं प्रोक्तं यः पठेद् योनिसन्निधौ ॥
शक्तिरूपा महादेवी तस्य गेहे सदा स्थि…

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यदि रत्न ना पहन सके तो
जड़ी पहनने का बिधान है।
सूर्य अरिष्ट में बेल की जड़ पहने।

चन्द्र	"	"	खिन्नी की " "
भौम	"	"	नागजिह्वा या " " अनन्त मूल की " "
बुध	"	"	बिधारा की
गुरु	"	"	भंगरा की
शुक्र	"	"	मजीठ की
शनि	"	"	बेंत या बिच्छू की
राहू	"	"	चन्दन की
केतु	"	"	अश्वगन्ध की

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...कल्प = कांसे के पात्र में नारियल का जल गुड़ हो या मधु गुड़ ...ख और दूध की खीर फलों की बनी हो। दूध, पान, ताम्रकूट, ताड़ी ...म, धतूरा, भांग, यह भी। सुरा के विकल्प हैं। पान के रस में गुड़ भी ...बर का रस, और शक्कर, पका आम का रस। भांग दूध मिलाकर।

...स का विकल्प = नमकीन अदरख की पिन्नी, तिल आटा उरद लहसुन

मीन का विकल्प = हर्र आंवला सुखा बेल तरोई

मुद्रा का विकल्प = भुने चने भुने चावल पूड़ी कचौड़ी मलाई रबड़ी आलू करहल

मैथुन का विकल्प = परकिया। शक्ति दो प्रकार की होती है ब्रह्मदत्ता रुद्रदत्ता। ब्रह्मदत्ता विवाहता होती है। रुद्रदत्ता कुलाङ्गना होती है। वीराचार के लिये रुद्रदत्ता ...ठीक है। दीक्षाचार के लिये ब्रह्मदत्ता हो या कुलदीक्षित हो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

या बरगद के पेड़ के नीचे
यदि साधक बेल के पेड़ के नीचे शव को शोध कर पूजन करे
या उध
में सिर रख कर एकटक अवलोकन करता हुआ १ लाख मन्त्र जपत
सिद्धि उपलब्ध होती है। काली तन्त्र में लिखा है। वीराचार साधक के वास्ते
कुलाङ्गना के मदनागार में मदन दण्ड से निःसृत शुक्र और ब्रह्मयोनि मण्डल के केशों को
मिला कर आद्या को १०८ बार चिताग्नि में इस मन्त्र से आहुति देता है दीर्घायु होती
वाक् सिद्धि होती है। मन्त्र (ऐं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा)
यदि मंगलवार को रात में १२ बजे दिगम्बर होके मुक्तकेश करके साधक (नखों के
केशों को स्ववीर्य को मिला कर १०८ आहुति दे चिता में फल मीन, मांस, खीर भी
मिला ले हवन में। और चिता में आद्या की पूजा करे तर्पण मद्य से दे।
पूजा करके २२ अक्षर वाला मन्त्र भी आद्या का जपे।

उत्तर तन्त्र में लिखा है = शुक्र मांस, रक्त, श्वेततिल, केश, नख, भात, खीर, घृत
की आहुति चिता में दे।

१०००
काली तन्त्र में लिखा है। साधक लाल कमलों से हवन करता है तो कुबेर
सा सम्पत्ति वान हो जाता है। एक बार करने से काम न बने तो चार बार करे।
बेल की पत्ती से १ हजार आहुति घी में बोर २ कर दे राजा बने। लाल
पुष्पों से घी में बोर २ हवन करे वशीकरण की शक्ति प्राप्त होवे।
२००० गुलाब या बेला, या चम्पा, या जूही, या चमेली, या मालती, या गुलाब से जो लाल
गुलाब होता है उससे। या गुड़हल के १ हजार फूल हों या लाल कनेर
के फूल हों, दक्षिणा काली का पूजन हवन, भी दक्षिणा काली के मन्त्र से
करे। फूल घृत में बोर २ के हवन करे या खीर में लपेट के

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible] य [illegible] में ही कर सकता है।

[illegible] श्मशान में १२ बजे रात को नग्न हो केश खोल कर १००० [illegible] का विद्या राज्ञी मन्त्र जपे तो सब कामना पूर्ण होती हैं। [illegible] साधना कौल मार्गी वीराचार के लिये है।

[illegible] कौलों की शव साधना मुण्ड साधना प्रसिद्ध है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...मतलब ... शुरु में गणेश इनको पूजा को ही षोडा पूजा कहते हैं।

न्यास =

ॐ ललाटे — चं छं जं झं ञं = वाम बाहु मूल को चारों सान्धियों में

अं ।। मुखे — टं ठं डं ढं णं = दक्ष पाद मूल को चारों सान्धियों में

आं नमो दक्षिण चक्षुषि — तं थं दं धं नं = वाम पाद मूले

इं ।। वाम चक्षुषि — पं नमो दक्ष पार्श्वे (बगल की पसली)

उं ।। दक्षिण कर्णे — फं नमो वाम पार्श्वे (बगल की पसली)

ऊं ।। वाम कर्णे — बं ।। पृष्ठे (पीठ में)

ऋं ।। दक्षिण नासिका — भं ।। नाभौ (नाभी में)

ॠं ।। वाम नासिका — मं ।। उदरे (पेट पर)

लृं ।। दक्षिण कपोले — यं ।। हृदये

ॡं ।। वाम कपोले — रं ।। दक्षिण स्कन्धे (कन्धा)

एं ।। ओष्ठे — लं ।। ककुदि (डील)

ऐं ।। अधरोष्ठे — वं ।। वाम स्कन्धे

ओं ।। ऊर्ध्व दन्ते — शं ।। दक्ष करे

औं ।। अधो दन्ते — षं ।। वाम करे

अं ।। ब्रह्मरन्ध्रे — सं ।। दक्ष पादे

अः ।। मुखे — हं ।। वाम पादे

कं ।। दक्ष बाहु मूले — लं ।। उदरे हृदयादि

खं ।। कूर्परे (कोहनी में) — क्षं ।। हृदयादि मुखे

गं ।। कवचे (कलाई में)

घं ।। अङ्गुलि मूले

ङं ।। अङ्गुलाग्रे दक्ष हस्तेन

चं ।।

छं ।।

जं ।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ ऐं ह्रीं क्लीं आत्मतत्त्वाय नमः पादादि नाभि पर्यन्तम् ॥

नमः हृदयादि शिरः पर्यन्तम् ॥ विद्यो शिवतत्वाय नमः हृदयादि

न्तम् ॥ अदारन्यासः = ऐं नमः ब्रह्मरंध्रे ॥ ह्रीं नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥ क्लीं नमः

नमः हृदि ॥ मुं नमो कुदयो ॥ डां नमः नभौ ॥ यैं नमो लिंगे ॥ विं नमो लिंगे

ह्य ॥ च्चैं नमो वक्त्रे ॥ त्रिकोण षट्कोण वृत्त अष्टदलकार २४ दल

कमल चतुष्कोण चतुर्द्वार ॥ यन्त्र को ही पीठ कहते हैं ॥ बिंदु से शुरु करे

पीठन्यासः

ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः ॥ ॐ प्रकृत्यै नमः ॥ ॐ कूर्माय नमः ॥ ॐ सुधांबुधये नमः ॥ ॐ मणि द्वीपाय नमः ॥ ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः ॥ ॐ श्मशानाय नमः ॐ पारिजाताय नमः ॥ तन्मूले ॥ आठों दलों में पूजा करे ॥ ॐ रत्न वेदिकायै नमः ॥ ॐ मणि पीठाय नमः ॥ चारों दिशा में ॥ ॐ नानामुनिभ्यो नमः ॥ ॐ नाना देवेभ्यो नमः ॥ ॐ शवेभ्यो नमः ॥ ॐ शव मुण्डेभ्यो नमः ॥ ॐ बहु मांसास्थि मोदमान शवेभ्यो नमः ॥ ॐ धर्माय नमः ॥ दक्षांसे ॥ ॐ ज्ञानाय नमः वामांसे ॥ ॐ वैराग्याय नमः वामोरौ ॥ ॐ ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ ॥ ॐ धर्म अधर्माय नमः मुखे ॥ ॐ अज्ञानाय नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ अवैराग्याय नमः नाभौ ॥ ॐ अनैश्वर्याय नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ॐ ततो हृदि ॥ ॐ आनन्द कन्दाय नमः ॥ ॐ संविन्नालाय नमः ॥ ॐ सर्व तत्त्वात्मक पद्माय नमः ॥ ॐ प्रकृति मय पत्रेभ्यो नमः ॥ ॐ विकारमय केसरेभ्यो नमः ॥ ॐ पंचाशद्‌वीजाढ्या कर्णिकायै नमः ॥ ॐ अं द्वादश कलात्मने सूर्य मण्डलाय नमः ॥ ॐ षं षोडश कलात्मने सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ मं दशकलात्मने वह्नि मण्डलाय नमः ॥ ॐ सं सत्वाय नमः ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ॐ ज्ञानात्मने नमः ॥ ॥ अष्टदिक्षु ॥ ॐ इं इच्छायै नमः ॥ ॐ ज्ञां ज्ञानायै नमः ॥ ॐ क्रिं क्रियायै नमः ॥ ॐ कां कामिन्यै नमः ॥ ॐ कां कामदायिन्यै नमः ॥ ॐ रं रत्यै नमः ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

ॐ रं रतिप्रियायै नमः॥ ॐ पं आनन्दायै नमः ॥ मध्ये॥ ॐ मनो
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
ॐ पं परायै नमः॥ पं परापरायै नमः ॥ ॐ ह्सौः ब्रह्माविष्णुरु-
पद्मासनाय नमः॥ इति पीठन्यासः॥ (काली ध्यान॥

दुर्गा ध्यान = ॐ शंखं चक्रं गदां बाणान् चापं परिघ शूलके भुशुण्डि
च शिरः खड्गं दधतीं दशवक्त्रकाम्॥ (दक्षिण कालीजी का ध्यान)
कालीजी का ध्यान = तामसीं श्यामलां नौमि महाकालीं दशांघ्रिका
॥ मालाब्जपरशुं बाणान् गदां कुलिशमेव च॥२॥ पद्मं धनुकुण्डिकं
च दंडं शक्तिमसिं तथा॥ खेटकं जलजं घण्टां सुरापात्रं च शूलकम्
॥३॥ पाशं सुदर्शनं चैव दधतीं लोहित प्रभाम्॥ पद्मे स्थितां
महालक्ष्मीं भजे महिषमर्दिनीम्॥४॥ घंटां शूलं हलं शंखं
मुसलारिधनुः शरान्॥ दधतीं मुज्वलां नौमि देविं गौरीसमुद्भवाम्॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...आवश्य होना चाहिये॥

शुद्धि (२)(स्थान शुद्धि)(३)(मन्त्र शुद्धि)(४)(द्रव्य शुद्धि)(५)(देव शुद्धि)
जप में - होम में - तर्पण में - दान में - कोई न कोई चीज़ उंगली में पहने
॥ चाहे सोना चाहे चांदी चाहे कुशा की पैंती - जाप करने वाले को
... पूजा एक बार जरुर करना चाहिये।

गृहस्थ को - मंत्र के आदि में ॐ जरुर लगाना चाहिये।

सन्यासी को - मंत्र के आदि अन्त दोनों में लगाना चाहिये।

वैश्य को मंत्र में पहले ॐ लगाना चाहिये। शक्ति मंत्र में क्लीं लगावे॥ गणेशादि मंत्रो में श्री आदि में लगावे। सूर्यादि देवताओं के मन्त्र में (ह्रीं) लगावे॥

मन्त्र शास्त्र के सम्प्रदायकों को चक्र पूजा मान्य है। काशमीर सम्प्रदाय से जैनों की चली है इनके यहां सिद्ध चक्र पूजन होता है। नवपद्मण्डचक्र पूजन होता है। यह सात्विक पूजा है॥

वेदागम - केरल सम्प्रदाय में - (श्री चक्र) की पूजा होती है। यह मिश्र मार्गी हैं। यह वेदागम वाले हैं।

बौद्धागम वाले वाममार्गी हैं। गौड़ सम्प्रदाय प्रधान है। इनके यहां (भैरवी चक्र पूजन होता...

जैनागम वाले दक्षिण मार्गी हैं। काशमीर सम्प्रदाय प्रधान है। इनके यहां (सिद्ध चक्र) पूजता...

~~यह नाथों को गुरु मानते हैं गुरु चरणपादुका पूजन करते हैं श्री चक्र की पूजा करते हैं~~

वेदागम =	(श्री चक्र)	(केरल सम्प्रदाय)	(मिश्र मार्गी)	(तीनों मिश्रित है	॥पूजन॥ यंत्रों कि...
बौद्धागम =	(भैरवी चक्र)	(गौड़ सम्प्रदाय)	(वाममार्गी)	(राजस तामस)	भैरव का पंचमका...
जैनागम =	(सिद्ध चक्र)	(काशमीर सम्प्रदाय)	(दक्षिण मार्गी)	सात्विक	सात्विक सामग्री सात्विक देवता सात्विक पूजा

आत्म शुद्धि प्राणायाम आचमन न्यास ध्यान पंचगव्य से	

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुख शोधन

सेतु महासेतु कुल्लुका

त्रिपुर सुन्दरी का महासेतु ह्रीं; कालिका का क्रीं; तारा का हूं है। अन्यों का महासेतु स्त्रीं है। अब देखो (ह्रीं सौः ह्रीं) त्रिपुर सुन्दरी का महा सेतु (ह्सौं:) भैरवी का। (ॐ ह्रीं) तारा का। (ऐं हूं ऐं) श्यामा का। (ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ) भुवनेश्वरी का और (ह्रीं स्वाहा) अन्नदा का और महिषमर्दिनी का। और बाकी महाविद्याओं का सेतु (ॐ) देवता का सेतु मन्त्र जहां बताया गया है। उस सेतु मंत्र को तिगुना कर उसे उस देवता के कवच का सेतु मंत्र करे। पहले कुल्लुका का उसके बाद इष्ट मन्त्र का जप करे। जप पुजा के बाद स्तोत्र फिर कवच तारा की कुल्लुका (ह्रीं स्त्रीं हूं) कालिका की (क्रीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट्)। छिन्नमस्ता की वज्रवैरोचनीये हूं। और शम्भु की (हौं) कुल्लुका है। मंजु घोष की (अरवचनधीं) भुवनेश्वरी की (ह्रीं) है। विष्णु जी की (ॐ नमो नारायणाय। और भैरवी की (हूं) कुल्लुका है। ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा। अथवा ऐं क्लीं ह्रीं हूं फट्। सरस्वती जी की (ऐं) अन्नदा की क्लीं। मातंगी जी की (ॐ) धूमावती की (ह्रीं) बगला की (स्त्रीं) लक्ष्मी की (श्रीं) धनदा की (स्त्रीं) कुल्लुका है। दूसरी देवियों की कुल्लुका (ह्रीं) बीज है। मुखशोधन। त्रिपुर सुन्दरी देवी का उपासक श्रीं ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ। इन छै अक्षर के मंत्र को दस बार जपे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाला का मुख शोधन (ऐं ह्रीं ऐं) भैरवी का (ऊँ ह्सौः ऊँ) श्यामा का (क्रीं क्रीं क्रीं ऊं ऊं ऊं क्रीं क्रीं क्रीं। तारा का (ह्रीं हूं ह्रीं) भुवनेश्वरी का (ऐं ऐं ऐं) बगला का (ऐं ह्रीं ऐं) मातंगी का क्रौं ऐं फें। दुर्गा (ऐं ह्रीं ऐं दुर्गे स्वाहा ह्रीं ऐं ऐं। धनदा का (ऊं ह्रीं) धूमावती का (ऊं धूं ऊँ) मन्त्र है दस बार जप करले। अन्य देवियों के उपासक दस बार (ऊं) का जप कर के मुख शोधन करले।

जिस समय वाम नासिका द्वारा श्वांस प्रश्वांस क्रिया हो। उसी समय शक्ति मंत्र जप करे। जिस समय दाहिनी नासिका से श्वांस प्रश्वांस क्रिया होती है उस समय विद्या सोइ होती है। वाम श्वांस प्रश्वांस जब चलती है विद्या जागती है। जिस मंत्र का जप करना हो उसके आदि और अन्त में कामकला बीज (ईं) लगाकर जप करे तो भगवती की नींद टूट जाती है।

जिस मंत्र के अन्त में हुं फट् हो वह पुरुष मंत्र होता है। जिसके अन्त में ठ ठ या स्वाहा हो वह स्त्री मन्त्र है। जिसके अन्त में नमः हो वह नपुंसक मन्त्र है। जब मन्त्र के आदि अन्त में योनि मन्त्र (ईं) मिलाकर सात बार जप करे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भुवनेश्वरी यन्त्र श्री पूजन विधि — (भुवनेश्वरी पंचाङ्ग)

यन्त्रोद्धार:
यन्त्र बनाने की विधि आचार्य ने श्लोक के द्वारा वर्णन की है

पद्मप्रष्ट दलम्बाह्ये वृत्तं षोडशभिर्द्दलै:॥ विलिखेत्कर्णिका मध्ये षट्कोण मति सुन्दरम्॥ चतुरस्त्रञ्चतुर्द्द्वार मेवम्मण्डलमालिखेत्
मन्त्रोद्धार:। नकुलीशोऽग्निमारूढो वाम नेत्रार्द्धचन्द्रवत्॥ बीजन्तस्या: समाख्यातं सेवितं सिद्धिकाङ्क्षिभि:॥ अथ मन्त्र: "ह्रीं"
अथ पूजा प्रयोग:। प्रात: कृत्यादि पीठन्यासान्तङ्कर्म्म विधाय एवं केसरेषु मध्ये च पीठशक्ति न्यसेत्॥ ॐ जयायै नम:। ॐ विजयायै नम:। ॐ अजितायै नम:। ॐ अपराजितायै नम:। ॐ नित्यायै नम:। ॐ विलासिन्यै नम:। ॐ दोग्ध्र्यै नम:। ॐ अघोरायै नम:। ॐ मंगलायै नम:। कर्णिकायां यानी बीच में। ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नम:।
ऋष्यादिन्यास:। अस्य भुवनेश्वरी मन्त्रस्य शक्ति ऋषिर्गायत्री छन्दो भुवनेश्वरी देवता हकारो बीजम् ईकार: शक्ति: रेफ: कीलकम् चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे विनियोग:। (शिरसि) शक्त्यै ऋषये नम: (मुखे) गायत्री छन्दसे नम:। (हृदि) भुवनेश्वर्यै देवतायै नम:। (गुह्ये) हकाराय बीजाय नम: (पादयो:) ईकाराय शक्त्यै नम: (सर्वांगे) रकाराय कीलकाय नम:। ततो न्यास:। न्यास विधि
ॐ हल्लेखायै नम: (शिरसि) ऐं गगनायै नम: (वदने) मुख में। ॐ रक्तायै नम: (हृदये) ईं करालिकायै नम: (गुह्ये)। ॐ महोच्छुष्मायै नम: (पादयो) दोनों पैरों में

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊर्ध्व प्राग्दक्षिणोदीच्यपश्चिमेषु मुखेषु ता विन्यसेत्। (ऊपर पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम दिशाओं में इन पांच शक्तियों को स्थापना करे।

हल्लेखा मूर्ध्नि (वदने) गगनां (हृदयाम्बुजे)। रक्तां कराली कां (गुह्ये) महोच्छुष्मां (पद्द्वये)। सत्यादि पञ्च ह्रस्वाद्या न्यस्तव्या भूतसप्रभाः।। हल्लेखा को सिर पर। मुख में गगना देवी को। हृदय पर रक्ता देवी को। गुह्य स्थान में ~~महोच्छु~~ करालिका को, दोनों चरणों में महोच्छुष्मा को स्थापित करे

कराङ्गन्यासौ।। हाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। हूं मध्यमाभ्यां वषट्। हैं अनामिकाभ्यां हुम्। हौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। हः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्।।

हृदयादिन्यासः। हां हृदयाय नमः। हीं शिरसे स्वाहा। हूं शिखायै वषट्। हैं कवचाय हुम्। हौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हः अस्त्राय फट्। एवं हृदयादिषु। इन्हीं बीजों से हृदन्यास भी करे।।

षड् दीर्घ भाजा बीजेन कुर्य्यादङ्ग क्रियाम्मनो।। स्वच्छन्द सङ्ग्रहे

स्वरं विहाय बीजन्तु दीर्घ षट्केन योजयेत्।। षडङ्गानि विधेयानि सर्वत्रायं विधिः स्मृतः।। इसका मतलब (हां हीं हूं हैं हौं हः) इन्हीं से अंगन्यास करन्यास हृदन्यास करे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अङ्गुली नियमस्तु पूर्व एवोक्तः। कराङ्गन्यासे एवं क्रमः॥ ततः भाले
मस्तक आदि पर नीचे लिखे प्रकार से हर अंग पर न्यास करे। जहां इति न्यसेत लिखा है
उसका मतलब जैसे पहले ऊपर मन्त्र बोल कर न्यास किया है वैसे ही कंठ का भी शुरू करे

ॐ गायत्री सहित ब्रह्मणे नमः। (दक्षिण कपोले) ॐ सावित्री सहित
विष्णवे नमः। (वाम कपोले) ॐ वागीश्वरी सहित महेश्वराय नमः।
(वाम कर्णे) ॐ श्री सहित धनपतये नमः (मुखे) ॐ रति सहित स्मराय
नमः। (दक्षिण कर्णोपरि) ॐ पुष्टि सहित गणपतये नमः। इति न्यसेत्।
एवं (कण्ठमूले) दक्षस्तन (वामांस हृदय, दक्षिणांस, दक्षिण पार्श्व वाम
पार्श्व नाभि देशेषु ब्राह्म्यादि न्यसेत्॥ (वर्णाभिन्यासो विश्वसारे
ॐ काराद्दि नमोन्तञ्च विन्यसेत्तु यथास्थिति। (जैसे ॐ गायत्री सहित
ब्रह्मणे नमः दक्षिण कपोले ऊपर कहा था वैसे (कंठमूले कहो) उसी तरह सब बोले

विधिना विन्यसेत्सर्वं शंकरस्य मतेन च॥ एवं सर्वत्र॥ इसका
मतलब इन सब मंत्रों से पूरे अंगों इस प्रकार करो न्यास जैसे नीचे लिखा है।
हर अंग पर देवियों को स्थापित करलो नीचे देखो

ततो ललाटे, ॐ ब्राह्म्यै नमः। वामांसे। ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। वाम
पार्श्वे। ॐ कौमार्य्यै नमः। जठरे ॐ वैष्णव्यै नमः। दक्षिण
पार्श्वे। ॐ वाराह्यै नमः। दक्षिणांसे। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ककुदि
ॐ चामुण्डायै नमः। हृदि। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीन बार व्यापक न्यास करो

इति विन्यस्य मूलेन व्यापकत्रयङ्कुर्यात् ॥

ततो ध्यानम् ॥ उद्यद्दिन द्युति मिन्दु किरीटां तुङ्ग कुचां नयनत्रय युक्ताम्। स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाऽभीति करां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

यन्त्र विधि बताते हैं

एवन्ध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य। पूजा यन्त्र बनावे। पद्ममष्ट दलम् वाह्ये वृत्तं षोडशभिर्दलैः ॥ विलिखेत्कर्णिका मध्ये षट्कोण मतिसुन्दरम् ॥ चतुरस्रं चतुर्द्वारमेव मण्डल मालिखेत्। इसका मतलब एक षट्कोण पहले बनावे फिर चतुष्कोण उसके ऊपर वृत्त फिर अष्ट दल उसी वृत्त में बनावे। फिर एक वृत्त बनाकर उसपर १६ दल का उसे बना दे फिर एक वृत्त उसपर बनाकर चौकोर खाका खींच कर चारों तरफ चार मार निर्मित कर दे ॥ ऐसा यंत्र बना के

ततो दिक्षा पद्धत्युक्त पीठ पूजाङ्कृत्वा पीठशक्ती पूज्येत् ॥ केसरयुमाने दलों के बीच में पूर्वादि केसरेषु ॥ फिर पूर्व की तरफ से बाई ओर चलता जाय और हर दल में क्रमानुसार पूजा करे पहले

ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। मध्ये ॐ मंगलायै नमः। तदुपरि ह्रीं सर्व शक्ति कमलासनाय नमः बीच में बिन्दु में भुवनेश्वरी जी की कल्पना करे और पूजन और आवाहन करे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ततः केसरेषु ईशान्यादि कोणे मध्ये दिक्षु च। ततो ह्रीं हृदयाय नमः इत्यादिना षडङ्गेन पूजयित्वा। पञ्च पुष्पाञ्जलीन्दद्यात्॥ ततश्चावरण पूजा।

ईशान कोण से दलों के बीच में पूजन करके बीच में ह्रीं हृदयाय नमः। इसी से षडङ्ग न्यास भी करो।

हृत्कर्णिका के बीच में इन शक्तियों का पूजन क्रम रूप से करे हल्लेखा को बीच कर्णिका में

कर्णिका मध्ये (ॐ हल्लेखायै नमः॥ पूर्वे ऐं गगनायै नमः॥ दक्षिणे ॐ ॐ रक्तायै नमः। उत्तरे ॐ ईं करालिकायै नमः। पश्चिमे हूं महोच्छुष्मायै नमः। षट्कोणे पूर्वे ॐ गायत्र्यै नमः ॐ ब्रह्मणे नमः। नैऋत्ये ॐ सावित्र्यै नमः ॐ विष्णवे नमः॥ वायव्ये ॐ सरस्वत्यै नमः ॐ रुद्राय नमः। आग्नेय कोणे ॐ श्रियै नमः ॐ धनपतये नमः। पश्चिमे ॐ रत्यै नमः ॐ स्मराय नमः। ऐशान्याम् ॐ पुष्ट्यै नमः ॐ गणपतये। षट्कोणस्योभयपार्श्वयोः ॐ शङ्खनिधये नमः, ॐ पद्मनिधये नमः।

केसरेषु आग्नि नैऋत्य वायव्य ईशान के सामने चारों दिशा में ह्रां हृदयाय नमः इत्यादिना षडङ्गेन पूजयेत्॥ नेत्रमग्नि दिशास्वन्तर्ध्यातव्याश्चाङ्ग देवताः॥ एवं सर्वत्र॥ मतलब कमल कर्णिका (केसरेषु) में आग्नि कोण से ईशान कोण तक (ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः) से षडङ्ग न्यास करे माने पूजन करे अंगदेवताओं का ध्यान पूजन के मार्ग (नैऋत्य से आग्नि कोण तक करना चाहिये।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मैरव्यादौ तु विशेषो वक्तव्यः। अष्टदलेषु पूर्वादि क्रमेण।
आठ दलों में इनकी पूजा होगी॥

ॐ अनङ्ग कुसुमायै नमः॥ एवम् अनङ्ग कुसमातुरायै नमः॥ ॐ
अनङ्गमदनायै नमः॥ ॐ अनङ्ग मदनातुरायै नमः॥ ॐ भुवन पालायै नमः
ॐ गगन वेगायै नमः॥ ॐ शशिरेखायै नमः॥ षोडशदलेषु पूर्वादि दिक्षु
सोल्हों दलोंमे पूर्व से अपने दाहिने हाथ की ओर से शुरु करके इन १६ देवियों का पूजन करे।
ॐ करालिन्यै नमः॥ ॐ विकरालिन्यै नमः॥ ॐ उमायै नमः॥ ॐ
सरस्वत्यै नमः॥ ॐ श्रियै नमः॥ ॐ दुर्गायै नमः॥ ॐ उषायै नमः॥
ॐ लक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्रुत्यै नमः॥ ॐ स्मृत्यै नमः॥ ॐ धृत्यै नमः॥
ॐ श्रद्धायै नमः॥ ॐ मेधायै नमः॥ ॐ मत्यै नमः॥ ॐ कान्त्यै नमः॥
ॐ आर्यायै नमः॥ पश्चात् आठों दिशा में पूर्व से दाहिने से चलकर
इन आठ शक्तियों का पूजन करे। चतुष्कोण मे आठों दिशाओं का पूजन
ॐ अनङ्ग रुपायै नमः॥ ॐ अनङ्ग मदनायै नमः॥ ॐ मदनातुरायै नमः॥
ॐ भुवन वेगायै नमः॥ ॐ भुवन पालिकायै नमः॥ ॐ सर्व शिशिरायै नमः
ॐ अनङ्ग वेदनायै नमः॥ ॐ अनङ्ग मेखलायै नमः॥ तद्बहिर्गृह पूर्वादि
ॐ लां इन्द्राय देवाधिपतये सायुधायेत्यादि। ॐ रं अग्नये तेजोधि
पतये सायुधायै नमः। ॐ यं यमाय प्रेताधिपतये सायुधायै नमः। ॐ क्षां
नैर्ऋत्ये रक्षोधिपतये सायुधायै नमः॥ ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चतुरस्त्र जो बाहर बना है द्वार सहित, अन्दर के ...
पर शक्तियों का पूजन होता है। बाहर इन्द्रादि से लेकर लोकपाल तक का पूजन
होता है।

सायुधायै नमः॥ ॐ वां वायवे प्राणाधिपतये सायुधायै नमः॥ ॐ सं सोमाय
ताराधिपतये सायुधायै नमः॥ ॐ हां ईशानाय गणाधिपतये सायुधायै
नमः॥ (इन्द्रेशान मध्ये) ॐ आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये सायुधायै नमः।
निऋति वरुणयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये सायुधायै नमः॥
तथा च लोकपाला बहिः पूज्याः समस्ताश्चतुरस्त्र के॥ पुरुहूतेशयोर्मध्ये
रक्षोवरुणयोस्तथा॥ ब्रह्मविष्णु सदा पूज्यौ दिगीशार्चां विदुर्बुधाः॥

इन्द्रादिलोकपालानां ये मन्त्रास्ते ध्रुवादिकाः॥ स्वस्वबीजान्विताः
चतुर्थ्यन्त नमोन्तकाः। सर्वत्र प्रणवादि। एतेषाम्बीजान्याहुक्रिया
सौरा प्रश्व्याग्निपवना द्यन्त वरुणानिल सेश्वरैः॥ अनन्तविन्दु संयुक्तैर
र्च्या - ४ पाशेन मयया॥ तथा च यामले। अन्ते यजेलोकपालान्
मूल पारिषद्धान्वितान्॥ हेतिजात्यधिपोपेतान् दिक्षु
पूर्वादितो यजेत्॥ सवाहनायेति दीपिका तद्ब्रूहि ४

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाहर ही कोणों पर इन आयुधों का पूजन पूजन होता है॥

पूर्वादि वज्राय शक्तये दण्डाय खड्गाय पाशाय अङ्कुशाय गदायै शूलाय पद्माय चक्राय प्रणवादि नमोऽन्तेन पूजयेत्। ततो धूपादिविसर्जनान्त कर्म समापयेत्। अस्य पुरश्चरणं द्वात्रिंशल्लक्षजपम्प्रजपेत् मंत्रं द्वात्रिंशल्लक्षमानसः। त्रिस्वादु युक्तैर्जुहुयादष्ट द्रव्यैर्दशांशतः॥ अष्ट द्रव्याणि यथा। अश्वत्थोदुम्बर प्लक्ष न्यग्रोध-समिधस्तिलाः सिद्धार्थ पायसाज्यानि द्रव्याणि अष्टौ विदुर्बुधाः॥ त्रिस्वाद्विति घृत, मधु, शर्करेति॥ इति भुवनेश्वरी पूजा पद्धतिः॥

तिल
पीली सरसों, पीपल की लकड़ी
घी देशी में दशांश
शर्करा हवन करदे
मधु
पायस (खीर)
मेवा दूध चावल की
मौन

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ संकल्प योजना ॥

कमला सरकार नामाहं रामं प्रति श्यामम् आकर्षयितुम् संकल्पं करिष्ये ॥

देवव्रत नामकस्य यजमानस्य हितार्थं तत्प्रति पक्षीयस्य मोहनस्य (विनाशाय) अथवा (विद्वेषणाय) अथवा (उच्चाटनाय) अथवा (मारणाय) संकल्पं करिष्ये ॥

कमला सरकार नामाहं अमुकस्य यजमानस्य हितार्थं श्रीमती सुनीतायाः मनोरमायाश्च परस्परं मैत्री भाव स्थापनाय संकल्पं करिष्ये ॥

कमला सरकार नामाहं मम यजमानस्य धर्मदत्तस्य हितार्थं (श्रीमती अंगूरीगुप्तायाः) हितार्थं श्रीमती सुनीता वा श्वसुरोच्चाटनाय संकल्पं करिष्ये ॥ यानी अमुक के ससुर का उच्चाटन कर

कमला सरकार नामाहं मम यजमानस्य श्रीमती सुनीतायाः पतिं तत्व वशीकरणाय ॥ अथवा (गृहादुच्चाटनाय) संकल्पं करिष्ये ॥ अथवा राज दरबारे विजयार्थायं अमुक साधनं करिष्ये ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्री चण्डिका माला मन्त्रस्य॥

चण्डिका माला मंत्र

विनियोग-ॐ अस्य श्री चण्डिका माला मन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषि: अनुष्टुप छन्द: श्री चण्डिका देवता ॐ ह्: बीजं ॐ सौं शक्ति: ॐ ह्रौं कीलकम् मम श्री चण्डिका प्रसाद सिद्धयर्थे सकल जन वश्यार्थं श्री चण्डिका देव्ये प्रसन्नार्थे श्री चण्डिका माला मंत्र जप विनियोग:॥ अथ न्यास: (ह्रां फ्रां से करो) ध्यान कल्याणिं कमला सनस्थ शुभदां गौरी घन श्यामलां मालादाम विभूषितां भयदां अर्द्रेक रक्षे: शुभे:॥ श्रीं ह्रीं क्लीं वर मंत्र राजसहितां आनन्द पूर्णात्मिकां श्री शैले भ्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्र मूर्तिं भजे॥ अथ मालामंत्र: ॐ ह्: ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री जय २ चाण्डिका चामुण्डे त्रिदश मुकुट कोटि संघट्टित चरणारविंदे) गायत्री सावित्री सरस्वती महि कृताभरणे भैरव रूप धारिणी प्रगटित दंष्ट्रोग्र वदने घोरानने, नयन, ज्वलज्ज्वाला, सहस्त्र परिवृते, महाट्टहासा वली कृत दिगन्तरे सर्वायुध परिपूर्णे कपाल हस्ते गजाजिनोत्तरीये भूत प्रेत वृन्द जिन्द वैताल परिवृते प्रकम्पित धराधरे मधुकैटभ महिषासुर धूम्रलोचन चण्ड मुण्ड रक्त बीज शुम्भ निशुम्भ दैत्य निकृन्तके सन्ध्या निष्कृति काल रात्रि महामाये शिवे नित्ये ॐ ऐ ह्रीं सन्ध्याग्नेयी नैऋति वारुणि वायव्ये कौवेरि ईशान्ये ब्रम्ह विष्णु शिव स्थिते त्रिभुवन धराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके ब्राम्ही माहेश्वरि कौमारि वैष्णवी वाराही इन्द्राणी ईशानी महालक्ष्मी इति स्थिते महोग्र निष

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रैलोक्ये [illegible] कुरु २ जाग्रत स्वप्न सुषुप्त्यावस्था स्वस्मानं राज चौराग्नि जल वात विष भूत शत्रु मृत्यु ज्वरादि विस्फोटकादि नाना रोगेभ्यो शत्रुभ्यः सम्यं मां रक्ष २

ग्रीष

महाविशोरग फणा मणि मुकुट रत्न महाज्वाला मय मणि महाहि पाद हार बाहुक होत्तमाङ्ग नवरत्न निधि कोटि तत्व बाहु जिह्वा वाणी शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मिके क्षिति साहस मध्यस्थिते महोज्वल महाविशेष विषगन्धर्व विद्या धरादि प्रेते॥ ॐ ऐंकारा ॐ ह्रीं कारा ॐ क्लीं कारा हस्ते ॐ ग्लां ह्रीं क्रौं ग्रनम्ने ग्रे पाते प्रवेशय २ ॐ द्रां द्रीं शोषय २ ॐ द्रों द्रीं होमय २ ॐ क्लां क्लीं दीपय २ ॐ ब्लूं ब्लूं सन्तापय २ ॐ सौं सौं उन्मादय २ ॐ म्लैं २ मोहय २ ॐ स्वां २ क्षोधय ॐ ध्यां २ उन्मादय २ ॐ ह्रीं २ आवेशय २ ॐ स्त्रीं २ उच्छादय २ ॐ स्त्रीं २ आकर्षय २ ॐ हुं हुं आस्फोटय २ ॐ त्रूं त्रूं त्रोटय २ ॐ छ्रां २ छेदय २ ॐ कूं कूं उच्चाटय २ ॐ हूं हूं हन २ ॐ ह्लीं २ मारय २ ॐ घ्रीं २ घर्षय ॐ ध्वीं ध्वीं विध्वंसय २ ॐ प्लूं प्लूं [illegible] प्लावय २ ॐ भ्रां भ्रां भ्रमय २ ॐ भ्रां भ्रां दर्शय २ ॐ दां दां दिशो बन्धय २ ॐ दीं दीं मे नावर्तिनं [illegible] वर्तिनां एकाग्र चित्तां विशि कुरु तद्वय (ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ॐ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा मम सकल कामना पूर्ति कुरु २ सर्वोपद्रव निवारय २ अमुकं वशं कुरु २ सर्व भूत प्रेत पिशाच ब्रम्ह पिशाच राक्षस ब्रम्ह राक्षस ब्रम्हवीर ब्रम्ह पिशाच अगिया बेताल जिन्द मसान भैरव कलुवा शाकिनी डाकिनी पिशाचिनी भूतनी नागिनी भैरवी कुष्माण्डा यक्षयमदूत [illegible] भैरवादि बाधा निवारय २ सर्प तस्करादिकं सर्वापत्ती नाशय २ मारय २ भंजय दह ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा

९८ खण्ड छिन्द २ भिन्द २ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जपे १२१ बार जपे। प्रादौ सुवासिन्याः कुमार्याः पूजां कृत्वा
पश्चात जपं कुर्यात ॥ एवमेकविंशति शत जाप्येन स्त्रियो वा
पुरुषोऽपि वा॥ राजद्वारे श्मशाने च विवादे शत्रुशंकटे ॥ शत्रूच्चाटने
चैव सर्वकार्याणि साधयेत ॥

यह जप दस हजार पाठ

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पंचपल्लव = ... पला...

पंचगव्य = मूत्र गाय का २ तोला गोबर का रस १ तोला ३ तोला दही ...

त्रिलोह = (सोना चांदी तांबा) (मधुपर्क) दही घी देशी मधु) ५ तो...

(त्रिमधु)

नौ दुर्गा = (शैलपुत्री)(ब्रह्मचारिणी)(चन्द्रघण्टा)(कूष्माण्डा)(स्कन्दमाता)(कात्यायनी)(कालरात्री)(महागौरी)(सिद्धिदात्री)

[२१]

दशमहाविद्या	भैरव
कालीजी के	महाकाल
ताराजी के	अक्षोभ्य
त्रिपुरसुन्दरी के	पञ्चवक्त्र
भुवनेश्वरी के	त्र्यम्बक
छिन्नमस्ता	कबन्ध
भैरवी के	दक्षिणामूर्ति
बगला के	एकमुखमाहरुद्र
मातंगी के	मतंग
कमला के	विष्णु सदाशिव
धूमावती	विधवा है

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible] साधान, अस्थि साधन, कोमल साधन, सव साधन, लता,
हर साधन में इन सब को पूजन होगा। बलि दी जायेंगी पंचमकार से
अस्त्रयुक्त मोन)(अस्त्र मंत्र (फट् लगा कर ^(अन्त में)^ = अपने मंत्र में भूमि पर जल डाले

अस्त्र युक्त मूल मन्त्र से भूमी प्रोक्षण करे। पश्चात् गुरु का ध्यान पूजन करे। फिर बटुक का ध्यान पूजन। गणेश का ध्यान पूजन षोडश मातृकाओं का ध्यान पूजन फिर ६४ योगिनियों का ध्यान पूजन करे। फिर तीन बार सब को पुष्पांजली दे। यह मन्त्र पढ़ कर (ये चात्र संस्थिता देवा राक्षसाश्च भयानका: पिशाचा: सिद्धयक्षाश्च गन्धर्वाप्सरसां गणा: । योगिन्यो मातरो भूता: सर्वाश्च खेचरीस्त्रिया: । सिद्धिदास्ता भवन्त्वत्र तथा च मम रक्षका: । फिर चिता के उत्तर की तरफ (श्मशानाधिपति की पूजा करे बलि दे।
भैरव की पूरब में पूजा करे बलि दे। दक्षिण में महाकाल की पूजा करे बलि दे। पश्चिम में काल भैरव की पूजा करे बलि दे। इन्हीं देवताओं की (आग्नेय)(नैऋत्य (वायव्य)(ईशान) में पूजा कर दे। फिर तीन बली चिता के मध्य में दे। यह मंत्र पढ़ कर (कालरात्री महाकाली कालिके घोर निःस्वने गृहाण इमं सामिषान्न बलिं मात र्देहि मे सिद्धिमुत्तमाम् ॥ हूं कालिकायै स्वाहा ३ बार दे॥ फिर भूतनाथ की पूजा करे बलि दे। फिर सर्व गणनाथाधिपति की पूजा करे बलि दे। फिर तारा की पूजा करे बलि दे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ नमो भगवते दक्षिणमूर्तये मह्यं मेधा प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा

बार (ॐ फट्) बोल कर भूमि पर जल छिड़के जहां यह साधन करना हो।

दूसरे तन्त्र ग्रन्थों में लिखा है कि इसके बाद चिता के पश्चिम में अस्थि संचय (समूह) को एकत्र करके निम्नलिखित मन्त्र से पंचगव्य (गाय का दूध, दही, घी, मूत्र गोबर) द्वारा संप्रोक्षण करना चाहिये "ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः" बोलकर।। इसके बाद एक भोज पत्र पर या एक वट पत्र पर "ह्सौः" यह मन्त्र लिखकर अस्थि को स्थापित करे उसके बाद उन दोनों को कम्बल आदि के आसन को ॐ 'आधार शक्तये नमः' इस मन्त्र से रखकर श्री भुवनेश्वरी जी और श्री काली जी, की पूजा करनी चाहिये। इसके बाद उस पर बैठे न्यास करे अपने इष्ट मंत्र से। वीरतन्त्र में बताया गया है:—

पीठ पर बैठकर वीर आसन लगाकर पहले निम्नलिखित मन्त्र से चारों दिशाओं में मिट्टी का ढेला फेंके:— "वीरार्दिने देवेशि हुँ हुँ क्लीं क्लीं कालिके घोरदंष्ट्रे प्रचण्डे-चण्डनायिके दानवान् दारय२ हन हन महाविघ्नं छेदय छेदय ठं ठं" इस प्रकार मिट्टी के ढेले को मन्त्रित करके दशो दिशाओं में फेंके। इससे भैरवजी मध्य में निवास करते हैं जिसके कारण साधक विघ्नों से परास्त नहीं होता है। यदि साधक असावधानी से भय युक्त हो जाता है तब सहायक मित्रों के द्वारा।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" मन्त्र योजन नीचे लिख दो

पश्चिम दिशा में कालदेव को निम्न रूप से बलि प्रदान करे-
ॐ ह्रीं काल भैरव इमं सामिषान्नं बलिं गृह्ण, गृह्ण
गृह्णापय गृह्णापय विघ्ननिवारणं कुरु सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा।
ऊपर बताये अनुसार ही आग्नि, नैऋत्य, वायव्य, ईशान कोणों में
भी श्मशानाधिपति, भैरव, महाकाल और कालभैरव
को बलि प्रदान करे। इसके अनन्तर चिता के मध्य में
निम्नलिखित मन्त्र से तीन बार बलि प्रदान करे:-

मन्त्र:- कालरात्रि महाकालि कालिके घोर निःस्वने॥
गृहाणेमं बलिं मातर्देहि मे सिद्धिमुत्तमाम्।
हूं कालिकायै स्वाहा। इसके बाद भूतनाथ को
निम्न प्रकार से उत्तम बलि प्रदान करे-
ॐ ह्रीं भूतनाथ श्मशानाधिप इमं बलिं गृहाण स्वाहा।
इसके अनन्तर श्मशान को मस्तक झुकाकर निम्न प्रकार
से प्रणाम करना चाहिये
हूं सर्वगणनाथाधिपते इमं बलिं गृहाण स्वाहा॥ इसी
प्रकार तारा आदि को भी 3 बलि देकर पंचगव्य से
अस्थि को संप्रोक्षित करके पुनः पीठ मन्त्र का न्यास
करे। और भोजपत्र या वट पत्र पर साधक पीठ को
स्थापित करे।

(वीरतन्त्र के अनुसार)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूत शुद्धी न कर सके ... बार जप ले।
ऐष षोढ़ा करले कंठ, हृदय, नाभी लिंग गुदा छूकर दस दस बार इस तारक जप ले।

रक्षित होने से परास्त नहीं होता। इसके अनन्तर मदार की रुई से बनाई गई बत्ती का दीपक जलाकर स्थापित करने के बाद अस्त्र की पूजा करनी चाहिये। [दीप को बुझना नहीं चाहिये अन्यथा साधक को विघ्न की प्राप्ति होती है।] इसके बाद अस्त्र मन्त्र के द्वारा कुलदीपिका को नीचे से खरोंचना चाहिए। तदनन्तर कल्पविधान के अनुसार भूत शुद्धि आदि करनी चाहिये। षोढ़ा अथवा तारक मन्त्र का न्यास करके देवता का पूजन करना चाहिये।

इसीलिये यामल आदि में बताया गया है:- इष्ट

उसके बाद अग्रभाग में पंचोपचार से देवता की पूजा करे, आँख बंद करने के बाद देवता का ध्यान करे यदि एकाक्षरी मन्त्र हो तो चार हजार जप करना चाहिये। दो अक्षर के मन्त्र को आठ हजार, तीन अक्षर के मन्त्र को पाँच हजार बार जप करना चाहिये। इससे ज्यादा अक्षर वालों को

ततः परं तु मन्त्रज्ञो गजान्तक सहस्रकम् (617) ८ हजार जपे

आधीरात से लेकर उदयकाल तक जप करते रहना चाहिये। यदि असहनीय भय हो तो कपड़े से कान और आंख बंद

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर लेनी चाहिये। उसके बाद अर्ध रात्रि
रात गये तक यदि कुछ नहीं दिखाई
सरसों को बिखेरे। तदनन्तर
निम्नलिखित मन्त्र से तिल बिखेरे
ॐ तिलोऽसि सोमदेवत्यो गोसव
पितृणां स्वर्गदातासि मर्त्यानां म
भूत प्रेत पिशाचानां विघ्नेषु शान्
इसके बाद वहाँ से सात कदम चल
उसी आसन पर बैठ जाना चाहिये
का जप निर्भय होकर तब तक क
तक सिद्धि प्राप्त होजाय। भय को
चाहिये शेष (रह जाय तो) जप दूसरे दिन (रात में) कर
वामकेश्वर तन्त्र के अनुसार
जप के अन्त में (इष्ट) देवता के
देनी चाहिये। बलि महिष अथवा
वरदान लेकर ~~घर~~ मित्रजनों के
मन से घर जाना चाहिये।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...रक्षिणी स्वाहा कहते हुए
...ं चारों दिशा में बिखेरे।

...क अर्थात् तीन पहर
...तो ~~...~~ कहते
...चारों दिशाओं में

—
...तृप्ति कारक:।
... रक्षक:॥
... कारक:॥
...क पुनः लौट कर
...और पूजन के मन्त्र
...े रहना चाहिये जब-
...स्वप्न के समान समझना
...चाहिये। (यामलार्णे)

—
...विधि पूर्वक बलि
...छागल की देकर
...साथ अत्यन्त प्रसन्न

भैरव जी का ध्यान - ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त ...
नमस्तुभ्य मनुज्ञां दातु मर्हासि॥ भूमि पर जल छिड़को तब यह कहो (
(ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा) त्रिकोण लिखे भूमि पर तब कहे (ॐ अ सुरेखे वज्ररेखे
हुं फट् स्वाहा) त्रिकोण बिंदु पूजन करे तब (ॐ ह्रीं आधार शक्ति कमलासनाय नमः) फिर
लाल कम्बल उस पर बिछावे बैठने के लिये आसन
के चारों कोणों पर आग्नेय से शुरु करे दाहिने और (गणेश) (सरस्वती) (दुर्गा) (क्षेत्रपाल) का पूजन करे
फिर प्रवि। विनियोग प्रार्थना, आचमन प्राणायाम ध्यान मानसिक गुरुध्यान करके जप करना शुरु करे॥

भूतडामर में बताया गया है कि:—

सभी तन्त्रों में गुप्त वीर सिद्धि विधान को देवों के देव शंकर ने भाव सर्वस्व में बताया है जिसके जानने मात्र से अल्पभाग्यवाला भी साधक सिद्धि प्राप्त करता है। तथा पुरश्चरण से सम्पन्न साधक ही वीरसिद्धि करे। पुत्र-स्त्री- धन- स्नेह- लोभ-मोह को छोड़कर साधक को यह प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि "मैं या तो मन्त्र को सिद्ध करूँगा या शरीर को त्याग दूँगा।" इस प्रतिज्ञा के बाद बलि द्रव्य का चिन्तन करे अर्थात् इकट्ठा करे।

वीर तन्त्र में बताया गया है कि:—

साधक पहले बताये हुए उपहार (बलि) आदि लेकर साधन स्थान में पहुँचे और अपने हित के लिये सिद्धि का साधन करे। गुरु का ध्यान आदि सभी कार्य पूर्वोक्त प्रकार से करना चाहिये। इसके बाद भूमि पर निम्न लिखित मन्त्र से तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करे:—

नीचे श्लोक से (तिल चावल सरसों बखेरे) ... विघ्न निवारण
~~ये चार~~ ॐ अपः क्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेत गुह्यकाः ये चात्र निवसन्त्यन्य देवता भुवि संस्थिताः॥ अपः सर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः॥ ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ (ॐ सर्व विघ्नानुत्सारयोत्सारय हुं फट् स्वाहा॥
बोल कर तीन ताली, आकाश देखते हुए चारों तरफ। दृष्टि घुमा कर बजावे
ईशान कोण में॥ १ फूल दीपनाथाय नमः बोल कर छोड़ दे। फिर भैरव का ध्यान करे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्मशानाधिपति - भैरव - कालभैरव - महाकाल आदि को पूर्वोक्त प्रकार से बलि प्रदान करे।

अघोर मन्त्र से शिखाबन्धन और बलिसाधन करना चाहिये उसके बाद सुदर्शन मन्त्र से रक्षा विधान करना चाहिये अथवा अघोर मन्त्र तथा सुदर्शन दोनों ही मन्त्रों से बलिसाधन और रक्षा विधान करना चाहिये। अघोर मन्त्र छप्पन अक्षर का होता है। जैसे - ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोरतर तनोरूप चट चट प्रचट प्रचट हे हे रम रम बन्धु बन्धु पातय पातय वर्म फट्॥ सुदर्शन नामक महामन्त्र में हालाहल बीज के बाद वर्म लगाया जाता है जैसे:-

उसके अनन्तर भूतसिद्धि करके न्यास जाल करना चाहिये। फिर 'ऊँ दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा' इस जयदुर्गा नामक मन्त्र से सभी दिशाओं में सरसों बिखेरे। फिर

ऊँ तिलोऽसि सोमदेवत्यो गोसवस्तपप्रकारकः।
पितृणां स्वर्गदाता त्वं मर्त्यानां मम रक्षां कुरु॥
भूत प्रेत पिशाचानां विघ्नेषु शान्ति कारकः॥

इस मन्त्र से तिल भी बिखेरे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाठी से यानी डन्डे से मृत, शूलमृत, खड्गमृत, जलमें डूबने से मृत, रस्सी से मृत (फांसी आदि द्वारा), सर्पदंश से मृत, अथवा चाण्डाल के द्वारा मृत, तरुण, सुन्दर, शूर, रण में विनष्ट, देदीप्यमान, अपलायनवादी, रण में सम्मुख रहने वाला शव ग्रहण करके पूजा स्थान पर लाना चाहिये।

[त्याज्य शव - स्वेच्छा (आत्महत्या) मृत - दोवर्ष की अवस्था वाला, वृद्ध, स्त्री, द्विज, अन्न के अभाव में मृत, कुष्ठ, सातरात्रि से पूर्व मृत इन आठ प्रकार के शव को त्याग देना चाहिये।]

चाण्डाल आदि से अभिभूत शव शीघ्र सिद्धि फल देने वाला होता है।

प्रणव आदि अस्त्र मन्त्र ॐ फट् इससे शव का (पंचगव्य से) प्रोक्षण करे। फिर 'ॐ हुं मृतकाय नमोऽस्तु फट्' इस मन्त्र से तीन बार पुष्पाञ्जलि देकर स्पर्श करते हुए निम्नलिखित मन्त्र/स्तुति करते हुए प्रणाम करे -

रे वीरपरमानन्द शिवानन्द कुलेश्वर।
आनन्द भैरवाकार देवी पर्यङ्क शङ्कर॥
वीरोऽहं त्वां प्रयच्छामि उत्तिष्ठ चण्डिकार्चने॥ इसप्रकार

प्रणाम करके शव को स्नान कराना चाहिये। स्नान कराने का मन्त्र सभी तन्त्रों में एक ही प्रकार का

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बताया गया है। तार बीज के बाद त्रां मृतकाय नमः
कहकर स्नान कराके उसके बाद धूप से धूपित
करके, श्वेत चन्दन आदि का लेप करे। यदि इसके पश्चात्
यदि शव रक्तवर्ण का हो जाय तो उस शव का साधक
परित्याग कर दे। यदि शव उपद्रव करे तो उसके
मुख में निष्ठीवमन (थूकना) करे और पुनः प्रक्षालित करके
जप स्थान पर ले आये। कुश की शय्या बिछा कर
वहाँ पर शव को स्थापित करे। इलायची-लौंग-
कर्पूर जाती कत्था अदरख आदि से युक्त ताम्बूल उसके मुख
में देकर शव को अधोमुख करके उसकी पीठपर
चन्दन का लेप करे। बाँह की जड़ से कमर तक
चतुरस्त्र (चौकोण) बनावे की भावना करनी चाहिये और
उसके बीच में अष्टदल कमल चार द्वार युक्त बनावे
उसके ऊपर कम्बल से ढंके हुए मृगचर्म को रखे।
बारह अङ्गुल के प्रमाण से पीपल की लकड़ी
दिशाओं में रखे। यानी क्षेत्र कीलन करे।

इमं वलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय विघ्न-
निवारणं कृत्वा सिद्धिं प्रयच्छ सिद्धिं प्रयच्छ।
इस मन्त्र से सर्व प्रथम सामिष वलि प्रदान करे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्मशानाधिपति - भैरव [illegible] इन चारों मांस के सहित वलि दे इस मन्त्र से :- इमं वलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय विघ्न निवारणं कृत्वा सिद्धिं प्रयच्छ सिद्धिं प्रयच्छ। कहकर हर एक का नाम शुरु में लेकर मन्त्र बोले और वलि दे। इस के बाद सभी लोकपालों के अपने अपने नाम लेकर पूर्वोक्त रूप से वलि प्रदान करे। शवाधिस्थान देवों को भी सुरा के साथ वलि प्रदान करे। चौंसठ योगिनी और डाकिनियों को भी वलि प्रदान करे। पूजा द्रव्य को पास में रखकर दूर में उत्तर साधक को स्थापित करके आसन की पूजा करे और 'स्वमन्त्र के अन्त में त्रप फट्' इस मन्त्र से अश्वारोहण की मुद्रा में रहे। पैर के नीचे कुशा रख शव के बालों को संवारकर कृत संकल्प साधक दृढ़तापूर्वक शिखा बाँधकर शव के ऊपर बैठकर प्राणायाम करके "वीरार्दने देवेशि हुं हुं क्लीं क्लीं कालिके घोरदंष्ट्रे प्रचण्डे चण्डनायिके दानवान् दारय हन हन महाविघ्नं छेदय छेदय ठं ठं" इस मन्त्र से चारों दिशाओं में मिट्टी का ढेला फेंके उसके बाद देवता की पूजा करे विस्तृत उपचार से। शवासन में स्थित होकर देवता को पूजन से तुष्ट करे। तदनन्तर उठकर सामने खड़े होकर भक्ति भाव से युक्त होवे और निम्न प्रकार से स्तुति करे :—

ॐ वशो मे भव देवेश मम विघ्नानलाः सिद्धिं देहि कृताश्रय परायण महाभाग।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसप्रकार स्तुति करने के बाद मूल बीज मन्त्र का उच्चारण करते हुए शवके दोनों पैरको रेशम की पट्टी से बाँधदेना चाहिये जिससे शव उठ न सके। इसके बाद शवके पैर के नीचे निम्न मन्त्र से त्रिकोण चक्र लिखे-

मन्त्र- ॐ भीहभीम भयाभाव भयलोचन भावुक।
त्राहि मां देवदेवेश .... शवानामधिपाधिप॥

इसके बाद शव स्थिर होजाता है। इसके बाद पुनः शवपर बैठकर शव की बाँह को निकालकर फैलादे और अगल बगल में कुशा बिछा दे और उस कुशा पर हाथ के दोनों तरफ दोनों पैर रख दे। और ओठ को बंद करके चित्त एवं इन्द्रियों को स्थिर करे। हृदय में सदैव देवी का ध्यान करके मौन होकर जप करे। श्मसान साधन में बताये अनुसार जप करना चाहिये। अथवा जप आरम्भ करने से लेकर जब तक सूर्य उदय हो तब तक जप करना चाहिये। यदि अर्धरात्रि तक कुछ न दिखे तो पहले के समान सात कदम चले, फिर आकर बैठ जाय सरसों मन्त्र पढ़कर बिखेरे तिल बिखेरे। पुनः एकचित्त होकर जप करना चाहिये। आसन बदल लेने के बाद भी यदि भय उपस्थित होवे तो

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस प्रकार कहना चाहिये-

यत् प्रार्थयसि देवेशि दातव्यं कुञ्जरादिकम्।
दिनान्तरे प्रदास्यामि स्वनाम कथयस्व मे॥

यह कहकर निर्भय होकर जप करते रहना चाहिये। उसके बाद यदि मधुर (मीठी) वाणी सुनाई दे तो मीठीवाणी में ही उससे बात करे सर्वप्रथम उससे सत्य प्रतिज्ञा करावे तदनन्तर वरदान माँगे। यदि सत्यप्रतिज्ञा न करे और वरदान न दे तो एकाग्र मन से जप करते रहना चाहिये।

यक्षडामर में लिखा है कि

आश्चर्यजनक वस्तु के उपस्थित होने पर उसवस्तु को न देखे और न तो उससे बात करे तथा नहीं उसको छूवे बल्कि एक चित्त से तबतक जप करते रहना चाहिये जबतक कि इष्ट प्रत्यक्ष न हो जाय।

वीरतन्त्र में लिखा है कि-

साधक के सामने इष्ट मनुष्य के रूप में उपस्थित होता है और देव योनियों के रूप में भी उपस्थित होता है उसे यत्न करके पहचाने कि यह मनुरूप है या देवयोनियाँ। क्योंकि कभी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साधक की माता, पुत्री या भाभी आकर अपने शरीर को माया से ढंक कर साधना में विघ्न डालने के लिये कहती है कि - उठो बेटा तुम्हारा सभी कार्य पूरा होगया, इसमें कोई संशय नहीं। प्रातः काल का समय होगया है तुम्हारे पिता तुम्हें बुला रहे हैं। देखो। हर तरफ उजाला फैल गया है यदि दण्डधारी राजा को कोई कहदे तो फिर तुम क्या करोगे।" इस प्रकार के अनेकों मनोहर तथा भयभीत करने वाली वाणी से साधक विचलित न होवे अपितु जप करता रहे।

मरे हुए पितृसमूह, दूरदेश में रहने वाले भाई बन्धु भी देवता का रूप धारण करके साधक के समीप उपस्थित हो जाते हैं। साधक के सामने ही शत्रुओं के द्वारा साधक के स्त्री, पुत्र, सेवक आदि ले जाये जाते हैं, साधक के पुत्र भाई, एवं शिष्य आदि रोते हुए दिखाई देते हैं। शासक के द्वारा अपनी पत्नी के प्रयोग में आने वाला वस्त्र तथा आभूषण आदि एवं पत्नी भी ले जायी जाती हुई दीखपड़ता है जोकि ऐसी परिस्थिति में भी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षोभ नहीं उत्पन्न होता है तभी सिद्धि मिलती है। और देवी स्त्री का रूप धार तथा द्विजरूप धारी पुरुष आकर तीन बार कहता है कि वर मांगो २ इस प्रकार अन्त में वरदान मिलता है। अच्छी अथवा बुरी भी स्त्री यदि वर देने वाली हो तो उस साधक को क्या सिद्ध नहीं होता है। निष्पाप पुरुष अच्छे कुल में उत्पन्न होने पर भी यदि संस्कृत भाषा में वरदान न दे तो उसे पाप युक्त समझना चाहिये। और यदि कोई संस्कृत भाषा में सामने या परोक्ष में बोलता है तो वही देवी है वही भैरव देव है। यदि ऐसी बात न हो तो माया से के शरीर से कभी भी न तो वर ले न तो कभी वर मांगे। यदि वह संस्कृत में बोले तभी उससे वरदान मांगे।

इसके अतिरिक्त स्वयं ही कौलिक को उत्कंठा से अव्याकुल होकर वरदान न मांगे। अथवा कुछ उठकर अपने हित को प्राप्त करना चाहिये। जिससे अच्छा शब्द उत्पन्न होता है अथवा अमृत की प्राप्ति होती है। सभी बातों को विचार करके वरदान मांगना चाहिये यह सब एक दिशा मात्र बताई गई है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यदि कहीं पर कईबार देवी की आकृति या पुरुष की आकृतियाँ दिखाई दे, तो उससे अवश्य डरना चाहिये उस पर विश्वास नहीं करना चाहिये। भैरव, बटुक कुलशास्त्र परायण, इसी शास्त्र के अनुसार कुटिल शरीर वाली कृत्या है। इनसे पुत्र होकर वर मांगना चाहिये अथवा स्त्री बनकर उसे विमोहित कर दे। इसलिये तत्त्व का चिन्तन करनेवाला वीर आचार में यत्न करता है।

भूतडामर में लिखा है कि

यदि आकर बोलता है, देह में क्रिया आदि करता है तो बलि प्रदान करना चाहिये, इससे वीर को सिद्धि मिलती है। देवता और गुरु को नमस्कार करके, उनका विसर्जन करके, हृदय में सन्तोष की स्थापना करे, और शव को जल में फेंक देना चाहिये। वीरतन्त्र में लिखा है कि-

सत्य प्रतिज्ञा करने के बाद वरदान लेकर जप आदि का परित्याग कर देना चाहिये। फल की प्राप्ति होगई है यह जानकर पुटिका (शिखा) को मुक्त करदे। धोकर अच्छी तरह एक कदम चलकर शव के पैर की शिखा का

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोचन करे। पैर के चक्र को धोकर, पूजा द्रव्य को जल में फेंक दे। शव को जल में अथवा गड्ढे में फेंक कर स्नान करना चाहिये। उसके बाद अपने घर जाकर दूसरे दिन वलि ~~रात्रि~~ रात्रि में प्रदान करे। वलि आटा की ही बनाकर सन्तुष्ट करना चाहिये। वलि दे, जिसका मन्त्र इस प्रकार है:—

"येषां देवानां अहं यजमानः ~~के मया चल~~ येस्य अश्व-नर-कुञ्जर शूकरादीन याचितः ते मया दत्तं इमं सात्विकं वलिं गृह्णन्तु।"

अन्य तन्त्र ग्रन्थों में भी बताया गया है कि:— जौ अथवा साठी के चावल का चूरा बना कर वलिप्रदान करे। अर्थात तलवार से उनर मन्त्रों को विधिवत प्रदान करे। तीसरे दिन नित्यकर्म करके पञ्चगव्य पीये, और पच्चीस ब्राह्मणों को भोजन करावे, अथवा दश दिन के अन्दर पाँच पाँच के क्रम से पच्चीस ब्राह्मण को जिमावे। उसके बाद स्नान करके भोजन करके पवित्र स्थान पर निवास करे। यदि ब्राह्मण भोजन न करावे तो देवता कुपित हो जाता है, और साधक दरिद्र हो जाता है। तीन या छह रात तक कुल साधन को

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुप्त रखे। शय्या पर न सोये अन्यथा रोगी होजाता है। गीत सुनकर बहरा और नृत्य देखकर नेत्र हीन हो जाता है। दिन में बोलने से गूंगा हो जाता है। पन्द्रह दिन तक साधक के शरीर में देवता का निवास होता है। गौ, ब्राह्मण और देवता की निन्दा कभी न करे और गौ, ब्राह्मण तथा देवता का प्रति श्रद्धता पूर्वक स्पर्श करे। प्रातः काल नित्यक्रिया के बाद बिल्व पत्र का जल पी (बिल्वपत्र पीसकर या जल युक्त करके) उसके बाद तीर्थ आदि में स्नान करे। सोलहवें दिन बीज मन्त्र के बाद स्वाहा तर्पयामि नमः" यहां तिनका कहके देव तर्पण जल से करे। तर्पण हीन साधक देवता तृप्त नहीं होता है। इस विधि से निश्चित रूपेण सिद्धि मिलती है। इस संसार में दिव्य वरों को प्राप्त कर अन्त में विष्णु का स्थान प्राप्त होता है। अनङ्ग अथवा साङ्ग, निष्फल, अथवा सफल इस प्रकार के साधन को करने से शक्तिका मनुष्य प्रिय हो जाता है। शव के अभाव में भी श्मशान में वीर साधना करनी चाहिये।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिस देवता के लिये जो भाव (विधि) बताई गई है उस विधि से यदि पूजन नहीं किया जाय तो ऐसा करने से साधक भ्रष्ट हो जाता है।
श्मशान से बाहर हो जाने के बाद किसी प्रकार का न तो मन में भावना लाये और नहीं पूजा करे। क्योंकि मनुष्य तब शुद्ध हो जाता है।

वीर-चूड़ामणि के अनुसार वीसाधन विधि निम्न प्रकार है-
जप स्थान को शुद्ध करके प्रयत्न पूर्वक धाती खोदकर उसके बीच में बलि प्रदान करे जिसका क्रम इस प्रकार है:—
सर्व प्रथम त्रिकोण यन्त्र लिखे उसके मध्य में महाशंख लिखे उसके ऊपर पाँच मुण्ड रख कर अखण्ड अंग वाला शोभायुक्त महाप्रेत को मुण्डों पर स्थापित करे। और महाप्रेत को उबटन आदि लगाना चाहिये तत्पश्चात् विधि पूर्वक स्नान कराना चाहिये लाल कपड़ा पहनाकर आंखों में अंजन करना चाहिये। मुख में ताम्बूल आदि देकर ललाट पर रक्तचन्दन लगाना चाहिये। हृदय पर अष्टदलकमल के मध्य में त्रिकोण यन्त्र लिखना चाहिये। यह कमल लौह शलाका से बनाया जाय।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(लौहशलाका से)
और शस्त्र से ललाट पर पूजा यन्त्र लिखकर
मस्तक, दोनों बांह-हाथ- पैरों कमर ~~के~~ पर खैर (खदिर)
(कत्था) आदि का कील गाड़ दे। बड़ी रस्सी से उसे दृढ़ता
पूर्वक बाँध दे तत्पश्चात प्रत्येक कीलित स्थान पर
अलग अलग बलि छह पात्रों में दे बलि के निमित्त
द्रव्य है:- उड़द या मांस, मछली, खीर, (तीनों ताड़ की सुरा मदय), लड्डू,
~~बड़े बड़े~~ माल पूये (महापूप) तथा दूध से युक्त अन्न (पेड़ा घी) का
उत्सर्ग (प्रदान) करना चाहिये।

~~व~~ श्मशान कालिका को निम्न प्रकार से बलि प्रदान करे।
क्रीं हुं श्मशान कालिके (~~[illegible]~~) क्रीं फट।
इसके बाद श्मशान भैरव को इस मन्त्र से बलि दे-
ह्रीं श्मशान भैरव. महाकाल देव सर्व विघ्न हरो भव।
श्मशानवासिन रुद्र अस्थिमांस बलि प्रिय विघ्नं निवारय
विघ्नं निवारय, (सम्मुख) बलिं गृह्ण बलिं गृह्ण, विघ्नं निवा-
रय विघ्नं निवारय वरं च मे प्रयच्छ ठः ठः।
इसके पश्चात योगिनी बलि प्रदान करे उसका मन्त्र है:-
ह्रीं स्त्रीं श्रीं ल्रं स अ ल्रूं क्लीं योगिनि श्मशान वासिनि
प्रचण्डे-चण्डरूपे कर्तृ खर्पर धारिणि बलिं गृह्णापय
गृह्णापय सर्वविघ्नं निवारय वरं देहि ठःठः॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तदनन्तर क्षेत्रपाल को वलि प्रदान करे- मन्त्र है-
हूं औं क्षेत्रपालाय श्मशानवासिने शोणितास्थिप्रियाय ठः ठः।
क्षेत्रपाल को वलि देकर वक्रतुण्ड गणेश को वलि प्रदान करे-
मन्त्र- ए ग वक्रतुण्डाय हुं वलिं गृह्ण विघ्नं निवारय मे
सिद्धिं प्रयच्छ फट्।

इसके वाद शव के पैर को खोलकर साधक मदपान करके साधक प्रतिमा के हृदय में भगवती का ध्यान इस प्रकार करे- भगवती नग्न होकर खुले वालों से युक्त होकर शव पर बैठी हुई है खड्ग खप्पर धारण करने वाली शक्ति को इस प्रकार ध्यान करके कुलचक्र बनाकर कुलचक्र को कुल द्रव्य से प्रक्षालित करे और धूप दीप नैवेद्य से पूजन करना चाहिये। इसके वाद पंचभूतों को वलि प्रदान करे और फिर यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप करके समर्पित करना चाहिये। इसके वाद विपरीत रति (मैथुन) (यानी शव महाप्रेत के रूप (शक्ति) में रत भगवती का ध्यान करते हुए दश हजार बार जप करना चाहिये। ऐसा करने से साधक सभी सिद्धियों का मालिक बन जाता है। इस परिस्थिति में यदि साधक भयभी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होगा तो उसका विनाश होजाता है अतः डरना नहीं चाहिये
जब "देहि देहि" की वाणी सुनाई दे तो छाग
बलि (बकरे का मांस) प्रदान करनी चाहिये। बलिदान
के अतिरिक्त जीव हिंसा नहीं करनी चाहिये। इस प्रकार
पुरश्चरण करने से मन्त्रसिद्धि होती है।

मुण्डमाला नामक तन्त्र में तीसरे प्रकार से वीरसाधना
विधि इस प्रकार बताया गया है:—

युद्ध में मारे गये प्रेत को विधिपूर्वक लाकर आठों दिशाओं
में और मध्य में (कुल नौ) कील गाड़कर शव को
एक रस्सी से दृढ़ता पूर्वक अच्छी तरह से बाँधकर दृढ़ता
पूर्वक कीलित करके स्थिर कर दे। तत्पश्चात
चन्दन आदि से लिप्त करके सुगन्धित फूलों से
सुशोभित करके उसके मस्तक को सुसज्जित करके
शव के ललाट पर सुन्दर उपचारों से देवी की पूजा
करे और पूजन करके आठों दिशाओं में उड़द-पीस
देकर सुरा अथवा आसव – मधुयुक्त खीर – फूल और अक्षत
इन से युक्त बलि आठों दिशाओं में प्रदान करे
इसके बाद निर्भय होकर शव के हृदय पर साधक

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बैठे आसन व्याघ्रचर्म का तथा लालवर्ण का होना चाहिये इस प्रकार के आसन पर बैठकर पचास हजार जप करके पूर्ववत् बलि प्रदान करनी चाहिये। ~~अर्थात बलि [illegible] माँस के लोदे~~। बाघ-वानर-भालू-उल्लू-श्रृगाल-उल्कामुख आदि भयानक चीजों को देख कर भयभीत नहीं होना चाहिये और उसे केवल छलावा मानना चाहिये। उसके बाद माँगने पर यानी जिस चीज की बलि इष्ट मांगे उसी चीज की छाग आदि की बलि देनी चाहिये। उसके बाद प्रसन्न चित्त से शव को जल में फेंक कर ब्राह्मणों को विशेष रूप से साधक ब्राह्मणों को। और सुन्दर वस्त्र वाली स्त्रियों को कुमारियों को वस्त्र, गहना. देकर मीठा पदार्थ भोजन करावे और खुद भी करे। इस प्रकार कार्य करने से पृथिवी पर दुर्लभ महासिद्धि मिलती है। राज्य लक्ष्मी, सबसे उत्तम आनन्द मिलता है। शत्रु के राज्य पर जय मिलता है। जगत को मोहित करने वशीकरण आदि करने का सामर्थ्य उत्पन्न होता है। कविता करने में चतुर हो जाता है। शक्तिशाली बुद्धिमान दुश्मन

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी भाग जाता है रुद्र शत्रु की बात ही क्या है। साधक अनेक प्रकार की अष्टसिद्धियों का पात्र होता है।

हे देवि! यह जो कुछ मैंने बताया है उसे कभी प्रकाशित नहीं करना चाहिये। विशेष रूप से पशुओं की सभा में अत्यन्त गुप्त रखना चाहिये। यह रहस्य समस्त आगम शास्त्र का एकमात्र जीवन है।

वीरसाधन विधि सम्पूर्ण

जय माँ

(हृदय) 14.6.76

अपनी स्त्री एक गुना फल
वेश्या अधिक पुण्य देने वाली दस गुना फल। नर्तकी हो या योगिनी हो (धोबिन)
धोबिन बीस गुना फल दायक
नाइन तीस गुना फल दायिनी
चमाइन चालिस गुना फल दायक
चमाइन से बरणशंकर फल दायक (मिश्र जन्मा)
नीच कुलोत्पन्ना
चांडालिनी महापात्र की
मातंगी (~~मेहतरानी~~) श्रेष्ठ है (धोबिन)
मेहतरानी
अति सुन्दरी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माँ

अथ दूतीयाग विधि:

दूतीयाग की विधि से सुन्दर स्त्री से रमण करते हुए मन्त्र को जपकर साधक श्रेष्ठ तुरन्त सिद्धि को प्राप्त करता है। (रुद्रयामल)

जैसे पुरुष के विना प्रकृति कुछ नहीं करती है उसी प्रकार शक्ति के बिना देवता फल देने में समर्थ नहीं होता है। इसलिये पुरुष और शक्ति के संयोग से ~~[illegible]~~ मन्त्र को सिद्ध करे। (अन्य तन्त्र)

नटी (नर्तकी) कपालिनी (योगिनी) वेश्या, ~~[illegible]~~ (धोबिन), नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रकन्या, वरणशंकर गोपालकन्या, माली की कन्या, ये नौकन्यायें कहलाती हैं। इनमें से किसी एक को लाकर उसके योनिमण्डल में महादेवी की पूजा करके मैथुन करे। (कुमारी तन्त्र)

अब पूजा का फल कहता हूँ। ये एक के बाद एक श्रेष्ठ है। अपनी शक्ति से दस हजार गुना पुण्य अन्य शक्ति के पूजन में होता है। उससे वेश्या अधिक पुण्य देने वाली है। उससे अधिक धोबिन, धोबिन से नाईन श्रेष्ठ है। नाइन से चमाइन चमाइन से श्रेष्ठ हेतुनारी (वरणशंकर) हेतुनारी से नीच कुलोत्पन्ना, उससे श्रेष्ठ चाण्डाली उससे मातङ्गिनी महत्तरी मातंगी से पुष्कशी पुष्कशी से अन्त्यजा महत्तरी श्रेष्ठ है उससे भी अतिसुन्दरी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुन्दरी से भी श्रेष्ठ प्रेम और अनुराग करने वाली। इससे भी श्रेष्ठ उन्मत्ता शुभलक्षणा सामयिक आचरण को जानने वाली मन्त्रज्ञा भयवर्जिता चतुरा बिना प्रसव धारण की हुई धैर्य धारिणी स्वतन्त्रता से युक्त इन गुणों से सम्पन्न सभी तरह की स्त्री की पूजा करनी चाहिये। (देवीयामल)

ऋषि की कन्या, मदिरापान की हुई कन्या द्विजातियों की स्त्री, व्रत का आचरण करने वालो स्त्री, गुरुपत्नी, गुरु स्त्री, अपने गोत्र की, शरण में आई हुई, शिष्य की पत्नी, पापियों की स्त्री, अपुष्पिता, गर्भिणी, छोटे बच्चे वाली इन सभी को दूतीयाग के अयोग्य बताया है।

(महाकाल संहिता)

चाहे अपनी हो या परायी समस्त स्त्रियों को शक्ति मात्र को मन्त्र में अधिष्ठित देवता की बुद्धि से सभी उपचारों से पूजन करना चाहिये। अनेक प्रकार के फलों से, पान, वस्त्र, आभूषणं (स्वर्ण आदि के) से पूजा करके भक्तिपूर्वक अधिक से अधिक हेतु देना चाहिये। संभोग की वासना से युक्त होकर जो साधक शक्ति का पूजन करता है वह दरिद्र होजाता है और निश्चित रूप से नारकीय जीवन बिताता है।

(देवीयामल)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुल कर्म विलासिनी सुन्दरी युवती को लाकर दूतीयाग करना चाहिये। सोलह वर्ष की पीले एवं खड़े (उन्नत) स्तनों से युक्त उन्मत्ता मदमस्त मातङ्गी युवती को इस यज्ञ में लाना चाहिये। सदैव चंचल रक्त नयनों वाली, मृग के बच्चे के समान आँखों वाली हरिणी जैसी, मृदु मुस्कान वाली, काम-क्रोध-लोभ-दया-दम्भ और पाखण्ड से हीन, अपने धर्म पर चलने वाली, सत्य बोलने वाली सदैव पवित्र रहने वाली, वेश्या, नर्तकी, चाण्डाली, जीविनी जार से उत्पन्न होने वाली, योग मुद्रा धारण करने वाली, गोपी, चमाइन, चित्रिणी चतुर्वर्ण से युक्त पर्वत पर उत्पन्न होने वाली श्रेष्ठ शक्ति को ग्रहण करना चाहिये।

(वीरचूड़ामणि)

स्नान की हुई, दिव्य वस्त्र धारण करने वाली, अनेक प्रकार के आभूषणों से विभूषित, युवती, पीन (मोटे) स्तनी, आकृति के अनुसार भोजन करने वाली श्रेष्ठ शक्ति को हाथ से पकड़कर बाईं जाँघ पर बिठाये। यदि भार ढोने में साधक असमर्थ हो तो बाँईं ओर आसन पर बैठाना चाहिये। (महाकाल)

बाँयीं तरफ वृत्त में कमल बनावे कमल को सफेद लाल और नीले सिन्दूर से सुशोभित करके त्रिकोण बनाये। उसके बाद साधक पूरब की ओर मुँह करके पश्चिम की

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुख की हुई देवी की जप करे। पीठशक्ति में बताई गई विधि से नौ शक्तियों की पूजा करनी चाहिये। नौ शक्तियों के नाम हैं — रति - प्रीति प्रिया - कान्ति - कामिनि - काममालिनी - कन्दर्प दलिनी - दुर्गा - भाविनी।

ह्रूँ सँ महाप्रेताय नमः ह्रीं भुवनेश्वरि एहि एहि

इस मन्त्र से चरणपादुका को बार बार पकड़ कर बायें हाथ से पकड़ कर आसन पर अपनी इष्टदेवता को बैठाये।

(वीर चूड़ामणि)

रक्तचन्दन से लिप्त अङ्गोवाली, लाल फूल से विभूषित, सभी अलंकारो से युक्त वस्त्र विहीना की पूजा करनी चाहिये। मदिरा से मतवाली हाव-भावों से युक्त पूर्ण तृप्ति पर्यन्त मदिरा पान कराये। और गुफा में बैठी हुई रक्त वर्णवाली हाथी के मस्तक के समान कान्तिवाली भुवनमोहिनी विद्या का ध्यान करना चाहिये। उसके बाद भग पर निम्नलिखित मन्त्र को जपने के बाद फूल चढ़ावे. मन्त्रः —

ऐं नमः, मदनमन्दिराय नमः इसके बाद कुल द्रव्य से प्रक्षालित करके गन्ध-पुष्प से पूजन करना चाहिये। धूप दीप आदि देकर आवरण-पूजा करनी चाहिये। आवरण पूजा का क्रम यह है:— इच्छा - ज्ञाना - क्रिया - वामा -

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज्येष्ठा- रौद्रिका- रति- प्रीति- पुष्पबाण धारी कामू, पुरुष पत्ते एवं मंजरी युक्त वसन्त की पूजा करनी चाहिये। भौंरे से युक्त चिकुर की पूजा करनी चाहिये। नाभि में ब्रह्मा, हृदय में शंकर, स्तन पर विष्णु और मुख पर त्रिमूर्ति की पूजा करनी चाहिये। ~~दोनों भौंहों के बीच में~~ कामेश्वरी- विश्वेश्वरी और भगमालिनी की पूजा करके पञ्चबाण की पूजा करनी चाहिये। पञ्चबाणों के नाम हैं- द्राविणी- क्षोभिणी- वशीकरणी- आकर्षिणी- संमोहिनी इन पाँचों की पूजा इस प्रकार करनी चाहिये:-

दोनों भौंहों के बीच में- द्रां द्राविण्यै नमः, मस्तक पर- द्रीं क्षोभिण्यै नमः, मुख पर क्लीं वशीकरण्यै नमः, गुह्य स्थान पर- ब्लूँ आकर्षिण्यै नमः, हृदय पर सः संमोहिन्यै नमः। क्रमशः इसे करे इसी को बाण पूजन कहा जाता है। कानों के चक्र में सूर्य और चन्द्रमा का क्रमशः पूजन करना चाहिये। जीभ पर वह्नि (अग्नि) (वह्न्यै नमः) की पूजा करनी चाहिये। नेत्र पर नक्षत्र- मालिनी की (नक्षत्रमालिन्यै नमः) का पूजन करना चाहिये। नाक पर प्राण की, आज्ञाचक्र पर त्रिपथगामिनी की

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

~~शुद्धपत्र~~

मस्तक पर अक्षोभ्य की पूजा करके गन्ध पुष्प आदि का उपहार देवे और गरदन में फूल की माला पहना कर यथा शक्ति जप करना चाहिये।

(वीर-चूड़ामणि)

पाँचवाँ हाथी दाँत एवं सोना चाँदी आदि की बनाई हुई। शुद्ध रेशमी वस्त्र से निर्मित तूलिका (~~तकि~~ शय्या) स्थापित करे। पुष्प और कर्पूर की बुकनी उसके बीच में डाले। तत्पश्चात् मण्डूक आदि का पूजन करे। सबसे पहले मण्डूक की पूजा करनी चाहिये उसके बाद कालाग्नि के समान रुद्र, आधारशक्ति, कूर्म, अनन्त, वराह, पृथिवी, कन्द (जड़), नाल (डण्ठल) कमल, दल (पत्र), केशर, और भ्रमर की पूजा करके कर्णिकाओं का पूजन करे। चारपाई की पूजा करके उसके चारों पावों पर धर्म-ज्ञान-वैराग्य तथा ऐश्वर्य की पूजा क्रम से करे। उन पावों के पास अपूर्व धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य आदि की पूजा करके आत्मा-अन्तरात्मा परमात्मा और ज्ञानात्मा का पूजन करना चाहिये। इसके बाद चारपाई के अग्रभाग में तीनों गुणों (सत्व रज तम) की पूजा करनी चाहिये।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ड्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः

सुलक्षणा, रमणीया, सभी लक्षणों से युक्त, नाना-नाना प्रकार के अलंकारों से सुन्दर, अपने वश में स्थित शारदा के समान दूती की पूजा ~~कर~~ कामदेव के पाँच बाणों से करनी चाहिये। कामदेव के पाँच बाण ये हैं: ~~कमल, अशोक, आम, नवमल्लिका, ...~~ पूजन बटुक - - - आदि की पूजा चारों तक दिशाओं में ~~इसके~~ सिद्धि के लिये करनी चाहिये। सके शरीर में ड्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः इस मातृका की की स्थापना करनी चाहिये। मस्तक में त्रिकोण की स्थापना करके क्रमशः पूजन करे। साथ त्रिकोण के बीच में बाला नामक कामेशी की पूजा करे। तीनों कोणों पर गणेश - लक्ष्मी और सरस्वती पूजा करे। स्तनों पर वसन्त और मदन की पूजा करे। मुख में कलाधर की पूजा करे। ऐं क्लीं सौः श्रीं क्लीं सः हं सः क्लीं आधारशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः इस मन्त्र [illegible] ललाट पर त्रिकोण सिन्दूर आदि से अच्छी तरह लिखकर बटुक - योगिनी - क्षेत्रपाल गणेश लक्ष्मी सरस्वती का पूजन करना चाहिये। क्लीं ~~...~~ कामराज श्री पादुकां पूजयामि →

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(पीछे लिखा)
इस मन्त्र से दाहिने पैर के नीचे पूजन करे। फिर बाँये हाथ में ॐ वसन्तं श्रीपादुकां पूजयामि इस मन्त्र से न्यास करे। ह्सौं लोमपादं श्रीपादुकां पूजयामि इस मन्त्र से दोनों स्तन की पूजा करनी चाहिये। इस प्रकार आरोहण (ऊपर से नीचे) क्रम से कामकला का न्यास करे।

(ज्ञानार्णव से)

पैर, गुल्फ, जाँघ, भग, नाभि, दोनों स्तन, हृदय, कण्ठ, कांख, दोनों ओठ, गला, दोनों नेत्र और क्रम शिर और सम्पूर्ण शरीर में स्थित क्रम से काम का वास करना चाहिये। ये काम के स्थान बताये गये हैं। [समदीपिका से]

श्रद्धा, प्रीति, रति, धृति, शान्ति मनोहरा, मनोरमा, मनोरामा मदनोन्मादनी मोहिनी दीपिनी शोषिणी वशङ्करी रञ्जिनी सुभगा वशङ्करी। अकारादि १६ स्वरों के क्रम से इन कामकलाओं की पूजा करनी चाहिये। इसी प्रकार अकारादि स्वरों से क्रमशः लोम कलाओं का भी पूजन करना चाहिये। १६ सोमकलाओं

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के नाम इस प्रकार हैं - पूषा- अर्यमा- सुमनसा- रति- प्रीति- धृति- ऋद्धि- सौम्या - मरीची अंशुमालिनी अंगिरा - शशिनी- छाया - संपूर्ण- मण्डला - पुष्टि - अमृता

काम कला और सोम कला का पूजन करने का क्रम है दाहिने पैर से लेकर मस्तक तक काम कला का पूजन करे और वाम मस्तक से प्रारम्भ करके बायें पैर तक यथा स्थान ~~तक~~ पूजन करे।

(तन्त्र ग्रन्थ से)

पृष्ठवंश से लेकर (यानी गरदन पर) शिव पर्यन्त 'ऐं' बीज का न्यास करे। और मस्तक पर निम्न मन्त्र से न्यास करे —

क्लीं श्रीपादुकां पूजयामि

मस्तक- पैर- मुख- गुह्य और हृदय में क्रमशः पंचबाणात्मक बीजमन्त्र से पूजन करे। द्रां द्रावणबाण श्रीपादुकां पूजयामि (इति मस्तके), द्रीं उन्मादबाण श्री पादुकां पूजयामि (इति पादयोः), क्लीं मोहबाण श्री पादुकां पूजयामि (इति मुखे), ब्लूँ संदीपनबाण श्री पादुकां पूजयामि (इति गुह्ये), सः शोषणबाण

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीपादुकां पूजयामि (इति हृदये) इस प्रकार पञ्चबाण का न्यास करके। ललाट पर त्रिकोण की पूजा करे। ऐं [भुभग?] श्री पादुकां पूजयामि यह कहकर दक्षिण रेखा पर पूजन करना चाहिये। ह्रीं भगाय श्रीपादुकां पूजयामि यह कहकर पश्चिम रेखा पर पूजन करे। क्लीं भगसर्पिणि श्रीपादुकां पूजयामि यह कहकर बायीं रेखा पर पूजन करे। ह्सौः भगावहाय श्रीपादुकां पूजयामि यह कहकर त्रिकोण के बीच में पूजन करे। श्री उड्डीश देवी उड्डीश्वरी नाथ देव श्री स्तम्भा श्री चर्यानाथ श्री पादुकां पूजयामि इस उड्डीयान (भ्रिकुटी और कपाल के बीच) में पूजन करे। हृदय में श्री जालन्धर महापीठ श्री जालेश्वरी श्री जालीश्वरी देवी जालीश नाथ देव श्री जालम्बा श्री बक्कीश नाथ देव श्री पादुकां ~~[illegible]~~ पूजयामि इस मन्त्र से हृदय पर पूजन करे। नाभिमण्डल में श्री पूर्णेश्वरी देवी श्री पूर्णनाथ देव श्री चामुण्डा देवी श्री उड्डीश नाथ देव श्री कामेश्वरी देवी श्री कामेश्वरानन्द नाथ श्री तुष्टाम्बा श्री मित्रीश नाथ श्री पादुकां पूजयामि यह कहकर पूजन करे। उसके बाद देकर यानी (भग में लिं... ...ों पूजन करें। ... उपस्थ)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शक्ति का सम्पूर्ण शरीर पूर्णगिरि पीठ माना गया है। उस का शिर उद्यान (बाग-बगीचा) है। स्तन जालन्धर पीठ है और कामाख्या योनि है।

(तन्त्रान्तर से उद्धृत)

गुह्य पीठ के बाँये भाग में गुरुपंक्ति का जप करना चाहिये। ... ह्रीं क्लीं ब्लूं सः इस मन्त्र हृदय कमल पर यत्न करे। ... क्लौं ब्लौं ब्लूं: कहते हुए योनि मुद्रा दिखा कर योनि में क्षोभ उत्पन्न करना चाहिये। ऐं कामराज ग्रीं ... इस क्षोभिणी विद्या से स्तनों को क्षुब्ध करे। उसके बाद ऐं स्फ्रुँ ब्लैं ब्लौं ब्लैं क्लौं ह्रीँ लूँ नामक द्राविणी नामक विद्या का योनि के मध्य में चिन्तन करे। उसके बाद अत्यन्त आनन्दित होकर भरे हुए ... मन से अपनी विद्या का बीज मन्त्र मस्तक में (सहस्रार ...र) और योनि के बीच में मूल मन्त्र से तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करके क्षोभ उत्पन्न करे।

(तन्त्रान्तर से उद्धृत)।

दूती के देह में किये गये सभी न्यास अपने शरीर में भी करना चाहिये।

(ज्ञानार्णव)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने शरीर पर किये जाने वाले न्यासों का बताया
जा रहा है। अपने आपको शिव रूप समझे।
पाँच मुख वाले महादेव का न्यास करना है इसका
करना चाहिये। विधि इस प्रकार है :-
ॐ सर्व विद्यानाम् ईशानम् शा[illegible]नी विन्यसा[illegible]
सर्वभूतानां ईश्वरम् अंगदां विन्यसामि। [illegible]
ब्रह्मणोऽधिपति ब्रह्मा सदाशिवो मे [illegible]
ॐ सदाशिव मरीचिमा[illegible]लनी तत्पुरुषाय विद्महे [illegible]
तत्पुरुषाय विद्महे (विद्यानामक कला) [illegible]
तन्नो रुद्रः प्रतिष्ठां (कलां) विन्यसामि। पूर्व [illegible]
और उत्तर दिशाओं में क्रमशः न्यास करे।
हृदय में - अघोरेभ्यः तमः कलां विन्यसा[illegible]
ग्रीवा में - अघोरेभ्यो मोहनां कलां विन्यसा[illegible]
दाहिने कन्धे पर - ~~[illegible]~~ घोरेभ्यः क्रियांकलां वि[illegible]
बायें कन्धे पर घोरतरेभ्यो निद्रां कलां विन्यसा[illegible]
नाभि पर — सर्वतः सर्वेभ्यः व्याधिंकलां विन्य[illegible]
कोख पर - सर्वेभ्यः मृत्युकलां विन्यसा[illegible]
पीठ पर - नमस्तेऽस्तु क्षुधांकलां विन्यसा[illegible]
गुह्य स्थान पर - रुद्र रूपेभ्यः तृषास्तारेभ्यो नमः अ[illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(?)यो नमः वामदेवाय नमः विरजां कलां विन्यसामि ।

दक्षिण मुष्क पर - ज्येष्ठाय वै नमः रक्षां विन्यसामि

वाम मुष्कपर - रुद्रायनमो रतिं कलां विन्यसामि

दाहिनी जाँघ पर - कालाय नमः पालिनीं कलां विन्यसामि

~~कलाकामां विकरणाय नमः संयमनीं कलां~~

~~विन्यसामि~~।

बाईं जंघा पर - कालाय नमः कलाकामां विन्यसामि

दाहिनी पिण्डिली पर - विकरणाय नमः संयमिनीं कलां विन्यसामि

बाईं पिण्डली पर - विकरणायनमः बलक्रियां विन्यसामि

दाहिनी स्फिचि पर - विकरणाय नमः वृद्धिं कलां विन्यसामि

बाईं स्फिच पर - बलप्रमथनाय नमः रात्रिं कलां विन्यसामि

दाहिने कमर पर - सर्वभूतदमनाय नमः ब्राह्मणीं कलां विन्यसामि

बाईं कमर पर - सर्वभूतदमनाय नमः मोहिनीं कलां विन्यसामि

दक्षिण पार्श्व पर - उन्मनाय मनो ज्वराम् विन्यसामि

इसके बाद दोनों पैर, दोनों स्तन, नाक, मस्तक, दोनों भुजाओं पर निम्नलिखित प्रकार से आठ कलाओं का न्यास करे।

दाहिनी पैर पर ~~(?)~~ ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि ~~नमः~~ सिद्धिं कलां विन्यसामि

बाईं पैर ~~(?)~~ पर - ॐ सद्योजाताय वै नमः वृद्धिं कलां विन्यसामि

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दाये स्तन पर — ॐ भवाय नमः श्रुतिं कलां विन्यसामि
बायें ,, — ॐ अभवाय नमः लक्ष्मीं कलां विन्यसामि
नाक पर — ॐ नाभिभवाय नमः मेधां कलां विन्यसामि
मस्तक पर — ॐ भवस्व माम् नमः प्रज्ञां कलां विन्यसामि
दाहिनी भुजा पर — ॐ भवाय नमः प्रभां कलां विन्यसामि
बायीं भुजा पर — ॐ उद्भवाय नमः स्वधां कलां विन्यसामि

इस प्रकार न्यास करके अपने आपको शिव स्वरूप समझे।

पंचाक्षर के साथ रुद्र के ध्यान में तल्लीन होकर समानता का अनुभव करके रक्षा के लिये कवच का पाठ करे। क्षोभिणी मुद्रा बनाकर यन्त्र (योनि) के बीच में डाल दे।

भग (योनि) कुण्ड में लिंग रूपी स्रुवा से वीर्यादि सम्पूर्ण तत्त्व को निकालकर हजार बार जप करना चाहिये।

(वीरचूडामणि)

धूप दीप आदि दिखाकर अपने लिङ्ग में दशार्ण विद्या से शिव का पूजन करे। दशार्ण मन्त्र इस प्रकार है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दशार्ण मन्त्र — त्रां ह्रीं ह्रें (सौः) नमः शिवाय इस मन्त्र से लिङ्ग में शिव की पूजा करे।

तत्पुरुषाय नमः निवृत्तिं पूजयामि, अघोराय नमः प्रतिष्ठांपूजयामि, सद्योजाताय नमः विद्यां पूजयामि। वामदेवाय नमः शान्तिं पूजयामि। ईशानाय नमः शान्त्यतीतं पूजयामि। इससे लिंग का पूजन करके छह आवरणों की पूजा करे। समग्र विद्या (दश महाविद्याओं के बीज मन्त्रों का उच्चारण) करके नन्दिकेश का पूजन करे। नन्दिकेश का पूजन दोनों अंडकोष के मध्य में करे। नन्दिकेश को जितेन्द्रिय साधक सुन्दर मन से धूप गन्ध पुष्प अक्षत आदि चढ़ाये। सभी संक्षोभिणी मुद्रा को दिखाकर योनि को संचालित करे। योनि का संचालन क्षोभिणी अथवा गज तुण्डी नामक मुद्रा से भी किया जा सकता है इसके बाद भगमाला पढ़े। भगमाला मन्त्र इस प्रकार है— ऐं भगे भगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगप्रान्ते योनि प्रान्ते भगान्तके निपातिनि सर्वान्ते भगवशङ्करि भगरूपे नीरजायत लोचने

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नित्यक्लिन्ने भगप्रान्ते स्वरूपे भगानि मे ह्यानय
वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय
द्रावय सर्वसत्त्वान भगेश्वरि अमोघे भगविच्चे
क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरी ऐं ब्लूँ जं
मैं ब्लूँ मौं ब्लूँ हैं ब्लूँ हैं क्लिन्ने सर्वभगा-
नि मे वशमानय स्त्रीं ह्रीं ब्लें ह्रीं ह्रीं " इसे
भगमालिनी विद्या कहते हैं। इसके बाद 'द्रीं' कहते
इस द्राविणी बीज का उच्चारण करते हुये जब तक वीर्य निकले तब तक धैर्य से मैथुन करे। (ज्ञानार्णव से उद्धृत)

धर्म और अधर्म रूपी हवि को आत्मा रूपी अग्नि में
मन रूपी स्रुवा से सुषुम्णा नाड़ी के रास्ते से
~~प्रति~~ नित्य अक्षवृत्ति से हवन करता हूँ इस प्रकार
की भावना बनाकर इसी आशय का निम्नलिखित
महामन्त्र पढ़े —

धर्माधर्म हविदीप्ते आत्माग्नौ मनसा स्रुवा।
सुषुम्णावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तिर्जुहोम्यहम् स्वाहा॥

यह महामन्त्र पढ़ के जप करे प्रिया स्त्री ~~के~~ से रमण
करते हुए त्रिभुवनेश्वरी का जप करे।
(वीर तन्त्र)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लिङ्ग डालकर इष्टदेवता का ध्यान करके दश हजार, अथवा एक हजार वार विना वीर्य गिराये जप करे। जपकरने के बाद विधिपूर्वक उस स्त्री को बलि प्रदान करके उसकी पूजा करके भोजन कराकर नमस्कार करके विसर्जन करे और उसे घर पहुँचा दे। इस प्रकार करने से तीनों लोकों में दुर्लभ सिद्धि मिलती है इसमें कोई सन्देह नहीं। ब्रह्मा ने इसे कहा है।

(भूतडामर यक्ष डामर से उद्धृत)

प्रकाशाकाश हस्ताभ्यां अवलम्ब्योन्मनी स्रुचा।
धर्माधर्मौ कलास्नेहं पूर्णवह्नौ जुहोम्यहं स्वाहा

इस मन्त्र से आदि में आहुति दे यानी इस मन्त्र को पढ़ कर मैथुन प्रारम्भ करे और मैथुन के अन्त में भी इसी मन्त्र से पूर्णाहुति भी दे

(कुलामृत से)

कुछ लोगों का कहना है कि यह मन्त्र ~~के बाद~~ का उच्चारण वीर्य त्याग के बाद ही करना चाहिये

(वीरतन्त्र से)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अदीक्षित शक्ति शोधन

यदि शक्ति अदीक्षित हो तो उसे शुद्ध करना चाहिये- रतिकाल में अभिषेक करके कानों में मन्त्रों का उच्चारण करने से और दीक्षा काल में भी इसी प्रकार मन्त्र के सुनने से कन्यायें शुद्ध होजाती है। (कुलतन्त्र से)

मदिरा, वीर्य और जल से भी कन्या शुद्ध हो जाती है। (कुलतन्त्र)

जो शक्ति दीक्षित है वही शुद्ध मानी गई है। अदीक्षित शक्ति को मायाबीज दे देवे। (यामलतन्त्र)

दीक्षा देने मात्र से ही स्त्रियां सभी कर्मों में सिद्ध हो जाती हैं। (मातङ्गी तन्त्र)

अदीक्षिता शक्ति के संग से सिद्धि नहीं होती है। सबसे पहले 'वं ~~[illegible]~~ त्रिपुरायै नमः' ~~[illegible]~~ इस शक्ति से कहे। ऐसा न करने से लोक में निन्दा होता है।

इस प्रकार शक्ति का आलिङ्गन करने से रोग का नाश, चुम्बन करने से धन धान्य की प्राप्ति नख एवं दाँत आदि गड़ाने से मोक्ष की प्राप्तिहोती है। संगम (मैथुन) करने से सायुज्य की प्राप्ति होती है। (आगमत दीपिका)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसके अंगों के स्पर्श से सुख की प्राप्ति संयोग से अमृत की उपलब्धि होती है इसलिये संयोगामृत रूपिणी कामकला का ध्यान करना चाहिये। संयोग करने से परमानन्द युक्त सुख की प्राप्ति होती है। कुल द्रव्य को यत्न पूर्वक संग्रह करे क्योंकि यह अति दुर्लभ होता है।

" कुण्डगोलक में प्रहार करने का प्रकार कुलार्णव में इस प्रकार बताया है- कामभाव से ध्यान करके आत्म तत्व को न त्यागे। शुद्ध मन्त्र और औषधियों से योनि का मंथन करे। उसके मथने उत्तम तत्व योनि से उत्पन्न होता है।

मन्त्रौषध के बारे में कहते हैं—

योनि मंथन मंत्र— ह्रीं आगच्छ शुक्र स्तम्भन कारिणि ठः ठः इस मंत्र से सूर्य ग्रहण पर चम्पा की जड़ को उखाड़ कर लाये। ७४।

क्षेत्रकीलन = पीपल की एक बालिस्त की दस डंडी बनाले। और यह मंत्र से उन डंडियों को अभिमन्त्रित करले। (ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्) १०८ बार बोलके। और दशों दिशा में गाड़ दे। जहां बैठे जप करने। और यह स्तुति के ये चात्र विघ्न कर्तारो भुवि दिव्यन्तारिक्षगाः॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धि[illegible] अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे" (सुदर्शन मन्त्र से ही डंडियों को पूजा करना

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

॥ स्थान शोधन ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहां पर सिद्धि करना हो पहले वहां का स्थान शोधन करना चाहिये ॥ अपने हाथमें पीली सरसों काले तिल चावल तीनों मिले हुऐ ले कर यह मन्त्र बोले ॥

(ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थान माश्रित्य सर्वदा ॥ स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ अपसर्पन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेत राक्षसाः । ये चात्र निवसन्त्यन्ये देवताः भुवि संस्थिताः ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ये भूता विघ्न कर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ (यह बोल कर चारों तरफ सब सरसों आदि बिखेर देना चाहिये) फिर बांई एड़ी से भूमी पर तीनबार आघात करना चाहिये ॥ फट् फट् फट् ॥ तीनों बार बोल देना चाहिये ॥

फिर फट् ३ ॥ तीन बर कर कर अन्तरिक्ष में चारों तरफ देखे ॥ ईशान कोंण में एक दीपक तेल का जला के पुष्पांजलि दे देना चाहिये ॥ (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्वादश शक्ति युक्ताय दीपनाथाय नमः) यह मन्त्र बोल कर पुष्पांजलि दे दे ॥

(ॐ अग्नि प्रकाराय नमः । ॐ सहस्त्रसार हुं फट् । सुदर्शन प्रकाराय नमः ॐ श्लीं पशुं हुं फट् पशुपति प्रकाराय नमः । इन मन्त्रों को पढ कर चारों तरफ चुटकी बजादे ॥

फिर भैरव से आज्ञा लेना चाहिये हाथ जोड़ कर पुष्प हाथ में लेके प्रार्थना करे ॥ तीक्ष्ण दंष्ट्र महा काय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यं नुज्ञां दातुं मर्हसि ॥

॥ आसन शोधन ॥ जल छिड़के

जमीन में हाथ रख के बोले ॥ (ॐ पवित्र वज्र भूमे हुं फट् स्वाहा) फिर आसनपूजन २ (ॐ ह्रीं आधार शक्तिये कमलासनाय नमः) कहकर एक त्रिकोण के बीच में पूजन करे जहां बैठना हो। (पहले कुशासन कम्बल) फिर अपना लाल आसन बिछावे । पहले कुशासन बिछाना चाहिये फिर काला कम्बल फिर लाल आसन धरे त्रिकोण में तीन देवता पूजन होंगे। नीचे देखो। इसी तरह तीनों आसनों का पूजन होगा। तीनों मन्त्रों से तीनों देवताओं का

ॐ कूर्मासनाय नमः (पृथ्वी पर यह मन्त्र)

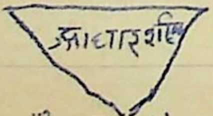

ॐ पृथिव्यै नमः

पहले कुशाशन में
ॐ अनन्तासनाय नमः
कम्बल में
ॐ विमलासनाय नमः
लाल आसन में
ॐ पद्मासनाय नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ चौसठ योगिनी ॥

(१) गजानना (२) व्याघ्रमुखी (३) काकतुण्डी (४) उष्ट्रग्रीवा (५) वाराही (६) गृधास्या (७) शरभानना (८) उलूकी (९) शिवानना (१०) मयूरानना (११) विकटानना (१२) वानरानना (१३) विकट लोचना (१४) उष्ट्रवक्त्रा (१५) कोटराक्षी (१६) कुब्जा (१७) शुष्कोदरी (१८) शवदंष्ट्रा (१९) भृशाक्षी (२०) केकराक्षी (२१) बृहत् तुण्डा। (२२) सुराप्रिया (२३) कपाल हस्ता (२४) रक्ताक्षी (२५) शुकी २६) श्येनी (२७) कपोतिका (२८) पाश हस्ता (२९) दण्ड हस्ता) (३०) प्रचण्डा (३१) चण्ड विक्रमा (३२) शिशुघ्नी (३३) पापहन्त्री (३५) काली (रुधिर पायनी) (३६) कंकाली (३७) गर्भभक्षा (३८) शवहस्ता (३९) मुण्डमालिनी (४०) बृहत्कुक्षी (४१) भैरवी (४२) मुक्त केशी) ४३) ऊर्ध्व केशी) ४४) प्रेत वाहिनी (४५) वृषानना (४६) व्यालास्या (४७) धुम्र निःश्वासा (४८) रौद्र वेताली (४९) व्योमैक चरणे (५०) ऊर्ध्वाक्षी (५१) अधोमुखी (५२ कामुकी (५२) प्रेतभक्षिणी (५३) अघोरनी (५४) कपालिनी (५५) यमदूती (५६) महामारी (५७) मार्जारी (५८) विद्युतप्रभा (५९) कटपूतना (६०) अट्टहासा (६१) कामाक्षी (६२) मृगाक्षी (६३ मृगालोचना (६४) भुवनेश्वरी।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बटुक बलि विधि = संकल्प पाद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारत खण्डे आर्यावर्ते आर्यावर्तान्तर गत (अमुक नगर) अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक योगे अमुक अमुक सम्वत्सरे अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा २ स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गण विशेषण विशिष्टायां अहं कमला सरकार नामाहं शाम्भव गोत्रोत्पन्नं यजमानस्य संकल्पोक्त फलावाप्तये श्री दुर्गा देव्याः पुरश्चरण सिद्धये चतुर्दिक्षु वटुकादि देवताभ्यो दधिमाषान्नद्रव्यैः पंचमहाभूत बलिदान करिष्यामि ॥

एक भूमि में सिन्दूर से यन्त्र बनावे (विन्दु त्रिकोण वृत्त चतुरस्त्र)

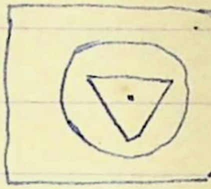

इस विन्दु की पूजा करके बलि के लिये पत्तल रक्खें फिर (

ॐ वं बटुक बलि द्रव्याय नमः कह कर पात्र पूजन करे (पत्तल पूजन)

पूर्व में बटुक पूजन और बलि पत्तल रक्खी जाती है। ॐ वं बटुकाय नमः मन्त्र से पूजन करे ॥ स्तुति = पुष्पांजलि ॥ (पूजा) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एह्येहि देवि पुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्न नाशाय २ सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा। बोल कर बलि द्रव्य वांये अंगुठे अनामिका से उठा २ कर पत्तल पर धरे। दाहिने हाथ से जल पत्तल पर किनारे गिरावे स्तुति ॥ ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती ॥ क्रतुसमय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति बटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्व सिद्धिदः शान्ति करोति मे नित्यं भूत वेताल सेवितः ॥ पुष्पांजलि दे। यह बटुक बलि का बिधान है।

प्राणप्रतिष्ठा = ॐ अस्य प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मा (विष्णुरुद्रा) ऋषियः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि प्राण शक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं अस्मिन यन्त्रे प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ (कहकर जल छोड़दे) ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं सः ह्रीं ॐ अस्य मन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ फिर आं ह्रीं क्रों अस्य मन्त्रस्य जीव इह स्थितः। फिर आं ह्रीं क्रों अस्य मन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राणा इहागत्य इहैव सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्ताम् ॐ प्रतिष्ठ ॥ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते। सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥ अस्मिन यन्त्रे यन्त्र देवता

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चिता साधन [illegible] ओं गे। इसमें चार साधन होते हैं (अस्थि साधन) (कोमल साधन) (सव साधन) (लता साधन) (चिताला

मूल मन्त्र के अन्त में फट् लगा कर भूमि प्रोक्षण करे। जैसे

(ऐं क्लीं सौं फट्) कह कर भूमि को सामन्य जल से छिड़के।

गुरु के चरणों का ध्यान करे। (ऐं अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः) पश्चात् गणेश जी का ध्यान पुजा करे (नानाभूषण भूषितं त्रिनयनं लम्बोदरं तुन्दिलं प्रोद्यत् कोटि दिवाकर द्युति निभं मतङ्ग वक्त्रोज्ज्वलं। विद्याढ्यं दस बाहु मेकदशनं राकेश भालस्थलं गं गणपतये

बटुक ध्यान = पुजा"

श्रोत्र प्रोत सुकुण्डलं त्रिनयनं दण्डं। त्रिशूलायुधं। भूषापुंज विराजमानव पुरुषं कर्पूर पुञ्जोज्ज्वलं। बालं श्री बटुकं प्रसन्नवदनं स्वच्छाम्बरोल्लासितं। वं बटुकाय नमः

६४ योगिनी का ध्यान पुजा = नाम पिछले पेज़ में देख लो॥

योगिन्यो मद मन्थराः कुलपराः स्मेराननां भोरुहा। रक्ता लेपन वस्त्र भूषणधराः कार्तस्वरो द्भास्वरा॥ स्वच्छा कार सार चतुराः प्राज्य प्रमोदान्विताः। यां योगनिभ्यो नमः॥

१६ मात्रिकाओं का ध्यान पूजन करे॥

गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया। देव सेना, स्वधा, स्वाहा, मातरो, लोक मातरः। धृष्टि पुष्टि तुष्टि कुल देवता। श्री षोडश मात्रिकायै नमः॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताराजी को बीच में स्थापित करे

ॐ ह्स्त्रों श्मशानाधिपति

ये चात्र संस्थिता देवा राक्षसाश्च भयानकाः॥ पिशाचाः सिद्धयक्षाश्च गन्धर्वाप्सरसांगणाः। योगिन्यो मातरो भूताः सर्वाश्च खेचरस्त्रियः॥ सिद्धिदास्ता भवन्त्वत्र तथा च मम रक्षकाः॥ बोल कर पुष्पांजली तीन दे॥ फिर प्रथम, श्मशानाधिपति का ध्यान करे पूजा करे॥ (चारो दिशा में
तारा के उत्तर में

भैरव का ध्यान करे पूजा करे = पूरब में

काल भैरव का पश्चिम में

महाकाल का। दक्षिण में

चारो दिशा में चारों का पूजन करके कहे।

श्मशानाधिपति इमं सामिषान्नं बलिं गृहण २ गृहणापय २ विघ्न निवारणं कुरु सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा॥

ह्रीं

॥ पूर्व में ॥

भैरवनायक इमं सामिषान्नं बलिं गृहण २ गृहणापय २ विघ्न निवारणं कुरु सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा॥

दक्षिण में :- हूं महाकाल इमं सामिषान्नं बलिं गृहण २ गृहणापय २ विघ्न निवारणं कुरु सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पश्चिम में = ॐ ह्यों कालभैरव इमं सामिषान्नं बलिं गृहण २
गृहणापय २ विघ्न निवारणं कुरु सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा॥

चिता मध्य में तीन बली दे = श्मशानेश्वरी को
क्लीं काल रात्रि महाकालि कालिके घोर निःस्वने गृहाण
इमं बलिं मातर्देहि मे सिद्धिं उत्तमाम् हूँ कालिकायै स्वाहा।

भूत नाथ को बलि दे ध्यान करे पूजन करे।
ॐ ह्यों भूतनाथ श्मशानाधिपति इमं बलिं गृहण २ स्वाहा॥

सर्वगणनाथ को =
हूं सर्व गणनाथाधिपते इमं बलिं गृहण २ स्वाहा॥

पश्चात = पंचगव्य से अस्थियों को प्रोक्षण करके बट कैप लोंके
नीचे ((ॐ ह्रीं आधार शक्तिये नमः) लिख कर पुजन करें
हसौं लिख देना

चाहिये

साधक अस्थियों को पंचगव्य से सोधन जब करले तब जहां
चिता जलती हो वहां पश्चिम की तरफ जमीन में (ह्रीं आधार
शक्तिये नमः सिन्दुर से लिख दे उसका पुजन करले फिर

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिस जगह साधन [illegible] को (ॐ फट्) बोल कर ३ बार जल छिड़क दे।। ॐ आसुरेरवे वज्र रेरवे हुं फट् स्वाहा।। बोल कर यंत्र लेखे जब भी लिखे, और उस यन्त्र का पहले पूजन करदे ॐ ह्रीं आधार शक्तिये नमः बोल कर। तब अपना आसन बिछावे।। उस आसन के चारो कोनो पर ४ ~~दिक् का पूजन करदे (आग्नेय में गणेश नैऋत्य में सरस्वती वायव्य में क्षेत्रपाल। ईशान में~~ दुर्गा जी
प्रत्येक का विनियोग, आचमन → न्यास ध्यान सब करे।

बट वृक्ष का पत्तल बनाले उसे आधार शक्ति पर स्थापित करे। बीच पत्ते पर (ह्सौं) लिख दे। उसपर आसिये बिछादे। फिर उसपर कम्बल बिछा दे। और कम्बल पर ही श्री भुवनेश्वरी जी, अथवा श्री महाकाली जी पूजा पंचोपचार से कर दे। फिर आसन पर थोड़ी देर बीरासन से बैठ कर आठ मिट्टी के ढेले हाथ में लेकर १०८ बार यह मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ले। नीचे लिखा हैं।

(हुं हुं क्लीं क्लीं कालिके घोर दंष्ट्रे प्रचण्डे चण्ड नायिके दानवान दारय हन हन महाविघ्नं छेदय छेदय ठं ठं।। पश्चात् मदार की रुई से बत्ती बना के तेल का दीपक जलावे जबतक जप करे जलता रहे बुझ न पाये ध्यान रखरवे। फिर अस्त्र का अपना पूजा करे। मूल मन्त्र जो हो फट् सहित उच्चारण करे जैसे। ऐं क्लीं सौं मूल मन्त्र है तुम्हारा तो फट् आगे लगा ऐं क्लीं सौं फट् बोलता हुआ पूजन किये हुए शस्त्र की नोंक से कुल दीपकों को खोंच दे। यदि:

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

साधक असावधानी से भययुक्त होजाता है इसालय गुरु को मान में बिठाले वह रक्षा करते रहेगें। यदि अ कोई भी साधक को। बिठाले गुरु का ध्यान पूजन करले मानसिक में साधन शुरु करने के पहले।

तारकमन्त्र १०८ बार जपले ॥ (ॐ नमो भगवते दक्षिणमूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा

पश्चात् यह सब करने के बाद भूतशुद्धि और षोढा न्यास करे।

तारक न्यास करे। अपने इष्ट का पूजन ध्यान करे। अग्नि भाग मे

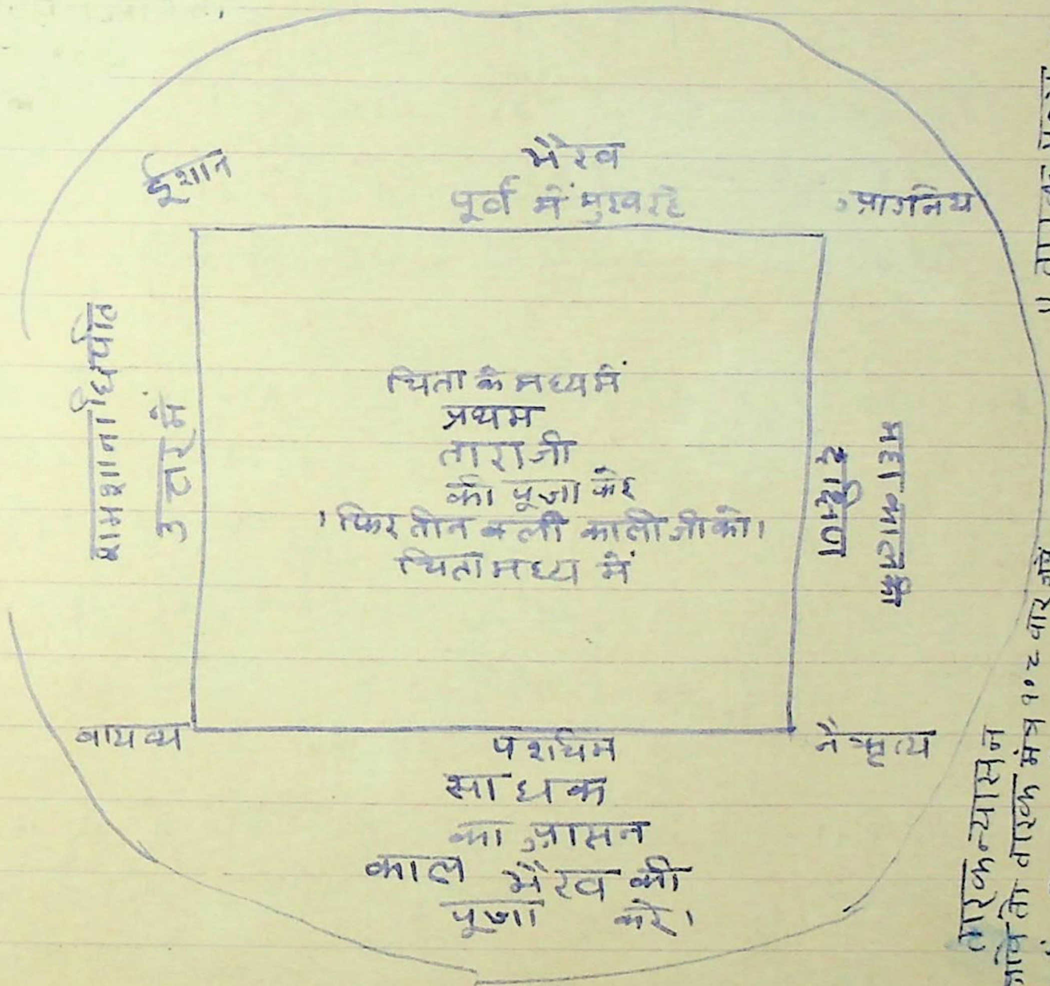

॥ तारक मन्त्र ॥

तारकन्यास न आवे तो तारक मंत्र १०८ बार जपे (ॐ नमो भगवते दक्षिणमूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा

यदि षोढान्यास न आवे तो (हरुपंग कुछ कर (हंसः) १० बार कहले।

भूतशुद्धि यदि न आवे तो (ॐ ह्रौं) १०८ बार जपले

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ आंख पर पट्टी बांध दे ॥
जप समय। दो उत्तर साधक करके

रात को
१२ बजे से
जप २½ बजे तक करे। यदि तीन पहर कुछ न दिखे तो
हाथ में पीली सरसों लेकर (ॐ ह्रीं दुर्गे २ रक्षिणि स्वाहा)
कह कर सरसों अभिमन्त्रित करके चारों दिशा में फेंके
यह मन्त्र बोलता जाय। फेंकता जाय॥
ॐ तिलोऽसि सोम देवत्यो गो सवस्तृप्ति कारक
पितृणां स्वर्ग दातात्वं मर्त्यानांमम रक्षक:॥
भूत प्रेत पिशाचानां विघ्नेषु शान्त कारक:॥

फिर सात कदम सामने चले और लौट कर
आसन पर बैठ जाय। इष्ट पूजन फिर करके
जप करे। यदि एक रात में जप संख्या पूरी
न हो तो दूसरी रात उसी आसन पर १२ बजे
रात को बैठ कर जप करे।

एकाक्षरी चार हजार। दो अक्षरी मन्त्र ८ हजार
तीन अक्षरी ५ हजार जपे। यदि डर लगे तो यह मंत्र जपे
(ॐ ह्रीं दुर्गे दुर्गे रक्षिणी स्वाहा) और वह सरसों चारों तरफ मंत्र बोल कर फेंके
मन्त्र ऊपर लिखा है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूर्व मे वटुक को बलि लगेगी ।। दक्षिण में योगिनी को ।। पश्चिम में क्षेत्रपाल को
उत्तर मे गणेश जी को बलि लगेगी ।। अपने बाँये हाथ की तरफ □ चतुष्कोण यन्त्र
लिखे सिंदूर से। उसके बीच में सर्व भूतों को बलि देना चाहिए।। वटुक विधि पिछले
पेज में लिख दिया। अब योगिनि की विधि लिख रही हूं। ऐसे यन्त्र पर पूजन करके पत्तल
पूजन करे। जब पत्तल धरें तो कहे (योगिनी पात्राधार मण्डलाय नमः) फिर ॐ
यां योगिनी बलि द्रव्याय नमः) बोल २ कर पंचोपचार पूजन करें। फिर हर द्रव्य
बाम अंगूठे मध्यमा अनामिका उंगली से उठा २ कर पत्तल पर हर द्रव्य यह मन्त्र बोल २ के धरे
(ॐ सर्व वर्ण योगिनिभ्य इमं बलिं गृहण २ हुं फट् स्वाहा ।। और फिर सीधे हाथ से
जल पत्तल को किनारे डाल दे एषः बलि योगिनिभ्यो नमः कहकर।। प्रार्थना ।।
ॐ ऊर्ध्व ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा।। अनले वा पाताले वा
सलिल पवन यो र्यत्र कुत्रस्थिता वा।। क्षेत्रे पीठोपपीठा दिशि च कृत पदा धूपदीपादि
केभ्यः प्रीता देव्या सदा नः सुभविधि बलिनः पांतु वीरेन्द्र वन्द्याः ।। याकाचिद्योगिनी
रौद्रा सौम्या घोर परात्परा: ।। खेचरी भूचरी व्योमवती प्रीतास्तु मे सदा।। यां
योगिनिभ्यः स्वाहा सर्वाभ्यो योगिनीभ्यो फट् ।। पुष्पांजलि।

(पंच बली इस क्रम से दे।)

मद्य मांस मुद्रा मीन मे सबकी पत्तल में बलि मंडल बना के पांच पत्तल बिछा दे फिर भोग धरे

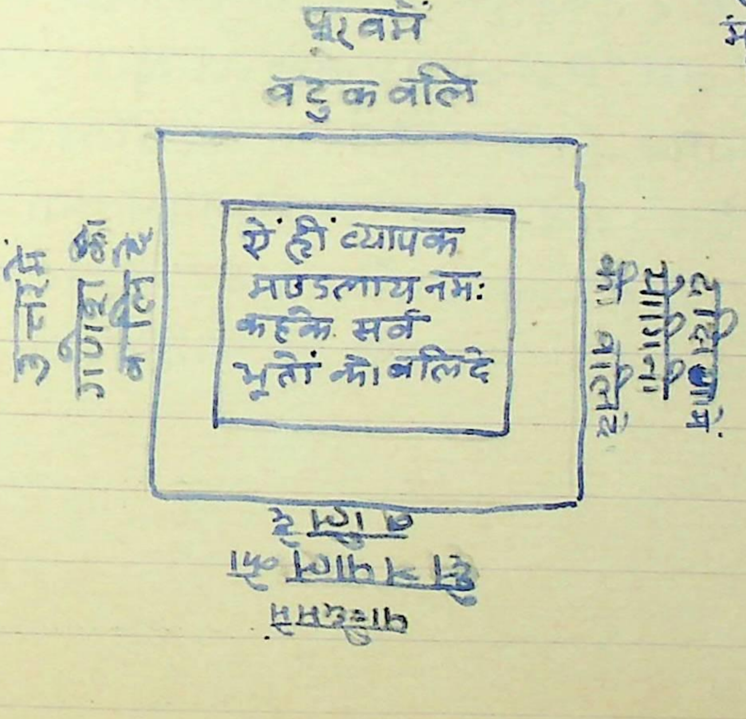

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन्त्र (बटुक साधन) पंच मकार से

ॐ ह्रीं वं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ। ६८

इस मन्त्र से १०८ बार ११ दिन हवन खीर से करदे। आम की लकड़ी में।
और ११ माला रोज निशा में जप करले। और ऐसा यन्त्र बना
कर बीच में वं बटुकाय नमः लिखदे। फिर बीच में पंचोपचार से पूजन
कर के उसपर एक पत्तल रखदो फिर बांये हाथ के अंगूठे अनामिका
से उठा कर के हर भोग्य वस्तु बटुक जी को पत्तल में देवे। और हर
ग्रास पर (ह्रीं वं बटुकाय नमः) बोलता जाय। और हर बार दहिने हाथ
से जल गिराता जाय। फिर पान सुपरि लौंग कपूर दे बटुक जी को।
फिर पुष्पांजलि दे। स्तुति करे।

स्तुति = ह्रीं एहि एहि देवी पुत्र बटुक नाथ पिंगल जटा भास्वर
त्रिनेत्रं ज्वाला मुख सर्व विघ्न नाशय नाशय सुरा मांस सहित
बलिं गृहण २ गृहणापय २ प्रसन्ना भव वरदा भव सुसिद्धिं मे
देहि धनं मे देहि इदं प्रदीप कालिका कारम्भ कुरु २ हुं फट् स्वाहा।
यह स्तुति हो गई। अब जल गिरावे तो यह कहता जाय
एषः बलिर्वटुकाय नमः। पश्चात् घी का दीप जला के आरती
करे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुरु का ध्यान ॥ सहस्त्रदल पंकजे सकल सीतरश्मि प्रभं बराभय कराम्बुजं विमल गन्ध पुष्पाम्बरम् ॥ प्रसन्न बदनेक्षणं सकल देवता रूपिणं स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधान पूर्वं गुरुम् ॥

हर प्रयोग

शुक्ल चौदश से शुरु करे 3. दिन बाद चौदस को। हि फिर समाप्त करे
या व बार शुक्ल पड़िवा से नौमी परियन्त नौ दिन में खतम करे।
शुक्ल अष्टमी से शुक्ल चौथ तक खतम करे। जप।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चन्द्र बल उंच्च होना ।दिक्षा प्रकरण।। हमेशा उजेले पाश्व मे लेवे चाहिये।

चैत्र में दिशा लेने से पुत्र लाभ अवश्य होता है। वैसाख में धन धान्य। जेठ मे श्रेष्ठ फल। असाढ़ में सर्व नाश, सावन मे सुखद। भादों में प्रजानाश। क्वार में सम्पदा आवे। कातिक मे लेने से सिद्धि ज्ञान सिद्धि होवे। अगहन मे बहुत प्रजा होवे। पूष मे लेने से ज्ञान नाश होवे। माघ में लेने से बुद्धि बढ़े। फागुन में लेने से सर्व सिद्धि होवे। दिशा।

।। ऋतु व्याख्या ।।

वसन्त ऋतु में चीन=।	।आकर्षण। प्रयोग करे।
ग्रीष्म	।विद्वेषण।
वारणो चारने	उच्चाटन
वर्षा ती में ने	मोहन
शरदी में	। शान्ति प्रयोग
हेमन्त में	पौष्टिक
प्रावट्काले	अभिचारे
शिशिरे	मारण।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" दुर्गा कल्पद्रुम "

" अथ दुर्गा नवार्णो महा मन्त्रः "

ॐ अस्य श्री नवार्णो मन्त्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषयः ॥
महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छ
न्दांसि ॥ नन्दा शाकम्भरी भीमाः शक्तयः ॥ रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो
बीजानि ॥ अग्नि वायु सूर्यास्तत्त्वानि ॥ जप पूजादौ विनियोगः ॥
अथ बीजन्यासः ॥ ॐ क्लीं वाम नेत्रे ॥ ॐ चां दक्षिण कर्णे ॥ ॐ मुं
वाम कर्णे ॥ ॐ डां नासिकायाम् ॥ ॐ ऐं मुखे ॥ ॐ विं लिङ्गे ॥ ॐ च्चै
पादयोः ॥ २८१ ॥ ध्यान ॥ अरुण कमल संस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा
कर कमल धृतेष्टा भीति युग्माम्बुजा च मणि मुकुट विचित्राऽलंकृता
ऽऽकल्पजातैर्भवतु भुवन माता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥ २८२ ॥ इन्दु
प्रख्यामिन्दुखण्डार्धमौलिं शङ्खाभीष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ॥
हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥
॥ २८३ ॥ पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादहृत्कुक्षिवक्षोदेशां
भास्वत्कपर्दां कलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ॥
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां तीक्ष्णपद्मासनस्थामच्छा
ऽकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥ २८४ ॥ अथ मन्त्रः
ऐं ह्रीं महादुर्गे नवाक्षरी नव दुर्गे नवात्मिके नव चण्डी महामाये
महा मोहे महा योग निद्रे जये मधु कैटभ विद्राविणि महिषासुर
मर्दिनि धूम्रलोचन संहन्त्रि चण्ड मुण्ड विनाशिनि रक्तबीजान्तके

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निशुम्भ विध्वंसिनि शुम्भ दर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपाल
करवाङ्ग शूल खड्ग खेटक धारिणि छिन्नमस्तक धारिणि रुधिर
मांसभोजिनि समस्त भूत प्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देवि
मां रक्षय २ मम शत्रून् नाशय २ ह्रीं फट् हूं फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै
विच्चे ॥२२४॥ सम्पुटित पाठ होम में ऽपि = सप्तशत्यात्वत्याह॥ प्रयोग संग्रहे॥
कदाचित्संपुटैर्युक्तं पठेत् सप्तशतीस्तवम्॥ ससंपुटं पठन्होमे
हुनेत सप्तसतीबुधैः॥२२६॥ अथैक अस्मिन् दिने सम्पूर्ण पाठ करणा
शक्तौ पा १ तो २ ऽ ये १ द्वि ४ प्र २ का १२: एवं क्रमेण सप्तभिर
दिनै रेकः पाठ इति केरला क्वचित् ॥२२७॥ अथ सप्तशतीशापोद्धार
उत्कीलने॥ कात्यायनीतन्त्रे॥ त्रयोदशाध्यायं पठित्वा प्रथमं पठेत्॥
ततो द्वादश द्वितीयौ तत एकादश तृतीयौ चतुर्थ दशमौ पञ्चम नवमौ
षष्ठाष्टमौ सप्तमं द्विवारमिति पाठेन शापोद्धारः॥२२८॥ यह शापोद्धार है
आगे उत्कीलन है ये॥ प्रथमं मध्यम चरित्रं पठित्वा ततः प्रथमतृतीयौ
पठेदित्युत्कीलनमिति

सप्तशती का शापोद्धार पुस्तक से ही होता है। (प्रथम तेरहवां अध्याय पढ़े फिर पहला
अध्याय पढ़े फिर १२ वां अध्याय पढ़े। दूसरा पढ़े फिर ११ वां अध्याय पढ़े। फिर
तीसरा पढ़े। फिर तीसरा चौथा दशवां पढ़े। फिर ५ वां पढ़े फिर नवां, छठा आठवां
सातवां पढ़े। इस रीति से दो बार पाठ करने से शापोद्धार और। उत्कीलन में
प्रथम
पहला फिर मध्यम फिर प्रथम तीसरा पढ़े। कात्यायनी तन्त्र का मत है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रतिदिन तीनों पाठ करना चाहियें और तीनों देवी के मन्त्रों से हवन तर्पण मार्जन भी करना चाहिये हर पाठ के बीच में (नमो दिव्यै०) वाला जाप मन्त्र का सम्पुट लगाना चाहिये।

रुद्रयामल में लिखा है

प्रथमं चरित्रं प्रोक्तं मधुकैटभ घातनम् ॥ द्वितियं विद्धि चरितं महिषासुर घातनम् ॥ ३.३ ॥ उत्तर चरितं ज्ञेयं शुम्भ दैत्य वधान्वितम् ॥ रहस्यं मन्त्र मन्त्रान्त्याध्याय द्वयं त्रयं व ॥ चरितं मध्यमं वाऽपि जपेद्वा चण्डिकामयम् ॥ ३.५ ॥ ०नमो दिव्यै मन्त्रं जपेद्वा कालिकाप्रियम् ॥ (मारकण्डे का प्रसिद्ध पुराण है

नित्य चण्डी जाप का विधान ॥ शुक्ल-भूतामवष्टभ्य मायां प्रतिदिनं जपे ॥ ३.६ ॥ दशांश होम सहितं सोच्यते नित्य चण्डिका धन पुत्र यशो दात्री महा व्याधि विनाशिनि

हर देवी के मन्त्र में ॐ लगा कर शुरु में बाद में स्वाहा लगा कर हवन होगा जैसे पहले अध्याय की देवी काली है इनका हवन पायस या शाकल्य तिल चावल जौ का बना आम की समिधा में हवन करो। पूर्णाहुति में १ कमलगट्टा १ सुपारी २ लौंग २ इलाइची अष्ट गुगल शाकल्य घी में भिगो के और हवन खीर से करना चाहिये। बाद में पूर्णाहुति में पहले (नमो दिव्यै महादिव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वागभव बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महा हुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ ३.१३ ॥ १ पान पर पर कांपित्थफलं नागवल्ली दलद्वयं सहितं। कुंकुमाक्षत पुष्पै रभ्यर्चितं सघृतं होमयेत ॥ ३.१४ ॥

द्वितियाध्यायान्ते ॥ नमो० ॥ सांगायै० लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै महा हुतिं० इत्यनेन नारिकेल फलं बाकी सामान पूर्ववत् ॥ ।

तृतियध्यायान्ते ॥ नमो ० ॥ सांगायै ० अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं० इत्यनेन. मधु पुष्पारी बाकि सब सामान पूर्ववत् रहेगा ॥ हवन शाकल्य से ही होगा।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरे अध्याय के अन्त में पूर्णाहुति में ॐ नमो॰ सांङ्गायै॰ लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै महाहुतिं नमः स्वाहा॥ (इसमें द्रव्य पानपरस्रव के हरा नारियलपानी वाला वाकी सामान पहले सरिखवारकरवाजायेगा॥ हवन शाकल्य से होगा।

((पूजा करने के बाद में जब देव)
विसर्जन तो कहे यह श्लोक
उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां
प्रगृह्य च॥ कुरुष्व मम कल्याणम्
अष्टाभिः शक्तिभिः सह॥ ६२॥
गच्छ २ परं स्थानं स्वस्थानं
देवि चण्डिके॥ व्रज स्रोतो जले
वृद्ध्यै तिष्ठ गेहे च भूतये॥
दुर्गा देवि जगन्माता स्वस्थानं गच्छ पूजिते
संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै
इमां पूजां मया देवि यथाशक्ति
निवेदिताम्॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सप्तसती के पूरे अध्याय में हवन
पूर्णाहुति पद्धति यह है

प्रथम अध्याय में खीर से आम की लकड़ी में हवन होगा। पूर्णाहुति में :
नमो दिव्यै महादिव्यै शिवायै सततं नमः नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः
प्रणताःस्मताम् सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वागभव
बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ (इतना बोल
कर एक पान पर शाकल्य खीर १ सुपारी २ लौंग २ इलाइची १ कमल
गट्टा शहद गुगल घी रखकर स्रुची में खड़े होकर अग्नी में प्रदान करे।

आचमनी करावे घृत से

घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसा पावनः ॥ पिबतांतरिक्षस्य हविरसि
स्वाहा ॥ दिशा प्रदिशा ऽ दिशो विदिशा ऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

॥ दूसरे अध्याय में ॥

नमो ०॥ सांगायै० सपरिवारायै० सवाहनायै० सायुधायै० लक्ष्मी बीजा
धिष्ठात्र्यै लक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ इसमें हवन द्रव्य शाकल्य
समिधा आम की विशेष कच्चा नरियल गरीदार और पूर्णाहुति में रखलो।

॥ तीसरे अध्याय में ॥

नमो ०॥ सांगायै० अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि
नमः स्वाहा ॥ हवन द्रव्य शाकल्य विशेष सामान मधु पुष्पलाल बाकी
सामान पूर्ववत हर पूर्णाहुति मे रहेंगे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" चौथे अध्याय में "

नमो० सांगायै०

त्रिवर्गात्मिकायै शाक्ति लक्ष्म्यै महा हुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा " हवन शाकल्य विशेष साबुत सुपारी और रखलो।

" पांचवा अध्याय "

नमो० सांगायै० विष्णु मायादि त्रियोविंशति देवतायै महा हुतिं समर्पयामि नमः शाकल्य हवन द्रव्य विशेष बीज पूर फल रखलो बाकी वही सामान रहेगा।

" छठा "

नमो० सांगायै० शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा " हवन द्रव्य शाकल्य नारिङ्ग फलं विशेष रखलो ( ) बाकी वही रहेगा।

" सातवां "

नमो०" सांगायै० कर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुंडायै देव्यै महा हुतिं० समर्पयामि नमः स्वाहा " विशेष कुष्माण्ड फल खण्ड ( ) रहेगा। शाकल्य सामान वही।

" आठवां "

नमो० सांगायै० अष्ट मातृका सहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा "
विशेष ऐक्षु खण्ड ( ) रखलो बाकी वही।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" नवां "

क्लीं जयन्ती
नमो०॥ सांगायै० वाग भव बीजाधिष्ठात्र्यै महा काल्यै महा हुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।
विशेष(कुष्माण्ड खण्डमिक्षु खण्डं)

नमो. सांगायै० सिंह वाहनायै त्रिशूल पाश धारिण्यै महा हुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। विशेष(मातुलिङ्ग फल मतलब(बाकी वही

नमो० सांगायै० सर्व नाशयण्यै महा हुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा॥
विशेष फल (दाड़िमफल (अनार रखलो।

बाला
नमो ० सांगायै० श्री त्रिपुरसुन्दर्यै महा हुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।
विशेष ... रखलो ..

नमो० सांगायै० श्री त्रिपुर सुन्दर्यै श्री महाविद्यायै महा हुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। (कदली फलं) केला विशेष फल रखलो।
प्राणायाम
फिर सप्तसती के अनुकूल जैसे पहले बताया है। शापोद्धार उत्कीलन पश्चात् १६ संस्कार करो माई के।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहले कीलक, मध्यम चरित्र पढ़ो, फिर प्रथम पढ़ो, फिर कवच पढ़ो। आखिरी
में दुर्गाकल्पमें संस्कृत में लिखा है कि ॥ कीलकं मध्यमादौ च
पश्चात् कवच मेव च ॥ प्रथमं चरितं जपत्वा ततश्चरितमुत्तमम् ॥ (उत्कीलन
नम्बर पर है॥ ततः परं चार्गलां च कीलकं च ततः परम् ॥ एवं
उत्कीलनं प्रोक्तं पुरातन महर्षिभिः॥३२६॥ प्रयोगं च पठित्वा तु
चानुलोमं जपेत्ततः ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन सर्व कामार्थसिद्धये ॥

तोड़ल तन्त्रमें लिखा है ॥ तारादेवी नीलरूपा जो है वह कमला का औतार है।
चण्डिका कूर्म औतार है। धूमावती बाराह औतार है। छिन्नमस्ता का नृसिंह औतार है।
भुवनेश्वरी बामन औतार है। मातंगी राम औतार है। त्रिपुरसुन्दरी जमदग्निन्यः का
औतार है। भैरवी बलभद्र का औतार है। महालक्ष्मी बुद्ध का औतार है। दुर्गा
कलंकी औतार रूपिणी है। स्वयं भगवती काली कृष्ण का औतार है।

उत्कीलन करनेके लिये- सप्तसती में पहले कीलक पढ़ो फिर मध्यम
चरित्र पढ़ो फिर आदि (प्रथम चरित्र पढ़ो पश्चात् कवच पढ़ो। फिर
प्रथमचरित उत्तम चरित्र पढ़ो फिर अर्गला फिर कीलक पढ़ो।
तब उत्कीलक सप्तसती का हो जाता है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" [माहात्म्य]"

ओं शंकरो वाच ।। चंडिका हृदयं न्यस्य शरणां यः करोत्यपि ।। अनन्त फल माप्नोति देवि चंडी प्रसादतः ।।१।। रविवार यदा चण्डी पठेदागम संमताम् ।। न वावृत्ति फलं तस्य जायते नात्र संशयः ।।२।। सोमवारे यदा चण्डी पठेद्यस्तु समाहितः ।। सहस्त्रावृत्ति पाठस्य फलं जानीहि सुव्रते ।।३।। कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागम संमताम् ।। शतावृत्ति फलं तस्य बुधे लक्षफलं लभेत्त ध्रुवम् ।।४।। गुरौ यदि महामाये लक्ष युग्म फलं ध्रुवम् ।। शुक्रे देवी जगद्धात्री चण्डी पाठेन शंकरी ।।५।। शंयं तुल्य फलं देवि यदि चण्डी समाहितः ।। शनिवारे जगद्धात्री कोटयावृत्ति फलं ध्रुवम् ।। ६ ।। अतएव महेशानि [...] चण्डी समभ्यसेत् ।। स सद्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत् ।।७।। आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्र रत्न प्रवालकम् ।। पठनात् श्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः ।।८।। धान धानं प्रवालं च वस्त्रं रत्न विभूषणाम् ।। चण्डी श्रवणमात्रेण कुर्यात्सर्व महेश्वरी ।। ९ ।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ पाठ ॥

घोर चण्डी महाचण्डी चण्ड मुण्ड विखण्डिनी ॥ चतुर्वक्त्रा
महावीर्या महा देव विभूषिता ॥१०॥ रक्तदन्ता वरा रोहा
महिषासुर मर्दिनि ॥ तारिणी जननी दुर्गा चण्डिका
चण्ड विक्रमा ॥ ११॥ गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डीच यामलो
द्भवा ॥ श्मशान वासिनि देवी घोर चण्डी भयानका ॥
१२॥ शिवा घोरा रुद्र चण्डी महेशा गण भूषिता ॥
जाह्नवी परमा कृष्णा महा त्रिपुर सुन्दरी ॥१३॥ श्री
विद्या परमा विद्या चण्डिका वैरि मर्दिनि ॥ दुर्गा दुर्गा
शिवा घोरा चण्ड हस्ता प्रचण्डिका ॥१४॥ महेशी
बगला देवी भैरवी चण्ड विक्रमा ॥ प्रमथै भूषित कृष्णा
चामुण्डा मुण्ड मर्दिनि ॥१५॥ रणखण्डा चन्द्रघंटा
रण राम वरप्रदा ॥ मारी भद्रकाली च शिवा घोर
भयानका ॥१६॥ विष्णु प्रिया महा माया नन्दगोप
गृहोद्भवा ॥ मंगला जननी चण्डी महा क्रुद्धभयंकरी
॥१७॥ विमला भैरवी निद्रा जाति रूपा मनोहरा ॥
तृष्णा निद्रा क्षुधा माया शक्तिर्माया मनोहरा ॥१८॥
तस्यै दिव्यै नमस्तस्यै सर्व रूपेण संस्थिता ॥
नमस्तस्यै ३ नमो नमः ॥१९॥ इमां चण्डी जगद्धात्रीं

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुर्गाचन्द्रपार्वति

ब्राह्मणस्तु सदा पठेत् ॥ नान्यांस्तु पाठये द्देवि पठन ब्रह्मा भवेत् ॥२०॥ यः शृणोति धरायां च मुच्यते सर्व पातकैः ॥ ब्रह्म हत्या च गोहत्या स्त्रीवधोद्भव पातकम् ॥२१॥ श्वश्रूगमन पापं च कन्या गमन पातकम् ॥ तत सर्वं पातकं दुर्गे मातृ गमन पातकम् ॥२२॥ सुतस्त्री गमने चैव यद्यत्पाप प्रजायते ॥ परदारा कृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥२३॥ जन्म जन्मा न्तरात्पापाद गुरु हत्यादि पातकम् ॥ मुच्यते २ देवी गुरुपत्नी सुसंगमात ॥२४॥ मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्महिंसने ॥ मिथ्याश्चैव यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात् ॥२५॥

भवानी च भवानी च भवानी चोच्यते बुधैः ॥ भकारस्तु भकारस्तु भकारः केवलः शिवः ॥३३॥ वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः ॥ प्रेतवद्देवि विश्वेशि भकारः प्रेतवत्सदा ॥३४॥ आरोग्यं च जयं पुण्यं नातः सुखविवर्धनम् ॥ धनं पुत्र जरारोग्यं कुष्ठ गलित नाशनम् ॥३५॥ अर्धाङ्ग रोगान्मुच्यते दुर्गे दुर्गा पार्वति ॥ सत्यं २ जगद्धात्री महामाये शिवे शिवे ॥३६ चण्डे चण्डि महारावे चण्डिका व्याधिनाशिनि ॥ मन्दोदिने गहेशानि विशेषफल दायिनि ॥३७॥ सर्व दुःखादि विमुच्यते

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कामना में इस से ध्यान करना चाहिये
वशीकरण में रक्त रूप का ध्यान करे।
पौष्टिक कर्म में कर्बूर रंग के रूप का ॥
उच्चाटन मे धौम्र रंग के रूप का ॥
मारण विद्वेषण मे काले रंग का
सन्तान की इच्छा वाले नील रंग का
बाकी सर्व कामना मे रक्ताकार रूप का करे।

मधुत्रययुत - घीमधुशक्कर

जप्यं मनोरथं दुर्गा तनोति धरणीतले।

मन्त्र = ॐ रक्तचामुंडे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा॥
दस हजार जप करे काम न हो तो चौगुना करे। एक (हजार लाख हवन करे कडुवा तेल लाल चन्दन राई से हवन करे राजा वश होवे।
यदि मधु अशोक के पुष्पों से हवन करे तो चक्रवर्ती राजा वशी होवे। जपांत में १०० ब्राह्मण खिलाना चाहिये। यदि नवार्ण मन्त्र को लाख बेल के पेड़ के नीचे (बिल्वमूले) मास भर जपे। और बेल पत्ती मधु घी खांड से हवन करे। बिल्व दलैर्मधुत्रययुतैर्मासं होमः दशांशेन क्षीर संयुतैः कमलैर्होमो वा लक्ष्मी प्राप्ति फलोऽयं प्रयोगः॥
ईदृश स्थल (नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥) इस मन्त्र को दस हजार जप दशांश हवन करे

नवार्ण मन्त्र को १ लाख जप करे मधु खांड घी बेलपत्ती से हवन करे या कमल दूध से हवन दशांश करे लक्ष्मी प्राप्त होवे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३७सवां श्लोक पिछले पन्ने में है। (चण्डी श्रवणमात्रेण पठनात्
ब्राह्मणोऽपि च निर्वाणमेति

५६) वां पेज देवेशि महा स्वस्त्ययनं हितः ॥४१ सर्वत्र

भक्त्या चण्डि शृणोति यः ॥ ब्राह्मणोहितकारी च पठेन्नियत
मानसः ॥३८॥ मंगलं मंगलं श्रेयं मंगलं जय मंगलम् ॥ भवेद्धि
पुत्रपौत्रैश्च कन्यादासादिभिर्युतः ॥३९॥ तत्त्वज्ञानेन निधन
काले निर्वाणमाप्नुयात् ॥ मणि दानो भवं पुण्यं तुला
हिरण्यकतथा ॥४०॥ सर्वत्र विजयं याति श्रवणादि दोषतः॥
मुच्यते च जगद्धात्री राजराजाधिपो भवेत् ॥४१॥ महा
महा चण्डी शिवा घोरा महा भीमा भयानका ॥ काञ्चनी
कमला विद्या महारोगविमर्दिनी ॥४२॥ गुह्य चण्डी घोर
चण्डी त्रैलोक्य दुर्लभा ॥ देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामल
संमता ॥४३॥ प्रप्रकाशैषा महा देवी प्रिया रावणमर्दिनी॥
मत्स्यप्रिया मांसरता मत्स्य मांस बलिप्रिया ॥४४॥ मदमत्ता
महानित्या भूतप्रमथसंगता ॥ महा भागा महारामा धान्यदा
धनरत्नदा॥४५॥ वस्त्रदा मणिराज्यादि सदा विषय विवर्धिनी
॥ मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महाविपद नाशिनी ॥४६॥
रुद्र चण्डी प्रसादेन किं न सिद्ध्यति भूतले ॥ रुद्र
ध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा ॥ रुद्रशक्ति रु[illegible]पा
रुद्रमुखसमन्विता ॥४७॥ शिव चण्डी महा चण्डी [illegible]
गणान्विता ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लम्बोदराद्यिकस्चण्डी पठनो चद्रूबणानु वा:

॥ पाठ ॥

भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥५०॥ सुन्दरी परमा
पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी ॥ गुह्यकाली भद्रकाली महाकाली
विमर्दिनि ॥५१॥ कृष्णा तृष्णा स्वरूपा सा जगन्मोहन
कारिणी ॥ अतिमन्त्रा महालज्जा सर्वमंगल दायिनि ॥५२॥
घोर तन्त्री भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा ॥ मंगला
बगला सिद्धिदायिनि सर्वदा शिवा ॥५३॥ स्मृतिरूपा
कीर्तिरूपा योगीन्द्रैरपि सेविता ॥ भयानका महादेवी भय
दुःखविनाशिनि ॥५४॥ चण्डिका शक्तिहस्ता च कौमारी सर्वकामदा ॥
वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता ॥५६॥ माहेश्वरी महेशस्य महेशाबरा ॥
भूषिता ॥ चामुंडा नारसिंही च नृसिंह शत्रुमर्दिनी ॥५७॥ सर्वशत्रुप्रशमनी सर्व
आरोग्य प्रदायिनी ॥ इति सत्यं महादेवि सत्यं २ वदाम्यहम् ॥५८॥ नैव
शोकं नैव रोगं नैव दुःखं भयं तथा ॥ आरोग्यं मंगलं नित्यं करोति शुभ
मंगलम् ॥५९॥ महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सत्यमुत्तमम् ॥ अभक्ताय
न दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम् ॥६०॥ तव भक्ताय शान्ताय शिव
विष्णु प्रियाय च ॥ दद्यात्कदाचिद्देवेशि सत्यं २ महेश्वरि ॥६१॥
अनन्त फलमाप्नोति शिवचण्डि प्रसादतः ॥ अश्वमेध बाजपेय
राजसूय शतानि च ॥६२॥ तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवताः ॥
दुर्गेश मृन्मयी ज्ञानं रुद्रयामल पुस्तकम् ॥६३॥ मन्त्रमक्षर संज्ञानं करोत्यामि
[illegible] राधिमः ॥ अत एव मंत्र शानिकिं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥६४॥ तत्त्वमस्यादि
[illegible] ॥६५॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Nathani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ दुर्गा महात्म ॥

एकाहारो महाबाहो सोऽग्निष्टोम फलं लभेत् ॥ ९ ॥ पौर्णमास्यां
नवम्यां च ऽष्टम्यां च नराधिपा ॥ स्नापयित्वा शुभां दुर्गां बाज-
पेय फलं लभेत ॥१०॥ शुक्लपक्षे नवम्यां तु ऽष्टम्यां परमेश्वरीम्
॥ त्रिकालं पूजये द्यस्तु चांतर्देश्यां नराधि[illegible] ॥११॥ स गच्छेते

फूलों गिराये वि धांह भगुनि श्रीम
पे धौजोह तेसो देवी प्रसोदमरता

...सुचिरं कालं
...स्तु यः पूजोत
...ति मानवः ॥१२
...चण्डिकां
...तो उपवास
...र्व षु चण्डिकां
...फलं नृप ॥
...॥१६॥ तस्मात्
सर्व प्रयत्नेन यथा बिभवविस्तरैः ॥ पूजयेत्सततं दुर्गां
तत्फलं लभते वीर नवम्यां
महा पुण्य लोभेच्छया कार्तिकस्य तु मासि चाश्वयुज वीर शुक्ल
पक्षे त्रिशूलिनीम् ॥१९॥ नवम्यां पूजयेद्यस्तु तस्य पुण्य..
श्रृणु ॥ अश्वमेध सहस्त्रस्य राजसूय शतस्य च ॥२०॥
यत्फलं तल्लभेद् वीर दिवि देव गणैर्वृतः ॥ मासि २ नरो
भक्त्या पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥२१॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लम्बोदराधिकस्चण्डी पठनाद्धूवणाद्यः

॥ पाठ ॥

भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥५०॥ सुन्दरी परमा
पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी ॥ गुह्यकाली भद्रकाली महाकाली
विमर्दिनि ॥५१॥ कृष्णा तृष्णा स्वरूपा ... मो...
कारिरि ... १२॥
घोर ...
बगल ...
कीर्तिरु ...
दुःखवि ... ॥
वाराही च वार ...
भूषिता ॥ चा ...
आरोग्य प्रदा ... नैव
शोकं नैव रोगं ... दुःखमेव तथा ॥ आरोग्यं मंगलं नित्यं करोति शुभ
मंगलम् ॥५६॥ महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सत्यमुत्तमम् ॥ अभक्ताय
न दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम् ॥६०॥ तव भक्ताय शान्ताय शिव
विष्णु प्रियाय च ॥ दद्यात् कदाचिद्देवेशि सत्यं २ महेश्वरि ॥६१॥
अनन्त फलमाप्नोति शिवचण्डि प्रसादतः ॥ अश्वमेध बाजपेय
राजसूय शतानि च ॥६२॥ तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्व देवताः ॥
दुर्गायं मृण्मयी ज्ञानं रुद्रयामल पुस्तकम् ॥६३॥ मन्त्रमक्षर संज्ञानं करोत्यास
... राधमः ॥ अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥६४॥ तत्त्वमस्यादि
... ॥६५॥

प्रत्यं मिरायै विद्महे शत्रु निषूदिन्यै
ॐ ... तन्नो देवी प्रचोदयात्
... आशीर्वाद ...
...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ दुर्गा महात्म ॥

एकाहारो महाबाहो सोऽग्निष्टोम फलं लभेत् ॥ ९ ॥ पौर्णमास्यां नवम्यां च अष्टम्यां च नराधिप ॥ सन्तर्पयित्वा शुभां दुर्गां वाजपेय फलं लभेत् ॥१०॥ शुक्ल पक्षे नवम्यां तु अष्टम्यां परमेश्वरीम् ॥ त्रिकालं पूजयेद्यस्तु चतुर्दश्यां नराधिप ॥११॥ स गच्छति परम स्थानं यत्र देवी विवस्थिता ॥ क्रीडित्वा सुचिरं कालं राजा भवति भूतले ॥१२॥ नवम्यां सोऽउपवासस्तु यः पूजयेत् चण्डिकाम् ॥ दशानामश्वमेधानां फलं प्राप्नोति मानवः ॥१३ जितेन्द्रियो ब्रह्मचारी शुचिर्भूत्वा तु यो नरः ॥ चण्डिकां पूजयेद् भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥१४॥ स्नानो उपवास नियमैः पूजा जागर मार्जनैः ॥ सर्व कालेषु सर्वेषु चण्डिकां य प्रपूजयेत ॥१५॥ विमान वरमारुह्य ध्वज माला कुलं नृप ॥ ब्रह्मलोकं नरो गत्वा मोदते शाश्वतीः समाः ॥१६॥ तस्मात् सर्व प्रयत्नेन यथा विभव विस्तरैः ॥ पूजयेत्सततं दुर्गां महापुण्य लोभेच्छया ततफलं लभते वीर नवम्यां कार्तिकस्य तु मासि चाश्वयुजे वीर शुक्ल पक्षे त्रिशूलिनीम् ॥१९॥ नवम्यां पूजयेद्यस्तु तस्य पुण्यं शृणु ॥ अश्वमेध सहस्रस्य राजसूय शतस्य च ॥२०॥ यत्फलं तल्लभेद् वीर दिवि देव गणैर्वृतः ॥ मासि २ नरो भक्त्या पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥२१॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लभेतषण्मासिकं पुण्यं नवम्यां तु न संशयः ॥मेरुपर्वत
तुल्योपि राशिः पापस्यकर्मणः ॥२२॥ चण्डिका वेद्यमाशाद्य
नश्यते दुष्टरोगवत ॥ दुर्गार्चने रतो नित्यं महापातक
सम्भवैः ॥२३॥ दोषैर्न लिप्यते वीर पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥
छित्वा भित्वा च भूतानि हत्वा सर्वमिदं जगत ॥२४॥
प्रणम्य शिरसा देवीं न स पापैर्विलिप्यते ॥सर्वावस्थां गतो वाऽपि
युक्तो वा सर्व पातकैः ॥२५॥ दुर्गां दृष्ट्वा नरः सोऽपि प्रयाति परमं
पदम् ॥ स्वपंस्तिष्ठन ब्रह्ममार्गो प्रलपन्भोजने रतः ॥२६॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ शान्ति स्तवम् पठत ॥

" प्रार्थना ॥ पूजा करके यह करें "

ॐ दुर्गां शिवां शान्ति करीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ ~~सर्व लोक प्रणेत्रीं च~~
प्रणमामि सदाम्बिकाम् ॥१॥
मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम ॥ विश्वेश्वरीं
विश्ववन्द्यां चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥२॥ सर्व देव मई देवीं सर्व
देव नमस्कृतां ॥ ~~१७५~~ ॥ ब्रह्म शाप विष्णु नमितां प्रणमामि
सदा उमाम् ॥३॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थान
निवासिनीम ॥१७६॥ योगिनीं योगविद्यां च चण्डिकां
प्रणमाम्यहम् ॥७॥ ईशान मातरं देविमीश्वरीमीश्वर प्रियाम् ॥
॥१७७॥ प्रणतोऽस्मि सदां दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ॥५॥ इदं यः
पठेत्स्तोत्रं श्रृणु यात्वाऽपि भक्तितः ॥१७८॥ स मुक्तः सर्वपापेभ्यो
दुर्गा लोके महीयते ॥ ~~१७९~~ ॥ ~~एवं न भजते~~ यस्या स्मरण
मात्रेन पलायन्ते महाऽऽपदः ॥१८०॥

सर्वोपास्या सर्वमाता शैवी शक्तिर्महाद्भुता ॥१८१॥ सर्व
बुध्यधि देवीय मन्तर्यामि स्वरूपिणी ॥ दुर्ग संकट हन्त्रीति
दुर्गेति प्रथिता भुवि ॥१८२॥ वैष्णवानां च शैवानां उपास्येयं
च नित्यशः ॥ मूलप्रकृति रूपा सा सृष्टि स्थित्यन्तकारिणी ॥
१८३॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Vidya Devi

Pulse 120

B.P. 130/80

IHD + DM.

Nifelat (10) 1×4 m

Diabenese (250) 1B

DBI TD 1×BD

Tab. Cardix. 1×OB

Glaxenna HS.

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७ वांचे ॥ महाचीनक्रम ॥

महाचीनक्रमस्थानां साधकानां जयावहः ॥ मन्त्रराजो महादेवी सद्यो
भोगापवर्गदः ॥१३॥ वर्णलक्षं पुरश्चर्यां तदर्धं वा महेश्वरि ॥ एकलक्षो
विधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥१४॥ मूलोत्कीलन सिद्धिं तु संजीवन
सुसंस्कृतम् ॥ पुरश्चर्यां चरेत्पश्चात संपुटाढ्यं चरेन मनुम् ॥१५॥
ततो मन्त्रं जपेन्नित्यं दुर्गाया ऽष्ट सिद्धिदम् ॥ यं जपत्वा साधको भूमौ
विचरेत् भैरवो यथा ॥१६॥ ऋषिः रस्य स्मृतो देवि मन्त्रस्याद्यो
महेश्वरः ॥ छन्दो ऽनुष्टुप देवता च श्री दुर्गा ऽष्टाक्षरात्मिका ॥१७॥
तां कीलक मीशानि विश्वबन्धन मीश्वरि ॥ धर्मार्थकाम
मोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥१८॥ तारमायाक्षरैर्देवि न्यासं
षडदीर्घ भागिभिः ॥ निहत्य षडरिपून् देविं ध्यायेद्दुर्गां कुलेश्वरि ॥१९
दुर्वा निभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शंखाब्ज खंग शर खेटक शूल
चापान् ॥ सं तर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुल
पीठगतां भजेऽहम् ॥२०॥ यन्त्रोद्धार ॥ आगे पेज में पूरा लिखा है बाकी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिन्दु रस कोण (षटकोण)
वृत्त, अष्टदल, तीन
गोल रेखा ·

पत्र।
७) यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि दुर्गाया: कुलसुन्दरि ॥ सर्वसिद्धि प्रदं चक्रं सर्वाशापरिपूरकम् ॥२१॥
बिन्दुत्रिकोणं रस कोण बिम्बं वृत्ताष्टपत्राञ्चित वह्नि वृत्तम् ॥ धरागृहो
द्भासितमिन्दुचूडे दुर्गा श्रयं यन्त्र मिदं प्रदिष्टम् ॥२२॥ लयाङ्ग मत्स्य
यन्त्रस्य सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥ यस्योच्चारणमात्रेण कोटि यज्ञफलं लभेत्
२३॥ गणेशं च कुमारं च पुष्पदन्तं विकर्तनम् ॥ चतुर्द्वारेषु देवेशि पूजयेत्
साधकेश्वर: ॥२४॥ ब्राह्मी नारायणी, देवि चामुंडा व्यपराजिता
माहेश्वरी च कौमारी बाराही नारसिंहिका ॥२५॥ पूज्या बसुदले देवि
भैरवाष्ट पार्वति ॥ असितांगो रुरुश्चंड: क्रोधोन्मत्तकपालका: ॥२६
भीषणश्चैव संहारो बामावर्तेन साधकै: ॥ पूज्या: पृथक्र देवि गंध
पुष्पाक्षतै: शिवे ॥२७॥ दत्त्वा पुष्पांजलि चक्रे मूलम् उच्चार्य साधक:
॥ पूजयेत्पञ्च किंञ्जल्कै: (पंचोपचार) षडस्त्रेषु कुलाम्बिका: ॥२८॥
शैल पुत्रीं स्ववामअग्रात्पूजयेद् ब्रह्मचारिणीम् ॥ चण्डघण्टां
च कुषमाण्डां स्कन्द मातरमीश्वरि ॥२९॥ कात्यायनीं च
संपूज्य दूर्वा गन्धाक्षतै: परम् ॥ पुन: पुष्पांजलि दत्त्वा श्री चक्रे
परमेश्वरे ॥३०॥ पूजये द्देवतास्तिस्त्र: कुलस्थास्त्रिपुराम्बिका
॥ कालरात्रि महागौरी देवमूर्ति पार्वति ॥३१॥ त्रिकोण
गाच्छिवे पूज्या: सिन्दूराक्षत पुष्पकै: ॥ दूर्वादलाञ्जलिं दत्त्वा यन्त्र
राजेष्ट सिद्धये ॥३२॥ पूजयेदम्बिकां दुर्गां अष्टाक्षरविभूषणाम्

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अयुतं मान दस हजार

मृगमांस (बीजों से हवन-मंत्र)

चक्र, शंख, ..., शूल, (आयुध हैं)

महाचीनक्रम

देवदेव्यौ बिन्दु पीठे पूजयेत्सर्वसिद्धये ॥ यं विधायकलौ मन्त्री भवेत्कल्पद्रुमोपमः ॥

बिन्दौ देवीमष्टभुजां विद्याम् प्रज्ञाक्षरां शिवे ॥ नीलकंठं शिवे बिन्दौ
पूजयेद्जगदाम्बिकाम् ॥ तत्रायुधानि देवेशि पूजयेदष्ट साधकः ॥३४॥
शङ्खं पद्ममसिं बाणान धनुः खेटकमीश्वरि ॥ शूलं संतर्जनीं दिव्यां नाना
पुष्पैः समर्चयेत् ॥ स्तम्भनं मोहनं चैव मारणं कर्षणं ततः ॥ वशीकारं
तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ॥३७॥ एषां साधनमाख्ये प्रयोगाणाम्
महेश्वरि ॥ महाचीनक्रमस्थानं साधकानां हिताय च ॥३८॥ अयुतं तु
जपेन्मूलं श्मशाने निशि साधकः ॥ हुनेद्दशांशतः सर्पिर्यवान्मांसान्
मृगच्युतान् ॥३९॥ स्तम्भनं जायते क्षिप्रं वादिकविजनाम्भसाम् ॥ अयुतं
प्रजपेद्वैबटे रुद्राक्षमालया ॥४०॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्माक्ष
पङ्कजैः ॥ आरग्वधैः स्वधा मूलैर्मोहनं जायते क्षणात् ॥४१॥ देवानां दानवानां
च का कथा प्रत्यधियं नृणाम् ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं बने साधकसत्तमः ॥४२
बेतसी मूलगो वाऽपि हुनेत्तत्र दशांशतः ॥ घृतपायसशम्बूकान
रिपुमृत्युमुखं ब्रजेत् ॥४३॥ अयुतं प्रजपेद्रात्रौ शून्यागारे कुलेश्वरि ॥
होमो दशांशतः कार्यो घृतप्रौ धधजारकैः ॥४४॥ कपिबीजैरपि प्रातर्भवेद्
आकर्षणं स्त्रियाम् ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं चत्वरे त्वरितं हुनेत् ॥४५॥
आज्याब्जेक्षुरसाखण्ड रक्तपुष्पाणि पार्वति ॥ शक्रोऽपि वशतामेति
किं पुनः क्षुद्र भूमिपाः ॥४६॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं साधको अश्वत्थ (पीपल
मूले ॥ हुनेदाज्यं दशांशेन स्त्रीणां (केशान) त्वचं गणाः ॥४७॥ रिपु उच्चाटये

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शीघ्रं यदि शक्रसमो भवेत ।। अयुतं प्रजपेन्मूलं सुरद्रुम मतिले
हुनेत ।।४८।। घृताण्ड कुक्कुटाण्डानि नाना पुष्पाणि पृच्छक: ।। रोगो
उपद्रव कालस्य सद्य: शान्तिर्भविष्यति ।। ४९।। अयुतं प्रजपन्मूलं
लीलो पवन मण्डले ।। होमो दशांशत: कार्यो घृत मीनाज्य मस्तकै:
।।५०।। पादैरष्टभिरीशानि सद्य: पुष्टि प्रजायते ।। इत्येष परलो
दिव्यो मन्त्र सर्वस्व रूप वान ।।५१।। स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे
तत: ।। वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ।। ३७।। एषां साधन माचक्षे प्रयोगाणां
महेश्वरि ।।

।। श्री दुर्गा पद्धति ।। दुर्गा कल्पतरु

श्री भैरव उवाच = श्रृणु पार्वति वक्ष्यामि पद्धतिं गद्य रूपिणीम ।।
यस्य: श्रवणमात्रेण कोटि यज्ञ फलं लभेत् ।।१।। ब्राह्म महुर्त में उठे
गुरु का ध्यान करे । स्तुति करे गुरु की ।। नदी में स्नान करे । शौचादि करके ।
दातून करने का मन्त्र = ॐ क्लीं कामदेवाय सर्व जन मनोहराय नम: ।।
कुल्ला करे श्रीं बीज ३ बार बोलके ।। गंडूषषटकं विधाय प्रणवेन
मुखं त्रि: प्रोक्ष्य ।।
मुख धोवे प्रणव तीन बार कहकर ।
शिखा बांधे = ॐ ह्रीं मणिधर वज्रिणि शिखापोसेर रक्ष २ हुं फट् स्वाहा ।
शौच करे
तीन आचमन करे ।। प्राणायाम करे । स्नान करे तीर्थों का आवाहन करले ।
कुशा से जल अभिमंत्रित करके मूल मन्त्र से स्नान करे ।
देवि भक्त सुलभे परिवार समान्विते ।। यावत्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि
इहावाह ।। इति सनील कण्ठं जलेन स्नापयित्वा (मतलब मार्तण्ड भैरव को
स्थापित करे ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६ वाँ पेज लमितिन्द बीज

३२ बार वरुण बीज जपे (वं)
१६ बार वायु बीज जपे (यं)
५ बार अग्नि बीज जपे (रं)
१६ बार इन्द्र बीज (हं)

(तीन बार जल में खड़े होकर अंजली दे) नीचे लिखे मन्त्र से। यही नीलकंठ मन्त्र है)

ॐ ह्रां ह्रीं सः मार्तण्ड भैरवाय प्रकाश शक्ति सहिताय एष ते अर्घो नमः

कपड़े पहने = संध्या करे = तत्व मुद्रा से हं यं वं रं लं इति पंचभूतों का मन्त्र है इसे उच्चारण करे। मूल मन्त्र का उच्चारण करे। फिर उस संध्या के चुल्लू जल को सिर पर डाल ले।

आचमन = ॐ आत्म तत्वम शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा॥ ॐ ह्रीं शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा।

प्राणायाम = हुं से स्वास खींचे अपने कुलगुरु शिव का तर्पण करे

भूतशुद्धि = १०८ बार ह्रौं जपलो।

प्राण प्रतिष्ठा अपनी करो = ॐ ह्रीं हुं आं क्रों सोऽहं हंसः मम प्राणाः मम जीवः मम सर्वेन्द्रियाणि मम वां मनस्त्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राणा उपस्थानि इहैवागत्य चिरं सुखं तिष्ठन्तु स्वाहा॥ "ध्यान॥"

प्राणान्समर्प्य षडङ्ग विधायाचम्य देवीं ध्यायेत्॥ भूगेह नागदल वृत्त रसारसार विन्दुस्थ सन्मोहष पीठ गतां भवानीम्॥ दूर्वा दलाग्र सदृश च्छविं अष्ट बाहुं दुर्गां भजे त्रिनयनां विलसत् बीजाम्॥ मूलाङ्गन्यासं॥

श्री चक्रं चतुर्द्वारं त्रिवृत्तमष्टदलं वृत्तं षडस्त्र त्रिकोणं विन्दुं विचिन्त्य वाऽष्टगन्धेन विलिख्य पीठ पूजां कुर्यात्॥ ॐ ह्रीं मंडूकाय नमः नमः कालाग्नि रुद्राय नमः २ मूल प्रकृत्यै नमः २ आधार शक्त्यै नमः २ पद्मवनाय नमः २ तन्मध्ये सहस्रसार पद्माय नमः २ प्रकृतिमय

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पत्रेभ्यो नमः २ विकृतिमय केसरेभ्यो नमः २ तन्मध्ये अष्टबीज भूषित कर्णिकायै नमः २ तत्पार्श्वे धर्मायनमः २ ज्ञान वैराग्यैश्वर्येभ्यो नमः २ वामे अधर्माज्ञान,वैराग्यानैश्वर्येभ्यो नमः २ मध्ये सं सत्त्वाय नमः २ रं रजसे नमः २ तं तमसे नमः २ ॥ (मूलं मातृकाश्चोच्चार्य श्री योगपीठाय नमः २ (इत्यभ्यर्च्य पात्रार्चनं कुर्यात् ॥

तत्र स्ववामवृत्तत्रिकोण चतुरस्त्र मण्डलं विधाय मूलेनाभ्यर्च्य मूलं दुर्गा सामान्यार्घायनमः ॥ (तन्मण्डलं षडङ्गेनाभ्यर्च्य तत्रास्त्रक्षालितं शंखं संस्थाप्य ॥) अं अर्क मण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इति) विलोममातृकया संपूर्य । सौः सोम मण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ इत्यभ्यर्च्य मूलेनाष्टवारं मन्त्रिता कृत्वा ॥ गं गंगे चेति तीर्थमावाह्य इति समान्यार्घ्य विधिः ॥ सामान्यार्घ्यस्य वामे त्रिकोण षट्कोण वृत्तचतुरस्त्र मण्डलं कृत्वा तन्मंडलं षडंगेनाभ्यर्च्य मूलमुच्चार्य श्री दुर्गा कलशमंडलाय नमः ॥ ततो मूलेनाभ्यर्च्य तत्रास्त्र क्षालितां त्रिपादिकां संस्थाप्य रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः इति संपूज्य तत्र कलशं संस्थाप्य ॥ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः तत्रानामिकांगुष्ठ करामृत धारा पातेन बिलोम मातृकया कलशमापूर्य ॥ सौः सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः ॥ इत्यभ्यर्च्य, ॐ ह्रीं दां दीं दूं दैं दौं दः दुं, अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्त्रावय २ शुक्र शापं मोचय २ ॐ ह्रीं दुं सुरादेव्यै वौषट् ॥ ७ बार पढ़े ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ द्रुं ह्रीं द्रुं हसक्षमलवरयूं आनन्द भैरवाय वौषट् ॥ ॐ ह्रीं द्रुं आनन्द भैरव सुधादेवी पादुकाभ्यो नमः ॥ (धेनु मुद्रा मत्स्यमुद्रादिखावे) ॐ सूर्यमंडल सम्भूते वरुणालय संभवे अमा बीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥ एकमेव परंब्रह्म स्थूलसूक्ष्म मयं ध्रुवम ॥ कचोद्भवाम् ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ पवमानः परानन्दः पवमानः परोरसः ॥ पवमानं परमज्ञानं तेन त्वाम पावयाम्यहम् ॥ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ॥ तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥ कृष्ण शाप विनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्म शापतः ॥ विमुक्ता रुद्र शापेन पवित्रा भव साम्प्रतम् ॥ (इति धेनुमुद्रा मत्स्यमुद्राः प्रदर्शयेत्) (गरुड़ मुद्रा से आच्छादित करके द्रव्य शुद्धि करे ॥ ॐ ह्रीं द्रुं कृतावमारो हरिणा कालिना पीडितं जगत् ॥ बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च ॥ दुर्गा परितोषार्थ स्वयं मीनोऽभवत् प्रभुः ॥ (तीन बार धेनु मत्स्य मुद्रा दिखावे) मीन शुद्धि होवे। ॐ ह्रीं द्रुं छागलादि गवान्तादि कृतरुपाय वै नमः ॥ बल्यर्थं देवदेव्योश्च पवित्रं भव साम्प्रतम् ॥ मूलं त्रिर्जपत्वा मुद्रात्रयं दर्शयित्वा मांस शुद्धिः ॥ ॐ ह्रीं दुर्गा अर्चन कालेतु यानि यानीह साम्प्रतम् ॥ वस्तूनि सौरभीयाणि पवित्राणीह साम्प्रतम् ॥ इति मूल 3 बार जपे 3 बार मुद्रा दिखावे सब वस्तु प्रोक्षा। मूल में आनन्द भैरव का आनन्द भैरवी के सहित ध्यान करना चाहिये।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(फिर बाहर चतुरस्र द्वार के देवता पूजन करे)

बाह्य श्री चक्रमर्चयेत् ॥ तत्र मूलेन पाद्यार्घ्याचमनीय मधुपर्काचमनी नैवेद्य गंध पुष्प दीप छत्र मुक्तमालादीनिवेदयेत् गंडूषत्रयं निवेद्य मूल षडंगं विधाय चतुरस्त्रं पूजयेत ॥ (ॐ ह्रीं सर्व सिद्धिप्रदाय श्री चक्राय नमः इति पुष्पांजलिं दत्वा ॥ प्रथमावरण, पूर्व मे गणेश को ॐ ह्रीं दुं गं गणेशाय नमः ॥ दक्षिण मे कुमार को । ॐ ह्रौं कुमाराय नमः ॥ पश्चिम मे पुष्पदन्त को । ॐ प्रीं पुष्पदन्ताय नमः ॥ उत्तर में विकर्तन को ॥ ॐ वें विकर्तनाय नमः ॥ फिर अष्टभैरवों की पूजा करे, आठो दल मे बांई तरफ से पूजन, यह द्वितीय आवरण है । ॐ ह्रीं दुं अं असितांग भैरव युत ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ॥ ॐ ह्रीं दुं रुं रुरु भैरव युत नारायणि श्री पादुका० ॥ ॐ ह्रीं दुं चं चण्ड भैरव युत चामुण्डा श्री पादुका० ॥ ॐ ह्रीं दुं क्रों क्रोध भैरव युत अपराजिता श्री पादुका० ॥ ॐ ह्रीं दुं उं उन्मत्त भैरव युत माहेशानि श्री पादुकां० ॥ ॐ ह्रीं दुं कं कपाल भैरव युत कौमारी श्री पादुका० ॥ ॐ ह्रीं दुं भीं भीषण भैरव युत वाराही श्री पादुकां० ॥ ॐ ह्रीं दुं सं संहार भैरव युत नारसिंहि श्री पादुका० ॥ ॐ पंचोपचार पूजा करे ॥ द्वितीयावरण ॥ बांई तरफ से पूजा करे ॐ ह्रीं दुं सर्वाशापूरकाय श्री चक्राय नमः ॥ इति पुष्पांजलिं दत्वा षट् कोणं पूजयेत् ॥ शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणि, चंडघंटा, कूष्मांडा, स्कन्दमाता कात्यायनी. ॥ तृतीय आवरणम् ॥ फिर श्री चक्र को पुष्पांजलि देकर आगे के देवताओं की पूजा शुरू करना चाहिये।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(ॐ ह्रीं दुं । यह सब शक्ति के नाम के पहले लगालो अन्त में नमः ॥

फिर श्री चक्र को पुष्पांजलि प्रदान करके तीन देवी का पूजन करे।
कालरात्री, महागौरी, देव दूती ∵ आग्ने, ईशान में, आग्नेय में पूजा होती है इनकी
चतुर्थावर्णाम् ॥ (पहले श्री चक्र को पुष्पांजलि दो ॐ ह्रीं दुं अष्ट सिद्धिदाय श्री
चक्राय नमः।) इति मूलं नीलकंठ श्री दुर्गा श्री० इति ॥ ७ बार बोले

पंचमावरणम् ॥ मूलम ॥ अम्बिका श्री० मूलम ३ ॥ अष्टाक्षरी
श्री० ३ ॥ मूलम् ३ ॥ अष्टमुजी श्री० ३ ॥ मूलं नील कंठ श्री० मूलं ॥ जगदम्बिका
श्री० इति ॥ षष्ठावरणम् ॥ अब आठों आयुधों की पूजा करो।
शंख, चक्र, पद्म, खड्ग, बाण, धनुष, खेटक, त्रिशूल । समर्पयामि सप्तावरणम् ॥
तर्जन्यै नमः । यह आठ आयुध हैं। ३ बार

तत्र मूलेन बलिं निवेद्य सौः सर्वविघ्न कृद्भ्यो भूतेभ्यः स्वाहा यां यूं योगिनी
गणेभ्यो नमः ॥ ॐ वां वीं देवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटा भार भास्वा
त्रिनेत्र ज्वालामुख एहि २ इमं बलिं गृहण २ स्वाहा ॥ ॐ क्षां क्षें क्षेत्र
पालाय नमः ॥ इति बलिं दत्त्वा संकल्प्य पूर्व न्यासं विधाय देव्यग्रे
मालामादाय यथा शक्ति जपं कृत्वा समर्प्य गुह्याति गुह्येति
पठित्वा ततः कवच सहस्त्रनाम स्तव पाठ कृत्वा तदपि समर्पय।।

दुर्गा गायत्री - ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे ऽष्टाक्षरायै धीमहि तन्नश्चण्डी प्रचोदयात् ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

११५ (पेज) पीछे देवीरहस्य तन्त्रोक्त॥ ॥ श्री दुर्गा कवचम् ॥

श्री भैरवोवाच॥ अधुना देवि वक्ष्येऽहं कवचं मन्त्र गर्भकम्॥ दुर्गायाः
सार सर्वस्वं कवचेश्वर संज्ञकम्॥१॥ परमार्थ प्रदं नित्यं महापातक
नाशनम्॥ योगिप्रियं योगगम्यं देवानामपि दुर्लभम्॥२॥ विना दानेन
मंत्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत्॥ धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्य नायकः॥ अभूत्सो
भैरवेशानि विष्णुर्नारायणो बली॥ ब्रह्मा पार्वती लोकेशो विघ्नध्वंसी
गजाननः॥४॥ सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः प्रिये। सूर्यस्तमोपहो
लोके चन्द्रोऽमृत निधिस्तथा॥५॥ बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गा कवच धारणात्
॥मृत्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्र साधकः॥६॥ कवचस्यास्य देवेशि
ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः॥ छन्दोनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताऽष्टाक्षरा स्मृता॥७॥
चक्रिबीजं चबीज स्यान्माया शक्तिरितीरिता॥८॥ ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे
पातु ललाटकम्॥ दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु श्रीं पातु श्रुति मम॥९॥ मम गण्डौ च मे नासां
पातु देवेशी रक्तकुण्डला॥ वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीज निषूदिनी॥१०॥
लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनि॥ भेको बीजं सदा पातु दन्तान्मे वह
रक्तदन्तिका॥११॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठं नीलकण्ठाङ्क वासिनी॥
क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी॥१२॥ ॐ सौं क्लीं मे पातु बाहू
देवेशी बगला मुखी॥ ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी॥१३
सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु
कुक्षिं मम मातङ्गिनि परा॥१४॥ श्रीं ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वौ हिमाचलनिवासिनी
॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ श्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गति नाशिनि ॥१५॥ ॐ क्रीं हुं पातु मे
नाभिं देवी नारायणी सदा ॥ॐ ऐं क्लीं सौः सदा कटिं कात्यायनी मम ॥१६
ॐ ह्रीं श्रीं पातु शिश्नं मे देवी श्री बगलामुखी ॥ ऐं सोः क्लीं सौः
पातु गुह्यं गुह्यकेश्वर पूजिता ॥१७॥ ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हसौः पायाद्रूरू
मम मनोन्मना ॥ ॐ जूं सः सौः पातु जानु जगदीश्वर पूजिता ॥१८॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे जंघे मेरुपर्वत वासिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा
पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी ॥१९॥ ॐ ह्रीं दुं पातु मे पादौ पार्वती
षोडशाक्षरी ॥ पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ च वैष्णवी तथा ॥२०॥
दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋते नारसिंहिका ॥ पश्चिमे पातु
वाराही वायव्ये मां अपराजिता ॥२१॥ उत्तरे पातु कौमारी च
ऐशान्यां शांभवी तथा ॥ ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्व
धस्ताच्छिवासदा ॥ २२॥ प्रभाते त्रिपुरा निशीथे छिन्नमस्तका ॥
निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका ॥२३॥ अग्नेरम्बा च मां
पातु जलान्मां जगदम्बिका ॥ वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद् वनज
लोचना ॥२४॥ सिंहात्सिंहासना पातु सर्पात्सर्पान्तकासना ॥
रोगान्मां राजमातंगी भूताद्भूतेश बल्लभा ॥२५॥ यक्षेभ्यो
यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका ॥ भूतप्रेतपिशाचेभ्यो सुमुखी
पातु मां सदा ॥ २६॥ सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इत्येवं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्व मुत्तमम् ॥२७॥ मन्त्र गर्भ महेशानि
कवचेश्वर संज्ञकम् ॥ वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ
॥२८॥ वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापर रहस्यकं ॥ श्रेयस्करं मनुमयं
रोगनाशकरं परम् ॥ २९॥ महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम
॥ अश्वमेध सहस्त्रस्य फलदं पर्मार्थदंम् ॥३०॥ अत्यन्तगोप्यं
देवेशी कवचं मन्त्र सिद्धिदम् ॥ पठनात्सिद्धिदं लोके धारणान्
मुक्तिदंशिवे ॥३१॥ रवौ भूर्जे लिखेद्धीमान् कृत्वा कर्माह्निकं
प्रियं ॥ श्री चक्राग्रेऽष्टगन्धेनसाधको मन्त्र सिद्धये ॥३२॥
लिखित्वा धारयेद्बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम् ॥ किं किं न
साधयेल्लोके गुटिको वर्मणोऽचिरात् ॥३३॥ गुटिकां धारयन्
मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत् ॥ धनार्थी धारयेत् कण्ठे
पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले ॥३४॥ तामेवं धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा
भूर्जपत्रके ॥ श्वेत सूत्रेण संवेष्ट लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥३५॥
सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारेद्रक्त रज्जुना ॥ गुटिका कामदा देवि
देवानामपि दुर्लभा ॥३६॥ कवचस्यास्य गुटिकां धृत्वा मुक्ति
प्रदायिनीम् ॥ कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते ॥
॥३७॥ महिमानं महादेवि जिह्वाकोटि शतैरपि ॥ अदातव्यमिदं वर्म मन्त्र
गर्भ रहस्यकम् ॥ ३८॥ अव्यक्तव्यं महापुण्यं सर्व सारस्वतप्रदम् ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अदीक्षिताय नो दद्यात् कुचैलाय दुरात्मने ॥३९॥ अन्य शिष्याय निन्दकाय कालार्चिनाम् ॥ दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्ति रताय च ॥४०॥ शान्ताय कुल शक्ताय शान्ताय कुलवासिने ॥ इदं वर्म शिवे दद्यात् कुल भागी भवेन्नरः ॥४१॥ इदं रहस्यं परमं दुर्गा कवच मुत्तमम् ॥ गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥४२॥

दुर्गा सहस्त्रनाम॥ भैरव उवाच। अधुना श्रृणु वक्ष्यामि दुर्गा सर्वस्वमीश्वरि। रहस्यं सर्व देवानां दुर्लभम् जन्मिनामपि॥१॥ श्री दुर्गा तत्वमुद्धृत्य सारं त्रैलोक्य कारणम्॥ मन्त्र नाम सहस्त्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम ॥२॥ यत्पठित्वा। शिवे धृत्वा देवी नामसहस्त्रकम् ॥ अश्व मेधायुतं पुण्यं लोके सौभाग्य वर्धनम् ॥३॥ श्रेयस्करं विश्ववन्द्यं सर्व देव नमस्कृतम् ॥ गुह्यं गोप्यतं देवि पठनात्सिद्धि दायकम् ॥४॥ विनियोग ॥ ॐ अस्य श्री दुर्गानामसहस्त्रस्य श्री महेश्वर ऋषिः ॥ अनुष्टुप छन्दः॥ श्री दुर्गा देवता दुं बीजम्॥ ह्रीं शक्तिः॥ ॐ कीलकम् ॥ धर्मार्थ काममोक्षार्थे सहस्त्रनाम पाठे विनियोगः॥ ॐ ह्रीं तुं दुं जगन्माता भद्रिका भद्रकालिका प्रचंडा चण्डिका। चंडी चण्ड मुण्ड निषूदनी ॥५॥ अनसूया तुष्टिस्तारा कृत्तिका कुब्ज कालया ॥ प्रलयस्थित सम्भूति र्विभूतिर्भय नाशिनी ॥६॥ महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी ॥ महालसा मदोत्तुङ्गा मदिरा मदन प्रिया ॥७॥ अलिव्याल प्रसू पुण्या पवित्रा परमेश्वरी ॥ आदि देवी कला कान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी मनो मना महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती ॥ सरित कादम्बरी गोधा गुह्य काली गणेश्वरी॥ ९॥ गम्भिका जया तापी तपना ताप हारिणी ॥ तपो मई दुरालम्बा दुष्ट गृह निवारिणी ॥१०॥ दुखघ्नी सुखदा माधवी परमामृतसूः सुरा ॥ सुधा सुधांशु निलया प्रलया नल सन्निभा ॥११॥ समस्त संपदम्भोज विलया कलि कालया ॥ विंध्येश्वरी विश्वमयी विराट् छन्दोगतिर्मतिः ॥१२॥ धृतिश्च दम्भिका खेला लोपा मुद्रा दरीयसी गरिष्ठा रिष्टहा दुष्टा कृशा काशी कुलाऽकुला ॥१३॥ अकुलस्था पदन्यासा न्यास रूपा विलोपिनी ॥ विरूपाक्षी कोटराक्षी कुलकान्ताऽपराजिता ॥१४॥ अजिता कुलिका

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी ॥ त्रितयी वेद विन्यासा संन्यासा सुमति अभया भया
स्वर्मुखा देवी महौषधिरलम्बुसा ॥ चपला चन्द्रिका चण्डा चण्डमुण्ड निषूदनी ॥१६॥
चपलाक्षी मदाविष्टा मदिरारुण लोचना ॥ पुरि त्रिपुरसुरास्ता रमा रामा मनोरमा ॥
॥ सन्ध्या सन्ध्याभ्र शीला च शाला च श्याम पयोधरा ॥ शशाङ्क मुकुटा श्यामासुरा सुन्दर
लोचना ॥१८॥ विषमाक्षी विषालाक्षी वभ्रा वागीश्वरी शिला ॥ मनः शिला च कस्तूरी
मृग नाभि मृगेक्षणा ॥१९॥ मृगी रिवाहना साध्वी मानदा मत्त भाषिणि ॥ नारसिंही
वामदेवी बामा (बाम्) श्रुतिप्रिया ॥२० पुण्या पुण्य गति; पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया ॥ चामुण्डा उग्र
मुण्डा च महा चण्ड तमा उमा ॥२१॥ तपस्विनि प्रभा ज्योत्स्ना महज्ज्योति: स्व
रूपिणी ॥ सुरूपा सद्गति साध्वी सदसद्रूपराजिता ॥२२॥ सृष्टि स्थिति: क्षेम करी क्षामा
क्षामोन्नतस्तनी ॥ क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शवस्था शिवबल्लभा ॥२३॥ दन्तुरा
दाडिम प्रीति र्दया दाम्भिकसूदिनी ॥ राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योग
बल्लभा ॥२४॥ कबन्धा कन्दरा कृत्या कृत्तिका कण्ट कान्तका ॥ कलङ्क
रहिता काली कम्पा काश्मीर बल्लभा ॥२५॥ काशी कीर्ति प्रदा काञ्ची काश्मीरी
कोकिलस्वना ॥ प्रभावती महा रौद्री रुद्र पत्नी रुजापहा ॥२६॥ रति: स्तुतिस्तुरी तुर्या
तोतुलाऽतलवासिनी ॥ तपःप्रिया शरच्छ्रेष्ठा पद्मपुत्री यमस्वसा ॥२७॥ यामी यमान्तका
याम्या यमुना स्वर्नदी तडित ॥ नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥२८॥
बिगता बिगतप्रश्ना कृशा कृष्टाऽसिधारिणि ॥ वारी वारा वरधरा वरदा वीरसूदिनी
वीर सूर्वा मनः कारा दीर्घ सूत्रा दयावती ॥ दरीधन प्रिया धात्री धात्रीबल्ली
महोदरी ॥३०॥ गणेश्वरी गरा काञ्ची काञ्ची किङ्किणि घण्टिका ॥ माया मायाबती मत्ता
प्रमत्ता प्रवरेश्वरी ॥३१॥ पौरन्दरी शची सीता शीतातपस्वभावजा ॥ स्वाभाविक गुणा
गण्या गाम्भीर्य गुणभूषणा ॥३२॥ सुति: सूर्यकला सुप्रा सप्रसप्रीति रूपिणी ॥ तेजस्विनी
सदानन्दा सभासन्तोषवर्धिनी ॥ ३३॥ तर्पराऽऽकर्षणा होता संकल्पा शुभमन्त्रिका ॥
दर्भा द्रोणिकला शान्ता समिधा सुर वेदिका ॥३४॥ धूम्राऽहुतिश्च रमोतिश्चामीकर
रुचिश्चिता ॥ दिव्याऽनलेश्वरी नीला कालानल सरस्वती ॥३५॥ अपर्णा सुफला यज्ञा
समया निभया भया ॥ भीमस्वना भर्ग शिखा भास्वती भास्वरा विभा ॥३६॥ विभावरी
नदी नन्दा नन्दावर्त प्रवर्तिनी ॥ पृथ्वीधरा विषधरा विश्वगर्भा प्रवर्तिका ॥३७॥
विश्वमाया विश्वबाला बिश्वम्भर विलासिनी ॥ उरगेशा पद्मनागा पद्मनाभप्रसू:
प्रजा ॥३८॥ तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युति: ॥ संपुटा शयना शय्या शासना
शमनान्तका ॥३९॥ श्यामा कवर्णा शार्दूली शष्पनीताशु बल्लभा ॥ स्तुत्या
प्रणीता नियति: कम्पना कम्पहारिणी ॥४०॥ चम्पकाभा धरा चीनाऽदीना दीनजन
प्रिया ॥ वसुंधरा वसवेशी वसुना था बटेश्वरी ॥४१॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समुद्रासंगमा पूर्णा तरला तरुवासिनी ॥ पार्वती पामरी मान्या माननीयामधु
प्रिया ॥ ४२ ॥ माधवी मधुपानस्था मन्दिरा मन्दुरा मृगी ॥ मुमूर्षा मरुधारेवा
रेवती रमणी रमा ॥ ४३ ॥ ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी ॥
अणुरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनि ॥ ४४ ॥ गारुडी गगना लम्बा मानकच
प्रिया ॥ पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीत वल्लभा ॥ ४५ ॥ बलाकाजगदन्ता
च जयाजय वरप्रदा प्रीतिः कठोर वदना करालरदना रमा ॥ ४६ ॥ जिह्वाहस्ता
च बगला प्रज्ञा विनय प्रदा ॥ कीरी कराल वपुषी शेमुषी मक्षिका मषी ॥ ४७
उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा शिव पत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता
सरस्वती ॥ ४८ ॥ तथ्या पथ्याकृती रथ्या रथस्था विततस्वरा ॥ महती रागिणी
मार्गी शुचि हासा हरीश्वरी ॥ ४९ ॥ हरिद्रा नांशुलसिता लक्ष्मी नायकसुन्दरी ॥
अम्बालिका ऽम्बा देवेशी अनघा अग्नि शिखा श्रुतिः ॥ ५० ॥ अलसा अलय गीतश्चाम्ला
अनन्ता अनन्तगुणाश्रया ॥ आद्या चादित्य संकाशा आदित्य कुलसुन्दरी ॥ ५१ ॥
आत्मरूपा ऽधिशमनी आदिमाया ऽऽदिदेवता ॥ इन्दुस्य सूरिन द्योतिरिन
अग्नि शशि लोचना ॥ ५२ ॥ उमा उर्वी उरुभुजा उत्तङ्गा चोक्षवाहना ॥ उत्तङ्का
चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरुगर्वजी ॥ ५३ ॥ ऊष्मा ऊणा च गुर्वङ्गी ऊर्ध्वाक्षी
ऊर्ध्व मस्तका ॥ ऋद्धि ऋचा ऋवर्णेशी ऋण हर्त्री च वार्तकी ॥ ५४ ॥
ऋद्धिजा चारुवस्त्रा च ऋणिवासा महालसा ॥ लृकारा लृक्रा लीना लृकार
वरधारिणी ॥ ५५ ॥ एणाङ्क मुकुटा चेहा चारु चन्द्र कला कला ॥
एकारगीतैरैश्वर्य दायिनी च ऐश्वरी गतिः ॥ ५६ ॥ ॐकार बीजरूपा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

च क्षौत्रिकी बीज धारिणी ॥ अम्बिका ऽलम्बिका वाच अस्वरोद्धरकारिणी ॥५७॥ काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा ॥ कदम्ब निलया कन्या काञ्ची मण्डन मण्डिता ॥५८॥ कलङ्क रहिता कूर्पा काञ्चनाभा करीरगा ॥ कनकाचलवासा च कारुण्या कुलमानसा ॥५९॥ कुलस्था कौलिनी कुलम्का कुरुकुल्ला कपालिनी ॥ कपाल कुल निर्विणा क्रीं कारा कंजलोचना ॥६०॥ खंजनाक्षी खंगधरा खेटकाद्यायुध भूषणा ॥ खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥६१॥ खकाद्यायुधा खगपति: खकाराक्षर भूषणा ॥ गराद्यक्षा गजागति र्गणेशजननी गदा ॥६२॥ गोधा गदाधर प्राज्या गगनेशी महीमला ॥ घुर्घुराघट भूर्घूका घुसृणाभा घनेश्वरी ॥६३॥ घनसार प्रिया साम्या घवर्णस्त भूषणा ॥ चान्द्री चन्द्रस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डिनिस्वना ॥६४॥ चंचरीकस्वना देवी चंचद्यामी कराङ्कुरा ॥ छत्रिका छुरिका छन्दा छत्रचामर भूषणा ॥६५॥ जीकारा जलजिह्वा च जृम्भिका जलयोगिनी ॥ जटाजूटधरा जाति र्जातिपुष्प समानना ॥६६॥ जलेश्वरी जगद्ध्येया जानकी जननी जटा ॥ झंझा झरी झरत्कारी झरत्कांचीर किंकिणी ॥६७॥ झिंटिका झम्पकृज्झम्पा झंपत्रास निवारिणी ॥ अणुरूपा अक्षहस्ता अकाराऽक्षरसंमता ॥६८॥ टंकायुधा महातव्या टंकारा करुणाटसी ॥ ठक्कुरा ठत्करा ठनी डिंडिरवसना डला ॥६९॥ ढुंढानिलमयी ढिंढा ढणत्कारकरा ढसा ॥ णान्ता णणी णीला णा युधा णवर्णाक्षर भूषणा ॥७०॥ तरुणी तुन्दिला तोदा तामसी तामस प्रिया ॥ ताम्राननाताम्रकरा ताम्राम्बरधरा तुला ॥७१॥ तापत्रयहरा तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा ॥ स्थाणु पत्निस्थली स्थूला स्थिति: स्थैर्यधरा स्थुला ॥७२॥ दन्तिनी दन्तुरा दावी देवकी देव नायिका ॥ दामिनि शमिनी दंड्या दंडहस्ता दुरानति: ॥७३॥ दुर्वारा दुर्गतिर द्राक्षी द्राक्षा द्रविड़ा वासिनी ॥ दुरस्था दुंदुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी ॥७४॥ दु:खघ्नी च दुर्गा द्रष्टा दया दमिकरा नाशिनी ॥ धर्म्या धर्म प्रसू धन्या धनदा धातृ बल्लभा ॥७५॥ धनुर्धरा धनुर्वल्ली धनुष्कवरदायिनी ॥ धूमाली धूम्र वदना धूमश्री धूम्र लोचना ॥७६॥ नलिनी नर्तकी नान्ता नङ्गा नलिन लोचना ॥ निमला निगमाचारा निम्नगा नगजा निमि: ॥७७॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बालग्रीवा निरीहा च [illegible] जन्या निद्रा लुनीर
वासिनी ॥७८॥ नटिनी नाट्य निरता नवनीत प्रियाऽनिला ॥ नारायणी निराकारा
निर्लेपा नित्य बल्लभा ॥७९॥ पद्मावती पद्म कारा पुत्रदा पुत्र वत्सला ॥ परोत्तरापुरी
पाठा पान श्रोत्रा पुलोमजा ॥८०॥ पुष्पिणी पुस्तकाकरा पुरःपारिर वाहना ॥पापघ्नी
शम्पिनी पाली पली परम सुन्दरी ॥८१॥ पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्र
धरा पुटा ॥ पूर्णिमा पंचमी पौत्री पुरुरव वरप्रदा ॥८२॥ पंचयज्ञा पंचशरी पंचाशन
मनुप्रिया ॥ पंचाली पंचपुत्रा च पूर्णापूर्ण मनोरथा ॥८३॥ फलिनी फलदात्री च
फल हस्ता फणि प्रिया ॥ फिरंगहा स्फीत मतिः स्फीतिः स्फीत मनी स्फुरा ॥८४॥
बलमाया बलस्तन्या बिल्लसना बलाबला ॥ बगलेश्वर पूज्या च बलिनी बलबोधिनी
॥८५॥ बुद्धमाता बौद्ध मतिर्बद्धा बन्धन मोचिनी ॥ भगिनी भगमाला च भग
लिंगाऽमृतस्त्रवा ॥८६॥ भीमेश्वरी च भीरुण्डा भगेशी भग मर्षिणी ॥ भग
लिंगस्थिता भग्या भाग्यदा भागमालिनी ॥८७॥ मत्तमनोहरा मैना मैनाक जननी
मुरी ॥ मुरली मानवी होत्री महास्विजन मोदिता ॥८८॥ मत्त मातंगगा माद्री मराल
गति चंचला ॥ यज्ञेश्वरीश्वरी यज्ञा यजुर्वेद प्रियाशिनता ॥८९॥ यशोवती यतिस्था
च यतिस्था यतिबल्लभा ॥ यवनी यौवनस्था च यवा यक्ष जनाश्रया ॥९०॥
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्युपमूलना ॥ रंजिता राजपत्नी च राज सूयफलप्रदा ॥९१॥
रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्य वर्धिनि ॥ राज्ञी रात्रिं च रेखानी रोगघ्नी
त्रिपुरेश्वरी ॥९२॥ ललिता लतिका लाप्या लोपा ललन लालसा लाटीर द्रुमवासा
च पाटीर्द्रुमवर्तिनी ॥९३॥ लंका ललजूटा जूटा लंघिता सुरसुन्दरी ॥ लोकेशवरदा
लीयालयकर्त्री महालया ॥९४॥ वेदिरविगगना वाणी च वेणी वेणुर्वनेश्वरी ॥
वन्दमाना वर्णाढ्या वाराही वीर मातृका ॥९५॥ शंखिनी शंख वलया शंखायुधधरा
शमा ॥ शशि मंडल मध्यस्था शीतलाम्बु निवासिनी ॥९६॥ शमशानस्था महा
घोरा शमशान निलयेश्वरी ॥ सिन्धुः सुग्धरा सत्रा समस्त कुलचारिणी ॥९७॥
सप्तमी सात्वकी सत्त्वा सूत्रस्थाऽसुर सूदनी ॥ सुरेश्वरी संपदाद्या समस्ता
चल चारिणी ॥९८॥ समदा संमतिः संभा सवना सवनेश्वरी ॥ हंसी हरि प्रिया
हास्या हरिन्नेत्रा हराम्बिका ॥९९॥ हेवा हटेश्वरी हीरा फलिनी फलदायिनी ॥
हेहा हाहारवा हाला हालाहल हताशया ॥१००॥ क्षेमा क्षेमप्रदा क्षामा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षौमाम्बरधराक्षया ॥ क्षान्तिः ॥ क्षारप्रिया ऽलक्ष्या क्षितिभृत्तनया क्षुधा ॥१०१
क्षत्रिणी ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षबीज मण्डिता ॥ लक्षबीज स्वरूपा च क्षकारा
क्षर मातृका ॥१०२॥ दुर्गन्धनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गनाशिनी दुर्गा
~~दुर्गार्ति नाशिनी ॐ ह्रीं दुं बीज मण्डिता ॥१०३॥ इति नाम सहस्रं तु मन्त्र~~
गर्भ महाफलं ॥ दुर्गाया दुर्गति हरं सर्वदेव नमस्कृतम् ॥१०४ सर्वमन्त्र
मयं दिव्यं देवदानव पूजितम् ॥ श्रेयस्करं महापुण्यं महापातक नाशनम् ॥१०५
यः पठेत्पाठयेद्वाऽपि शृणोति श्रावयेत् तथा ॥ स महापातकैर्मुक्तो देवदानव
सेवितः ॥१०६॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥ दुर्गा नामसहस्रं
तु मूल मन्त्रैक साधनम्) ॥१०७॥ अर्धरात्रे पठेद्वीरो मधुरं भवसेवितम् ॥
त्रिवारं वर्म पूर्वं तु भवेद्वागीश सन्निभः ॥१०८॥ यः पठेद्देवी मध्याह्ने
स्त्री युतो मुक्त कुन्तलः ॥ तस्य वैरि कुलं नस्येद् दर्शनादेव नश्यति ॥१०९॥
दहनादिव देवेशि पतंग कुल मद्रिजे ॥ यः पठेत् वेतसीमूले सायं पूजित
भैरवः ॥११०॥ तस्यास्य कुहराद्वाणी निःसरेद् गद्य पद्यभाक् ॥ यः पठेत्सततं देवि
शयने स्त्री रताकुला ॥१११॥ स भवेद् वैरि विध्वंसी धनेन धनदोपमः ॥
वाग्मि र्वागीश सदृशः कवित्वेन सितोपमः ॥११२॥ तेजसा सूर्य संकाशो यशसा
सूर्यसन्निभः ॥ बलेनायुततुल्यो हि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः ॥११३॥ देवि किं
बहुनोक्तेन स भवेद् भैरवोपमः ॥ स्तम्भनाकर्षणोच्चाटवशीकरणक्षमः ॥११४॥

(यदि रविवार को भोजपत्र पर अर्धरात्री में अष्टगंध से लिखे

मुक्त कुन्तल माने = मुक्त केश करके
(बाल खोल के)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भैरवो उवाच – खौ भूर्जे लिखे देवी निशीथे वाऽष्टगन्धकै: ।। सस्तन्यरेतो राजस्कै: साधको मन्त्र साधक ।।११५।। लिखित्वा वेष्टयेन्नाम सहस्त्रमोण भीश्वरी ।। श्वेत वस्त्रेण संवेष्टय लाक्षया परिवेष्टयेत् ।।११६।। सुवर्ण रजताद्यैश्च वेष्टयेत्पीत सूत्रकै: ।। संपूज्य गुटिकां देवि शुभेऽह्नि साधकोत्तम: ।।११७।। धारयेन् मूर्ध्नि वा बाहो गुटिकां काम दायिनीम् ।। रण रिपून्विक्षित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत् ।।११८।। वन्ध्या वाम भुजे धृत्वा कृत्वा साधक पूजनम् ।। पुत्रान्लभेन्महादेवि साक्षात् वैश्रावो उपमान् ।।११९।। गुटिकैषा महादिव्या गोप्या काम फलप्रदा ।। साधकै सततं पूज्या साक्षात्दुर्गा स्वरूपिणी ।।१२०।। योऽर्चयेत साधको दुर्गां गुटिकां धारयेत् प्रिये ।। पठन् वर्म शिव मंत्रै नाम सहस्त्रकं परम् ।।१२१।। पंगस्तोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्ये ऽधुना शृणु ।। वने राजकुले वाऽपि दुर्भिक्षे शत्रु संकटे ।।१२२।। गृह यक्ष पिशाचादि भूत प्रेत भयेतथा ।। वीरे विगत भीर्देवी सर्वत्र विजयी भवेत् ।।१२३।। स्तम्भयेद् वायु सूर्यौ च चन्द्रादीन साधकोत्तम: ।। मोहयेत् त्रिजगत्सद्य: कान्ताश्चा कर्षयेद् ध्रुवम् ।।१२४।। मारयेद खिलान् शत्रुन उच्चाटयेच्च वैरीण: ।। वशयेद् देवता: सद्य: किं पुन मानवान् शिवे ।।१२५।। शमयेद् खिला रोगान्महोत्पातानुपद्रवान ।। किं किं न लभते वीरो दुर्गा पंचाङ्ग पूजनात् ।।१२६।। इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरी ।। सर्वस्वं सार तत्त्वम् च मूलविद्यामयं परम् ।।१२७।।

।। यह अष्टाक्षरी महाविद्या है ।। (अष्टाक्षर दुर्गा मन्त्र)

मन्त्र: – ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नम:) नौ लाख जप करले। इसमें हवन तर्पण मार्जन सब के निमित्त को जप हो जायेगा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ श्री दुर्गा कवच ॥ यह गुरु से दुबारा लिखा गया है। प्रतपठो।

भैरव उवाच =

ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम् दुं नेत्रे षडाक्षरा
पातु चोष्टौ चामुण्डा चण्डघातिनि ॥ मे किं बीजं सदा पातु

ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम॥ दुं नेत्रे षडाक्षरा
पातु चक्रौ पातु श्रुतोमम। ६॥ मठं गण्डौ च मे पातु देवीशे
रक्त कुण्डला॥ वायुर्नासां सदा पातु रक्त बीज निसूदिनो
॥१०॥ लवणं पातु मे चोष्टौ चामुण्डा चण्ड घातिनि॥ मं क्रीं ना
बीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्त दन्तिका। ॥११॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु
मे कण्ठं नील कण्ठाङ्क वासिनि ॥ ॐ ऐं क्लीं पात मे
स्कन्धौ स्कन्द माता महेश्वरि ॥१२॥ ॐ सौं क्लीं
मे पातु बाहु देवेशी बगला मुखी। ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ
शिवाशत निनादिनि ॥१३॥ सौं ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता
विध्यवासिनि। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं माम मातंगिनि
परा ॥१४॥ श्रीं ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वौ हिमाचल निवासिनी ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ स्त्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गार्तिनाशिनि ॥१५॥ ॐ क्रीं हूं पातु मे
नाभिं देवि नारायणी सदा ॥ ॐ ऐं क्लीं सौं सदा पातु कटिं
कात्यायनी मम ॥१६॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु शिश्नं मे देवी श्री
बगलामुखी ॥ ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वर
पूजिता ॥१७॥ ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हसौः पायादुरु मम मनोन्मना ॥
ॐ जूं सः सौः पातु जानु जगदीश्वर पूजिता ॥१८॥ ॐ ऐं
क्लीं पातु मे जंघे मेरु पर्वत वासिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गीं
सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी ॥१९॥ ॐ ह्रीं दुं पातु मे
पादौ पार्वती षोडशाक्षरी ॥ पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी बह्नौ
च वैष्णवी तथा ॥२०॥ दक्षिणे चण्डिका पातु नैऋते नारसिंहिका ॥
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽपराजिता ॥२१॥ उत्तरे पातु
कौमारी च एशान्यां शांभवी तथा ॥ ऊर्ध्वं सदा पातु
पात्वधस्तात्छिवा सदा ॥२२॥ प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे
छिन्नमस्तका ॥ निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका
॥२३॥ अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका ॥ वायोर्मां
पातु वाग्देवी वनाद्वनज लोचना ॥२४॥ सिंहात् सिंहासना
पातु सर्पात् सर्पान्तकासना ॥ रोगान्मां राजमातंगी भूताद्
भूतेश वल्लभा ॥२५॥ यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राक्षसान्तकः ॥ भूत प्रेत पिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा ॥
॥२६॥ सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा ॥ इत्यवं
कवचं गुह्यं दुर्गा सर्वस्वमुत्तमम् ॥२७॥ मन्त्र गर्भ
महेशानि कवचेश्वर संज्ञकम् ॥ वित्तदं पुण्यदं पुण्यं
वर्म सिद्धि प्रदं कलौ ॥२८॥ वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापर रहस्यकं
॥ श्रेयस्करं मनुमयं रोग नाशकरं परम् ॥२९॥ महापातक कोटिघ्नं
मानदं च यशस्करम् ॥ अश्वमेध यज्ञ सहस्रास्य फलदं
पर्माथ्यं दं ॥३०॥ अत्यन्त गोप्यं देवेशि कवचं मन्त्र सिद्धिदं ॥
पठनात्सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे ॥३१॥

सफेद भोजपत्र पर अष्ट गंध से लिखे श्री चक्र के सामने फिर पूजा
करके बांह मे बांधे मन वांछित फल होवे। टोपी मे धरे राजा
वश होवे। कण्ठ में पहने धन मिले। कमर मे बांधे पुत्र मिले
सफेद सूत से लपेटे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रह्मवैवर्तपुराण को
प्रकृति खण्ड के अन्तिम अध्याय में

॥दुर्गा स्तोत्रम्॥

पुरा स्तुता सा गोलोके कृष्णेन परमात्मना ॥ संपूज्य मधुमासेन प्रीतेन रास मण्डले ॥१॥ मधुकैटभयोर्युद्धे द्वितीये विष्णुना पुरा ॥ तत्रैव काले सा दुर्गा ब्रह्मणा प्राण संकटे ॥२॥ चतुर्थे संस्तुता देवी भक्त्या च त्रिपुरारिणा ॥ पुरा त्रिपुर युद्धे च महा घोरतरे रणे ॥३॥ पंचमे संस्तुता देवी वृत्रासुर वधे तथा ॥ शक्रेण सर्वे देवैश्च घोरे च प्राण संकटे ॥४॥ तदा मुनीन्द्रैर्मुनिभिर मानवैः सुरथादिभिः ॥ संस्थिता पूजिता सा च कल्पे कल्पे परात्परा ॥५॥ स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन् सर्व विघ्न विनाशनम् ॥ सुखदं मोक्षदं सारं भवाब्धेः पारकारणम् ॥६॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ त्वमेव सर्वजननी मूल प्रकृति रीश्वरी ॥ त्वमेवाद्या सृष्टि विधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ॥७॥ कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् ॥ परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या स्वरूपिणी ॥८॥ निजस्वरूपा परमा भक्तानुग्रह विग्रहा ॥ सर्वस्वरूपा सर्वाणी सर्वाधारा परात्परा ॥९॥ सर्वज्ञा सर्वतो भद्रा सर्व मंगल मंगला ॥ सर्वज्ञान प्रदा देवी सर्वज्ञा सर्व भाविनी ॥१०॥ त्वं स्वाहा देव दाने च पितृदाने स्वधा स्वयम् ॥ दक्षिणा सर्वदाने च सर्व कर्माणि संततम् ॥११॥ निद्रा त्वं च दया त्वं च कृष्णा त्वं चात्मजन्मने ॥ तत्क्षान्तिः शान्ति रीशा च कान्ति स्तुष्टिश्च शाश्वती ॥१२॥ श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा प्रभा सदा ॥ सतां संपत्स्वरूपा श्री विपत्तिरसतामिह ॥१३॥ प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहांकुरा ॥ शश्वत्कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्व जीविनाम् ॥१४॥ देवेभ्यः स्वपदं दात्री धातुर्धात्री कृपामयी ॥ कृता या सर्व देवानां सर्वासुर विनाशिनी ॥१५॥ योग निद्रा योग रूपा योग दात्री च योगिनाम् ॥ माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया चवैष्णवी ॥१६॥ भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोक भयंकरी ॥ ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे ॥१७॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी ॥ रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातवहित कारिणी ॥१८॥ ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम् ॥ विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सताम् ॥१९॥ मेधा स्मृति स्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम् ॥ राज्ञां प्रतापरूपा च विशांवाऽपिश पूजिते ॥२०॥ इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गायाः स्वर्गकारणम् ॥ पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धिर्भवति वांछिता ॥२१॥ वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च दुर्भगा ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभेत ध्रुवम् ॥२२॥ कारागारे महाघोरे यो बद्धो दृढबन्धनैः ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धनान् मुच्यते ध्रुवम् ॥२३॥ यक्ष्मग्रस्तो गलत्कुष्ठी महाशूलो महाज्वरी ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सद्यो रोगात्प्रमुच्यते ॥२४॥ राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रणस्थले ॥ हिंस्रकजन्तु समीपे तु श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते ॥२५॥ महादरिद्रो मूर्खश्च वर्षमेकं स्तोत्रं पठेत् ॥ विद्यावान धनवान चैव स भवेन्नात्र संशयः ॥२६॥

भूत त्वं च प्रेत त्वं ~~पिशाचत्वं~~ ब्रह्मराक्षस जिन्द त्वं ॥ शाकिनी त्वं च डाकिनी त्वं, योगिनी त्वं पिशाचिनी त्वं ॥ वीर भैरव कलुवा ~~[illegible]~~ सैयद वीर, मसान हो तुम ॥ कार्य कारण कारिणी त्वं ॥ समस्त विश्व की स्वामिनि त्वं ॥ जीव मात्र का जीवन त्वं ॥ हरो सकल दुख स्वामिनि तुम ॥ सकल विघ्न बाधा हो तुम ॥ सर्वारिष्ट रूप भी तुम ॥ अमुक जीव के अन्दर तुम । देव रूप धर लो, अब तुम ॥ सकलारिष्ट हटा कर स्वामिन मंगल रूप धरो मां तुम ॥ भव्य रूप में आओ सुमुख दीजै कमला का कष्ट मिटा दो [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

यह प्रयोग विषय मल से दुबारा भी लिखगया है प्रांग।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७० पेज

सप्ताक्षरी दुर्गा

॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः॥

विनियोग॥ ॐ अस्य नारद ऋषिः गायत्री छन्दः। दुर्गा देवता। दुं बीजं। गां शक्तिः॥ ह्रीं कीलकम्। अभिष्टार्थे जपे विनियोगः॥

करन्यास॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

हृदन्यासः॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रां हृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रीं शिरसे स्वाहा॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रूं शिखायै वषट्॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रैं कवचाय हुं॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रः अस्त्राय फट्॥ ३ बार

ध्यान॥ सिंहस्था शशिशेखरा मरकत प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शंखं चक्रं धनुः शरांश्च दधती दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता॥ आमुक्ताङ्गद हार कंकण लसत्कांची क्वणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गविनाशिनि भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥२७१॥

हवनद्रव्य॥ घृताक्तेन पायसेन त्रिमधुराक्तैः तिलैर्दशांश होमः॥२७२॥

॥ अथ दुर्गा यन्त्रोद्धारः॥

दुर्गा यन्त्रं प्रवक्ष्यामि शृणुस्व हरवल्लभे त्रिकोणं विन्यसेत पूर्वं नवकोण समन्वितम्॥२७३॥ त्रैबिम्ब सहितं सर्वम् अष्ट पत्र समन्वितम्॥ त्रिरेखा सहितं व ज्ञनूपुरद्वय संयुतम्॥२७४॥ समीकृत्य यथोक्तेन विलिखेत् विधिना मनु॥ नाना अस्त्र संयुतं लेख्यं चक्रं मन्त्र विभूषितम्॥२७५॥ तत्र तां पूजयेद्देवीं मूल प्रकृति रूपिणीम्॥ दुर्गा ध्यान॥ पुष्पांजलि समय॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिंहस्कंध समारुढां नानालंकार भूषितांम् ॥२७६॥ चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥ रक्त वस्त्र परिधानां बालार्क सदृशीतनूम ॥२७७ नारदाद्यै मुनिगणैः सेवितां भव गेहिनीम् ॥ त्रिवलीबलयोपेतनाभिनाल सुवेशिनीम् ॥ २७८॥ रत्नद्वीपे महाद्वीपे सिंहासन समन्विते॥ प्रफुल्लकमलारुढां ध्यायेतां भवगेहिनीम् ॥ २७९॥

दुर्गा नवार्णमहामन्त्रः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रतिपदा के दिन कलश रखने के बाद कुमारी पूजन करे
भगवती की स्थापना करने के बाद पाठ करने के बाद में बैठे
अष्टदल का यन्त्र सिन्दूर से बनाकर उसपर सतिया लगाकर
~~लाल~~ लाल वस्त्र का आसन विछावे उसपर बैठा कर चरण धुलावे
आवाहन फूल लेकर करले पहले) फिर उसे लक्ष्मी रूप समझे।
और प्रार्थना करे = मन्त्राक्षरमयी लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् ।।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ।। फिर पूजन
पंचोपचार से करे, (बाद में) भोजन खिलावे, जब तक भोजन करे नवार्ण
मन्त्र जपता रहे। फिर बार २ भोजन पूछे, बीच २ में, जोजो खावे
सो सो देवे, पश्चात् हाथ धुलावे, कुल्ला करवे, हाथ पुछावे,
कपूर मिश्रित पान दे, दक्षिणा दे, परिक्रमा करे। तब
विसर्जन वाले श्लोक हाथ में फूल लेकर बोले चरणा पर
गिरपड़े प्रार्थना करे खुश करके घर भेजा।
यं यं प्रार्थयते कामं देवानामपि दुर्लभम् । कुमारीपूजनं कृत्वा तं तं
प्राप्नोत्यसंशयम् ।। शतक्रतु फलं तस्य यः कुमारी प्रपूजयेत्

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ कुमारी पूजन विधान ॥

अपने हाथ में फूल लेकर बोले ॥ आवाहन ॥

ऐहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थे मम सर्वदा ॥ आवाहयाम्यहं देवि सर्व कामार्थ सिद्धये ॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थिते मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वेश्वरि नमोऽस्तुते ॥ "प्रार्थना" जयन्ती मंगला काली भद्र काली कपालिनि ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥ त्राहि मां देवि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ द्रव्यम् आरोग्य विजयं देहि देवि नमः सदा ॥ भूत प्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि ॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्ष मां सदा ॥ सर्व मंगल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥ शरण्ये त्रियम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहि मे ॥ ॥ ध्यान ॥

ॐ नमः पिशाचिनी करंकिनी त्रिशूल खड्ग हस्ते सिंहारुढा ऐहि आगच्छ २ इमां पूजां गृहण २ स्वाहा । साक्षात्कन्या स्वरुपिण्यै ह्रीं श्रीं क्लीं चण्डिकायै नमः ॥ सिंहस्कन्ध समारुढां नाना लंकार भूषितां चतुर्भुजां महा देवीं नाग यज्ञोपवीतनीम् रक्त वस्त्र परीधानां बालार्क सदृशीतनूम् नारदाद्यै मुनिगणैः सेवितां भवगेहिनीम् ॥ त्रिवली बलयो पेतनाभिनाल सुवेशिनीम् । रत्न द्वीपे महा द्वीपे सिंहासन समन्विते ॥ प्रफुल्ल कमलारुढां ध्यायेतां भवगेहिनीम् ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

बिन्दु त्रिकोण षट्कोण वसु कोण सतरस्त्र चतुर्द्वार नवार्णमन्त्र का यन्त्र है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वषट् वशीकरण में लगता है।
फट् - उच्चाटन में
हुं - स्तम्भन में
खे खे - मारण मे
स्वाहा - तुष्टि मे पुष्टि मे भी
ठः ठः - पुष्टि मे
नमः - सर्वार्थ मे
ठः ठः - स्तम्भन मे भी
वौषड - आकर्षण मे
नमः - सम्प्रीति हेतव

पूर्व मे मुख करे। तुष्टि पुष्टि मे
आग्नेय में करे। आकर्षण मे
दक्षिण में। मारण मे
~~विद्वेषण मे~~। नैऋत्य मे
धन के लिये। पश्चिम मे
वायव्य मे। उच्चाटन मे
ईशान में। ज्ञान सिद्धि
उत्तर मे। उग्रकार्य मे

संगम बेला में वस्त्र रपा।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संग्राम बेलायाम वस्त्रमाच्छाद्य संजपेत ॥२२३॥ अस्य मन्त्रस्य स्फुरेन दर्शयेत तथा वक्ष्यमाणमाह वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चै अमुक नामाख्यं वषट् मे वश्यं कुरु स्वाह॥ उच्चारन मन्त्र में ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चै देवदत्तं फट् उच्चारनं कुरु२ स्वाहा ॥२२५॥ मोहन में ॥ क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै देवदत्तं क्लीं२ मोहनं कुरु कुरु क्लीं क्लीं स्वाहा ॥ २२६ ॥ मारण में ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै रं रं खे खे मारय २ रं रं शीघ्रं भस्मीकुरु २ स्वाहा ॥ ॥२२७॥ स्तम्भन में ॥ ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय २ ह्रीं जिह्वा कीलय २ ह्रीं बुद्धिं विनाशय २ ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा ॥२२८॥ आकर्षण में ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चै देवदत्तं यं यं शीघ्रं आकर्षय २ स्वाहा ॥२२९॥

वशीकरण को वषट् से पुटित करो।

उच्चाटन में फट् से

मोहन में कामबीज से पुटित करो।

मारण में रं रं खे खे से

स्तम्भन में ठः ठः से पुटित करो।

आकर्षण में कामबीज से

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर्षा लक्ष जप किया जाता है। दुर्गा कल्पतरु से उतारा है।

"आगम कल्प का प्रकरण है यह"

सप्ताक्षरी दुर्गा मन्त्र = ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः" । विनियोग इनका है।

ॐ अस्य नारद ऋषिः गायत्रीछन्दः दुर्गा देवता दुं बीजं गं शक्तिः ह्रीं कीलकं अभिष्ट सिद्ध यर्थे जपे विनियोगः"

करन्यास = ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रां (अंगुष्ठाभ्यां नमः) ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रूं (मध्यमाभ्यां नमः) ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।।

हृदयन्यास = ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रूं ~~कवचाय हुं~~ शिखाय। ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रैं ~~नेत्र~~ कवचाय हुं। ॐ ह्रुं दुर्गायै ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रुं दुर्गायै ह्रः अस्त्राय फट्। (3 बार ताली बजावे)

दूसरी प्रकार से अष्टाक्षरी मन्त्र। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै ह्रां ह्रीं)

घी खीर तिल मधु। से हवन करे

(ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः) यह दुर्गा जी का सप्ताक्षरी मन्त्र है।

(ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः) यह दुर्गा जी का अष्टाक्षरी मन्त्र है।

(ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः) यह दुर्गा जी का नवाक्षरी मन्त्र है।

(ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः) यह दशाक्षरी मन्त्र है।

त्रिमधु पुष्प
शक्कर
मधु

सब का न्यास ऊपर की तरह होगा और वर्षा लक्ष जप दशांश तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन दशांश ब्राह्मणभोजन

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ दुर्गानवार्ण महामन्त्र ॥

विनियोग = ॐ अस्य श्री नवार्ण महा मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि: महेश्वरा ऋषय: ॥ श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता: ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्दांसि ॥ नन्दा शाकम्भरी भीमा शक्त्य: ॥ रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि ॥ अग्नि वायु सूर्यास्तत्वानि ॥ जपपूजादौ विनियोग: ॥

बीजन्यास: ॥ ॐ क्लीं वाम नेत्रे ॥ ॐ चां दक्षिण कर्णे ॥ ॐ मुं वाम कर्णे ॥ ॐ डां नासिकायाम् ॥ ॐ यै मुखे ॥ ॐ विं लिंगे ॥ ॐ च्चे पादयो ॥ २८१ ॥

ध्यान

अरुण कमल संस्थात द्रज: पुंज वर्णा कर कमल धृते ष्टा भीति युगमाम्बुजा च ॥ मणि मुकुट विचित्रा ऽलंकृता ऽऽकल्पजातै र्भवतु भुवन माता संततं श्री: श्रियै न: ॥ २८२ ॥ ६

मन्त्र = ऐं ह्रीं महा दुर्गे नवाक्षरि नवदुर्गे नवात्मिके नव चण्डि महा माये महामोहे महा योगनिद्रे जय मधु कैटभ भवि द्राविणी महिषासुमर्दिनी धूम्रलोचन संहन्त्री चण्ड मुण्ड विनाशिनी रक्त बीजान्तके निशुम्भ विध्वंशिनी शुम्भ दर्पघ्नी देवि अष्टादशबाहुके कपालखट्वाङ्ग शूल खंग खेटक धारिणि छिन्नमस्तकधारिणि रुधिरमांस भोजिनी समस्त भुत प्रेतादि योगध्वंशिनी ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देवि मां रक्षय २ मम शत्रून नाशय २ ह्रीं फट हूं फट ॐ ऐं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ॥ २८५ ॥ अथ संपुटितपाठ होमेऽपि आहुती संख्यां सप्तशतवत्याह ॥ प्रयोग संग्रहे ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

कदाचित्संपुटैर्युरवक्तं [illegible] ॥ समंतुं पठेद् होमे हुनेत्
सप्तसतीहुतीः ॥२८६॥ अथैकस्मिन्दिने संपूर्णपाठकरणे शक्तो ॥
पाठ प्रथमदिन १ पाठ दूसरे दिन २ पाठ ..

पा १ ते २ऽयं १ द्वि ४ प्र २ का १२: एवं क्रमेण
सप्तभिर्दिनैरेकावृत्तिः एकैकं चरित्रमेकैकस्मिन्दिने इति त्रिभिर्दिनैरेकः पाठ
इति केरला क्वाचित् ॥२८७॥

सप्तसती शापोद्धार उत्कीलन
॥ कात्यायनीतन्त्रोक्त ॥

त्रयोदशाध्यायं पठित्वा प्रथमं पठेत् ॥ ततो द्वादश (१२वां) द्वितीयो (दूसरा)
तत एकादश (११वां) तृतीयौ (३सरा) चतुर्थ (४था) दशमौ (१०वां) पंचम (५वां)
नवमौ (९वां) षष्ठा (६ठवां) अष्टमौ (८वां) सप्तमं (७वां) द्विवारमिति पाठेन शापो
द्धारः ॥२८८॥ प्रथमं मध्यम चरित्रं पठित्वा ततः प्रथमतृतीयौ पठेत् अ.
उत्कीलनं इति (कहीं २ केरल सम्प्रदाय में अष्टमी चौदस को पाठ करने से
जो उसका फल भगवती को अर्पण करदेता है उसी से सब शापोद्धार
उत्कीलन होजाता है।

कलियुग में कल्याण के लिये (गीता पढे या, विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र। पढे या
नारसिंहस्तोत्र पढे या श्रीरामस्तोत्र पढे। या सप्तसती स्तोत्र पढे। शैव हो तो
नीलकंठस्तोत्र पढे। बाला स्तोत्र पढे यदि शाक्त होतो। पैत्रो रुचि वाला)
इन्द्राक्षी स्तोत्र पढे। वैष्णव हो तो महालक्ष्मी स्तोत्र

॥ रुद्रयामले चरितत्रय रहस्यत्रय निर्णयः = प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधु
कैटभ घातनम् ॥ द्वितीयं विद्धि चरितं महिषासुरघातनम् ॥३०३॥ उत्तरं
चरितं ज्ञेयं शुम्भदैत्य वधान्वितम् ॥ चरितानि जपेत्त्रीणि स रहस्यान्यतन्द्रितः
॥३०४॥ रहस्यं मन्त्रान्त्याध्याय द्वयं त्रियं वा ॥ चरितं मध्यमं वाऽपि जपेद्वा
चण्डिकामयम् ॥३०५॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नमो दिव्ये दिव्यै महा दिव्यै शिवाये सततं नमः॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै
नियता प्रणतास्मताम् ॥ इमं मन्त्रं जपेद्धा कालिका प्रिया ॥ इति
(मार्कण्डेयपुराण लिखित्वेन प्रसिद्धे ग्रन्थे सूक्ष्मम् ॥३०६॥ नित्य
चण्डयादि जाप्यस्य विधानं तेवदाम्यहम् ॥ शुक्ल भूतामवष्टभ्य मायां
प्रति दिनं जपेद् ॥ ३०७॥ सकृद्रहस्य संयुक्तं चण्डिका चरितत्रयम् ॥
रहस्य मन्त्रस्य स्तोत्रस्य भुक्ति मुक्ति प्रदत्व प्रतिपादकम्) न्त्य
अध्याय द्वयम् ॥ तदर्थस्य देवीमात्र वेद्यत्वाद् रहस्यत्वम् ॥३०८॥
दशांश होमसहितं सोच्यते नित्य चण्डिका ॥ धन पुत्र यशोदात्री
महाव्याधि विनाशिनी ॥

बिना बीज सम्पुटित किये पाठ ना करे
प्रथम अध्याय में शुरू में प्रणव माया बीजं ॥ ॐ ह्रीं । ह्रीं ॐ
मध्यम अध्याय में प्रणव माया बीज नमो कार मन्त्र, अन्त में विलोम लगावे
अनुलोम ॐ ह्रीं नमः | मः न ह्रीं ॐ विलोम
उत्तम चरित्र में शुरू में प्रणव काम बीज नमो। अनुलोम में फिर विलोम
ॐ क्लीं नमः। मः न ह्रीं ॐ

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(अथास्य कामना प्रयोगाः)। पुत्र कामनया एक चत्वारिंशद्दिन पर्यन्तं काम कामबीज पुटितं त्रिरावृत्तिः)(वश्यार्थे एकविंशद्दिनपर्यन्तं कामंबीजेनपुटितं पंचावृत्तिः॥३६५॥)(आकर्षणार्थे द्विचत्वारिंशद्दिन पर्यन्तं काम पुटितं दशावृत्तिः॥ ॥३६६॥ उच्चाटनार्थे त्रिसप्तदिन पर्यन्तं माया पुटितं फट् पल्लवना वृत्तिः॥ ॥३६७॥ सर्वोपद्रवनाशनार्थे चतुश्चत्वारिंशद्दिन पर्यन्तं मायादौ कूर्चबीजेन संपुटितं एकादशावृत्तिः॥३६८॥ द्रव्यकामार्थे रमाऽद्यन्तं नव चत्वारिंशद्दिन पर्यन्तं द्विरावृत्तिः॥३६९॥ अथ शीघ्रकार्य सिद्ध्यै प्रत्यहं (नवचण्डी निर्णयः॥ आदौ अनुलोमं त्रयोदशाध्यायान् पठित्वापश्चात् विलोमेन पठित्वा(पुनः शापोद्धार वत्पठित्वा) एवं क्रमेण प्रत्यहं नवचण्डी कुर्यात्॥ अल्पकार्ये नव दिनपर्यन्तं मध्यकार्ये एकविंशति दिन पर्यन्तं महत्कार्ये त्रयस्त्रिंशद्दिनपर्यन्तं मन्त्रं सिद्धन्तरं जपेत्॥ जपान्ते पायस तिलाज्य मधु पुष्परस जातिपत्र फलयव व्रीहि सित शर्करायुतैर्दशांशेन नवार्ण पाठयुतेऽग्नौ जुहुयात्॥ तद्दशांशेन हरिद्रा कुंकुमजलेन संतर्पयेत्॥ तद्दशांशेन पायसलड्डु पंचखाद्यैर्भोजयेत्॥ पंचखाद्यानि यथा प्रियालखण्डखर्जूरैर्नारिकेलैः सगोस्तनैरिति॥ अत्र न मार्जनम्॥ एवं कृते शीघ्रं कार्य सिद्धि॥४००॥ प्रति मन्त्रं प्रणवं पुटितं जपेत्॥ व्यस्त समस्त व्याहृत्यनुलोम प्रतिलोमेन प्रणव पुटितं जपेत्॥ शीघ्रतर कार्य सिद्धिः॥ अत्र त्रिमधवक्रमलैर्होमः॥ अत्रविप्रतर्पितोयैर्वा ब्राह्मण भोजनान्ते मार्जनं कुर्यात्॥४०२॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हर श्लोक को श्री। बीजसे सम्पुटित करे तो (मोहन होवे)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिल में तेरी निगाह उतर गई
निगाह
दोनों को एक रजामन्द कर गई
दोनों को एक जिदा में रजामन्द कर गई।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनुभव यह भी आया है यदि जन्म कुण्डली में कोई ग्रह विशेष बलवान है तो वह ग्रह हथेली में भी बलवान दिखाई देता है, अर्थात् उसका पर्वत विकसित सपस्ट सुघड़ होता है। इस प्रकार अथेली के पर्वतों में, जन्म कुण्डली के गृहों में किसी प्रकार का कोई विशेष अन्तर नहीं होता।५

पर्वतों के भेद तीन होते हैं
सामान्य पर्वत
विकसित पर्वत
अविकसित पर्वत

हथेली में पर्वत काफी ऊँचे उठे हुए मांसल स्वस्थ और लालिमा लिये हुये हो तो वह विकसित पर्वत कहलाता है।
अविकासि सामान्यत: दिखाई नहीं देते। सामान्य पर्वत वह है जो न विकासित कहा जा सकता है न अविकसित

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बृहस्पत पर्वत = को अंगरेजी में जुपिटर कहते हैं यह सौम्य ग्रह है।
यह पर्वत राजसेवा इच्छाओं के प्रदर्शन आदि से संबंधित होता है।
यह पर्वत तर्जनी के नीचे होता है।

शनिपर्वत = को अंगरेजी में सेटर्न कहते हैं। यह मनन
शीलता, एकान्त प्रियता, रोग, चिन्ता, मशीनरी, व्यापार आदि से
संबन्धित है।

सूर्य पर्वत = को अंगरेजी में सन कहते हैं। इसके माध्यम से राज्य
मानसिक उन्नति, यश, प्रसिद्धि विविध कलाकौशल को जाना जाता है।
बुध पर्वत = इसे अंगरेजी में मरकरी कहते हैं। इससे वैज्ञानिक
उन्नति व्यापार गणित संबंधी कार्य आदि तथ्यों का अध्ययन किया
जाता है।
हर्षल पर्वत = इसे अंगरेजी में भी हर्शल पर्वत कहते हैं। हिन्दी
में प्रजापति कहते हैं इसका सम्बन्ध शारीरिक मानसिक क्षमताओं से है।
नेप्च्यून पर्वत = हिन्दी में वरुण ग्रह कहते हैं अंगरेजी में नेपच्यून कहते हैं
इससे व्यक्ति की विद्वता, उसके व्यक्तित्व दूसरों पर उसका प्रभाव
तथा पुरुषार्थ आदि जाना जाता है।
चन्द्र पर्वत = इसे अंगरेजी में मून कहते हैं। इस पर्वत से कल्पना और
विशालता सहृदयता मानसिक उत्थान समुद्रपारिय यात्रा का योग
जाना जाता है
शुक्र पर्वत = इसे अंगरेजी में वीनस कहलाता है। इससे सुन्दरता प्रेम
शान, शौकत, तथा ऐश्वर्य भोग आदि का सम्बन्ध जाना जाता है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शुक्र पर्वत = अंग्रेजी में यह ग्रह को वीनस कहलाता है।
मंगल पर्वत = इस ग्रह को अंग्रेजी में मार्स कहते हैं। इससे युद्ध जीवट शक्ति परिश्रम पुरुषोचित गुण का अध्ययन किया जाता है।
राहू पर्वत = इसको अंग्रेजी में ड्रैगन्स हेड कहते हैं। इससे आकस्मिक धन प्राप्ति लाटरी, हार्ट अटैक या अचानक घटित होने वाली घटनाओं सम्बन्ध है।
केतु पर्वत = इसे अंग्रेजी में ड्रैगन्स टेल कहते हैं। इससे धन भौतिक उन्नति एवं बैंक बैलेन्स जाना जाता है।
इन्द्र पर्वत = इसे अंग्रेजी में प्लूटो ग्रह कहते हैं। इससे मानसिक चिंता, आध्यात्मिक उन्नति के बारे में जाना जाता है।

बृहस्पति = हथेली में इसका स्थान तर्जनी उंगली के मूल में तथा मंगल पर्वत से ऊपर होता है। यह स्वभाव से अधिकार नेतृत्व संचालन तथा लेखन का देवता विशेष रूप से माना गया है। गुरु का पर्वत इन तथ्यों को भली प्रकार स्पष्ट करता है।
जिन हथेलियों में गुरु का पर्वत उभरा हुआ और सपस्ट होता है उनमें देव तुल्य सभी गुण पाये जाते हैं। ऐसा व्यक्ति जहां स्वयं की उन्नति करता वहां दूसरों को भी उन्नति देने में सहायक रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने स्वाभिमान की रक्षा विशेष रूप से करते हैं। ये विद्वान न्याय करने वाले अपने बचनों का निर्वाह करने वाले परोपकारी समाज माननीय होते हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी यह

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से

रहस्सों विचलित नहीं होते अर्पित देश के जो भी उच्च पदाधिकारी व्यक्ति हैं। उनमें निश्चय ही गुरु पर्वत विकसित अवस्था में होना चाहिये, ऐसे लोगों में यह विशेष क्षमता होती है कि वे जनता को अपने विचारों के अनुकूल बना लेते हैं। इनमें धार्मिक भावना जरूरत से ज्यादा होती है यदि गुरु पर्वत अल्प विकसित या अविकसित होता है तो उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों न्यूनता समझनी चाहिये। शारीरिक दृष्टि से यह व्यक्ति साधारण डील डौल के स्वस्थ तथा हंसमुख होते हैं। वाक्य कला में पटु होते हैं। हृदय से ऐसे व्यक्ति दयालु परोपकारी कहे जाते हैं। आर्थिक पक्ष की अपेक्षा सम्मान, यश प्राप्ति की ओर झुकाव कुछ ज्यादा ही होता है। अधिकार स्वतन्त्रता और नेतृत्व के इनमें विशेष गुण पाये जाते हैं। विपरीत योनी के प्रति इनके मन में कोमल भावनायें होती हैं। सुन्दर तथा सभ्य स्त्रियों से इनका मधुर सम्बन्ध रहता है। यदि स्त्रियों के हाथ में यह पर्वत उभरा होता है तो उसमें समर्पण की भावना विशेष रूप से होती है। मधुर भाव की उपासक होती हैं।

यदी गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील तथा अपने कार्यों में लगे रहने वाला होता है। परन्तु जीवन में पूर्ण सफलता न मिल पाने के कारण धीरे धीरे उनमें निराशा की भावना आने लग जाती है। स्वभाव से यह व्यक्ति अड़ियल प्रकृति के होते हैं। यदि गुरु पर्वत नीचे की तरफ खिसका हुआ

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हो तो व्यक्ति को जीवन में कई बार बदनामी का सामना करना पड़ता है
परन्तु साहित्य क्षेत्र में ऐसे व्यक्ति पूर्ण सफल होते देखे गये हैं।
यदि गुरु पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति स्वार्थी
घमंडी तथा स्वेच्छाचारी होता है। जिनके हाथों में गुरु पर्वत का
अभाव होता है उनके जीवन में आत्म सम्मान की कमी रहती है। माता
पिता का सुख बहुत कम मिल पाता है हलके निम्न विचारों वाले मित्रों
से सम्बन्धित रहते हैं। यदि उंगलियां नुकीली हों तथा गुरु पर्वत
विकसित हो तो वह व्यक्ति अंध विश्वासी होता है। वर्गाकार उंगलियों
के साथ विकसित गुरु पर्वत हो तो वह एक प्रकार से जीवन में
निरंकुश एवं अत्याचारी बन जाता है। यदि उंगलियां बहुत लम्बी हो
और इस पर्वत का विकास ठीक प्रकार से हुआ हो तो वह व्यक्ति फजूल
खर्ची तथा भोगी होता है। यदि गुरु तथा शनि पर्वत उभरे हों और
एक दूसरे से मिल गये हों तो वह व्यक्ति प्रबल भाग्य शाली होता
है। जीवन में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

वस्तुतः गुरु पर्वत जीवन में अत्याधिक सहायक तथा उन्नति की
ओर अग्रसर करने वाला ग्रह है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शनि: इसका आधार मध्यमा उंगली के मूल में होता है। हाथ में इस पर्वत का विकास असाधारण प्रवृत्तियों का सूचक कहा गया है। यदि इस पर्वत का अभाव हो तो वह व्यक्ति जीवन में विशेष सफलता या सम्मान प्राप्त नहीं करता। मध्यमा उंगली को भाग्य की भी कहा जाता है। क्यों की भाग्य रेखा की समाप्ति इसी उंगली के मूल में होती है। यदि शनि पर्वत पूर्ण विकसित होता है तो वह प्रबल भाग्यवान होता है। जीवन में अपने प्रयत्नों से बहुत अधिक ऊँचा उठता है। विकसित होने पर ऐसा व्यक्ति एकान्त प्रिय तथा निरन्तर

आवाहन

ॐ ऐं ह्रीं मम शरीरे प्रवेशय २ ब्राम्ही च वैष्णवी रौद्री त्रिपुरे त्रिशक्ति आद्या शक्ति आगच्छ २ पूजां गृहण २ ह्रीं नमः चण्डिकायै। अथ पंचोपचार पूजनं कारयेत्॥ बांये हाथ की अनामिका से कारण द्वारा माता की मूर्ति का अभिषेक करावे। सुगन्ध, पुष्प धूप दीप इत नैवेद्य फल ताम्बूल दक्षिणा चढ़ावे (मधु कुंकुम, कस्तूरी रक्त चन्दन लाल कनेर १०८ चढ़ावे एकचित्त होकर प्रार्थना करे कपूर आरती पुष्पांजलि दे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

४७/जेज

चण्डिका हृदय देवी सूक्त निरूपणं

ॐ ह्रीं जय चामुण्डे इति त्रिदश कोटि मुकुट निघृष्ट चरणारविन्दे गायत्री सावित्री सरस्वती महासंध्या महा कृताभरणा भैरवरूप धारिणि धारणे प्रकटितदर्शने घोरे घोरासने ज्वलज्ज्वाला सहस्त्र परिवृते ऊर्ध्व मध्य वसुधाते उद्घारित ब्रतरन्ध्रे निर्मिते परे परापरे कम्पित चराचरे षट्चक्र शोभिते महाशून्ये सुगन्धे ऊर्ध्वमध्यास्थिते भुक्ति प्रदे देवि निर्मले सकले सकल ऋग् यजुः सामपरि पठिते रहि २ भगवति ऐन्द्रस्थे सूक्ष्म सूक्ष्मात्परे फेंकारा वस्थिते भंजिनि स्तम्भिनी मोहिनि क्षोभिणि जृम्भिणि पंचबीज मध्यस्थिते क्षेत्रे उपक्षेत्र अष्टदल प्रकृति योगि योगरते यक्ष राक्षसज्वर महाग्रह विषोपविष सिद्ध गन्धर्व विद्याधरादि पैते (बोल. कर. आवाहन और) ॥ ॐ ह्रीं कार क्रूं कार हस्ते ॥ ॐ आं ह्रीं (क्रूं मम) (अमुक पात्रे) (शरीरे) प्रवेशय २ ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री त्रिपुरे त्रिशक्ति आद्य मूर्ति (गुरु शक्ति) आगच्छ (आगच्छ ॥ पूजा गृहण २ परमन्त्र परतन्त्र परयन्त्र निवारय २) (वामकरे पवित्रागोल सिंचन कारयेत् ॥ (अमृत सिंचनं (कुरु २) पूर्णं कारयेत् ॥ सुगन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य फल ताम्बुल दक्षिणा सर्व हंस मात्रेण कारयेत् ॥ मधु कुंकुमकस्तूरी रक्त चन्दन रक्त करवीर पुष्पैः अतः परं शत (१००) पत्राद्यानीतैर्नाना विध पुष्पै रेक चित्त मानसं कुर्वस्तूष्णीं पूजां कुर्यात्) (मन्त्र) ॥ ॐ ह्रीं चामुण्डे अमुक प्रेतादि बाधा नाशय नाशय मारय २ हवंशस्वर

ॐ द्रीं द्रीं द्रावय २ ॥ ॐ क्लीं २ क्लावय २ ॥ ॐ म्लीं २ म्लावय २ ॥ ॐ खंखं शोधय २ ॥ ॐ मूं मूं उन्मादय २ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय २ ॥ ॐ भ्रीं भ्रीं मूर्छय २ ॐ धूं धूं धूनय २ ॥ ॐ म्लां म्लां आस्फोटय २ ॥ ॐ छ्रीं छ्रीं छेदय २ ॥ ॐ रुं रुं उच्छेदय २ ॥ ॐ हूं हूं हन २ ॥ ॐ गं गं धारय २ ॥ ॐ लां लां स्तम्भय २ ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परप्रयोग

ॐ स्तुं स्तुं प्रमथय २॥ ॐ ग्रां ग्रां ग्रासय २॥ ॐ स्वां स्वां विध्वंसय २॥ ॐ प्लां प्लां प्लावय २॥ ॐ भ्रूं भ्रूं भ्रामय २॥ ॐ क्रूं क्रूं मुद्रां दर्शय २॥ ॐ बीं बीं पर बाहु बन्धय २॥ ॐ दीं दीं दिशं बन्धय २॥ ॐ अां अां अधो बन्धय २॥ ॐ ॐ ॐ ऊर्ध्वं बन्धय २॥ ॐ कीं कीं कीलय २॥ ॐ श्रीं श्रीं मीलय २॥ ॐ गीं गीं गीलय २॥ ॐ बिलं कुरु २॥ ॐ हंसां विलम्बय २॥ ॐ ह्रां ह्रां हूं हूं फट् फट् अतीतानागतगतवर्तमानं समादिशयादिशय॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पावय २॥)

त्रैलोक्ये वशवर्तिने एकोऽपि चण्डिकाहृदयं पूज्य पठ्यते ऽत्यर्थफलम् इति चण्डिका वशयं कुरु २॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं हैं ह्रौं ह्रः॥ ॐ स्फां स्फीं स्फूं स्फः एकविंशति वारं जाप्यं राजद्वार विवादे च शत्रुसंकटे समराङ्गणे कृते मनसा चिन्तितान्यपि सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति॥

अथ चण्डिकास्तोत्रम्॥ ॥ प्रार्थना ॥

भूत त्वं प्रेत त्वं ब्रह्मराक्षस जिन्द त्वं। शाकिनी त्वं डाकिनी त्वं योगिनी त्वं पिशाचिनी त्वं। वीर भैरव कलुवा तुम। सैयद पीर मसान हो तुम। कार्य कारण कारिणि तुम। समस्त विश्व की स्वामिन तुम। सकल विघ्न बाधा भी तुम। सकलारिष्ट रूप भी तुम। सब यन्त्र मन्त्र और तन्त्र भी तुम। और षट कर्मों की शक्ति तुम। अमुक जीव के अन्दर माता करो प्रवेश तुरत ही तुम। हर बाधा को दूर हटा कर। कल्याण जीव का कर दो तुम। हे करुणा मई करुणा कर दो। अपना विरद दिखला दो तुम। अमुक जीव के ऊपर अपना वरद हस्त अब रख दो तुम॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४९वां

॥अथ चण्डिका स्तोत्रम् ॥

शुक्ल

या देवी खड्ग हस्ता सकल जन पद व्यापिनी विश्व दुर्गा श्यामाङ्गी शुक्ल पाशा
द्विज गण गणिता ब्रह्म देहार्ध वासा ॥ ज्ञानानां साधयन्ती यतिगिर गमन
ज्ञान दिव्य प्रबोधा सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा
॥१॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं चर्ममुण्डे शवगमनहते भीषणे भीमवक्त्रे क्रां क्रीं क्रूं क्रोध
मूर्तिर्विकृतस्तन मुखे रौद्र दंष्ट्रा कराले ॥ कं कं कं कालधारि भ्रमसि जगदिदं
भक्षयन्ती ग्रसन्ती हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥२॥
ॐ ह्रां ह्रीं हूं रुद्र रूपे त्रिभुवन नमिते पाशहस्ते त्रिनेत्रे रां रीं रूं रङ्ग रंगे किलि
किलित खड्ग शूलं हस्ते प्रचण्डे ॥ लां लीं लूं लम्ब जिह्वे हसती कहकहा शुद्ध
घोराट्टहासैः कङ्काली काल रात्रिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥३॥
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोररूपे घघघघघटिते घुर्घुरारावघोरे निर्मांसी शुष्क जंघे
पिबतु नरवसा धूम्र धूम्रायमाने ॥ ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती सकल भुवि
तले यक्ष गन्धर्व नागैः क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड
मुण्डा प्रचण्डा ॥४॥ ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं चण्डवर्गो हरि हर नमिते रुद्र मूर्तिश्च
कीर्तिश्चन्द्रादित्यौ च कर्णौ जड मुकुट शिरो वेष्टितां केतु मालाम् ॥
स्रक् सर्वौ चोर गेन्द्रौ शशि किरण निभा तारको हार कण्ठे सा देवी
दिव्य मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥५॥ ॐ खं खं खं खड्ग
हस्तो वरकनक निभे सूर्य कान्ति स्वतेजो विद्युज्ज्वालावलीनां

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नवनिर्भितमहाकृत्तिका दक्षिणेन ॥ वामे हस्ते कपालं वर विमल सुरा
पूरितं धारयन्ती सा देवी दिव्य मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥६॥
ॐ हुं हुं फट् कालरात्रिं रूरु सुर मथनी धूम्र मारी कुमरी ह्रां ह्रीं ह्रूं हत्ति
शोरौ क्षपितु किलकिलाशब्द अट्टाट्टहासे हाहा भूत प्रभूते किल
किलितमुखा कीलयन्ती ग्रसन्ती हुंकारो द्धारयन्ती प्रदहतु दुरितं
चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥७॥ ॐ भृङ्गी काली कपाली परिजन सहिते
चण्डि चामुण्डा नित्या रों रों रोंकार नित्ये शशि कर धवले काल कूट
दुरन्ते ॥ हुं हुं हुंकार कारी सुरगण नमिते काल कारी विकारी त्रैलोक्यं
वश्यकारी प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥८॥ वन्दे ॥ब. दण्ड
प्रचण्डा डमरु रुणिमणि ष्टो पटंकार घण्टै नृत्यन्ती याऽट्टपातै
रंटपट विभवै निर्मला मन्त्रमाला ॥ सुक्षौ कुक्षौ वहन्ती खर खरित
सखा चार्चिनि प्रेत माला उच्चैश्चैत्र्याट्टहासैर्धुरु धुरित मुखा चर्म मुण्डा
प्रचण्डा ॥९॥ ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखि गमना त्वं च
देवी कुमारी त्वं च क्री चक्र हस्ता घुर घुरित मुखा त्वं वाराहस्वरूपा ॥
रौद्रे त्वं चर्म मुण्डा सकल भुवि तले संस्थिते स्वर्ग मार्गे पाताले
शैल शृङ्गे हरिहर नमिते देवि चण्डी नमस्ते ॥१०॥ रक्ष त्वं मुण्डधारी
गिरि गुह विवरे निर्झरे पर्वते वा संग्रामे शत्रु मध्ये विश विश भविशे
संकटे कुत्सिते वा ॥ व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि भुवि तले बह्निमध्ये

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

च दुर्गो रक्षेत्त्सा दिव्य मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥ ॥
इत्येवं बीज मन्त्रैः स्तवन मति शिवं पातक व्याधि नाशं प्रत्यक्षं दिव्य
रूपं ग्रहगण मथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ॥ इत्येवं वेग वेगं सकल भय
हरं मन्त्रशक्तिश्च नित्यं मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां
मन्त्रसिद्धिम् ॥ १२ ॥

(४६) वां पेज)

॥ लघु दुर्गा सप्तसती स्तोत्रम् ॥

ॐ ब्रीं ब्रीं ब्रीं वेणु हस्ते स्तुतिविधि बटुके हां तथा तानमाता स्वानन्दे
नन्दरूपे अनहत निरुते मुक्तिदे मुक्तिदे त्वाम् ॥ हंसः सोऽहं विशाले
वलयगति हंसे सिद्धिदे वाममार्गे ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्ध लोके कषकषा विपुल वीर
भद्रे नमस्ते ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं कारो च्चारयन्ती मम हरति भयं चर्म मुण्ड प्रचण्डे
खां खां खां खाङ्ग पाणि ध्रक ध्रक ध्रकिते उग्ररूपे स्वरूपे हुं हुं हुं हुंकार नादे
गगन भुवितले व्यापिनी व्योमरूपे हं हं हं कार नादे सुरगण नमिते
राक्षसानां हन्यमाने ॥ २ ॥ ऐं लोके कीर्तयन्ती मम हरतु भयं चण्डरूपे
नमस्ते घ्रां घ्रां घ्रां घोररूपे घघ घघ घटिते घर्घरे घोर रावे ॥
निर्मांसे काकजंघे घसित नख नखा धूम्र नेत्रे त्रिनेत्रे हस्ताब्जे
शूल मुण्डं कुलकुल कुकुले श्री महेशी नमस्ते ॥ ३ ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं
ऐं कुमारी क्लीं कुह कुह मखिले कोकिले नानुराग मुद्रा संज्ञ त्रिरेखा
कुरु कुरु सततं श्री महमारि गुह्ये ॥ तेजांगे सिद्धि नाथे मन पवन

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चेले नैव प्राज्ञानिधाने ऐंकारे रात्रिमध्ये सुपित पशुजेने तत्र कान्ते नमस्ते
॥४॥ ॐ ब्रां ब्रीं ब्रुं ब्रूं कवित्ये दहन पुरगते रुक्मि रूपेण चक्रे त्रिः शक्त्या
शुक्र वर्णादिक कर नमिते दादिवं पूर्ववर्णे ॥ ह्रीं स्थाने कामराजे
ज्वल २ ज्वलिते कोशितैस्तास्तु पत्रेस्वच्छन्दं कष्टनाशे सुरवर
वपुसे गुह्यमुण्डे नमस्ते ॥५॥ ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर तुण्डे घघघघघघघे
घर्घरान्याघ्रिघोषे ह्रीं क्रीं द्रं द्रौं चचक्रे ररर रमिते सर्वज्ञाने प्रधाने ॥
द्रीं तीर्थे द्रीं तज्ज्येष्ठे जुगजुग जजुगे म्लेच्छेदे कालमुण्डे सर्वाङ्गे रक्त घोरा
मथन करवरे वज्रदण्डे नमस्ते ॥६॥ ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामभित्ते गगन गडगडे
गुह्य योन्याहि मुण्डे वज्राङ्के वज्रहस्ते सुरपति वरदे मत्तमातङ्ग रूढे ॥
सु तेजे शुद्ध देहे ललललललिते छेदिते पाश जाले कुण्डल्याकाररूपे
बृष बृषभहरं ऐन्द्री मातर्नमस्ते ॥७॥ ॐ हुं हुं हुंकार नादे कषकष
वासिनी मांसि वैताल हस्ते सु सिद्धर्षैः सिद्धि सुसिद्धि ढढढढढढः
सर्वभक्षी प्रचण्डी ॥ जूं सः सौं शान्ति कर्मे मृतमृत निहडे निःसमे सीसे
मुद्रे देवि त्वं साधकानां भवभय वरदे भद्र काली नमस्ते ॥८॥
देवि त्वं तूर्यहस्ते पीरध गमनि ते त्वं वाराह स्वरूपे त्वं ऐन्द्री त्वं
कौबेरी त्वमसि च जननी त्वं पराणी महेन्द्री ॥ ऐं ह्रीं ह्रींकार भूते
अतलतलतले भूतले स्वर्ग मार्गे पाताले शैल शृङ्गे हरिहर भुवने
सिद्धि चण्डी नमस्ते ॥९॥ हंताक्षं सौण्ड दुःखं शमित भवभय सर्वे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विघ्नान्त कार्यं गां गीं गूं गैं षडङ्ग गगन गटितटे सिद्धिदे सिद्धिसा
।। क्रूं क्रूं मुद्रा गजांशौ गशपवन गते त्र्यक्षरे वै कराले ॐ ह्रीं हूं गां
गणेशी गजमुख जननी त्वं गणेशी नमस्ते ।।१०।।
कवच कुब्जातन्त्रे ।। ईश्वरोवाच ।। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कव :
सर्व सिद्धिदम् ।। पठित्वा पाठयित्वा च नरो मुच्येत संकटात् ।।
(पू०)(बा) ।।१।। अज्ञात्वा कवचं देवि दुर्गा मन्त्रं च यो जपेत ।। स माप्नोति
फलं तस्य परत्र नरकं ब्रजेत् ।।२।। उमा देवी शिरः पातु ललाटे
शूलधारिणि ।। चक्षुषी खेचरी पातु वदनं सर्वधारिणी ।।३।।
जिह्वां च चण्डिका देवी ग्रीवां सौभद्रिका तथा ।। अशोक
वासिनी चेतो द्वाहो वज्रधारिणी ।।४।। हृदयं ललिता देवी उदरं
सिंहवाहिनी ।। कटिं भगवती देवी द्वावूरू विन्ध्यवासिनी ।।५।।
महाबला च जंघे द्वे पादौ भूतलवासिनी एवं स्थितासि देवि
त्वं त्रैलोक्य रक्षणात्मिके ।।६।। रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि
नमोऽस्तुते

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क सुन्दर बकरा लाविया मैं सालावे उस पशु को अपने इष्ट मन्त्र से
स्नान करावे, फिर देवी के सामने ले जाय। अपने वांई तरफ खड़ा
करे। पशु के दोनो सींगों में सिंदूर लगावे। माथे पर सिंदूर
लगावे। सींगों में सिंदूर पीला देशी घी में सान कर मल दे। फिर
उसे बेलपत्र फूलमाला पहनावे। समानार्घ्य से तीन बार उसपर
जल छिड़के और कवचमंत्र (हुं हुं हुं) बोलकर उसपर ॐ अली
फेरे। धेनुमुद्रा दिखावे। पंचोपचार पूजन करे (ॐ छागाय नमः) मंत्र से
फिर पशु गायत्री उसके दाहिने कान में ३ बार सुना दे।
पशु गायत्री: ॐ पशु पाशाय विद्महे विश्वकर्मणे धीमहि तन्नो जीव:
प्रचोदयात्॥ पश्चात् खड्ग का पूजन करे खड्ग पर तीन गोला
करे गोले सिन्दूर के। इस तरह के (◎) देखलो इन गोलों के बीच में
बेल की कलम से (ह्रीं) लिख दे। फिर इस (ह्रीं) का पूजन करे पंचोपचार
(ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं) इसको बोलता जाय। (~~ॐ कालिके~~ (ॐ ह्रीं कालि कालि
वज्रेश्वरी लोह दण्डाय नमः बोल कर पुष्पांजलि दे।
अग्र भाग में (हुं वागीश्वरी ब्रह्मभ्यां नमः। बीच गोले में (हुं लक्ष्मी
नारायणाभ्यां नमः) तीसरे पीछे गोले में (हुं उमा महेश्वराभ्यां नमः)
की भावना करे। पश्चात् सामूहिक में तीनों को पुष्पांजलि दे।
इस मंत्र से (ॐ ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति युक्ताय खड्गाय नमः) बोल कर
पुष्प चढ़ा दे प्रणाम करले। फिर प्रार्थना करे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(ॐ खड्गाय खड्गधाराय शक्ति कार्यार्थ तत्परः पशु छिन्नध्यताम् शीघ्रं खड्ग नाथनमोस्तुते) ऐसी भावना करने के बाद संकल्प

संकल्प = नमः परब्रम्ह परमात्मने आद्या ब्रह्मणे द्वितिय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवश्वत मनवन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्ते आर्यावर्तान्तरगत अमुक नगरे अमुक सम्बतसरे अमुकायने सूर्ये अमुक ऋतौ अमुक वासरे अमुक पक्षे अमुक मासे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक करणे अमुक योगे अमुक राशास्थिते सूर्ये अमुक राशास्थिते गुरौ शेषेशु गृहेषु यथा स्थान स्थितेषु सत्सु एवं गृहगण विशेषण विशिष्टायां अमुक गोत्रोत्पन्नं कमल सरकार अवधूत श्री बाला त्रिपुरा देव्याः प्रीति कामः इमं छागपशुं श्री बाला त्रिपुरा देवतायै कामेश्वर शिव सहितां प्रतिदेयताम्

ॐ बलिं गृहण महादेवी पशुसर्व गुणान्वितम्। यथोक्तेन बिधानेन तुभ्यं मस्तु समर्पितम् ओं हुं फट बोल कर खड्ग पशु के कन्धे पर छुआवे। पशु को रस्सी से खम्ब में बांध दे फिर एक बार में सिर अलग करदे। ऐसा मारे। रक्त एक पात्र में लेले शिर तसले में धड़ को साफ करके भोग बना के मां को अर्पण करे। सिर मां के दाहिने भाग में बेल पत्र पर रख के घी में बोर के बत्ती रख के बकरे के सिर पे जला दे। पशु का मुख उत्तर की तरफ करदे। और मां से हाथ जोकर कहे। एषा छागं बलिं गृहाणत्वं शक्ति हेतोर्दिवौकसाम् शत्रुदर्प विनाशाय सर्वाभिष्ट प्रसिद्धये इति देव्यै निवेदयेत

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ कालिकासहस्त्रनाम ॥

श्री गणेशायनमः ॥

अथ कालिका सहस्त्रनाम स्त्रोत्र प्रारंभः ॥ नमः श्री दक्षिणाकालिकायै ॥ कथितोऽयं महामन्त्रः सर्व मन्त्रोत्तमोत्तमः। यमासाद्य मया प्राप्तमैश्वर पदमुत्तमम् ॥१॥ संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्त विधिना भवान् ॥ कुरुतामर्चनं देव्यास्त्रैलोक्य विजिगीषया ॥२॥ परशुराम उवाच॥ प्रसन्नो यदि मे देव परमेशः पुरातनः ॥ रहस्यं परया देव्याः कृपया कथय प्रभो ॥३॥ यथार्चनं विना होमं विनान्यासं विना बलिम् ॥ बिना गन्धं बिना पुष्पं विना नित्योदित क्रियाम् ॥ प्राणायामं विना ध्यानं बिना भूत विशोधनम् ॥ बिना जाप्यं बिना दानं ≡ काली प्रसीदति ॥५॥ श्री शंकरोउवाच ॥ पृष्टं त्वयोत्तमं प्राज्ञ भृगुवंश विवर्धनम् ॥ भक्तानामपि भक्तोसि त्वमेवं साधयिष्यसि ॥६॥ देवीं दानव कोटिघ्नीं लीलया रुधिर प्रियाम् ॥ सदा स्तोत्र प्रियां उग्रां काम कौतुकलालसाम् ॥७॥ सर्वदानन्द हृदयामासवासक्त मानसं ॥ माध्वीक मत्स्यमांसादि रागिणीं रुधिर प्रियाम् ॥८॥ शमशान वासिनीं प्रेतगण नृत्य महोत्सवाम् ॥ योगप्रभाम् योगिनीशां योगीन्द्र हृदयेस्थिताम् ॥९॥ तामुग्रकालिकां राम प्रसादयितु मर्हसि ॥ तस्याः स्तोत्रं महापुण्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम् ॥१०॥ तव तत कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं परात्परम् ॥११॥ यस्यैक काल पठनात्सर्वे विघ्नाः समाकुलाः ॥ नश्यन्ति दहने दीप्ते पतङ्गा इव सर्वतः ॥१२॥ गद्यपद्य मयी वाणी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तस्य गङ्गा प्रवाहवत् ॥ तस्य दर्शन मात्रेण वादिनो निष्प्रभामता: ॥१३॥
राजा नोऽपि च दासत्वं भजन्ति च परे जना: ॥ तस्य हस्ते सदैवास्ति
सर्व सिद्धिर्न संशय: ॥१४॥ निशीथे मुक्तये शम्भुर्नग्न: शक्ति समन्वित
॥ मनसा चिंतयेत्काली महाकालीति लालिताम् ॥१५॥ पठेत्सहस्र
नामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम् ॥ प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वे
नानुकम्पते ॥१६॥ यथा ब्रह्मास्मृते ब्रह्म कुसुमै: पुजिता पुरा ॥
प्रसीदति तथा काली यथानेन प्रसीदति ॥१७॥

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्री कालिका सहस्रनाम स्तोत्रस्य महाकाल भैरव ऋषि: ऽनुष्टुप
छन्द: शमशान कालिका देवता ॥ धर्मार्थ काम मोक्षार्थे विनियोग
मन्त्र ध्यान ॥ १८ ॥ ॐ शमशान कालिका, काली भद्रकाली कपालिनी
गुह्यकाली, महाकाली कुरुकुल्या विरोधिनी ॥१९॥ कालिका काल
रात्री महाकाल नितम्बिनी ॥ कालभैरवभार्या, कुलवर्त्मप्रकाशिनी
॥२०॥ कामदा कामिनी काम्या कमनीयस्वभाविनी ॥ कस्तूरीरस
नीलाङ्गी, कुंजरेश्वर गामिनी ॥२१॥ ककारवर्ण सर्वाङ्गी कामिनी,
काम सुन्दरी ॥ कामार्ता कामरूपा च कामधेनु: कलावती ॥ २२॥ कान्ता
काम स्वरूपा, च कामाख्या कुलपालिनी ॥ कुलीना कुलवत्यम्बा
दुर्गा दुर्गार्ति नाशिनी ॥२३॥ कौमारी कुलजा, कृष्णा कृष्णदेहा
कृशोदरी ॥ कृशाङ्गी कुलिशाङ्गी च क्रींकारी कमलाकला ॥२४॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करालास्या कराली च कुलकान्ताऽपराजिता ॥ उग्रा चोग्रप्रभा
दीप्ता विप्रचित्ता महाबला ॥२५॥ नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा
मिताऽसिता ॥ ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला ॥२६॥
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका ॥ वज्रांगी वज्र
कंकाली नरमुंडस्रग्विणी शिवा ॥ मालिनी नरमुण्डाली गलद्रक्त
विभूषणा ॥ रक्तचन्दनसिक्तांगी सिन्दूरारुण मस्तका ॥२८॥
घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोराघोरतरा शुभा ॥ महादंष्ट्रा महामाया
सुदंती युगदन्तुरा ॥२९॥ सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी
त्रिलोचना ॥ शारदेन्दु प्रसन्नास्या स्फुरत् स्मेरांबुजेक्षणा ॥३०
अट्टहास्य प्रसन्नास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी ॥ प्रसन्न पद्मवदना
स्मितास्या प्रियभाषिणी ॥३१॥ कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती
बहुभाषिणी ॥ सुमतिः कुमतिः चण्डा चण्डमुण्डातिवेगिनी ॥३२
प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चर्चिका चण्डवेगिनी ॥ सुकेशी मुक्त
केशी च दीर्घकेशी महत्कुचा ॥३३॥ प्रेतदेहा कर्णपरा प्रेतपाणि
सुमेखला ॥ प्रेतासना प्रियप्रेता प्रेतभूमि कृतालया ॥३४॥
श्मशान वासिनी पुण्या पुण्यदा कुलपण्डिता पुण्यालया पुण्य
देहा पुण्यश्लोकी च पावनी ॥३५॥ पुत्रा पवित्रा परमा पुरा पुण्य
विभूषणा ॥ पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपाणिनी ॥३६॥
नरमुण्डहस्त शस्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका ॥ दक्षिणा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्यामला श्यामा शान्ता पीनोन्नतस्तनी ॥३७॥ दिगम्बरा घोर
रावा सृक्कान्ता रक्तवाहिनी ॥ घोररावा शिवा खड्गा विशांका
मदनातुरा॥३८॥ मत्ता प्रमत्ता प्रमदा सुधा सिन्धु निवासिनी ॥
अतिमत्ता महामत्ता सर्वाकर्षण कारिणी ॥३९॥ गीतप्रिया
वाद्यरता प्रेतनृत्य परायणा॥ चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुज
तथा ॥४०॥ कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी ॥ जगत्वन्धु
जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी ॥४१॥ जगन्मयी हेमवती महामाया
महामहा ॥ नागयज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नाग शायिनी ॥४२॥
नागकन्या देवकन्या गन्धर्वी किन्नरीश्वरी ॥ मोहरात्रिर्महारात्रि
दारुणाभासुरांबरा ॥४३॥ विद्याधरी बसुमती यक्षिणी योगिनी जरा
॥ राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा ॥४४॥ श्रुतिः स्मृतिर्महाविद्या
गुह्य विद्या पुरातनी ॥ चिन्त्याऽचिन्त्या स्वधा स्वाहा निद्रा तन्द्रा
च पार्वती॥४५॥ अपर्णा निश्चला लोला सर्व विद्या तपस्विनी ॥
गंगा काशी शची सीता सती सत्य परायणा ॥४६॥ नितिस्सुनीति
सुरुचि स्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा ॥ वाणी बुद्धिर्महालक्ष्मीर्लक्ष्मी
नील सरस्वती ॥४७॥ स्रोतस्वती सरस्वती मातंगी विजया जया
॥ नदी सिन्धुः सर्व मयी तारा शून्यनिवासिनी ॥४८॥ शुद्धा
तरंगिणी मेधा लाकिनी बहु रूपिणी ॥ स्थूला सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा
भगवत्यनुरूपिणी ॥४९॥ परमाणु स्वरूपा च चिदानन्दस्वरूपिणी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदानन्दमयी सत्या, सर्वानन्द स्वरूपिणी ॥५०॥ सुमन्दा नन्दिनी स्तुत्या,
स्तवनीय स्वभाविनी ॥ रंगिणी टंकिनी चित्रा विचित्रा चित्र रूपिणी ॥
पद्मा पद्मालया पद्ममुखी पद्म विभूषणा ॥ डाकिनी शाकिनी काकिनी,
क्षान्ता राकिनी रुधिरप्रिया ॥५२॥ भ्रांतिर्भवानी रुद्राणी मृडानी,
शत्रुमर्दिनी ॥ उपेन्द्राणी महेन्द्राणी ज्योत्सना चन्द्रस्वरूपिणी ॥५३॥
सूर्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान् ॥ शक्ति मुक्ति मति
माता भक्ति मुक्तिः पतिव्रता ॥५४॥ सर्वेश्वरी सर्व माता शर्वाणी
हरवल्लभा ॥ सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भव्या भाव्या भयापहा ॥ कर्त्री,
हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया ॥ तमिस्त्रा तामसी स्थाणुः,
स्थिरा धीरा तपस्विनी ॥५६॥ चार्वंगी चंचला लोल जिह्वा चारु
चरित्रिणी ॥ त्रपा त्रपावती लज्जा विलज्जा हर यौवती ॥५७॥
सत्यवती धर्म निष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुर वादिनी ॥ गरिष्ठा दुष्ट संहर्त्री,
विशिष्टा श्रेयसी घृणा ॥५८॥ भीमा भयानका भीमनादिनी भीः
प्रभावती ॥ वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञ कर्त्री यजुः प्रिया ॥५९॥ ऋक्
सामाथर्व निलया रागिणी शोभना सुरा ॥ कलकंठी कम्बु कंठी,
वेणुवीणा परायणा ॥६०॥ वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रिजगतीश्वरी
॥ मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः शुद्धिः शुचिस्मिता ॥६१॥ रम्भोर्वशी
रती रामा रोहिणी रेवती मघा ॥ शंखिनी चक्रिणी कृष्णा,
गदिनी पद्मिनी तथा ॥६२॥ शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शारंग पाणिनी ॥ पिनाकधारिणी धूम्रा सुरभी बन मालिनी ॥६३॥
रथिनी समर प्रीता वेगिनी रण पण्डिता ॥ जटिनी वज्रिणी नाला
लावण्याम्बुधि चन्द्रिका ॥६४॥ बलिप्रिया सदा पूज्या दैत्येन्द्र मथनी
तथा ॥ महिषासुर संहन्त्री कामिनी रक्तदन्तिका ॥६५॥ रक्तपा
रुधिराक्ताङ्गी रक्त खर्परधारिणी ॥ रक्तप्रिया मांस रुचिरवासवासक्त
मानसा ॥६६॥ गलच्छोणित मुण्डालीकण्ठमाला विभूषणा ॥ शवासन
चितान्तस्था माहेशी वृष वाहिनी ॥६७॥ व्याघ्रत्वगम्बरा चीन
चैलिनी सिंहवाहिनी ॥ वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञ भामिनी ॥६८॥
बालिका तरुणी वृद्धाऽवृद्धमाता जरातुरा सुभ्रूर्विलासिनी ब्रह्मवादिनी
ब्राह्मणी सती ॥६९॥ सप्तवती चित्रलेखा लोपा मुद्रा सुरेश्वरी ॥
अमोघा अरुन्धती तीक्ष्णा भागवत्यनुरागिणी ॥७०॥ मन्दाकिनी
मन्दहासा ज्वालामुख्यसुरान्तका ॥ मानदा मानिनी मान्या मान
नीया मदातुरा ॥७१॥ मदिरा मेदुरोन्मादा मेध्या साध्या
प्रसादिनी ॥ सुमध्यानन्त गुणिनी सर्व लोकोत्तमोत्तमा ॥७२॥
जयदा जित्वरी जैत्री जयश्री जयशालिनी ॥ सुखदा शुभदा सत्या
सभा संक्षोभ कारिणी ॥७३॥ शिवदूती भूति मती विभूतिर
भूषणानना ॥ कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुल पालिका ॥
॥७४॥ कीर्ति यशस्विनी भूषा भूष्या भूत पतिप्रिया ॥ सगुणा निर्गुणा
अधिष्ठा निष्ठा काष्ठा प्रकाशिनी ॥७५॥ धनिष्ठा धनदा धान्या

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वसुधा प्रकाशिनी ॥ उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा षड्गुणा त्रिगुणात्मिका ॥७६॥
राज्ञा माज्ञा महा प्रज्ञा सगुणा निर्गुणात्मिका ॥ महा कुलीना निष्कामा
सकामा कामजीवना ॥७७॥ कामदेव कलारामा भिरामा शिव
नर्तकी ॥ चिन्तामणि: कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला ॥७८॥
कार्त्तिकी कृत्तिका कृत्याऽयोध्या विषमासमा ॥ सुमन्त्रा मन्त्रिणी
घूर्णा ह्लादिनी क्लेश नाशिनी ॥७९॥ त्रैलोक्य जननी हृष्टा निर्मांसा
— मलरूपिणी ॥ तड़ाग निम्न जठरा शुष्क मांसास्थि मालिनी ॥८०
अवन्ती मधुरा हृदया त्रैलोक्य पावनक्षमा ॥ व्यक्ताव्यक्तानेकमूर्ति
शरभी भीमनादिनी ॥८१॥ क्षेमङ्करी शाङ्करी च सर्व सम्मोहकारिणी ॥
ऊर्ध्व तेजस्विनी क्लिन्ना महा तेजस्विनी तथा ॥८२॥ अद्वैता योगिनी
पूज्या सुरभी सर्वमंगला ॥ सर्व प्रियङ्करी भोग्या धारिणी पिशिताशना ॥८३
भयङ्करी पापहरा निष्कलङ्का वशङ्करी ॥ आशा तृष्णा चन्द्र कला निद्राणा
वायुवेगिनी ॥८४॥ सहस्त्र सूर्य सङ्काशा चन्द्रकोटि समप्रभा ॥
निशुम्भ शुम्भ संहर्त्री रक्तबीज बिनाशिनी ॥८५॥ मधुकैटभ संहर्त्री
महिषासुर घातिनी ॥ बह्नि मण्डल मध्यस्था सर्व सत्त्व प्रतिष्ठिता ॥८६॥
सर्वाचारवती सर्वदेवकन्यातिदेवता ॥ दक्षकन्या दक्ष यज्ञ नाशिनी
दुर्गतारिणी ॥८७॥ इज्या पूज्या विभाभूति: सत्कीर्ति ब्रह्मचारिणी ॥
रम्भोरुश्चतुरा राका जयन्ती वरुणा कुहू: ॥८८॥ मनस्विनी देवमाता
यशस्या ब्रह्मवादिनी ॥ सिद्धिदा वृद्धिदा वृद्धि: सर्वाद्या सर्वदायिनी
॥८९॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

ना:
६८ कुल रागीश्वरी ज्वाला मातृका द्राविणी द्रवा, योगीश्वरी महामारी भ्रामरी विन्दु रूपिणी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आधार रूपिणी ध्येया मूलाधार निवासिनी ॥ आज्ञा प्रज्ञापूर्णमना
चन्द्रमुख्यनुकूलिनी ॥९०॥ वावदूका निम्नानना निम्नसत्यसन्धा
दृढव्रता ॥ आन्वीक्षिकी दण्डनीति स्त्रयी त्रिदिवसुन्दरी
ज्वलिनी ज्वालिनी शैल तनया विन्ध्य वासिनी ॥ प्रत्याखेचरी
धैर्या तुरीया विमलातुरा ॥९२॥ प्रगल्भा वारुणी क्षामा दर्शिनी
विस्फुलिंगिनी ॥ भक्तिः सिद्धिः सदा प्राप्तिः प्रकाम्या महिमा
अणिमा ॥९३॥ ईक्षा सिद्धिर्वशित्वा च ईशित्वोर्ध्व निवासिनी ॥
लघिमा चैव सावित्री गायत्री भुवनेश्वरी ॥९४॥ मनोहरा चिता
दिव्या देव्युदारा मनोरमा पिंगला कपिला जिह्वा रसज्ञा रसिका रसा
॥९५॥ सुषुम्नेडा योगवती गान्धारी नव कान्तका ॥ पांचाली
रुकमिणी राधा राध्या भीमा च राधिका ॥९६॥ अमृता तुलसी
वृन्दा कैटभी कपटेश्वरी उग्रचण्डेश्वरी वीर जननी वीर सुन्दरी
॥९७॥ उग्रतारा यशोदाख्या देवकी देवमानिता ॥ निरंजना ज्वाला मा ६८
चित्र देवी क्रोधिनी कुल दीपिका ॥९८॥ कुल रागीश्वरी महामारी
भ्रामरी विन्दुरूपिणी ॥९९॥ दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला डामरी प्रभा
॥ कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशुण्डी प्रकटाकृतिः ॥१००॥
द्राविणी गोपिनी माया कामबीजेश्वरी प्रिया ॥ शाकम्भरी
कोकनदा सुसत्या च तिलोत्तमा ॥१०१॥ अमेया विक्रमा
क्रूरा सम्यक्शीला त्रिविक्रमा, (तापिनी तापिनी विश्व ?
स्वस्ति हव्यवहा प्रीती रुक्मा धूम्रार्चि रंगदा ॥) इसके बाद तापिनी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धारिणी धरा ।। त्रिखण्ड रोधिनी वश्या सकला शब्दरूपिणी ।।१०३।।
बीज रूपा महामद्रावशिनी योगरूपिणी अनंग कुसुमा अनंग मेखला
अनंगरूपिणी ।।१०४।। अनंगमदना अनंगरेखा अनंगांकेशेश्वरी ।।
अनंगमालिनी, कामेश्वरी सर्वार्थसाधिका ।।१०५।। सर्वतन्त्रमयी सर्व
मोदिन्यानन्द रूपिणी ।। वज्रेश्वरी च जयिनी सर्व दुःखक्षयंकरी ।।१०६।।
षडंग युवती योगयुक्ता ज्वालांसुमालिनी ।। दुराशया दुराधारा दुर्ज्जया
दुर्गरूपिणी ।।१०७।। दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ।। हंसेश्वरी
त्रिलोकस्था शाकम्भर्य्यनुरागिणी ।।१०८।। त्रिकोण निलया नित्या
परमामृत रंजिता ।। महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी ।।१०९।।
त्वरिता भक्तिसंयुक्ता भक्तवश्या सनातनी ।। भक्तानन्दमयी, भक्तभाविता
भक्तशंकरी ।।११०।। सर्वसौंदर्य निलया, सर्वसौभाग्यशालिनी ।। सर्वसंभोग
भवना, सर्वसौख्यानुरूपिणी ।।१११।। कुमारी पूजनरता कुमारी व्रतचारिणी ।।
कुमारी भक्तिसुखिनी, कुमारीरूप धारिणी ।।११२।। कुमारी पूजक प्रीता
कुमारीप्रीतिदाप्रिया, कुमारीसेवकासंगा, कुमारीसेवकालया, ।। आनन्द
भैरवी, बालभैरवी, बटुकभैरवी, श्मशान भैरवी, कालभैरवी, पुरभैरवी ।।
११४।। महाभैरवपत्नी च परमानन्दभैरवी ।। सुरानन्द भैरवी च उन्माद
भैरवी ।।११५।। यज्ञानन्दभैरवी च तथा तरुण भैरवी ।। ज्ञानानन्द
भैरवी च अमृतानन्द भैरवी, ।।११६।। महाभयंकरी तीव्रातीव्रवेगा
तरस्विनी ।। त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी ।।११७।। त्रिपुरेशी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पंचदशी पंचमीपुर वासिनी ।। महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ।।
।।११८।। महांकुशस्वरूपा च महा चक्रेश्वरी तथा ।। नवचक्रेश्वरी
चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ।।११९।। राजचक्रेश्वरी राज्ञी महात्रिपुर
सुन्दरी ।। सिन्दूर पूर रुचिरा श्री मत्त्रिपुरसुन्दरी ।।१२०।। सर्वांगसुन्दरी
रक्तारक्त वस्त्रोत्तरीयका ।। यवायावक सिन्दूर रक्तचन्दनधारिणी
।।१२१।। यवायावक सिन्दूर रक्तचन्द रुपधृक् ।। चमरी बालकुटिल
निर्मल श्याम केशिनी ।।१२२।। वज्र मौक्तिकरत्नाढ्यकिरीट
कुण्डलोज्ज्वला ।। रत्न कुण्डल संयुक्ता स्फुरंग दण्ड मनोरमा
।।१२३।। कुंजरेश्वर कुम्भोत्थ मुक्ता रंजित नासिका ।। मुक्ताविद्रुम
माणिक्य हीराढ्य स्तनमण्डला ।। १२४।। सुर्य कान्ते इन्दु कान्ताब्ज
स्पर्शाश्मगलभूषणा ।। बीजपूर स्फुर द्बीज दन्त पंक्तीर उत्तमा ।।
१२५।। कामकोदण्डकाभग्न भ्रूकटाक्ष प्रवर्षिणी ।। मातंगकुम्भ
वक्षोजा लसत्कनक दक्षिणा ।।१२६।। मनोज्ञ शष्कुली कर्णा हंसी
गति विडम्बिनी ।। पद्मरागाङ्गद द्योत द्वोश्च तुष्क प्रकाशिनी ।।
।।१२७।। कर्पूरागरु कस्तुरी कुंकुम द्रव्य लेपिता ।। विचित्र रत्न पृथ्वी
कल्पशाखितलास्थिता ।।१२८।। रत्नद्वीप स्फुरद्द रत्न सिंहासन
निवासिनी ।। षटचक्र भेदन करी परमानन्द रूपिणी ।।१२९।।
सहस्त्रदल पद्मान्त चन्द्रमण्डल वर्तिनी ।। ब्रह्मरुप शिव क्रोड
नाना सुखविलासिनी ।।१३०।। हरविष्णु विरंचि द्रग्रह नायकसे...
।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धारिणी धरा॥ त्रिखण्ड रोधिनी वश्या सकला शब्द रूपिणी॥१०३॥
बीज रूपा महामुद्रावशिनी योगरूपिणी अनंग कुसुमा अनंग मेखला
अनंगरूपिणी॥१०४॥ अनंगमदना अनंगरेखा अनंगा केशेश्वरी॥
अनंगमालिनी कामेश्वरी सर्वार्थसाधिका॥१०५॥ सर्व तन्त्रमयी सर्व
मोदिन्यानन्द रूपिणी॥ वज्रेश्वरी च जयिनी सर्व दुःख क्षयंकरी॥१०६॥
षडंग युवती योगयुक्ता ज्वालांसुमालिनी॥ दुराशया दुराधारा दुर्ज्जया
दुर्गरूपिणी॥१०७॥ दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा॥ हंसेश्वरी
त्रिलोकस्था शाकम्भर्यनुरागिणी॥१०८॥ त्रिकोण निलया नित्या
परमामृत रंजिता॥ महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी॥१०९॥
त्वरिता भक्ति संयुक्ता भक्त वश्या सनातनी॥ भक्तानन्दमयी भक्त भाविता
भक्त शंकरी॥११०॥ सर्वसौंदर्य निलया सर्वसौभाग्यशालिनी॥ सर्वसंभोग
भवना सर्वसौख्यानुरूपिणी॥१११॥ कुमारी पूजनरता कुमारी व्रत चारिणी॥
कुमारी भक्ति सुखिनी कुमारीरूप धारिणी॥११२॥ कुमारी पूजक प्रीता
कुमारी प्रीतिदा प्रिया, कुमारी सेवका संगा, कुमारी सेवकालया॥ आनन्द
भैरवी, बालभैरवी, बटुकभैरवी, श्मशान भैरवी, कालभैरवी, पुरभैरवी॥
११४॥ महाभैरव पत्नी च परमानन्द भैरवी॥ सुरानन्द भैरवी च उन्माद
भैरवी॥११५॥ यज्ञानन्द भैरवी च तथा तरुण भैरवी॥ ज्ञानानन्द
भैरवी च अमृतानन्द भैरवी॥११६॥ महाभयंकरी तीव्रा तीव्रवेगा
तरस्विनी॥ त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी॥११७॥ त्रिपुरेशी

११२

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पंचदशी पंचमीपुर वासिनी ॥ महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ॥
॥११८॥ महांकुशस्वरूपा च महा चक्रेश्वरी तथा ॥ नवचक्रेश्वरी,
चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ॥११९॥ राजचक्रेश्वरी राज्ञी महात्रिपुर
सुन्दरी ॥ सिन्दुर पूर रुचिरा श्री मत्रिपुरसुन्दरी ॥१२०॥ सर्वांगसुन्दरी
रक्तारक्त वस्त्रोत्तरीयका ॥ यवायावक सिन्दुर रक्तचन्दनधारिणी
॥१२१॥ यवायावक सिन्दुर रक्तचन्दरुपधृक् ॥ चमरी बालकुटिल
निर्मल श्याम केशिनी ॥१२२॥ वज्र मौक्तिकरत्नाढ्यकिरीट
कुण्डलोज्ज्वला ॥ रत्न कुण्डल संयुक्ता स्फुरंग दण्ड मनोरमा,
॥१२३॥ कुंजरेश्वर कुम्भोत्थ मुक्ता रंजित नासिका ॥ मुक्ताविद्रुम
माणिक्य हीराढ्य स्तनमण्डला ॥१२४॥ सुर्य कान्ते इन्दु कान्ताब्ज
स्पर्शाश्मगलभूषणा ॥ बीजपूर स्फुर द्बीज दन्त पंक्तीर उत्तमा ॥
१२५॥ कामकोदण्डकाभग्न भ्रूकटाक्ष प्रवर्षिणी ॥ मातंगकुम्भ
वक्षोजा लसत्कनक दक्षिणा ॥१२६॥ मनोज्ञ शष्कुली कर्णा हंसी
गति विडम्बिनी ॥ पद्मरागाङ्गद द्योत द्दोश्च तुष्क प्रकाशिनी ॥
॥१२७॥ कर्पूरागरु कस्तुरी कुंकुमद्रव्यलेपिता ॥ विचित्र रत्न पृथ्वी
कल्पशाखितलास्थिता ॥१२८॥ रत्नद्वीप स्फुरद्रत्नसिंहासन
निवासिनी ॥ षटचक्र भेदन करी परमानन्द रुपिणी ॥१२९॥
सहस्रदल पद्मान्त चन्द्रमण्डल वर्तिनी ॥ ब्रह्मरुप शिव क्रोड
नाना सुख विलासिनी ॥१३०॥ हरविष्णु विरंचिंद्र ग्रहनायक से
॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवा शैवा, च रुद्राणी तथैव शिवनादिनी ॥१३१॥ महादेव
प्रिया देवी तथैवानंगमेखला ॥ डाकिनी योगिनी चैव तथोप
योगिनीमता ॥१३२॥ माहेश्वरी वैष्णावी च भ्रामरी शिवरूपिणी ॥
अलम्बुषा भोगवती क्रोधरूपा समेखला ॥१३३॥ गान्धारी
हस्तजिह्वा च इडा चैव शुभंकरी ॥ पिंगला दक्षसूत्री च
सुषुम्ना चैव गन्धिनी ॥१३४॥ भगात्मिका भगाधारा भगेशी,
भगरूपिणी ॥ लिंगाख्या चैव कामेशी त्रिपुराभैरवी तथा ॥
१३५॥ लिंगगीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंगरूपधृक ॥ लिंगमाला
लिंगभवा लिंगलिंगा च पावकी ॥ भगवती कौशिकी च
प्रेमा चैव प्रियंवदा ॥ गृध्ररूपी शिवारूपा चक्रेशी चक्ररूपधृक
१३७॥ आत्मयोनिर्ब्रह्मयोनिर्जगद्योनिरयोनिजा ॥ भगरूपा
भगस्थात्री भगिनी भगमालिनी ॥१३८॥ भगात्मिका
भगाधाररूपिणी भगशालिनी ॥ लिंगाभिधायिनी लिंगप्रिया
लिंगनिवासिनी ॥१३९॥ लिंगस्था, लिंगिनी लिंगरूपिणी,
लिंगसुन्दरा ॥ लिंगगीति र्महाप्रीति र्भगगीतिर महासुखा ॥१४०॥
लिंगनामसदानन्दा, भगनामसदारतिः ॥ भगनाम सदानन्दा
लिंगनामसदारतिः ॥१४१॥ लिंगमाला करभूषा, भगमालाविभूषणा
॥ भगलिंगामृत प्रीता, भगलिंगामृतात्मिका, ॥१४२॥ भगलिंगा
र्चनप्रीता, भगलिंगस्वरूपिणी ॥ भगलिंगस्वरूपा च भगलिंग

११२

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुखावहा ॥१४३॥ स्वयम्भू कुसुम प्रीता, स्वयम्भू कुसुमार्चिता ॥
स्वयम्भू कुसुमप्राणा, स्वयम्भू कुसुमोत्थिता; ॥१४४॥ स्वयम्भू कुसुमस्नाता,
स्वयम्भू पुष्पतर्पिता, ॥ स्वयम्भू पुष्पघटिता, स्वयम्भू पुष्पधारिणी, ॥१४५॥
स्वयम्भू पुष्पतिलका, स्वयम्भू पुष्प चर्चिता ॥ स्वयम्भू पुष्प निरता
स्वयम्भू कुसुमाग्रहा ॥१४६॥ स्वयम्भू पुष्प यज्ञांशा, स्वयम्भू कुसुमालिका
॥ स्वयम्भू पुष्पनिचिता, स्वयम्भू कुसुमप्रिया ॥१४७॥ स्वयम्भू कुसुमादान
लालसोन्मत्तमानसा, ॥ स्वयम्भू कुसुमानन्दलहरी, स्निग्ध देहिनी ॥१४८॥
स्वयम्भू कुसुमाधारा, स्वयम्भू कुसुमाकुला ॥ स्वयम्भू कुसुमा स्निग्धा,
स्वयम्भू कुसुमात्मिका ॥१४९॥ स्वयम्भू पुष्पनिलया, स्वयम्भू पुष्प
वासिनी, ॥ स्वयम्भू पुष्पकारिणी, स्वयम्भू पुष्प मालिका ॥१५०॥
स्वयम्भू कुसुमन्यासा, स्वयम्भू कुसुमप्रभा ॥ स्वयम्भू कुसुमज्ञाना
स्वयम्भू पुष्पभोगिनी ॥१५१॥ स्वयम्भू कुसुमोल्लासा, स्वयम्भू
पुष्पवर्षिणी ॥ स्वयम्भू कुसुमानन्दा, स्वयम्भू पुष्पपुष्पिणी ॥१५२॥
स्वयम्भू कुसुमोत्साहा, स्वयम्भू पुष्परूपिणी ॥ स्वयम्भू कुसुमानन्दा,
स्वयम्भू पुष्पसुन्दरी, ॥१५३॥ स्वयम्भू कुसुमाराध्या, स्वयम्भू कुसुमोद्भवा
॥ स्वयम्भू कुसुमव्यग्रा, स्वयम्भू कुसुमोन्मादा ॥१५४॥ स्वयम्भू
पूजकप्राज्ञा, स्वयम्भू होतृ मातृका ॥ स्वयम्भू दातृरक्षित्, स्वयम्भू
भक्तभाविका ॥१५५॥ स्वयम्भू कुसुमप्रीता, स्वयम्भू पूजकप्रिया ॥
स्वयम्भू वन्दकाधारा, स्वयम्भू निन्दकांतका, ॥१५६॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वयम्भू प्रदसर्वस्वा, स्वयम्भू प्रदपुत्रिणी ॥ स्वयम्भू प्रदसस्मेरा,
स्वयंम्भूत शरीरिणी ॥१५७॥ सर्वलोकोद्भव प्रीता, सर्वलोको
द्भवात्मिका ॥ सर्वकालोद्भवोद्भावा, सर्वकालोद्भवोद्भवा ॥
१५८॥ कुण्डपुष्प समाप्रीतिः कुण्डपुष्प समारीतः ॥ कुण्ड गोलोद्भव
प्रीतिः कुण्डगोलोद्भवात्मिका ॥१५९॥ स्वयम्भूर्वा शिवाशक्ता,
पावनीलोकपावनी ॥ कीर्तिर्यशस्विनी मेधा, विमेधा सुरसुन्दरी ॥१६०॥
अश्विनी कृत्तिका पुष्या तेजस्वी, चन्द्र मण्डला, ॥ सूक्ष्मा सूक्ष्म
प्रदा सूक्ष्मासूक्ष्म, भय नाशिनी ॥१६१॥ वरदा भयदा चैव मुक्तिबंध
विनाशिनी ॥ कामुका कामदा क्षान्ता कामाख्या कुलसुन्दरी,
॥१६२॥ सुखदा दुःखदा मोक्षा मोक्षदार्थ प्रकाशिनी, ॥ दुष्टा, दुष्टमता
चैव सर्वकार्य विनाशिनी ॥१६३॥ शुक्रधारा, शुक्ररूपा, शुक्र
सिन्धु निवासिनी ॥ शुक्रालया शुक्रभोगा, शुक्रपूजा,
सदारतिः ॥१६४॥ शुक्रपूजा, शुक्रहोम सन्तुष्टा शुक्रवत्सला ॥
शुक्रमूर्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजक पुत्रिणी ॥१६५॥ शुक्रस्था, शुक्रिणी शुक्र
संस्पृहा, शुक्रसुन्दरी ॥ शुक्रस्नाता शुक्रकरी शुक्रसेव्याति शुक्रिणा ॥
॥१६६॥ महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टि विधायिनी ॥ शुक्राभिधेया शुक्रार्हा
शुक्रवन्दक वन्दिता ॥१६७॥ शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्द विधायिनी ॥
शुक्रोत्साहा, सदाशुक्रपूर्णा, शुक्रमनोरमा, ॥१६८॥ शुक्रपूजक सर्वस्वा,
शुक्र निन्दक निशाना ॥ शुक्रात्मिका शुक्र सम्पद् शुक्राकर्षण कारिणी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥१६९॥ रक्ताशया रक्तभोगा रक्तपूजा सदारतिः॥ रक्तपूज्या रक्तहोमा
रक्तस्था रक्तवत्सला॥१७०॥ रक्तपूर्णा रक्तदेहा रक्तपूजकपत्रिणी॥
रक्ताख्या रक्तिनी रक्तसंसपृहा रक्तसुन्दरी॥१७१॥ रक्ताभि देहा रक्ता
रक्तवन्दकवन्दिता ॥महारक्ता रक्तभवा रक्तवृष्टि विधायिनी
॥१७२॥ रक्तस्नाता रक्तप्रीता रक्तसेव्याति रक्तिनी॥ रक्तानन्दकरी
रक्तसदानन्द विधायिनी॥१७३॥ रक्तारक्ता रक्तपूर्णा रक्तसेव्यक्षणी रमा॥
रक्तसेवक सर्वस्वा रक्तनिन्दक नासिनी॥१७४॥ रक्तात्मिका रक्तरूपा
रक्ताकर्षण कारिणी॥ रक्तोत्साहा रक्तव्यग्रा रक्तपानपरायणा॥
॥१७५॥ शोणितानन्दजननी कल्लोलस्निग्ध रूपिणी॥
साधकान्तरगता देवी पावनी पाप नाशिनी॥१७६॥ साधुनां हृदि
संस्थात्री साधकानन्द कारिणी॥ साधकानां च जननी साधकप्रिय
कारिणी॥१७७॥ साधकप्रचुरानन्द संपत्ति सुखदायिनी॥ साधका
साधकप्राण साधका सक्तमानस॥१७८॥ साधकोत्तम सर्वस्वा
साधका भक्तरक्तपा॥ साधकानन्द सन्तोषा साधकारि विनाशिनी
॥१७९॥ आत्मविद्या ब्रह्मविद्या परब्रह्मकुटुंबिनी॥ त्रिकूटस्था पंच
कूटा सर्व कूट शरीरिणी॥१८०॥ सर्व वर्ण मयी वर्णजपमाला
विधायिनि श्री शिव उवाच॥ इति श्री कालिका नाम्नां सहस्त्रं
शिवभाषितम्॥१८१॥ गुह्याद गुह्यतरं साक्षान्महापातक नाशनम्
इदं रहस्यं परमं
सर्व रोग नाश कारं सर्व ग्रह निवारणम्, कालिका सहस्त्र नाम स्तोत्रं रहस्यं
सम्पूर्ण जगदम्बा अर्पणमस्तु

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालिका सहस्त्र नाम को पुजा के समय पढ़े। अथवा अर्ध निशा में या दोनों सन्ध्या बेला में तो उत्तम साधक हो जाता है। इसे पढ़े या सुने दोनों ही भवसागर पार हो जाता है। वन्ध्या काकबन्ध्या मृतवत्सा पढ़े पुत्र की याचना करे तो पुत्र प्राप्त होता है। १ हजार २५ सौ पाठ करने से। और जो श्मशान में स्थिर बुद्दि करके मुक्त केश करके दिगम्बर हो के शव के ऊपर बैठ कर पढ़े। या अरण्य में (सुनसान) में या रति की हुई शैया पर बैठ कर पढ़े साक्षात् कालिका पुत्र बन जाता है। और सर्व विद्या का ज्ञाता और धनवान पुंजीपति हो जाता है। वायू के समान बलिष्ठ दुर्धर शत्रू को जीत लेता है। सर्व सिद्दि प्राप्त करता है सब संकट से मुक्त हो जाता है। मद्य सेवन करके स्वयं पढ़ता है शिवरुप हो जाता है। षट कर्मो की सिद्दि हो जाती है। जैसे मारण मोहन आदि) हजार वर्ष तक यौवन नाश नहीं होता और सब पापों से मुक्त हो जाता है) यदि रजस्वला की भग देखता हुआ कालिका सहस्त्र नाम पढ़ता है तो क्या नहीं कर सकता है साधक सिद्द हो जाता है। यदि परस्त्री हो उसके भी संग जपने से कुबेर के समान हो जाता है। संगम करते समय १०८ बार पढ़े सर्व सिद्दि प्राप्त करे) यदि दिगम्बर होके मुक्त केश करके मैथुनरत हो कर जपे तो खेचरी सिद्द हो जावेगी। यदि शुक्र गिरते समय जप में लगा हो तो कवि हो जाता है। पराई स्त्री को दिगम्बर देख कर पढ़े तो सर्व पाप मुक्त हो जाते है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जपके पर्व प्रधान लिखती हूं। पुर्ण चन्द्रमा जिसदिन निकले सूर्य संक्रान्ति के दिन। नवमी को। चौदश के दिन, अष्टमी के दिन, मंगलवार। औमावस्या के दिन पढ़े यानी जिस मंगल को मावस पड़े उस दिन रात को १२ बजे पढ़े। चौथ को पढ़े।

मांस की बलि दो कारण पंचोपचार पुजन करे। १० करे सहस्त्र नाम का तो ग... औ दास बनजायेंगे। मां का दर्शन होगा।

पाठ करके लिंग स्तुति जरूर क...

नीचे (यह अघोरी का प्रयोग है।)

पाठ करके लिंग स्तुति जरूर करें। इससे मां प्रसन्न होकर सिद्धि देती है। (यह कठिन साधन है जो लिख रही हूं नर बिल्ली, भैंसा बकरा चूहा इनके खुन को ले इनको हड्डी मांस में मधु कारण, घी, खीर, रजस्वला की योनी का धोवन भगलिंगामृता शुक्र: पुजा जप के अन्त में यानी पाठ के अन्त में इन सबसे देवी का तर्पण करे। तो माता कालिका सदैव साथ होजाये। यह कालिका विधि निन्दक नास्तिकों को गुरु द्रोही शिव द्रोही भक्त द्रोही शक्ति द्रोही। शास्त्र निन्दक, अविश्वासी को न बतावे।

गोरोचन कपुर सिंदुर मधु इस स्याही से पुरा पाठ लिखकर और पुजन करके पहने तो कोई बैरी वा चोर वा अग्नि तुफान वायु दरिद्रता की शंका नहीं रह जाती है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शूलिनी विनियोग:॥ अस्य शूलिनी दुर्गा महामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि: गायत्री छन्दः श्री शूलिनी दुर्गा परमेश्वरि देवता हुं बीजं मं शक्तिः स्वाहा कीलकं मम शूलिनी दुर्गा प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:॥

करन्यास॥ श्री शूलिनी वरदे देव सिद्ध सुपूजिते नन्दिनी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुंफट् ह्रां अंगुष्ठाभ्यांनमः। श्री शूलिनी वरदे देव सिद्ध सुपूजिते नन्दिनी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुंफट् ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। श्री शूलिनी युद्धप्रिये देव सिद्ध सपूजिते नन्दिनी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुंफट् हूं मध्यमाभ्यांनमः। श्री शूलिनी महिषासुरमर्दिनी सिद्ध सुपूजिते नन्दिनी रक्षरक्ष महायोगेश्वरि हुंफट् ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। श्री शूलिनी विन्ध्यवासिनी यन्त्र मन्त्र तन्त्राकर्षिणी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दिनी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुं फट् ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। श्री शूलिनी सर्व सिद्ध प्रदायिनी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दिनी रक्षरक्षमहायोगेश्वरि हुं फट् ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयन्यासः॥ श्री शूलिनी वरदे देव सिद्ध सु पूजिते नन्दिनी रक्ष २ महायोगेश्वरि हुंफट् ह्रां हृदयाय नमः॥ श्री शूलिनी वरदे देव सिद्ध सु पूजिते नन्दिनी रक्ष २ महायोगेश्वरि हुंफट् ह्रीं शिरसे स्वाहा। श्री शूलिनी युद्धप्रिये देव सिद्ध सुपूजित नन्दिनी रक्ष २ महायोगेश्वरि हुंफट् हूं शिखायै वषट्॥ श्री शूलिनी महिषासुर मर्दिनी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दिनी रक्ष २ महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रैं कवचाय हुं॥ श्री शूलिनी विन्ध्यवासिनी यन्त्र मन्त्र तन्त्राकर्षिणी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दिनी रक्ष २ महायोगेश्वरि हुंफट् ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ श्री शूलिनी सर्व सिद्धि प्रदायिनी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दिनी रक्ष २ महायोगेश्वरि हुंफट् ह्रः अस्त्राय फट्॥ ३ बार॥ ॥ध्यान॥

बिभ्राण शूल बाणस्य भय वर गदा चाप पाशान् कराग्रै मेघश्यामा किरीटोल्लसित शशि कलाभूषणा॥ भीषणास्या सिंहस्कन्धाधिरूढा चतं सृभिर-चतं खेटकं बिभ्रतीभिः कन्याभिर्भिन्नदैत्या भवतु भव भयविध्वंसिनी शूलिनी नः॥

मन्त्रः॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वलय शूलिनी दुष्ट गृहान् हुं फट् स्वाहा॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२३) वांपेज

॥ श्री चण्डिका माला मन्त्र ॥

विनियोग । ॐ अस्य श्री चण्डिका मालामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषि: ॥ अनुष्टुप छन्द: ॥ श्री चण्डिका देवता ॥ ॐ ह्रां बीजम् ॥ ॐ सौं शक्ति: ॥ ॐ ह्रौं कीलकं मम श्री चण्डिका प्रसाद सिद्धयर्थे सकलजन वश्यार्थे (अमुक कार्यार्थे) श्री चण्डिका माला मन्त्र जपे विनियोग: ॥

न्यास: ॥ ॐ ह्रां फ्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: ॥ ॐ ह्रां फ्रां तर्जनीभ्यां नम: ॐ ह्रां फ्रां मध्यमाभ्यां नम: ॥ ॐ ह्रां फ्रां अनामिकाभ्यां नम: ॐ ह्रां फ्रां कनिष्ठिकाभ्यां नम: ॥ (हृदयन्यास:) :- ॐ ह्रां फ्रां हृदयाय नम: ॐ ह्रां फ्रां शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ह्रां फ्रां शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्रां फ्रां कवचाय हुं ॐ ह्रां फ्रां नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रां फ्रां अस्त्राय फट् ॥ (सर्वाङ्गन्यास:) । ॐ ह्रां फ्रां दिगन्यास:

ध्यान ॥ कल्याणीं कमला सनस्थ शुभदाम गौरी घनश्यामलां मालादां विभूषितां भयदां आर्द्रैक रक्तै शुभै श्रीं ह्रीं क्लीं वर मंत्र राज सहितानन्द पूर्णात्मिकाम् ॥ श्री शैले भ्रमरात्मिकाम शिवयुताम् चिनमात्रमूर्तिं भजे ।

मन्त्र ॥ ॐ ह्र: ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री जय जय चंडिका चामुण्डे चण्डिके त्रिदश मुकुट कोटि संघट्टित चरणारविंदे गायत्री सावित्री सरस्वती महिकृताभरणे भैरवरूपधारिणी प्रगटित

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्रंष्ट्रोग्रवदने घोराननयने, ज्वलज्वाला सहस्त्र परिवृते महा द्वहासाद
वलीकृत दिगन्तरे सर्वयुग परिपूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरिये,
भूत प्रेत वैताल परिवृते, अकम्पित धराधरे मधुकैटभ महिषासुर
धूम्रलोचन चण्डमुण्ड, रक्तबीज, शुम्भनिशुम्भ दैत्यनिकृते कालरात्रि
महामाये शिवेनित्ये, ॐ ऐं ह्रीं एन्द्री आग्नेयी नैऋति, वारुणि वायव्ये
कौबेरी ईशान्ये ब्रह्म विष्णु शिवास्थिते ॥ त्रिभुवनधराधरे वामे,
ज्येष्ठे रौद्री अम्बिके ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही
इन्द्राणी ईशानि महालक्ष्मी इति स्थिते, महोग्रविषं महाविषोर
फणमणि मुकुट रत्न, महाज्वाला मल मणि, महाहिहार वाहु कहोत्तमं
नवरत्न निधि कोटि तत्व बाहु जिह्वा बाणी, शब्द स्पर्श रुप रस गंधात्मिके
क्षिति सहास मध्यास्थिते, महोज्वल, महा विषोप, विष गन्धर्व
विद्याधरादिपते ॥ ॐ ऐं कारा ॐ ह्रीं कारा ॐ क्लीं कारा हस्ते ॐ आं ह्रीं क्रों
आनग्र पात, इष्टदेव्यै, मम शरीरे प्रवेशय २ स्वस्वरुप ज्ञानं देहि २ (स्वस्पार्श कुरु २)
दिव्य ज्ञानं प्रबोधय २ (कुरु सर्व) दिव्य दृष्टिं देहि २, विशाल
हृदयं कुरु, विशाल शक्ति देहि २ ॐ द्रां द्रीं शोषय २ ॐ द्रीं
होमय २ ॐ क्लां क्लीं दीपय २ ॐ ब्लूं ब्लूं सन्तापय २ ॐ सौं सौं
उन्मादय २ ॐ म्लें म्लैं मोहय २ ॐ खां खां शोधय २ ॐ द्यां द्यां
उन्मादय २ ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय २ ॐ स्त्रीं स्त्रीं उच्चाटय २, ॐ
स्त्रीं स्त्रीं आकर्षय २ ॐ हूँ हूँ आस्फोटय २ ॐ त्रूं त्रूं त्रोटय २

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ छां छां छेदय २, ॐ कूं कूं उच्चाटय २, ॐ हुं हुं हन २, ॐ ह्रौं ह्रौं
मारय २, ॐ घ्रीं घ्रीं घर्षय २, ॐ स्वीं स्वीं विध्वंसय २, ॐ प्लूं प्लूं
प्लावय २, ॐ भ्रां भ्रां भ्रामय २, ॐ भ्रां भ्रां दर्शय २, ॐ दां दां दिशो
बन्धय २, ॐ दीं दीं वर्तनामेकाग्रचित्ता विशि कुरुतेङ्ग्ये, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं
ह्रैं ह्रौं ह्रः, ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः, ॐ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा, इष्ट
दिव्ये, सर्वोपद्रव निवारय २, सर्वजन (अमुक) सम्मोहन कुरु २, (सर्व) भूत प्रेत
पिशाच, ब्रह्मपिशाच, ब्रह्मराक्षस, यक्ष, (ब्रह्मवीर शमदूत) शाकिनी, डाकिनी, योगिनी
(सर्व) वीर भैरवादि वाधां निवारय २, सर्वश्व ज्ञापदा (सर्पादि) तस्करादिकं वै
नाशय २, मारय २, भंजय २, हन २, पच २, दह २, खण्डय २, शोषय
छिन्द भिन्द २, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा ॥ १२१ पाठ करे।
आदौ सुवासिन्यः कुमार्यः पूजां कृत्वा पश्चात् जपं कुर्यात् ॥ एवं एव
विंशति शत जाप्येन स्त्रियो वा पुरुषो ऽपि वा ॥ राजद्वारे श्मशाने
च विवादे शत्रु संकटे ॥ शत्रोच्चारनेचैव सर्व कार्याणि साधयेत

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा १ अष्टोत्तरी जाप
इस चंडिका माला मंत्र को १२१ पाठ करे शुरू में सुहागिन
कन्याओं का पूजन करे तब पाठ करे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१४ लाख मंत्र का पुरश्चरण है इसका।

॥ शूलिनी माला मंत्र ॥

ॐ नमो भगवती कं कालरात्री, दुं दुर्गे, शुं शूलिनी, बं बटुकभैरवी, अर्ध्यरात्र विलासिनी, प्रताप केलिनी, महाज्ञान धारिणि, सर्व भूत पिशाच, मद, भीषमाकर्षय, कर्षय आवेशय, आवेशय केलय, केलय भाषय, भाषय, महा बटुकभैरवी, हुं फट स्वाहा॥ ॐ नमो भगवती भद्रकाली, कासकूटमोहिनी, ऐं ह्रीं श्रीं इष्ट कामार्थसिद्ध प्रदायि सकलज्ञापिनी, संक्रामिणि, ब्राह्मी, माहेश्वरि, कौमारी, वैष्णवी, वारा इन्द्राणी, चामुण्डा, भैरवेश्वरी, आकर्षय, कर्षय, आवेशय, आवेशय केलय, केलय, भाषय, भाषय, ऐं ह्रीं श्रीं, हन, हन, सप्तमातृके, हुं फट् स्वा... नमो भगवती, ह्रीं ज्वल, ज्वलय शूलिनी, संहारकाली, अष्टभुजे शालीनि, येहि २, आगच्छ, आगच्छ, आवेशय, आवेशय, केलय २, भाषय बन्ध २, घातय २, छिन्धि २, भिन्दि २, रारारारा, ग्राह्य २, सकल ग्रहा... संहारय २, भूत गृह, प्रेतगृह, पिशाचगृह, राक्षसगृह, ब्रह्मराक्षस, गृह जिन्द... वैतालगृह, शाकिनी गृह, डाकिनी गृह, राकिनी गृह, लाकिनी गृह, योगिनी... भैरवीगृह, बीर वहत्तर कलुवं गृह, पीर गृह मसान गृह, काल निग्रह, महाकाल निग्रह गृह, स्वप्न, गृह भोग, गृह अपस्मार, गृह नित्य, सर्व ग्रहान, संहारय २ उच्चाटय, नाशय २, मारय, मारय, शोषय २, दह २, पच २, भक्षय २, खण्डय २ खड्गेन छिन्द २, शूलेन ताडय २, पाशेन बंध २, अनलेन दह २ दुर्गे, बटुक भैरवी, सकलग्रह संहार कारिणी, हुं फट् स्वाहा ॥३"

भूतज्वर, प्रेतज्वर पिशाचज्वर राक्षसज्वर ब्रह्मराक्षसज्वर,

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस्त्राज्वर विषमज्वर तापज्वर

प्रयोगज्वर, वातज्वर, पित्तज्वर, श्लेष्मिकज्वर, सान्निपातिकज्वर, भूत ताल
एकाहिकज्वर, द्वाहिकज्वर, त्र्याहिक्यज्वर, मासज्वर, त्रिमासज्वर, षाण्मासज्वर, साम्बत्सरिकज्वर, सर्वज्वरान् भंजय २, शिरःशूलाक्षिशूल, कर्णशूल, कण्ठशूल, दन्तशूल, पृष्ठिशूल, वाहुशूल, उदरशूल, हृदशूल गुल्मशूल, नाभिशूल, योनिशूल, लिंगशूल, पादशूल, पादी, अर्धशूल, कटिशूल, कुक्षिशूल, अंगशूल, पार्श्वशूल, सर्वाङ्ग शूलादि रोगान् संहारय २ ह्रीं दुर्गे परमंत्र पर तन्त्र परयन्त्र विद्या स्वामिनी स्वमन्त्र स्वतन्त्र स्वयन्त्र विद्या विवर्धिनि ॐ ह्रां ह्रीं हूं हुं फट् स्वाहा ह्रीं दुर्गे अमुकस्य आत्मरक्षा परोक्षरक्षा प्रत्यक्षरक्षा अग्नीरक्षा वायुरक्षा उदकरक्षा अघोररक्षा, महा-उल्काशल्का विद्युत् अनिल, चौर अस्त्रशस्त्रास्ते मां रक्ष २ ह्रीं दुर्गे महाकालभैरवी मतकृपाकुरु हुं फट् स्वाहा ॥ इतिमंत्रः (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वलज्वलय शूलिनी दुष्ट गृहान् हुं फट् स्वा
ॐ ह्रां ह्रीं हूं हुं फट् स्वाहा

सवालाख जप पुरश्चरण में है। वैसे ॥ शूलिनी यन्त्र शक्तियों सहित ॥

यदि १ हजार १०८ आहुति तिल मधु घी शक्कर से खूब सम्मिलित करके आम की लकड़ी में हवन करता रहे तो अमानुषी शक्ति प्राप्ति करे। और यदि केवल घी से वांछित फल प्राप्त करे। हाथ में चाकू लेकर जपे तो वांछित फल पावे और साथ ही साथ पीपल की लकड़ी में रोज तिल मधु घी से रोज १ माला हवन भी करता जाय तो वांछित फल निश्चय प्राप्त होवे। यदि किसी से युद्ध करना हो तो १ लाख मंत्र से सविधि यन्त्र पूजन करके तिल काले और पीली सरसों से हवन करदे। तो जीते। यदि किसी को वश में करना हो तो हाथ में गाय का गोबर लेकर खड़े होकर तीन हजार मंत्र उसके नाम से जप करदे तो वश हो जाय। यदि वही गोबर उसके द्वार पर गाड़ दे तो स्तम्भन हो जायेगा भूतबाधा को हटाना हो उसे छूकर मन्त्र पढ़ दे चाहे माला मंत्र पढ़ दे ६ बार

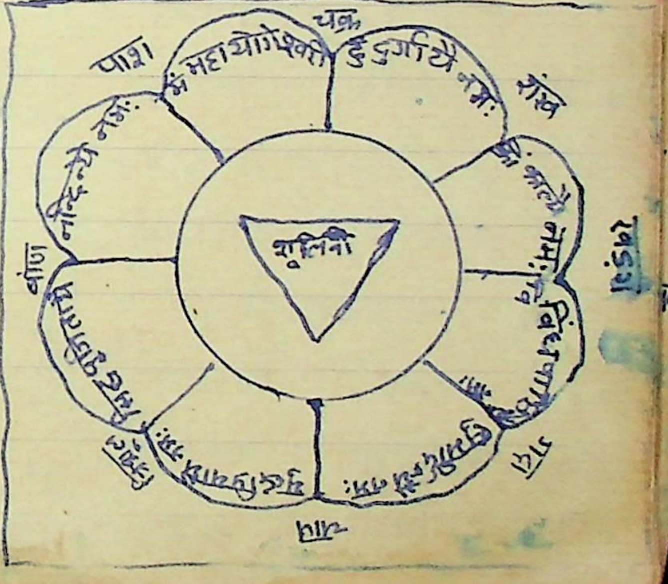

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ अस्य श्री दुर्गा सहस्त्रनाम स्तोत्र मन्त्रस्य शिव ऋषि: अनुष्टुपछन्द: श्री दुर्गा देवता निजं बीजं मन्त्रकीलकं सर्वासा पूरक श्री दुर्गा देवी प्रीतियर्थं दुर्गा सहस्त्र नाम पाठे विनियोग:॥

१ ॐ दुर्गायै नम:
ॐ दुर्गार्ति हरायै नम:
ॐ दुर्गा[illegible]ल निवासिन्यै०
ॐ दुर्गमार्गानु संचारायै०
ॐ दुर्गमार्ग निवासिन्यै०
ॐ दुर्गमार्ग प्रविष्टायै नम:
ॐ दुर्गमार्ग प्रवेशिन्यै नम:
ॐ दुर्गमार्ग कृतावासायै०
ॐ दुर्गमार्ग जयप्रियायै नम:
ॐ दुर्ग मार्ग ग्रहीताचार्यै नम:
ॐ दुर्ग मार्ग स्थितात्मिकायै०
ॐ दुर्ग मार्ग स्तुति परायै नम:
ॐ दुर्ग सदास्थालयै नम:
ॐ दुर्ग मार्ग रति प्रियायै०
ॐ दुर्ग मार्गस्थल स्थानायै०
ॐ दुर्ग मार्ग स्मृति परायै नम:

१७ ॐ दुर्ग मार्ग विलासिन्यै०
१८ ॐ दुर्ग मार्ग प्रवर्तिन्यै नम:
१९ ॐ दुर्ग मार्ग त्यक्त वस्त्रायै०
२० ॐ दुर्गासुर निहंत्र्यै नम:
२१ ॐ दुर्गासुर निषूदिन्यै नम:
२२ ॐ दुर्गासुर हारायै नम:
२३ ॐ दुर्गासुर विनाशिन्यै नम:
२४ ॐ दुर्गासुर बधोन्मत्तायै नम:
२५ ॐ दुर्गासुर बधोत्सुकायै नम:
२६ ॐ दुर्गासुर सुधोत्साहायै०
२७ ॐ दुर्गासुर बधोत्साहायै०
२८ ॐ दुर्गासुर बध प्रसुवे नम:
२९ ॐ दुर्गासुर मरवान्त कृते नम:
३० ॐ दुर्गासुर ध्वंसतोषायै नम:
३१ ॐ दुर्ग दानव विदारिण्यै नम:
३२ ॐ दत्यै नम:

ॐ दुर्ग विद्रावणकर्यै०
ॐ दुर्ग विक्षोभणकर्यै
ॐ दुर्ग शीघ्र निकृन्तिन्यै०
ॐ दुर्ग विध्वंसनकर्यै०
ॐ दुर्ग दैत्य निकृन्तिन्यै०
ॐ दुर्ग दैत्य प्राणहरायै०
ॐ दुर्ग दैत्यान्तकारिण्यै
ॐ दुर्ग दैत्य हरत्रात्रे नम:
ॐ दुर्गासुर बधोद्धतायै नम:
ॐ दुर्ग विद्रावण्यै नम:
ॐ दुर्ग देश विनाशिन्यै नम:

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४१ ॐ दुर्ग दैत्यासृगुन्मादायै०
४२ ॐ दैत्याशन कर्यै नमः
४३ ॐ दुर्ग चरमाम्बरावृतायै०
४४ ॐ दुर्ग युद्धोत्सव कर्यै नमः
४५ ॐ दुर्ग युद्ध विशारदायै नमः
४६ ॐ दुर्ग युद्धोत्सवरतायै नमः
४७ ॐ दुर्ग युद्ध विमर्दिन्यै नमः
४८ ॐ दुर्ग युद्ध हास्यरतायै नमः
४९ ॐ दुर्ग युद्धाट्टहासिन्यै नमः
५० ॐ दुर्ग युद्ध महामत्तायै नमः
५१ ॐ दुर्ग युद्धानुसारिण्यै नमः
५२ ॐ दुर्ग युद्धोत्सवोत्साहायै नमः
५३ ॐ दुर्ग देशनिषेविण्यै नमः
५४ ॐ दुर्ग विद्राविण्यै नमः
५५ ॐ दुर्ग देशवास रतायै नमः
५६ ॐ दुर्ग देशार्चनरतायै ०
५७ ॐ दुर्ग देश जनप्रियायै०
५८ ॐ दुर्गमस्थान संस्थानायै०
मध्यानसाधनायै
५९ ॐ दुर्ग ~~मध्यान~~ ध्यानुसंधानायै०
६० ॐ दुर्गमायै नमः

दुर्गमा
६१ ॐ दुर्गमध्यानायै नमः
६२ ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै नमः
६३ ॐ दुर्गमागम संधानायै नमः
६४ ॐ दुर्गमागम संस्तुतायै नमः
६५ ॐ दुर्गमागम दुर्ज्ञेयायै नमः
६६ ॐ दुर्गम श्रुतिमान्यायै०
६७ ॐ दुर्गम श्रुति पूजितायै०
६८ ॐ दुर्गम श्रुति संमतायै०
६९ ॐ दुर्गऽचारायै नमः
७० ॐ दुर्गम श्रुति सुप्रीतायै
७१ ॐ दुर्गम श्रुति हर्षदायै०
७२ ॐ दुर्गम श्रुतिसंस्थानायै०
७३ ॐ दुर्गम श्रुति मानितायै०
७४ ॐ दुर्गमाचार संतुष्टायै०
७५ ॐ दुर्गमाचार तोषतायै०
७६ ॐ दुर्गमाचार निर्वृतायै०
७७ ॐ दुर्गमाचार पूजितायै०
७८ ॐ दुर्गमाचार कलितायै०
७९ ॐ दुर्गमस्थान दायिन्यै०
८० ॐ दुर्गमप्रेम निरतायै०

८१ ॐ दुर्गम द्रविण प्रदायै नमः
८२ ॐ दुर्गमाम्बुज वासिन्यै०
८३ ॐ दुर्ग नाडीमार्ग गत्यै नमः
८४ ॐ दुर्ग नाड़ी प्रचारिण्यै०
८५ ॐ दुर्ग नाड़ीपद्म रतायै०
८६ ॐ दुर्ग नाड्यम्बुजास्थितायै
८७ ॐ दुर्ग नाडीगतायातायै०
८८ ॐ दुर्ग नाडीकृतास्पदायै०
८९ ॐ दुर्ग नाडीरतरतायै ०
९० ॐ दुर्ग नाडीश संस्तुतायै
९१ ॐ दुर्ग नाडीश्वर रतायै ०
९२ ॐ दुर्ग नाडीश चुम्बितायै
९३ ॐ दुर्ग नाडीश क्रोडस्थायै
९४ ॐ दुर्ग नाड्युत्थितोत्सुकायै
९५ ॐ दुर्ग नाड्यारोहणायै
९६ ॐ दुर्ग नाड़ी निषेवितायै
९७ ॐ दरिस्थानायै नमः
९८ ॐ दरिस्थान वासिन्यै
९९ ॐ दनुजान्तकृते न
१००

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१०१	ॐ दरीकृत तपस्यायै नमः	१२१	ॐ दानवविध्वंसिन्यै०
१०२	ॐ दरीकृत हरार्चनायै ०	१२२	ॐ दानवेन्द्रवरप्रदायै०
१०३	ॐ दरिजापिता दिष्टायै ०	१२३	ॐ दानवेन्द्रनिहन्त्र्यै ०
१०४	ॐ दरीकृत रति क्रियायै ०	१२४	ॐ दानव द्वेषिणी सत्यै०
१०५	ॐ दरीकृत हरार्हायै नमः	१२५	ॐ दानवारि प्रेमरतायै०
१०६	ॐ दरी क्रीडित पुत्रिकायै ०	१२६	ॐ दानवारि प्रपूजितायै०
१०७	ॐ दरीसंदर्शन रतायै ०	१२७	ॐ दानवारिकृताचायै०
१०८	ॐ दरी रोदित वृश्चिकायै०	१२८	ॐ दानवारि विभूतिदायै०
१०९	ॐ दरीगुप्ति कौतुकाढ्यायै	१२९	ॐ दानवारि महानन्दायै०
११०	ॐ दरीभ्रमण तत्परायै०	१३०	ॐ दानवारि रतिप्रियायै ०
१११	ॐ दनुजान्त कर्यै नमः	१३१	ॐ दानवारि दानरतायै ०
११२	ॐ दीनायै नमः	१३२	ॐ दानवारि कृतास्पदायै०
११३	ॐ दनुसंतानदारिण्यै ०	१३३	ॐ दानवारिस्तुतिरतायै०
११४	ॐ दनुजविध्वंसिन्यै०	१३४	ॐ दानवारि स्मृतिप्रियायै०
११५	ॐ दूनायै नमः	१३५	ॐ दानवार्याहाररतायै नमः
११६	ॐ दनुजेन्द्रविनाशिन्यै०	१३६	ॐ दानवारि प्रबोधिन्यै ०
११७	ॐ दानवानां भयंकर्यै ०	१३७	ॐ दानवारि धृतप्रेमायै०
११८	ॐ दानव्यै नमः	१३८	ॐ दुःखशोच विमोचिन्यै०
११९	ॐ दिव्यै नमः	१३९	ॐ दुःख हन्त्र्यै नमः
[illegible]	ॐ दानवाराध्यै नमः	१४०	ॐ दुःख हन्त्र्यै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१४१ ॐ दुःख निर्मूल कारिण्यै नमः
१४२ ॐ दुःख निर्मूलन कर्यै नमः
१४३ ॐ दुःखदार्यरि नाशिन्यै नमः
१४४ ॐ दुःख हरायै नमः
१४५ ॐ दुःख नाशायै नमः
१४६ ॐ दुःखग्रामायै नमः
१४७ ॐ दुरासदायै नमः
१४८ ॐ दुःख हीनायै नमः
१४९ ॐ दुःख धारायै नमः
१५० ॐ द्रवणाचारदायिन्यै नमः
१५१ ॐ द्रविणोत्सर्ग संतुष्टायै नमः
१५२ ॐ द्रविणत्याग तोषिकायै नमः
१५३ ॐ द्रविणस्पर्श संतुष्टायै नमः
१५४ ॐ द्रविण स्पर्श मानदायै नमः
१५५ ॐ द्रविणस्पर्श हर्षाढ्यायै नमः
१५६ ॐ द्रविण स्पर्श तुष्टि दायै नमः
१५७ ॐ द्रविण स्पर्शन कर्यै नमः
१५८ ॐ द्रविण स्पर्शनातुरायै नमः
१५९ ॐ द्रविण स्पर्श नोत्साहायै नमः
१६० ॐ द्रविण स्पर्श साधितायै नमः

१६१ ॐ द्रविणस्पर्शन मतायै नमः
१६२ ॐ द्रविण स्पर्श पुत्रिकायै नमः
१६३ ॐ द्रविण स्पर्श रक्षिण्यै ०
१६४ ॐ द्रविणा कर्षण कर्ण्यै नमः ०
१६५ ॐ द्रविणस्तोमदायिन्यै नमः
१६६ ॐ द्रविणौघ विसर्जिन्यै नमः ०
१६७ ॐ द्रविणाचल दानाढ्यायै नमः
१६८ ॐ द्रविणाचल वासिन्यै
१६९ ॐ दीन मात्रे नमः
१७० ॐ दीन बन्धवे नमः
१७१ ॐ दीन विघ्न नासिन्यै नमः
१७२ ॐ दीन सेव्यायै नमः
१७३ ॐ दीन सिद्धायै नमः
१७४ ॐ दीन साध्यायै नमः
१७५ ॐ दीन गेह विलासिन्यै नमः
१७६ ॐ दीन गेह कृतानन्दायै नमः
१७७ ॐ दिगम्बर्यै नमः
१७८ ॐ दीन भाव प्रेम रतायै नमः
१७९ ॐ दीनभाव विनोदिन्यै नमः ०
१८० ॐ दीनमानव चेतस्थायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१८१	ॐ दीन मानव हर्षदायै नमः	२००	ॐ दत्तात्रेय समुद्गीतायै नमः
१८२	ॐ दीन दैन्य विघातेच्छायै नमः	२०१	ॐ दत्तात्रेय कुटुम्बिन्यै नमः
१८३	ॐ दीन द्रविणदायिन्यै नमः	२०२	ॐ दत्तात्रेय प्राण तुल्यायै नमः
१८४	ॐ दीन साधन संतुष्टायै ॰	२०३	ॐ दत्तात्र्येय शरीरिण्यै नमः
१८५	ॐ दीन दर्शन दायिन्यै नमः	२०४	ॐ दत्तात्रेय कृतानन्दायै नमः
१८६	ॐ दीन पुत्रादि दात्र्यै नमः	२०५	ॐ दत्तात्रेयांश संभवायै नमः
१८७	ॐ दीन सम्पद् विधायिन्यै नमः	२०६	ॐ दत्तात्रेय विभूतिरूपायै नमः
१८८	ॐ दत्तात्रेय ध्यान रतायै नमः	२०७	ॐ दत्तात्रेयानुसारिण्यै नमः
१८९	ॐ दत्तात्रेय प्रपूजितायै ॰	२०८	ॐ दत्तात्रेय गीति रतायै नमः
१९०	ॐ दत्तात्रेयर्षि संसिद्धायै नमः	२०९	ॐ दत्तात्रेय धन प्रदायै नमः
१९१	ॐ दत्तात्रेय विभावितायै नमः	२१०	ॐ दत्तात्रेय दुःखहरायै नमः
१९२	ॐ दत्तात्रेय कृतार्हायै नमः	२११	ॐ दत्तात्रेय वरप्रदायै नमः
१९३	ॐ दत्तात्रेय प्रसाधितायै नमः	२१२	ॐ दत्तात्रेय ज्ञान दात्र्यै नमः
१९४	ॐ दत्तात्रेय हर्ष दात्र्यै नमः	२१३	ॐ दत्तात्रेय भयापहायै नमः
१९५	ॐ दत्तात्रेय सुखप्रदायै नमः	२१४	ॐ देव कन्यायै नमः
१९६	ॐ दत्तात्रेय स्तुतायै नमः	२१५	ॐ देव मान्यायै नमः
१९७	ॐ दत्तात्रेय सदानुतायै नमः	२१६	ॐ देव दुःख विनाशिन्यै नमः
१९८	ॐ दत्तात्रेय प्रेम रतायै नमः	२१७	ॐ देव सिद्धायै नमः
१९९	ॐ दत्तात्रेयानुभावितायै नमः	२१८	ॐ देव पूज्यायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२१९ ॐ देवेज्यायै नमः
२२० ॐ देव वान्दितायै ०
२२१ ॐ देव मान्यायै ०
२२२ ॐ देव धान्यायै ०
२२३ ॐ देव विघ्नविनाशिन्यै०
२२४ ॐ देव रम्यायै नमः
२२५ ॐ देव रतायै नमः
२२६ ॐ देव कौतुकतत्परायै०
२२७ ॐ देव क्रीडायै नमः ०
२२८ ॐ देववैरि विनासिन्यै ०
२२९ ॐ देव कामायै नमः ०
२३० ॐ देव रामायै नमः ०
२३१ ॐ देव द्विषविनासिन्यै०
२३२ ॐ देव देवप्रियायै नमः०
२३३ ॐ दिव्यै नमः
२३४ ॐ देव दानववन्दितायै०
२३५ ॐ देव देवरतानन्दायै ०
२३६ ॐ देव देव वरोत्सुकायै ०
२३७ ॐ देव क्रीडायै नमः

२३८ ॐ देव देव प्रेमरतायै नमः
२३९ ॐ देव देव प्रियंवदायै नमः
२४० ॐ देव देव प्राण तुल्यायै नमः
२४१ ॐ देव देव नितम्बिन्यै नमः
२४२ ॐ देव देव हृद मनसायै नमः
२४३ ॐ देव देव सुखावहायै नमः
२४४ ॐ देव देव क्रोडरतायै नमः
२४५ ॐ देव देव सुखप्रदायै नमः
२४६ ॐ देव देव महानन्दायै ०
२४७ ॐ देव देव प्रचुम्बितायै ०
२४८ ॐ देव देवोपभुक्तायै नमः
२४९ ॐ देव देवानुसेवितायै नमः
२५० ॐ देव देवगत प्राणायै नमः
२५१ ॐ देव देव गतात्मिकायै नमः
२५२ ॐ देव देवहर्षदात्र्यै नमः
२५३ ॐ देव देव सुख प्रदायै नमः
२५४ ॐ देव देव महानन्दायै नमः
२५५ ॐ देव देव विलासिन्यै नमः
२५६ ॐ देव देव धर्म पत्न्यै नमः
२५७ ॐ देव देव मनो गतायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ देवदेव वद्धे नमः
२५९ ॐ देव देवार्चन प्रियायै नमः
२६० ॐ देव देवांक निलयायै
२६१ ॐ देव देवांग शायिन्यै नमः
२६२ ॐ देव देवांग वासिन्यै नमः
२६३ ॐ देव देवांग भूषायै नमः
२६४ ॐ देव देवांग भूषणायै नमः
२६५ ॐ देव देवप्रियकर्यै नमः
२६६ ॐ देव देवांग सुखिन्यै नमः
२६७ ॐ देव देवाप्रियान्त कृतयै नमः
२६८ ॐ देव देव प्रिय प्राणायै नमः
२६९ ॐ देव देव प्रियात्मिकायै नमः
२७० ॐ देवदेवार्चक प्राणायै नमः
२७१ ॐ देव देवार्चक प्रियायै नमः
२७२ ॐ देव देवार्चकोत्साहायै नमः
२७३ ॐ देव देवमित्रायै नमः
२७४ ॐ देव देवार्चक विघ्नायै नमः
२७५ ॐ देव देवप्रस्वे नमः
२७६ ॐ देव देवस्य जनन्यै नमः
२७७ ॐ देव विधायिन्यै नमः

२७८ ॐ देव देवस्य रमण्यै नमः
२७९ ॐ देव देव हृदयाश्रयायै नमः
२८० ॐ देव देवेष्ट देव्यै नमः
२८१ ॐ देव तापस पातिन्यै नमः
२८२ ॐ देवता भाव संतुष्टायै नमः
२८३ ॐ देवता भाव तोषितायै नमः
२८४ ॐ देवता भाव वरदायै नमः
२८५ ॐ देवता भाव सिद्धिदायै नमः
२८६ ॐ देवता भाव संभवायै नमः
२८७ ॐ देवता भाव सुखिन्यै नमः
२८८ ॐ देवता भाव वन्दितायै नमः
२८९ ॐ देवता भाव संसिद्धायै नमः
२९० ॐ देवता भाव सुप्रीतायै नमः
२९१ ॐ देवता भाव हर्षदायै नमः
२९२ ॐ देवता विघ्न हन्त्र्यै नमः
२९३ ॐ देवता द्विष्ट नाशिन्यै नमः
२९४ ॐ देवता पूजित पदायै नमः
२९५ ॐ देवता प्रेम तोषितायै नमः
२९६ ॐ देवतागार निलयायै नमः
२९७ ॐ देवता सौख्य दायिन्यै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२९८ ॐ देवता निज भावायै नमः
२९९ ॐ देवता हृत मानसायै नमः
३०० ॐ देवता कृतपादार्चायै नमः
३०१ ॐ देवता हृत भक्तिकायै नमः
३०२ ॐ देवता गर्व मध्यस्थायै नमः
३०३ ॐ देवतायै नमः
३०४ ॐ देवाम्बिकायै नमः
३०५ ॐ दनुजे नमः
३०६ ॐ दुं दुर्गायै नमोनाम्न्यै नमः
३०७ ॐ दुं फट् मन्त्रस्वरुपिण्यै ०
३०८ ॐ दुं नमो मंत्र स्वरूपायै नमः
३०९ ॐ दुं नमो मूर्तिकात्मिकायै नमः
३१० ॐ दूर दर्शी प्रियायै नमः
३११ ॐ दुष्टायै नमः
३१२ ॐ दुष्टभूत निषेवितायै नमः
३१३ ॐ दूर दर्शी प्रेमरतायै नमः
३१४ ॐ दूरदर्शी प्रियंबदायै नमः
३१५ ॐ दूरदर्शी सिद्धि दात्र्यै नमः
३१६ ॐ दूरदर्शी प्रतोषितायै नमः
३१७ ॐ दूर दर्शी कंठ संस्थायै नमः
३१८ ॐ दूर दर्शी प्रहर्षितायै नमः
३१९ ॐ दूर दर्शी गृहीताचार्यायै ०
३२० ॐ दूर दर्शी प्रतर्पितायै नमः
३२१ ॐ दूर दर्शी प्राण तुल्यै नमः
३२२ ॐ दूर दर्शी सुखप्रदायै नमः
३२३ ॐ दूर दर्शी भ्रांतिहरायै नमः
३२४ ॐ दूर दर्शी हृदास्पदायै नमः
३२५ ॐ दूर दर्शी परिविद्भावायै नमः
३२६ ॐ दूर दर्शी परिणामायै नमः
३२७ ॐ दीर्घ दर्शी प्रमोदिन्यै नमः
३२८ ॐ दीर्घ दर्शी प्राणतुल्यै नमः
३२९ ॐ दीर्घ दर्शी वरप्रदायै नमः
३३० ॐ दीर्घ दर्शी हर्ष दात्र्यै नमः
३३१ ॐ दीर्घ दर्शी प्रहर्षितायै नमः
३३२ ॐ दीर्घ दर्शी महानन्दायै नमः
३३३ ॐ दीर्घ दर्शी गृहालयायै नमः
३३४ ॐ दीर्घ दर्शी ग्रहीतार्चायै नमः
३३५ ॐ दीर्घ दर्शी हृतार्हणायै नमः
३३६ ॐ दीर्घ जीवन दात्र्यै नमः
३३७ ॐ दयायै नमः
३३८ ॐ दानवत्यै नमः
३३९ ॐ दात्र्यै नमः
३४० ॐ दयालवे नमः
३४१ ॐ दीन वत्सलायै नमः
३४२ ॐ दयार्द्रायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३४३ ॐ दयाशीलायै नमः
३४४ ॐ दयात्मिकायै नमः
३४५ ॐ दयाढ्यायै नमः
३४६ ॐ दयाम्बुधयै नमः
३४७ ॐ भण्डारिन्यै नमः
३४७ ॐ दयागारिन्यै नमः
३४७ ॐ दकाराक्षरायै नमः
३४८ ॐ दयाभावात्मिकायै नमः
३४९ ॐ दयाहृद्वासिन्यै नमः
३५० ॐ दयासागरायै नमः
३५१ ॐ दयावतारायै नमः
३५२ ॐ दयारूपिण्यै नमः
३५३ ॐ दयाकर्त्र्यै नमः
३५४ ॐ दयासारायै नमः
३५५ ॐ दयासागरपारगायै नमः
३५६ ॐ दयासिन्धवे नमः
३५७ ॐ दयाभारायै नमः
३५८ ॐ दयावत्करुणाकर्त्र्यै नमः
३५९ ॐ दयावद्वत्सलायै नमः
३६० ॐ देव्यै नमः
३६१ ॐ दानरतायै नमः

३६२ ॐ दयानुरागिन्यै नमः
३६३ ॐ दयावद्भक्तिसुखिन्यै नमः
३६४ ॐ दयावत्परितोषितायै नमः
३६५ ॐ दयावत्स्नेहनिरतायै नमः
३६६ ॐ दयावत्प्रतिपादिकायै नमः
३६७ ॐ दयावत्त्राणकर्त्र्यै नमः
३६८ ॐ दयावन्मुक्तिदायै नमः
३६९ ॐ दयावद्भावसंतुष्टायै नमः
३७० ॐ दयाभावप्रदर्शिन्यै नमः
३७१ ॐ दयावत्तारणपरायै नमः
३७२ ॐ दयावत्सिद्धिदायिन्यै नमः
३७३ ॐ दयावत्पुत्रवद्भावायै नमः
३७४ ॐ दयावत्पुत्ररूपिण्यै नमः
३७५ ॐ दयावद्देहनिलयायै नमः
३७६ ॐ दयाबान्धवे नमः
३७७ ॐ दयाश्रयायै नमः
३७८ ॐ दयालुवात्सल्यकरण्यै नमः
३७९ ॐ दयालुसिद्धिदायिन्यै नमः
३८० ॐ दयालु शरणासक्तायै नमः
३८१ ॐ दयालुदेहमन्दिरायै नमः
३८२ ॐ दयालुभक्तभावस्थायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३८३ ॐ दयालू प्राणरूपिण्यै ॰
३८४ ॐ दयालू सुखदायै नमः
३८५ ॐ दम्भ विनाशिन्यै नमः
३८६ ॐ दम्भायै नमः
३८७ ॐ दयालु प्रेम वर्षिण्यै नमः
३८८ ॐ दयालू वशगायै नमः
३८९ ॐ दयालू हृदयायै नमः
३९० ॐ दीर्घायै नमः
३९१ ॐ दीर्घाङ्ग्यै नमः
३९२ ॐ दीर्घ लोचनायै नमः
३९३ ॐ दीर्घ दृष्ट्यै नमः
३९४ ॐ दीर्घ बाहुलतात्मिकायै नमः
३९५ ॐ दीर्घ केशायै नमः
३९६ ॐ दीर्घ मुख्यै नमः
३९७ ॐ दीर्घ घोषडायै नमः
३९८ ॐ दीर्घ बुद्धियै नमः
३९९ ॐ दारुणायै नमः
४०० ॐ दारुणासुर हन्त्रै नमः
४०१ ॐ दारुणासुर विदारिण्यै नमः
४०२ ॐ दारुणाहव कर्त्र्यै नमः
४०३ ॐ दारुणाहव हर्षितायै नमः
४०४ ॐ दारुणाहव होमाढ्यायै॰
४०५ ॐ दारुणाचल [illegible] नमः
४०६ ॐ दारुणाचार निरतायै नमः
४०७ ॐ दारुणोत्सव हर्षितायै नमः
४०८ ॐ दारुणोद्यतरूपायै नमः
४०९ ॐ दशभुजायै नमः
४१० ॐ दारुणारि निवारिण्यै नमः
४११ ॐ दारुणेक्षण संयुक्तायै नमः
४१२ ॐ चतुष्क विराजितायै नमः
४१३ ॐ दश केशायै नमः
४१४ ॐ दशबाहु विराजितायै नमः
४१५ ॐ दशास्त्र धारिण्यै नमः
४१६ ॐ देव्यै नमः
४१७ ॐ दशदिक्ख्यात विक्रायै नमः
४१८ ॐ दशरथार्चित पदायै नमः
४१९ ॐ दाशरथि प्रियायै नमः
४२० ॐ दाशरथि प्रेम तुष्टायै नमः
४२१ ॐ दाशरथि रतिप्रियायै नमः
४२२ ॐ दाशरथि प्रिय कर्त्र्यै नमः
४२३ ॐ दाशरथि प्रियंवदायै नमः
४२४ ॐ दाशरथि इष्टसंदात्र्यै नमः
४२५ ॐ दाशरथीष्ट देवतायै नमः
४२६ ॐ दाशरथ द्वेषनाशायै नमः
४२७ ॐ दशरथानुकूल्यदायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४२८	दाशरथि प्रियतमायै नमः	४४९	ॐ दशग्रीव वधोत्सुकायै नमः
		४५०	ॐ दशग्रीव प्रीत दात्र्यै नमः
४२९	दाशरथि प्रपूजितायै नमः	४५१	ॐ दशग्रीवविनाशिन्यै नमः
४३०	दशाननारि देवतायै नमः	४५२	ॐ दशग्रीवाहव कर्यै नमः
४३१	दशाननारि संपूज्यायै नमः	४५३	ॐ दशग्रीवानपायिन्यै नमः
४३२	ॐ दशाननारि प्रेमदायै नमः	४५४	ॐ दशग्रीव प्रियावन्द्यायै नमः
४३३	ॐ दशाननारि जन्ममुक्तायै०	४५५	ॐ दशग्रीव हृतायै नमः
४३४	ॐ दशाननारि रतिदायै नमः	४५६	ॐ दशग्रीवाहित कायै नमः
४३४	ॐ दशाननारि सेवितायै नमः	४५७	ॐ दशग्रीवेश्वर प्रियायै नमः
४३५	ॐ दशाननारि सुखदायै नमः	४५८	ॐ दशग्रीवेश्वर प्राणायै नमः
४३६	ॐ दशाननारि वैरिहित्यै नमः	४५९	ॐ दशग्रीवेश्वर रतायै नमः
४३७	ॐ दशानन इष्टदेव्यै नमः	४६०	ॐ दशवर्षीय कन्यकायै नमः
४३८	ॐ दशग्रीवारि वन्दितायै नमः	४६१	ॐ दशवर्षीय बालायै नमः
४३९	ॐ दशग्रीवारि जनन्यै नमः	४६२	ॐ दशवर्षीय वासिन्यै नमः
४४०	ॐ दशग्रीवारि भाविन्यै नमः	४६३	ॐ दशपाप हरायै नमः
४४१	ॐ दशग्रीवारि सहितायै नमः	४६४	ॐ दशप्राणस्वरूपिण्यै नमः
४४२	दशग्रीवारि समाजितायै नमः	४६५	ॐ दम्यायै नमः
४४३	ॐ दशग्रीवारि रमण्यै नमः	४६६	ॐ दशहस्त विभूषितायै नमः
४४४	ॐ दशग्रीवारि सुखदायै नमः	४६७	ॐ दशशस्त्र लसद्दोष्कायै नमः
४४५	ॐ दशग्रीव वध्वै नमः	४६८	ॐ दशदिक्पाल वन्दितायै नमः
४४६	ॐ दशग्रीव नाशकर्त्र्यै नमः	४६९	ॐ दशावतार रूपायै नमः
४४७	ॐ दशग्रीव वरप्रदायै नमः	४७०	ॐ दशावतार रूपिण्यै नमः
४४८	ॐ दशग्रीव पुरस्थायै नमः	४७१	ॐ दशविद्याभिन्न देव्यै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४७२ ॐ दश विद्या स्वरूपायै नमः
४७३ ॐ दशो विद्यामई नमः
४७४ ॐ दृक् स्वरूपायै नमः
४७५ ॐ दृक प्रदात्र्यै नमः
४७६ ॐ दृग् रूपायै नमः
४७७ ॐ दृग प्रकाशिन्यै नमः
४७८ ॐ दिगन्तरायै नमः
४७९ ॐ दिगन्तस्थायै नमः
४८० ॐ दिगम्बर विलासिन्यै नमः
४८१ ॐ दिगम्बर समाजस्थायै नमः
४८२ ॐ दिगम्बर प्रपूजितायै नमः
४८३ ॐ दिगम्बर सहचर्यै नमः
४८४ ॐ दिगम्बर कृतस्पदायै नमः
४८५ ॐ दिगम्बर हृदचित्तायै नमः
४८६ ॐ दिगम्बर कथायै नमः
४८७ ॐ दिगम्बर कथाप्रियायै नमः
४८८ ॐ दिगम्बर गुरा रतायै नमः
४८९ ॐ दिगम्बर स्वरूपिण्यै नमः
४९० ॐ दिगम्बर शिरोधार्यायै ०
४९१ ॐ दिगम्बर हृताश्रयायै नमः
४९२ ॐ दिगम्बर प्रेमरतायै नमः
४९३ ॐ दिगम्बर रतातुरायै नमः
४९४ ॐ दिगम्बरी स्वरूपायै नमः

४९५ ॐ दिगम्बरी गणार्चितायै नमः
४९६ ॐ दिगम्बरी गण प्राणायै नमः
४९७ ॐ दिगम्बरी गण प्रियायै नमः
४९८ ॐ दिगम्बरी गणा[illegible]यै नमः
४९९ ॐ दिगम्बर गणेश्वर्यै नमः
५०० ॐ दिगम्बर गण स्पर्श मदिरापान विह्वलायै नमः
५०१ ॐ दिगम्बरी कोटिवृतायै नमः
५०२ ॐ दिगम्बरी गण वृतायै नमः
५०३ ॐ दुरन्तायै नमः
५०४ ॐ दुष्कृतिहरायै नमः
५०५ ॐ दुर्ध्येयायै नमः
५०६ ॐ दुरतिक्रमायै नमः
५०७ ॐ दुरन्त दनुजान्त कृतयै नमः
५०८ ॐ दुष्ट दानव द्वेष्ट्र्यै नमः
५०९ ॐ दुरन्त पाप हन्त्र्यै नमः
५१० ॐ दुःख हारिण्यै नमः
५११ ॐ दस्र निस्तार कारिण्यै ०
५१२ ॐ दस्र मानस संस्थानायै ०
५१३ ॐ दस्र ज्ञान विवर्धिन्यै ०
५१४ ॐ दस्र सम्भोग जनन्यै नमः
५१५ ॐ दस्र सम्भोग दायिन्यै नमः
५१६ ॐ दस्र सम्भोग भवनायै नमः
५१७ ॐ दस्र विद्या विधायिन्यै नमः
५१८ ॐ दस्र जनन्यै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५१९ ॐ दस्त्रोद्गारायै नमः
५२० ॐ दस्त्र सन्दर्यै नमः
५२१ ॐ दस्त्रभाकृ विद्याशानायै ०
५२२ ॐ दस्त्रद्वेष विनाशिन्यै ०
५२३ ॐ दस्त्रापकार दमन्यै नमः
५२४ ॐ दस्त्रासिद्धि विधायिन्यै ०
५२५ ॐ दस्त्र ताराराधितायै नमः
५२६ ॐ दस्त्र मातृ प्रपूजितायै नमः
५२७ ॐ दस्त्र दैन्य हरायै नमः
५२८ ॐ दस्त्रतात निषेवितायै नमः
५२९ ॐ दस्त्रपितृ शातज्योतिषायै ०
५३० ॐ दस्त्र कौशलदायिन्यै नमः
५३१ ॐ दशशीर्षारि सहितायै नमः
५३२ ॐ दशशीर्षारि कामिन्यै नमः
५३३ ॐ दशशीर्ष पुर्यै नमः
५३४ ॐ दश शीर्ष सभाजितायै नमः
५३५ ॐ दशशीर्षारि सुप्रीतायै नमः
५३६ ॐ दशशीर्षबधू प्रियायै नमः
५३७ ॐ दश शीर्ष शिरशछेत्र्यै नमः
५३८ ॐ दश शीर्ष नितम्बिन्यै नमः
५३९ ॐ दश शीर्ष हरात्मिकायै नमः
५४० ॐ दश शीर्ष हर प्राणायै नमः
५४१ ॐ दशशीर्ष हराराध्यायै नमः
५४२ ॐ दशशीर्षारि वन्दितायै ०
५४३ ॐ दशशीर्षारि सुखदायै नमः
५४४ ॐ दशशीर्ष कपालिन्यै नमः
५४५ ॐ दशशीर्ष ज्ञानदात्र्यै नमः
५४६ ॐ दशशीर्षारि दाहिन्यै नमः
५४७ ॐ दशशीर्ष राष्ट्र देव्यै नमः
५४८ ॐ दशशीर्षारि सारिण्यै नमः
५४९ ॐ दशशीर्षभ्रातृ तुष्टायै नमः
५५० ॐ दशशीर्ष बधु प्राणायै नमः
५५१ ॐ दशशीर्ष वधु रतायै नमः
५५२ ॐ दैत्य गुरुतासाहव्यै नमः
५५३ ॐ दैत्य गुरु प्रपूजितायै नमः
५५४ ॐ दैत्यगुरु पदेष्ट्र्यै नमः
५५५ ॐ दैत्यगुरु निषेवितायै नमः
५५६ ॐ दैत्य गुरुगत प्राणायै नमः
५५७ ॐ दैत्यगुरुतापनाशिन्यै ०
५५८ ॐ दुरन्त दुखशमन्यै नमः
५५९ ॐ दुरन्त दमनीतम्यै नमः
५६० ॐ दुरन्त शोक
५६१ ॐ दुरन्त रोगनाशिन्यै नमः
५६२ ॐ दुरन्त वैरि दमन्यै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५६३	ॐ दुरन्त कलुष घ्न्यै०	५८५	ॐ दुर्वासो मुनिवन्द्यायै नमः
५६४	ॐ दुष्कृतिस्तोमनाशिन्यै०	५८६	ॐ दुर्वासो मुनि देवतायै नमः
५६५	ॐ दुरन्त दैत्य नाशिन्यै०	५८७	ॐ दुर्वासो मुनि सिद्धदायै नमः
५६६	ॐ दुराशयायै नमः	५८८	ॐ दुर्वासा मुनिभावस्थायै नमः
५६७	ॐ दुराधारायै नमः	५८९	ॐ दुर्वासा मुनि सेवितायै नमः
५६८	ॐ दुर्जयायै नमः	५९०	ॐ दुर्वासो मुनि चित्तस्थायै नमः
५६९	ॐ दुष्ट कामिन्यै नमः	५९१	ॐ दुर्वासा मुनि मण्डितायै नमः
५७०	ॐ दर्शनीयायै नमः	५९२	ॐ दुर्वासा मुनि संचारायै नमः
५७१	ॐ दृश्यायै नमः	५९३	ॐ दुर्वासा मुनि तपस्यायै नमः
५७२	ॐ अदृश्यायै नमः	५९४	ॐ दुर्वासो हृदङ्गमायै नमः
५७३	ॐ दृष्टिगोचरायै नमः	५९५	ॐ दुर्वासो हृदयाराध्यायै नमः
५७४	ॐ दूतीयागप्रियायै नमः	५९६	ॐ दुर्वासोहृत्सरोजगायै नमः
५७५	ॐ दूत्यै नमः	५९७	ॐ दुर्वासस्तापसाराध्यायै नमः
५७६	ॐ दूतीयाग करप्रियायै०	५९८	ॐ दुर्वासस्तापसाश्रयायै नमः
५७७	ॐ दूतीयागकरानन्दायै०	५९९	ॐ दुर्वासस्तापस रतायै नमः
५७८	ॐ दूती याग सुखप्रदायै०	६००	ॐ दुर्वासस्तापसेश्वर्यै नमः
५७९	ॐ दूतीयाग करायातायै०	६०१	ॐ दुर्वासोमुनि कन्यायै नमः
५८०	ॐ दूतीयाग प्रमोदिन्यै नमः	६०२	ॐ दुर्वासोऽद्भुत सिद्धिदायै नमः
५८१	ॐ दुर्वासः पूजितायै नमः	६०३	ॐ दरराढ्यै नमः
५८२	ॐ दुर्वासोमुनिभावितायै	६०४	ॐ दरहरायै नमः
५८३	ॐ दुर्वासोऽर्चितपादायै न	६०५	ॐ दरयुक्तायै नमः
५८४	ॐ दुर्वासो मौन भाविता	६०६	ॐ दरापहायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६०७ ॐ दरहंत्रै नमः
६०८ ॐ दरहन्त्र्यै नमः
६०९ ॐ दरयुक्तायै नमः
६१० ॐ दराश्रयायै नमः
६११ ॐ दरस्मेरायै नमः
६१२ ॐ दारापाङ्ग्यै नमः
६१३ ॐ दयाधात्र्यै नमः
६१४ ॐ दस्त्र पूज्यायै नमः
६१५ ॐ दस्त्र मात्रे नमः
६१६ ॐ दस्त्रदिव्यै नमः
६१७ ॐ दर्शोन्मदायै नमः
६१८ ॐ दस्त्र सिद्धायै नमः
६१९ ॐ दस्त्रसंस्थायै नमः
६२० ॐ दस्त्रतापविमोचिन्यै नमः
६२१ ॐ क्षोभहरा नित्यायै नमः
६२२ ॐ दस्त्र लोकगतात्मिकायै ०
६२३ ॐ दैत्य गुर्वङ्गनावन्द्यायै नम
६२४ ॐ दैत्य गुर्वङ्गना प्रियायै नमः
६२५ ॐ दैत्यगुर्वङ्गना सिद्धायै नमः
६२६ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनोत्सुकायै नमः
६२७ ॐ दैत्य गुरु प्रीतमायै नमः

६२८ ॐ देव गुरु निषेवितायै ०
६२९ ॐ देव गुरु प्रसू रुपायै ०
६३० ॐ देव गुरु कृतार्हणायै ०
६३१ ॐ देव गुरु प्रेम युतायै ०
६३२ ॐ देवगुरु प्रेमयुतायै नमः
६३३ ॐ देव गुरु मानितायै ०
६३४ ॐ देव गुरु प्रभावज्ञायै ०
६३५ ॐ देव गुरु सुखप्रदायै ०
६३६ ॐ देव गुरु ज्ञान दात्र्यै ०
६३७ ॐ देव गुरु प्रमोदिन्यै ०
६३८ ॐ दैत्य स्त्रीगणसंपूज्यायै ०
६३९ ॐ दैत्यस्त्रीगण रुपायै ०
६४० ॐ दैत्य स्त्रीगण वन्दितायै ०
६४१ ॐ दैत्यस्त्रीचित्तहरायै ०
६४२ ॐ देव स्त्रीगण मानिन्यै ०
ॐ देव स्त्रीगणसुखदायै ०
ॐ देवस्त्रीगण चित्तस्थायै ०
ॐ देवस्त्रीगण भूषितायै ०
ॐ देव स्त्रीगण संसिद्धायै ०
ॐ देवस्त्रीगण तोषितायै ०
ॐ देवस्त्रीगण सेवितायै ०
ॐ देव स्त्रीगण हस्तस्थचारु
गन्ध लेपितायै

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६५० ॐ देवांगना धृतादर्श दृष्टयर्थ मुख चन्द्रमायै नमः
६५१ ॐ देवांगनोत्सृष्ट नागवल्ली दल कृतोत्सुकायै ०
६५२ ॐ देवस्त्रीगण हस्तस्थ दीप मालाविलोकनायै ०
६५३ ॐ देव स्त्रीगण हस्तस्थ धूप धूप घ्राण विनोदिन्यै नमः
६५४ ॐ देव स्त्री गण गीतायै नमः
६५५ ॐ देवस्त्री गीतोत्सुकायै ०
६५६ ॐ देवस्त्री दत्त भोजनायै ०
६५७ ॐ देवस्त्री नृत्य सुखिन्यै ०
६५८ ॐ देवस्त्री नृत्य दर्शिन्यै ०
६५९ ॐ देवस्त्री योजित लसद्रत्न पाद पद्माम्बुजायै नमः
६६० ॐ देव स्त्रीगण विस्तीर्ण चारु तल्प निषेदुष्यै नमः
६६१ ॐ देव नारी करगत वास कासव प्रायिन्यै नमः
६६२ ॐ देवनारी कंकतिका कृत केश निभार्जनायै नमः
६६३ ॐ देव नारी सेव्य गात्रायै नमः
६६४ ॐ देव नारी कृतोत्सुकायै ०
६६५ ॐ देवनारी विरचित पुष्प माला विराजितायै नमः
६६६ ॐ देव नारी विचित्रांगायै ०
६६७ ॐ देव नारी चारु कराकलिताः ... दिव्येकिमायै
६६८ ॐ देव नारिकर व्यग्र तालवृन्त मरुत्सुखायै नमः
६६९ ॐ देव नारी वेणु वीणानाद सोत कण्ठ मानसायै नमः
६७० ॐ देव कोटि स्तुति नुतायै नमः
६७१ ॐ देव कोटि कृताहणायै नमः
६७२ ॐ देव कोटि गीत गुणायै नमः
६७३ ॐ देव कोटि कृतस्तुत्यै नमः
६७४ ॐ दन्त दृष्ट योद्वेग फलायै नमः
६७५ ॐ देव कोलाहला कुलायै नमः
६७६ ॐ द्वेषराग परित्यक्तायै नमः
६७७ ॐ द्वेषराग विवर्जितायै नमः
६७८ ॐ दाम पूज्यायै नमः
६७९ ॐ दाम भूषायै नमः
६८० ॐ दामोदर विलासिन्यै नमः
६८१ ॐ दामोदर प्रेमरतायै नमः
६८२ ॐ दामोदर भगिन्यै नमः
६८३ ॐ दामोदर प्रस्वे नमः
६८४ ॐ दामोदर पत्न्यै नमः
६८५ ॐ दामोदर पतिव्रतायै नमः
६८६ ॐ दामोदराभिन्न देहायै नमः
६८७ ॐ दामोदर रतिप्रियायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६८८ ॐ दामोदर भिन्न तनवे नमः
६८९ ॐ दामोदर कृतास्पदायै ०
६९० ॐ दामोदर कृतप्राणायै नमः
६९१ ॐ दामोदर गतात्मिकायै ०
६९२ ॐ दामोदर कौतुकाढ्यायै ०
६९३ ॐ दामोदर कलाकलायै ०
६९४ ॐ दामोदरालिंगितायै ०
६९५ ॐ दामोदर कुतूहलायै ०
६९६ ॐ दामोदर कृताह्लादायै नमः
६९७ ॐ दामोदर सुचुम्बितायै ०
६९८ ॐ दामोदर सुताकृष्टायै ०
६९९ ॐ दामोदर सुखप्रदायै ०
७०० ॐ दामोदर सहाढ्यायै ०
७०१ ॐ दामोदर गुणज्ञायै नमः
७०२ ॐ दामोदर वरप्रदायै नमः
७०३ ॐ दामोदरानुकूलायै नमः
७०४ ॐ दामोदर नितम्बिन्यै नमः
७०५ ॐ दामोदर भ्रातृकायै नमः
७०६ ॐ दामोदर परायणायै ०
७०७ ॐ दामोदर धरायै नमः
७०८ ॐ दामोदर निमन्त्रितायै ०
७०९ ॐ दामोदर वैरिविनाशिन्यै ०

७१० ॐ दामोदर पराभूतायै नमः
७११ ॐ दामोदर पराजितायै नमः
७१२ ॐ दामोदर परोपजायायै नमः
७१३ ॐ दामोदर जलक्रीडाकुशलायै नमः
७१४ ॐ दामोदर जलक्रीड़ा त्यक्त स्वजन सौहृदायै नमः
७१५ ॐ दामोदर लसद्रासकेलिकौतुकिन्यै ०
७१६ ॐ दामोदर दर्शन प्रियायै नमः
७१७ ॐ दामोदर सहायिन्यै नमः
७१८ ॐ दामोदर समाक्रान्तायै नमः
७१९ ॐ दामोदर हताशुभायै नमः
७२० ॐ दामोदरोत्सवरतायै नमः
७२१ ॐ दामोदरोत्सवावहायै नमः
७२२ ॐ दामोदरस्तन्य दात्र्यै नमः
७२३ ॐ दामोदर गवेषितायै नमः
७२४ ॐ दमयन्ती सिद्ध दात्र्यै नमः
७२५ ॐ दमयन्ती स्वरूपिण्यै नमः
७२६ ॐ दमयन्ती कृतार्चायै नमः
७२७ ॐ दमयन्ती हितायै नमः
७२८ ॐ दमयन्ती रक्षितायै नमः
७२९ ॐ दमयन्ती धैर्य दात्र्यै नमः
७३० ॐ दमयन्ती संकल्पायै नमः
७३१ ॐ दमयन्ती पतिव्रत रक्षितायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७३२ दमनर्षि प्राण तुल्यै
७३३ ॐ दमनर्षि विभाविताये
७३४ ॐ दमनर्षि स्वरूपिण्यै
७३५ ॐ दमनर्षिस्वरूपाये
७३६ ॐ दम्म पूरित विग्रहायै
७३७ ॐ दम्भ हन्त्र्यै नमः
७३८ ॐ दम्भ दात्र्यै नमः
७३९ ॐ दम्भलोकविमोहिनी०
७४० ॐ दम्भ शीलाये नमः
७४१ ॐ दम्भ हराये नमः
७४२ ॐ दम्भवत्परि मर्दिन्यै०
७४३ ॐ दम्भरूपाये नमः
७४४ ॐ दम्भ कर्त्र्यै नमः
७४५ ॐ दम्भसन्तानदारिण्यै०
७४६ ॐ दत्तमोक्षाये नमः
७४७ ॐ दत्तधनाये नमः
७४८ ॐ दत्तारोग्याये नमः
७४९ ॐ दाम्भिक्याये नमः
७५० ॐ दत्तपुत्राये नमः
७५१ ॐ दत्तदाराये नमः
७५२ ॐ दत्ताहाराये नमः
७५३ ॐ दत्तभोगाये नमः

७५४ ॐ दत्त शोकाये नमः
७५५ ॐ दत्तहस्त्यादि वाहनाये नमः
७५६ ॐ दत्त मत्ये नमः
७५७ ॐ दत्त भार्याये नमः
७५८ ॐ दत्त शास्त्रावबोधिकाये०
७५९ ॐ पानाये नमः
७६० ॐ दत्तदानाये नमः
७६१ ॐ दत्त दारिद्रनाशिन्यै नमः
७६२ ॐ दत्तसौधावनी वासाये नमः
७६३ ॐ दत्तस्वर्गाये नमः
७६४ ॐ दारिकाये नमः
७६५ ॐ दासदाये नमः
७६६ ॐ दास्य तुष्टाये नमः
७६७ ॐ दास्य हराये नमः
७६८ ॐ दासदासी शतप्रदाये नमः
७६९ ॐ दास रक्षिताये नमः
७७० ॐ दासेक्षा पूरिताये नमः
७७१ ॐ दास संकट हन्त्रै नमः
७७२ ॐ दास हृदयोल्लासिन्यै नमः
७७३ ॐ दास मान प्रदाये नमः
७७४ ॐ दासे वरप्रदाये नमः
७७५ ॐ दासनुकूलिन्यै नमः
७७६ ॐ दास मनो रंजिताये नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७७७ ॐ दाररूपायै नमः
७७८ ॐ दारवासायै ०
७७९ ॐ दारवासिहृदास्पदायै नमः
७८० ॐ दारवासिजनाराध्यायै नमः
७८१ ॐ दारवासिजनप्रियायै
७८२ ॐ दारवासिविनिर्मितायै
७८३ ॐ दारवासिसमर्चितायै०
७८४ ॐ दारवास्याहृतप्राणायै०
७८५ ॐ दारवासिविघ्नहरायै०
७८६ ॐ दारवास्यरिनाशिन्यै ०
७८७ ॐ दारवासिविमुक्तायै
७८८ ॐ दारवासिक्षमायै
७८९ ॐ दाराग्निरूपिण्यै
७९० ॐ दारायै नमः
७९१ ॐ दारकार्यरिनाशिन्यै
७९२ ॐ दम्पत्यै नमः
७९३ ॐ दम्पतिप्राणरूपिकायै
७९४ ॐ दम्पतीष्टायै नमः
७९५ ॐ दम्पतीस्नेहनिरतायै
७९६ ॐ दाम्पत्यसाधनप्रियायै
७९७ ॐ दाम्पत्यसुखसेनायै
७९८ ॐ दाम्पत्यसुखदायिन्यै

७९९ ॐ दाम्पत्याचारनिरतायै नमः
८०० ॐ दाम्पत्यामोदमोदितायै नमः
८०१ ॐ दाम्पत्यामोदसुखिन्यै नमः
८०२ ॐ दाम्पत्याह्लादकारिन्यै ०
८०३ ॐ दाम्पतीष्टपादपछायायै नमः
८०४ ॐ दाम्पत्यप्रेमरूपिण्यै नमः
८०५ ॐ दाम्पत्यभोगभवनायै नमः
८०६ ॐ दाडिमीफलभोजिन्यै नमः
८०७ ॐ दाडिमीफलसंतुष्टायै नमः
८०८ ॐ दाडिमीफलमानसायै नमः
८०९ ॐ दाडिमीवृक्षसंस्थानायै नमः
८१० ॐ दाडिमीवृक्षवासिन्यै ०
८११ ॐ दाडिमीवृक्षरूपायै ०
८१२ ॐ दाडिमीवनवासिन्यै ०
८१३ ॐ दाडिमीफलसाम्योरुपयोधर
८१४ समन्वितायै नमः
८१५ ॐ दक्षिणायै नमः
८१६ ॐ दक्षिणारूपायै नमः
८१७ ॐ दक्षिणारूपधारिण्यै नमः
८१८ ॐ दक्षकन्यायै नमः
८१९ ॐ दक्षपुत्र्यै नमः
८२० ॐ दक्षमात्रे नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

८२१ ॐ दक्षस्वे नमः
८२२ ॐ दक्षगोत्रायै॰
८२३ ॐ दक्षसुतायै॰
८२४ ॐ यज्ञविनाशिन्यै
८२५ ॐ दक्षप्रसूत्यै॰
८२६ ॐ दक्षज्यायै नमः
८२७ ॐ दक्षात्मजायै॰
८२८ ॐ दक्षसूनवे नमः
८२९ ॐ दक्षजायै नमः
८३० ॐ दक्षजातिकायै॰
८३१ ॐ दक्षजन्मने नमः
८३२ ॐ दक्षजनुषे नमः
८३३ ॐ दक्षदेहसमुद्भवायै नमः
८३४ ॐ दक्षिणाचार निरतायै नमः
~~८३५~~
८३५ ॐ दक्षयाज्ञध्वंशिन्यै
ॐ दक्षिणाचारतुष्टिदायै
८३६ ॐ दक्षवंशैकपावन्यै
८३७ ॐ दक्षयज्ञान्तकारिण्यै नमः
८३८ ॐ दक्षयज्ञनाशकर्त्र्यै नमः
८३९ ॐ दक्षिणाचारसंसिद्धायै

८४० ॐ [illegible] यै नमः
८४१ ॐ दक्षिणाचार सुखिन्यै नमः
८४२ ॐ दक्षिणाचार साधितायै॰
८४३ ॐ दक्षिणाचार मोक्षाप्त्यै॰
८४४ ॐ दक्षिणाचार वन्दितायै॰
८४५ ॐ दक्षिणाचार शरणायै नमः
८४६ ॐ दक्षिणाचार हर्षितायै नमः
८४७ ॐ दक्षिणाचार मोदिन्यै॰
८४८ ॐ द्वारपाल प्रियायै नमः
८४९ ॐ द्वार वासिन्यै नमः
८५० ॐ द्वार देशनिवासिन्यै नमः
८५१ ॐ द्वार वन्दन वारायै नमः
८५२ ॐ दोषमात्र विवर्जितायै नमः
८५३ ॐ दोषराशि विनाशिन्यै॰
८५४ ॐ दोषकर विभूषाढ्यायै॰
८५५ ॐ दोषाकर कपालिन्यै नमः
८५६ ॐ दोषाकरसहस्राभायै॰
८५७ ॐ दोषाकर समाननायै॰
८५८ ॐ दोषाकर कराग्रजायै नमः
८५९ ॐ दोषाकरसमज्योतिष्यै॰
८६० ॐ दोषाकर सुशीतलायै नमः
८६१ ॐ दोषसदृशापाङ्गवीक्षायै

ॐ द्वार रूपायै॰
~~ॐ [illegible]~~
ॐ द्वारकायै नमः
ॐ द्वारसंस्थायै॰
ॐ द्वार धात्र्यै नमः
ॐ द्वार पूजिकायै॰
ॐ द्वार रूपिण्यै॰
ॐ द्वार रक्षिकायै॰
ॐ द्वार देव्यै नमः
ॐ द्वार यन्त्रिण्यै
ॐ द्वारिकानायिन्यै
ॐ
ॐ दोषाकरायै॰
ॐ दोषहरायै
ॐ दोषायै॰
ॐ दोषाकरमुख्यै॰
ॐ दिव्यायै॰
ॐ दोषाकरश्रेण्यै॰
ॐ दोषहारिण्यै॰
ॐ दोषापूजितायै॰
ॐ दोषाकरवह्न्यै॰
ॐ दोषदमनायै॰
८८१ तक

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

८८२	ॐ दोषाकरेद्दृष्टेनमः	९०४	ॐ दोषा पूजक सन्तुष्टायै नमः
८८३	ॐ दोषाकर निषेवितायै नमः	९०५	ॐ दोषा पूजक मुक्तिदायै नमः
८८४	ॐ दोषाकर सुहर्षिण्यै नमः	९०६	ॐ दमप्रसून सम्पूज्यायै नमः
८८५	ॐ दोषाकर मरीचिकायै ०	९०७	ॐ दम पुष्प प्रियायै नमः
८८६	ॐ दोषाकरोल्लसभालायैनमः	९०८	ॐ दुर्योधन प्रपूज्यायै नमः
८८७	ॐ दोषाकसुहर्षिण्यै नमः	९०९	ॐ दशाशनसमर्चितायै नमः
८८८	ॐ दोषा करशिरोभूषायै नमः	९१०	ॐ दण्डपाणिप्रियायै नमः
८८९	ॐ दोषा कर बधू प्रियायै नमः	९११	ॐ दण्ड पाणि मात्रे नमः
८९०	ॐ दोषा कर बधू प्राणायै नमः	९१२	ॐ दण्ड पाणि समारायै नमः
८९१	ॐ दोषा करबधू मतायै नमः	९१३	ॐ दण्डपीपा प्रपूजितायैनमः
८९२	ॐ दोषा करबधू प्रीतायै नमः	९१४	ॐ दण्डपाणि गृहासक्तायै नमः
८९३	ॐ दोषा कर वध्वै नमः	९१५	ॐ दण्डपाणिप्रियंबदायै ०
८९४	ॐ दोषापूज्यायै नमः	९१६	ॐ दण्ड पाणि प्रितमायै ०
८९५	ॐ दोषापूजितायै नमः	९१७	ॐ दण्ड पाणि मनोहरायै ०
८९६	ॐ दोषा हारिण्यै नमः	९१८	ॐ दण्ड पाणि हृद प्राणायै ०
८९७	ॐ दोषा जाप महानन्दायै ०	९१९	ॐ दण्ड पाणि सुसिद्धदायै
८९८	ॐ दोषा जाप परायणायै नमः	९२०	ॐ दण्ड पाणि परामृष्टायै नमः
८९९	ॐ दोषा पुरश्चार रतायै नमः	९२१	ॐ दण्ड पाणि प्रहर्षितायै ०
९००	ॐ दोषा पूजक पुत्रिण्यै नमः	९२२	ॐ दण्ड पाणि विघ्नहरायै नमः
९०१	ॐ दोषा पूजकवात्सल्यायै नमः	९२३	ॐ दण्ड पाणि शिरोधृतायै नमः
९०२	ॐ दोषा पूजक वैरिघ्न्यै नमः	९२४	ॐ दण्ड पाणि प्राप्त चर्यायै ०
९०३	ॐ दोषा पूजकविघ्नहन्त्र्यै नमः	९२५	ॐ दण्डपाणि उन्मुख्यै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६२६ ॐ दण्ड पाणि प्राप्रदायै नमः
६२७ ॐ दण्ड पाणि विरोन्मुख्यै ०
६२८ ॐ दण्ड हस्तायै नमः
६२९ ॐ दण्ड स्वरूपायै नमः
६३० ॐ दण्ड कारिण्यै नमः
६३१ ॐ दण्ड दीक्षकायै नमः
६३२ ॐ दण्ड दायिन्यै नमः
६३३ ॐ दण्ड विद्यायै नमः
६३४ ॐ दण्डि संतोषदायिन्यै ०
६३५ ॐ दण्डि दण्ड दात्र्यै नमः
६३६ ॐ दस्यु पूज्यायै नमः
६३७ ॐ दस्यु रतायै नमः
६३८ ॐ दस्यु द्रविण दायिन्यै ०
६३९ ॐ दस्यु वर्ग कृतार्हायै नमः
६४० ॐ दस्यु वर्ग विनाशिन्यै नमः
६४१ ॐ दस्यु निर्नाशिन्यै नमः
६४२ ॐ दस्यु प्रिय कर्त्र्यै नमः
६४३ ॐ दस्यु नृत्य दर्शन तत्परायै ०
६४४ ॐ दुष्ट दण्ड कर्त्र्यै नमः
६४५ ॐ दुष्ट वर्ग विद्राविण्यै ०
६४६ ॐ दुष्ट वर्ग निग्रहार्हायै नमः
६४७ ॐ दुष्ट प्राण घातिन्यै ०

६४८ ॐ दुष्ट [illegible] कारिण्यै नमः
६४९ ॐ दुष्ट दण्ड विधायिन्यै नमः
६५० ॐ दाहिकायै नमः
६५१ ॐ दहनात्मिकायै नमः
६५२ ॐ दारुकारि निहन्त्र्यै नमः
६५३ ॐ दारुकेश्वर पूजितायै नमः
६५४ ॐ दारुकेश्वर मात्रे नमः
६५५ ॐ दारुकेश्वर वन्दितायै नमः
६५६ ॐ दर्भ हस्तायै नमः
६५७ ॐ दर्भ युतायै नमः
६५८ ॐ दर्भ कर्म विवर्जितायै नमः
६५९ ॐ दर्भ तन्वे नमः
६६० ॐ दर्भ सर्व स्वरूपिण्यै नमः
६६१ ॐ दर्भ कर्माचार रतायै नमः
६६२ ॐ दर्भ हस्त कृतार्हणायै नमः
६६३ ॐ दर्भानुकूलायै नमः
६६४ ॐ दमघोष प्रपूज्यायै नमः
६६५ ॐ दमघोष वरदायै नमः
६६६ ॐ दमघोष समाराध्यायै ०
६६७ ॐ दावाग्नि रूपायै नमः
६६८ ॐ दावाग्नि महाबलायै ०
६६९ ॐ दन्त चर्चित हस्तिकायै ०
६७० ॐ दन्त दंष्ट्र स्यन्दनायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९७१ ॐ दधि प्रीतायै नमः
९७२ ॐ दधीचि वरदायिन्यै नमः
९७३ ॐ दधीचीष्ट देवतायै नमः
९७४ ॐ दधीची मोक्षदायै नमः
९७५ ॐ दधीची भक्ति सुखिन्यै नमः
९७६ ॐ दधीची मुनि सेवितायै ०
९७७ ॐ दधीची ज्ञानदात्र्यै नमः
९७८ ॐ दधीची गुणदायिन्यै नमः
९७९ ॐ दधीची भुक्तिमुक्तिदायै ०
९८० ॐ दधीची कुल देव्यै नमः
९८१ ॐ दधीची कुल देवतायै नमः
९८२ ॐ दधीची कुल पूजितायै नमः
९८३ ॐ दधीची दैन्य हारिण्यै नमः
९८४ ॐ दधीची दुःख हन्त्र्यै
९८५ ॐ दधीची कुल संभूतायै ०
९८६ ॐ दधीची कुल पालिन्यै नमः
९८७ ॐ दधीची दान गम्यायै नमः
९८८ ॐ दधीची दान मानिन्यै नमः
९८९ ॐ दधीची दान संतुष्टायै नमः
९९० ॐ दधीची दान देवतायै नमः
९९१ ॐ दधीची जय संप्रीतायै नमः
९९२ ॐ दधीची जप मानसायै नमः
९९३ ॐ दधीची जप संतुष्टायै नमः
९९४ ॐ दधीची शुभदायिन्यै
९९५ ॐ दुर्वायै नमः
९९६ ॐ दुर्वादलश्यामायै नमः
९९७ ॐ दुर्वादल समुद्भूतये नमः
९९८ ॐ दुर्वांकुरप्रियायै नमः
९९९ ॐ दुर्ग हन्त्र्यै नमः
१०००

दुर्गा अष्टोत्तरशतनामावली ॥

ॐ दुर्गायै नमः (१)
ॐ शिवायै नमः (२)
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ३
ॐ महागौर्यै नमः ४
ॐ चण्डिकायै नमः ५
ॐ सर्वज्ञायै नमः ६
ॐ सर्व लोकेशायै नमः ७
ॐ सर्व कर्म फलप्रदायै नमः ८
ॐ सर्वतीर्थमयायै नमः ९
ॐ पुण्यायै नमः १०
ॐ देव योन्यै नमः ११
ॐ अयोनिजायै नमः १२

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

११३ ॐ भूमिजायै नमः	ॐ कर्मा...		ॐ कृष्ण पिंगलायै नमः
११४ ॐ निर्गुणायै नमः	ॐ गुणाश्रयायै नमः	३६	ॐ चन्द्रामृत परिस्रुतायै
११५ ॐ आधार शक्त्यै॰	ॐ गुण मध्यायै नमः	३७	ॐ जगत सृष्ट्यादि कारि॰
११६ ॐ अनीश्वर्यै नमः	ॐ गुणत्रय विवर्जितायै॰	३८	ॐ ब्रह्माण्डकोटि संस्था॰
११७ ॐ सगुणायै नमः	ॐ कर्म ज्ञान प्रदायै॰	३९	ॐ चन्द्रार्धमस्तकायै॰
११८ ॐ निरहंकारायै॰	ॐ कान्तायै नमः	४०	ॐ काल संहार कारिण्यै॰
११९ ॐ सर्व गर्व विमर्दिन्यै॰	ॐ धर्म ज्ञानायै नमः	४१	ॐ कमलालयायै नमः
१२० ॐ सर्व लोक प्रियायै॰	ॐ धर्म निष्ठायै नमः	४२	ॐ कलातीतायै नमः
१२१ ॐ सर्व विद्याधिदेवतायै॰	ॐ कामाक्षायै नमः	४३	ॐ शुभायै नमः
			ॐ भारत्यै नमः
१२२ ॐ कोटि सूर्य समप्रभायै॰	ॐ काम संहर्त्र्यै नमः	४४	ॐ भ्रामर्यै नमः
१२३ ॐ सर्व कर्म विवर्जितायै॰	ॐ सर्वेश्वर्यै नमः	४५	ॐ कल्पायै नमः
१२४ ॐ सर्व संहार कारिण्यै॰	ॐ शाकम्भर्यै नमः	४६	ॐ महा मायायै नमः
१२५ ॐ कामक्रोध विवर्जितायै॰	ॐ शाम्भव्यै नमः	४७	ॐ जगत स्रष्ट्र्यै नमः
१२६ ॐ वाण्यै नमः	ॐ शान्तायै नमः	४८	ॐ योगनिष्ठायै नमः
१२७ ॐ पार्वत्यै नमः	ॐ सुजयायै नमः	४९	ॐ कात्यायन्यै नमः
१२८ ॐ देवमात्र्यै नमः	ॐ जय भूमिष्ठायै॰	५०	ॐ कामिन्यै नमः
१२९ ॐ वनीशायै नमः	ॐ जाह्नव्यै नमः	५१	ॐ नारायण्यै नमः
१३० ॐ तेजोवत्यै नमः	ॐ जनपूजितायै नमः	५२	ॐ कराल्यै नमः
१३१ ॐ मातृमात्रे नमः	ॐ शास्त्रायै नमः	५३	ॐ ब्राह्म्यै नमः
१३२ ॐ देवतायै नमः	ॐ शास्त्रमयायै नमः	५४	ॐ रौद्र्यै नमः
१३३ ॐ वह्नि रूपायै नमः	ॐ नित्यायै नमः	५५	ॐ ज्येष्ठायै नमः
१३४ ॐ सद्योजातयै नमः	ॐ चन्द्र सूर्याग्नि लोचनायै नमः	५६	ॐ इन्द्रायै नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ योगगम्यायै नमः	१०२	ॐ [illegible] नमः
ॐ योगिध्येयायै नमः	१०३	ॐ सत्यायै नमः
ॐ तपस्विन्यै नमः	१०४	ॐ दुर्लभरूपिण्यै
ॐ ज्ञानरूपायै नमः	१०५	ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ निराकारायै नमः	१०६	ॐ सर्वगतायै नमः
ॐ भक्ताभीष्टफलदायै०	१०७	ॐ सर्वसिद्धिदायै०
ॐ भूतात्मिकायै नमः	१०८	ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिन्यै०

८७ ॐ भूतमात्रे नमः
८८ ॐ भूतेशायै नमः
८९ ॐ भूतधारिण्यै नमः
९० स्वधानारीमध्यगतायै०
९१ षडाधारादिवर्तिन्यै नमः
९२ ॐ मोहदायै नमः
९३ ॐ अंशुभवायै नमः
९४ ॐ शुभ्रायै नमः
९५ ॐ सूक्ष्मायै नमः
९६ ॐ मात्रायै नमः
९७ ॐ निरालसायै नमः
९८ ॐ निम्नगायै नमः
९९ ॐ नीलसंकाशायै नमः
१०० ॐ नित्यानन्दायै नमः
१०१ ॐ सर्वज्ञानप्रदायै नमः

पूजन प्रकार

आसन (फूल)
पाद्य, (से) (जल से)
अर्घ्य जल अक्षत गंध दूर्वा चीनी
मधुपर्क (घी शहद दही बराबर भाग १ पाव)
स्नान (सुगन्धित जल से केवल
उबटन (आटा तेल जल मिला के)
स्नान शुद्ध जल से
पंचामृत से (दूध दही घी शहद चीनी मिलाकर)
स्नान (शुद्ध जल से
वस्त्र (मौली चढ़ा दो या चुन्नी)
इतर (हिना जाड़े में खस गर्मी में)
चूड़ी तेल कंघा शीशा बिन्दी मेंहदी आलता सिन्दूर पीला लाल सेंदुर, हल्दी, गुलाल, बिछिया चोटी नथ मंगल सूत्र
बेल पत्री ११। जनेऊ
फूलमाला
फलमाला
मेवा माला
धूप, दीप, नैवेद्य (मीठा) १ पाव)
कपूर से आरती। पुष्पांजलि ५ बार देना चाहिये
भेंट सवा रुपया। पान दो लगे हुये देना चाहिये

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

षटकोड़ में कुल [illegible] हैं। [illegible] पूजन [illegible] लाल चन्दन [illegible]
दीप नैवेद्य पान पुष्पांजलि देना चाहिये। त्रिकोण की देवियों का पूजन पील
सिंदुर से करे लाल अक्षत लाल फूल धूप दीप नैवेद्य पान प्रदान करना चाहिये। और
हरी हरी दुर्वा, और फूल से पुष्पांजलि तीनों को देना चाहिये। बीच में प्रधान देवी
है १६ प्रकार से पूजन करना चाहिये इनका। फिर पुष्पांजलि प्रवार दे कर प्रणाम
पश्चात अष्टदल की आठों देवी का पूजन करे इसी तरह फिर आठें भैरवों का
पंचोपचार से पूजन करे। फिर द्वार के प्रधान चार देवों का पूजन करे। गणेशादि का
फिर (कारण देवादि कों का। फिर अग्नि वैतालादि कों का। फिर चारो कोणों की
देवियों का पूजन करदेना चाहिये।

॥ श्रीमहाविद्यायन्त्र ॥

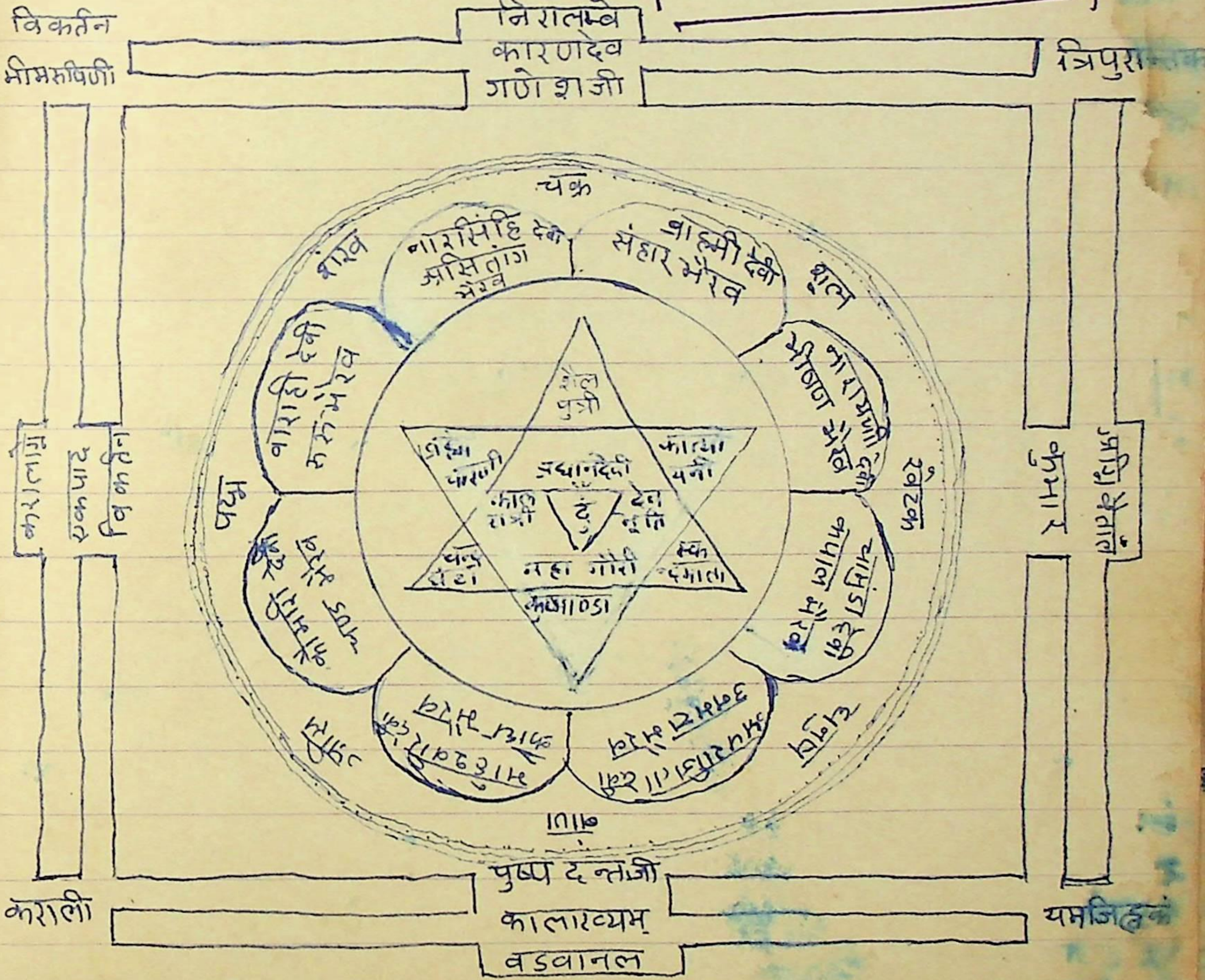

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आचार्य त्वं भव प्रभो॥
यथा उचितं कर्म कुरु॥

संकल्प:। ब्रह्मा का फिर वरण करे॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्म सर्व वेद धर प्रभो तथा त्वं यज्ञेस्मिन ब्रह्मा भव द्विजो तमा॥ पश्चात् पूजन दक्षिणा मौली बांधे

नमः परब्रह्म परमात्मने अद्य श्री ब्रह्मणे द्वितिये परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे बैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारतखण्डे आर्यावर्ते आर्यावर्तान्तरगत लक्ष्मणपुरी नगर सूर्य अमुकायने अमुक सम्बतसरे अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक रासास्थिते सूर्ये अमुक रासास्थिते गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा २ स्थान स्थितेषु एवं गृह गण बिशेषण विशिष्टायां कमला सरकार देव्या नामाहं शाम्भव गोत्रोत्पन्न अद्यारम्भ अमुक स्थ अमुक कार्यार्थं शूलिनि दुर्गा महा मन्त्रस्य सपाद लक्ष संख्याकं एक दिवस परियन्तं जपं तद्दशांश होमं तद्दशांश तर्पणं तद्दशांश मार्जनं तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं दुर्गा पूजनं करिष्यामि। (यदि अपने लिये कार्य करना हो तो करिष्ये कहना चाहिये। यजमान के लिये करना हो तो करिष्ये कहना चाहिये॥

संकल्प के समय जो तिथि वर्तमान में पत्रा मे गुजर रही हो वही तिथि को कहना चाहिये यदि सुबह कोई दूसरी तिथि हो संकल्प के समय कोई दूसरी लग गई हो तो प्रथम तिथि का नाम लेकर तदुपरि कहकर वर्तमान तिथि का नाम बोल देना चाहिये।

संसकृत में एक लाख को सपाद लक्ष संख्याकं कहते है।

२१ हजार को	एकविंसति सहस्त्रकं
१० हजार को	अयुतं कहते हैं।
५२ हजार को	पंचासत सहस्त्रकं
२० हजार को	एक विंशति सहस्त्रकं

उत्तरायण को सूर्य तो उसे सौम्यायन भी कहते हैं
दक्षिणायन हो सूर्य तो उसे याम्यायन भी कहते हैं।
अद्यारम्भ माने आज से शुरु करते हैं।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आचार्य सम्वरण = ॐ भूर्भुवः [illegible] स्थापयामि ।। पूजां ग्रहाण मम सम्मुखो ।। सुप्रसन्नो भव। संकल्प पूरा बोला कर यजमान गोत्र नाम जात वरवाने। करके जो वस्तु आचार्य को प्रदान करे उसे भी कहे (एभिर्वरण द्रव्यैः आचार्य [illegible] जो काम कराना हो आचार्य से वह भी कहे। जैसे कहे। । अस्मिन दुर्गा हवन कर्मणि अमुक गोत्र अमुक नामानं अमुक जातं ब्राह्मणं एभिर्वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं [illegible] करके सूत्र आचार्य [illegible] का जल फूल आचार्य के चरण में डाल दे। फिर आचार्य का पूजन हाथ में मौली बांध दे ।वृतोस्मि कहे।। याने वृत ले यजमान को।

पञ्चावृत्ति = पांच बार

त्रिरावृत्ति = तीन बार

सप्तावृत्ति = सात बार

अष्टावृत्ति = आठ बार

नवावृत्ति = नौ बार

रुद्रावृत्ति = ग्यारह बार

अर्कावृत्ति = बारह बार

मन्वावृत्या = चौदह बार

पञ्चदशावृत्ति = पन्द्रह बार

कलावृत्ति = सोलह बार

सप्तदशावृत्ति = सतरह बार

अष्टदशावृत्ति = अठारह बार

विंशावृत्ति = बीस बार

पञ्चविंशावृत्ति = पचीस बार

शतावृत्ति = सौ बार

सहस्रवृत्ति = हजार बार

एकाविंशतिशतावृत्ति: १२१ बार

कोटि = करोड़

चत्वारिंशद् ४० बार

॥ पुण्याहवाचन ॥

ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ प्रसीदन्तु भवन्तः प्रसन्नास्म॥ ॐ शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु बुद्धिरस्तु रिद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवसंकल्पमस्तु कर्म समृद्धिमस्तु धर्म समृद्धिमस्तु वेद समृद्धिमस्तु धनधान्य समृद्धिमस्तु इष्ट सम्पदस्तु भक्ति समृधिरस्तु पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु अरिष्ट निरसनमस्तु ॥ भूमौ यत्पापं आरोग्यं शुभम कल्याणं तद्दूरे प्रतिहतिमस्तु उत्तरोत्तर महरहरभि वृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तरा: क्रिया: शुभा: शोभना: सम्पद्यताम् ॥

स्वस्ति वाचन = स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वस्ति वाचन ॥ ओ मन महत्सा ... ओम गणानान्त्वा
गणपति गवं हवामहे ॥ प्रिया णान्त्वा प्रिय पतिगवं हवामहे ॥ निधिनान्त्वा
निधि पतिगवं हवामहे वसोमम् ॥ अहामजानि गर्भ धमात्व मजासि
गमधम ॥१॥ स्वस्तिना इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्व वेदा:
स्वस्तिनस्ताक्षर्यो ऽरिष्टनेमि: स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ॥ २॥
पय: पृथिव्यां पय: औषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा: पयस्वती:
प्रदिशा सन्तु महियम् ॥३॥ विशो ररट मसि विशो: सनपत्रस्थो विशो:
स्यूरसि विशोर्ध्रुवोसि ॥ वैश्नाव मसि विश्नावेत्वा ॥४॥ अग्निर्देवता वातो
वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता
देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता
वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥५॥ द्यौ शान्तिरिक्षगवं शान्ति:
प्रथवी शान्ति: राप: शान्ति: रोषधय: शान्ति: वनस्पतय: शान्ति:
विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्वगवं शान्ति: शान्ति रेव
शान्ति: सामा शान्ति रेधि: ॥६॥ विश्वानि देव सवितर दुरितानि परा
सुव- यद्भद्रन्तन्नासुव ॥७॥ एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर ब्रहस्पते ब्रह्मणे
॥ तेन यज्ञमवतेन यज्ञ पतिन्तेन मामव ॥८॥ मनो जुतिर्जुस्तामाजस्य
ब्रहस्पतिर्यज्ञमिं: मन्तनो त्वरिष्टं यज्ञं समिमन्धातु ॥ विश्वे देवा स इह
मादयन्तामो ॥ ३ प्रतिष्ठं भवति ॥९॥ २ एषवै प्रतिष्ठानां यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन
यजन्तो सर्व मेव प्रतिष्ठितम् भवति ॥१०॥ ॐ शान्ति: सुशान्ति: सर्वारिष्ट शान्तिर
भवतु ॥ गणेशस्तुति ॥ ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णिका: लम्बोदरश्च
विकटो विघ्न नाशो विनायक: ॥११॥ धूम्र केतु र्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो
गजानन: द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छुणयादपि ॥१२॥ विद्यारम्भे विवाहे
च प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैवा विघ्नस्तस्य न जायते ॥१३॥
शुक्लाम्बर धरं देवं शशि वर्ण चतुर्भुजं प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये
अभिप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो य: सुरासुरै: ॥ सर्व विघ्नहरस्तस्मै

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वा०
महादेवस्य तेजसा, भयंकरा भूत देवता बध्नामि ॥ पन्था
गत चौराद्र रक्षते बन्धकस्य कटकं बध्नामि ॥ महादेवस्य
शीर्षेण, पाणिना, महादेवस्य तेजसा सर्व शूलान्, कह
कण्टकमय रुद्रांङ्गी, ॐ ऍं ऐं मातंगी ऊँ
तङ्गी ॐ मातङ्गी, ॠं ॠं मातंङ्गी ॡं ॡं मातङ्गी, ऍं ऐं
मातङ्गी ऍं अः मातङ्गी स्वर स्वर ब्रह्मदण्ड। विश्वर वि
ड। प्रज्वल प्रज्वल वायुदण्ड। प्रहर प्रहर इन्द्र दण्ड। नक्ष २
ति दण्ड। हिलि हिलि यम दण्ड। नित्योपवादिनी, हासिनी,
वनी, चक्रिणी, गदिनी, शूलिनी, त्रिशूलधारिणी, हुं फट् स्वाहा॥
विद्यां च सौभाग्यं धान्यं च धनमेव च ॥ सदा शिवे प्रीतें
अखंड
हे श्रद्धा विश्वास चण्डि के शुभे में।

॥ अथातो मन्त्र पादि भवन्ति

यायै स्वाहा ॥ ॐ चतुरायै स्वाहा, हिलि स्वाहा, किलि स्वाहा ॥
स्वाहा ॥ ॐ हर हरं स्वाहा ॥ ॐ गन्धर्वाय स्वाहा ॥ ॐ गन्धर्वाधि
स्वाहा ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा ॥ ॐ यक्षाधिपतये स्वाहा ॥
स्वाहा ॥ ॐ रक्षोधिपतये स्वाहा ॥ ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ ॐ उल्कामुखी स्वाहा ॥
स्वाहा ॥ रुद्र जटी स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्म, विष्णु रुद्र तेजसे
सर्व
ॐ भूत प्रेत, पिशाच राक्षसानां सर्व दृष्टि भयं विनाशाय स्वाहा ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबल बल बंधनी। भव जाल भंजिनी। सर्व कृत्य कारिणी। सर्व लोक वशं
सर्व राज वशं करी। सर्व गृहोच्चाटिनी। सर्व जन प्रमोदिनी। सर्व सिद्धि
पर प्रयोग विनाशिनी। दुष्ट दर्प नाशिनी। अकाल मृत्यु हारिणी। योग क्षेम
वाहिनी। सर्व कष्ट हारिनी। यमदूत दण्ड दायिनी। काल दण्ड त्रासिनी। दुष्ट जन
भूतानां विजृम्भिणी स्वामिनी मोहिनी द्राविणी सर्व मन्त्र प्रभ
सर्वज्वरोत्सादकरी रात्री ज्वर दिवाज्वर सायंज्वर प्रातज्वर
शीत ज्वर द्वंद्व ज्वर राक्षस ज्वर भूतज्वर पिशाचज्वर दृष्टिज्वर
भीत ज्वर माण्डा ज्वर पापज्वर उष्णज्वर विषमज्वर तापज्वर द्वंद्व ज्वर
एकाहिक ज्वर द्व्याहिक ज्वर
चातुर्थिकं अर्धमासिकं मासिकं द्विमासिकं त्रिमासिकं
सिकं साम्वत्सरिकं ज्वर वातिकं पैत्तिकं श्लैष्मिकं
द्वंद्वज्वर दृष्टिज्वर माण्डा ज्वर
सन्तत ज्वर सर्व ज्वरान् भंजय स्वाहा॥ घं गण्डमाला लूता
नासिनी सर्पानां त्रासिनी सर्वान् त्रासिनी॥ शिर: शूल भ्रूशूल
शूल कर्ण शूल दन्त शूल कंठ शूल घ्राण शूल गलशूल
शिरोर्ध्व शूल वक्ष शूल हृद शूल बाहु शूल कटि शूल नाभी
पृष्ठ शूल जंघ शूल जानु शूल गुह्य शूल योनी शूल लिंग शूल
पाद शूल पादार्ध्व शूल अर्धाङ्ग शूल सर्वाङ्ग शूल विनाशन
स्वाहा॥ सर्व व्याधि विनाशनाय स्वाहा सर्व शत्रु विनाशनाय स्वाहा
सर्वारिष्ट विनाशनाय स्वाहा॥ सर्व पापरोग विनाशनाय स्वाहा॥
आत्म रक्षा परोक्ष रक्षा प्रत्यक्ष रक्षा अग्नी रक्षा वायु रक्षा
रक्षा ... रक्षा मित्र रक्षा परिवार रक्षा महा अन्धकारे
विद्युतानिल चोर ... मां रक्ष रक्ष सर्वतो
मां रक्ष ई कृ पौं कुं ... हुं फट् स्वाहा॥
पर मन्त्र पर तन्त्र पर यन्त्र विद्या स्तंभन्ते स्व मन्त्र
स्वतन्त्र विद्या विवर्धिनि पर प्रयोग नाशिनी
नाशय हंसिनी शंखिनी चक्रिणी ...
धारिणी हं फट् स्वाहा॥ ... राजद्वारे ... विघ्नोपशान्तये
... स्तम्भे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

... नित्यं चिन्मय मनन्तं सर्व की साक्षी...
... रौहित्यं सत्गुरुं तम नमामि ॥

मोला मन्त्र

...अणवे नमः ॥ वारुणि रवल्वि माहेश्वर्यै नमः ॥ कुल वासिन्यै
...मारिण्यै नमः ॥ जयन्ति पुरलाहि वाराहिण्यै नमः ॥ जल्ट महाकाली
...भवे नमः ॥ चित्र कूट इन्द्राणिन्यै नमः ॥ त्रिपुर ब्रह्म चारिण्यै
नमः ॥ ... वृक्ष शुभिण्यै नमः महालक्ष्म्यै नमः ॥ त्रिपुर ब्रह्माण्ड
...नमः ॥ एतानि क्षं क्षं त्रैलोक्य वशं कराणि ॥ बीजाक्षराणि ॐ
... हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकल नर मुख भ्रमरीम् ॥ ॐ
... सकलराज मुख भ्रमरीम् ॥ ॐ क्रौं सौं सफल देवता मुख
...म ॥ ॐ क्लीं २ सकल कामिनी मुख भ्रमरीम् ॥ ॐ ईं सौं सकल
...मुख भ्रमरीम् ॥ हसरव्फ्रेम त्रैलोक्य चित्त भ्रमरीम् ॥
...क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षंक्षः उग्र भैरवादि भूत
...प्राव चित्त भ्रमरीम ॥ हुं क्षुं हुं क्लीं ... मन्त्र यन्त्र भ्रमरीम ॥
... हुं क्लीं सिद्ध यन्त्र मन्त्र तन्त्र भ्रमरीम् ॥ हुं क्षुं हुं क्लीं साध्य,
... मन्त्र तन्त्र भ्रमरीम् सकल सुरासुर सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्र भ्रमरी ॥
... भिणीम् सर्व ...लादिनी सकल मनोन्माद करी ... ह्रीं
अमुकस्य वाद्यां तिनासय २ वर्क कारय ६ नाशय २ ईफट्
... महा कल्याणि, योगिनी ॥ ॐ महा विद्या प्रवक्ष्यामि महा
...मिताम् ॥ चिन्ति तां किरात रूपेणा मारणा हृदय
... तामां सर्व विद्यानां सर्व भूत वशंकरी ॥ सर्व
... करी ... शत्रु क्षय करी ॥ ॐ कुल करी गोत्र करी धनकरी
... करी ... करी ॥ विजय करी ॥ यशकरी ॥ पुत्र ... पौत्र

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अयस्तु दुर्गाम् ।।ॐ हेम प्ररव्या मिन्दु खण्डान्त मौलिं शंरवा ...
भीति हस्तां त्रिनेत्रां ।। हेमाब्जस्थां पीतवर्णां प्रसन्नां देवीं दुर्गां
दिव्य रूपां नमामि ।। ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवा
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
... पूजा पंचोपचार से करे वैदिक मन्त्रों से जैसे ।।
ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि ।। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं ...
ॐ यं वायव्यात्मने धूपं दर्शयामि ।। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं दर्शयामि
ॐ वं अमृतात्मने अमृतं नैवेद्यं निवेदयामि ।। ॐ ह्रीं ताम्बूलं ...
ॐ नमः ... कायै नमः प्रणमामि ।। (कवच सूक्ष्म) हेतुकं पूर्वपा...
आग्न्येयां त्रिपुरान्तकम् ।। दक्षिणे चाग्नि वेतालं ।। नैऋत्यां यम ...
कालाख्यं वारुणे पातु ।। वायव्यां तु करालिनम् ।। उत्तरे एक...
ईशान्यां भीम रूपिणम् ।। आकाशे तु निरालम्बे ।। पाताले ...
... पा गामे तथा अरण्ये रक्षस्वमां वटु कस्तथा ।। ॐ ह्रीं सर्व मं...
माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्रियम्बके गौरी नारा...
नमोस्तुते ह्रीं ॐ ।। जप मन्त्र ।। ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः ...

मुखशोधन दसबार (ॐ ॐ ॐ)
कुल्लका सिरपर १०बार (ॐ ह्रीं श्रीं दं)
सेतु सिर पर दसबार (ॐ ह्रीं ॐ)
महासेतु मस्तक पर १०बार (...)
गायत्री १० बार ...

ॐ नमः पिशाचिनी करिकि...
खड्ग हस्ते सिंह रूढे एहि ...
मम हृदयं प्रविश्य २
पूजां गृहाण २ ह्रीं ...
... २ बार ।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ अत्र पराज्यार्थं ... पराज्यार्थं, राजदरबारे पराज्यार्थं, अमुकान्य गृह निवारणार्थं, अमुकस्य उच्चाटनार्थं, अमुकस्य वश्यार्थं, आदि रखो हो।
योजना में पहले विनियोग में संकल्प कर लो।

अथ श्री दुर्गोपनिषत् ॥ सर्व बाधा निवारण
उक्तं च अथर्वण रहस्ये

विनियोग – ॐ अस्य श्री दुर्गा महामन्त्रस्य किरात रूपधर ईश्वरं ऋषि: अनुष्टुप छन्द: अन्तरयामि नारायण: किरात रूप धरेश्वरो नाम दुर्गा गायत्री देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्ति: क्लीं कीलकं पर परत मम धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोग: श्री महाविद्या प्रीत्यर्थं ग्रामरी डाकिनी शाकिनी सकलापत्ति निवारणार्थं मनोऽभिलसित कामना सिद्ध्यर्थे

करन्यास: – हंसिनी ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: ॥ शंखिनी ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: ॥ चक्रिणी ह्रूं मध्यमाभ्यां नम: ॥ गदिनी ह्रैं अनामिकाभ्यां नम: । शूलिनी ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम: ॥ त्रिशूल धारिणी ह्र: करतल कर पृष्ठाभ्यां नम: ।

हृदयन्यास: – हंसिनी ह्रां हृदयाय नम: ॥ शंखिनी ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ चक्रिणी ह्रूं शिखायै वषट् ॥ गदिनी ह्रैं कवचाय हुं ॥ शूलिनी ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ त्रिशलधारिणी ह्र: अस्त्राय फट् ॥

दिग्न्यास: – हंसिनी ह्रां पूर्वस्यां नम:, शंखिनी ह्रीं आग्नेयां नम:, चक्रिणी ह्रूं याम्यां नम: । गदिनी ह्रैं नैऋत्यां नम: ॥ शूलिनी ह्रौं वारुण्यां दिशि त्रिशूलधारिणी ह्र: वायव्यां नम: ॥ हुं उत्तरस्यां नम: ॥ फट् ईशान्यां नम: ॥ हंसिनी शंखिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी त्रिशूल धारिणी ऊर्ध्वस्यां नम: ॥ हं. श. च. ग. शू. त्रि. भूम्यै नम: ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: कह कह कर के भी सब दिशाओं का बन्धन करते हैं।

ध्यान – असि शंख कृपाण खेटं बाणान्सु धनुष्क शूलमप कर्तरीं ... भजतां महिषोत्तमाङ्ग संस्था नव दुर्गा सदृशी तनुम ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गणाधिपतये नमः ॥ १४ ॥ ॐ श्री सर्व मंगल मांगल्ये [illegible]
त्रियम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ १५ ॥ सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषां मंगलं
एषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरिः ॥ १६ ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां
पराजयः ॥ एषा मिन्दिवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ १७ ॥ विनायकं गुरुं भानुं
ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान् सरस्वतीं प्रणम्यादौ शान्ति कार्यार्थ सिद्धये ॥
सर्वेस्वारम्भ कार्येषु त्रयस्ति भुवनेश्वरः देवादि शन्तुनः सिद्धिं ब्रह्मे
शान जनार्दना: ॥ २० ॥ गणेशस्तुति ॥ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि
समप्रभम् । अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ २१ ॥ सिद्धि बुद्धि सहिताय
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ ॐ वाणी हिरणगर्भाभ्यां नमः ॥ ॐ लक्ष्मी
नारायणाभ्यां नमः ॥ ॐ शची पुरन्दराभ्यां नमः ॥ ॐ मातृ पितृ चरण
कमलेभ्यो नमः ॥ ॐ कुल देवताभ्यो नमः ॥ ॐ स्थान देवताभ्यो नमः ॥
ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः ॥ ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः ॥ ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः ॥
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यः ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यः
तीर्थेभ्यो नमः ॥ एतत कर्म प्रधान दुर्गा देव्यै नमः ॥ ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घ
मायुरस्तु वामे गुं गुरुभ्यो नमः ॥ दक्षिणे भं भद्रकाल्यै नमः ॥ उपरि गं
गणपतये नमः । पृष्ठे हृदि दुं दुर्गायै नमः । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ
तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम् । भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञां दातुं
मर्हसि ॥ (ॐ नागपाश धरं देवं वरुणं नक्र वाहनं । शुद्ध स्फटिक संकाशं प्राण
रूप नमाम्यहम् ॥ पाशहस्तं च वरुणं मणसा प्रतिमीश्वरम् ॥ आवाहयामि
यज्ञेस्मिन पूजेयं गृह्यताम् ॥ अनयः पूजया सांगाः सपरिवाराः वरुण देवः
प्रीणन्तु न मम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय आवाहयामि नमः स्थापयामि नमः ॥ (कल
श अक्षत छोड़े) ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादि नवग्रहा इहागच्छ इह तिष्ठ नवग्रहेभ्यो नमः
ॐ ब्रह्मा मुरारि त्रिपुरान्त कारी भानुः शशिः भूमि सुतो बुधश्च ॥ गुरुश्च शुक्रश्च
शनि राहु केतु सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु ॥ ॐ ईश्वरादि अधि देवताभ्यो नमः
शिवो गौरी तथा स्कन्दो विष्णु ब्रह्मा पुरन्दरः यमः कालश्च चित्रगुप्तश्चादि देवता
[illegible]स्मृता ॥ ॐ अग्न्यादि प्रत्यधि देवताभ्यो नमः ॥ ॐ अग्निरापो मही विष्णु [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

[illegible] ॐ गणेश [illegible]

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मम यजमानस्य

सर्व ब्रह्मचार

या इमां इष्टदेव्यै भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, ब्रह्म राक्षस, क्षिशाच ब्रह्म पिशाच, जिन्द वैताल अगिया वैताल, यक्ष यमदूत, वीर, भैरव, कलुवा, शाकिनी, डाकिनी, पिशाचिनी, कामिनी भूतनी, योगिनी, भैरवी, गन्धर्वनी, यक्षनी, नागिनी, कूष्माण्ड वा सश्रुवारो राज पुरुषः कलह पुरुषो वातिषां दिशं बध्नामि स्वाहा ॥ मम यजमानस्य दुर्दिनो बध्नामि ॥ दुर्दिन. ब. विश्वासघाती मम शत्रून हस्तौ बध्नामि, ॥ चक्षुषी बन्धयामि ॥ श्रोत्रे बन्धयामि ॥ जिह्वां बध्नामि ॥ घ्राणं बन्धयामि ॥ गतिं बन्धयामि ॥ मतिं बध्नामि ॥ शत्रु विचारं बन्धयामि ॥ अन्तरिक्षं बध्नामि ॥ आकाशं बध्नामि ॥ पातालं बध्नामि ॥ यम भैरवन पञ्चयोजन विस्तीर्ण बध्नामि मम शत्रून आशा बन्धयामि। दिशा बन्धयामी। मायां बन्धयामि। सर्वउद्योग बन्धयामि। सर्व कर्म बन्धयामि मम शत्रून बध्नामि रुद्रो बध्नातु ॥ रुद्र मण्डल रुद्रः सपरिवारो देवता प्रत्याधि देवता सहितं रुद्र मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध, मम स परिवारकस्य सर्वतो (भावेन) माम रक्ष २ अचलं चलं आक्रम्य ऽक्रम्य महा वज्र कवचायास्त्राय, शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशय नाशय ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों, प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ त्रियम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ १० ॥ ॐ वर्षन्तु तेविभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि, अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि इन्द्रो देवता ऐरावता रूढो हेमवर्णो वज्र हस्तो इन्द्रो (मम शत्रून) बध्नातु ॥ इन्द्र मण्डम इन्द्रः, सहपरिवारो देवता प्रत्याधि देवता सहितम इन्द्र मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम स परिवार कस्य सर्वतो, मां रक्ष २, अचलं ऽचलं आक्रम्य ऽक्रम्य

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शत्रु

कवचायास्त्राय, राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव
नाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१॥
ॐ ... विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः अस्माकमस्तु केवलः ॥२॥
ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव
ब्रह्म द्विषो जहि । अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते
रुद्राय नमः ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ आग्नेय्यां दिशि ॥
अग्निर्देवता मेषारूढो रक्त वर्णाः ज्वाला हस्तः अग्नि बन्धनातु, देवता मम शत्रून
अग्नि मण्डलं अग्निः सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं
अग्नि मण्डलं प्रत्यक्ष बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां
रक्ष २ अचलं अचलं आक्रम्य आक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय शत्रु
राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥
ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥
ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य
सुक्रतुम ॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥
रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥
याम्यां दिशि यमो देवता महिषारूढा नील वर्णाः दण्ड हस्तः
देवता मम शत्रून बन्धनातु ॥ यम मण्डलं यमः सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं यम
मण्डलं प्रत्यक्ष बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शत्रु
ऽचलंऽचलं ऽऽक्रम्यऽक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय, राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ऽऽ ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥३॥ ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हावि यमं हयज्ञो गच्छत्यग्नि दुतोऽरंकृतः ॥ ॐ वर्षन्तु ० ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ नैऋत्यां दिशि ॥ नैऋत्य देवता: प्रेता रुढा, देवता मम शत्रून् वध्नातु ॥
श्याम वर्णा: खड्ग हस्त: नैऋत्य, निऋति मण्डलं निऋति: सहपरिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं निऋति मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारका सर्वतो मां रक्ष २ ऽचलंऽचलं ऽऽक्रम्यऽक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ऽऽ ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥४॥ ॐ मो षुणः परापरा निऋति दुर्हणावधीत ॥ पदीष्ट तृष्णाया सह ॥१॥ ॐ वर्षन्तु ०

नमो भगवते रुद्राय नमः ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वारुण्यां दिशि ॥ वरुणो देवता मकरारुढो श्वेतवर्ण: पाश हस्तो, मम शत्रून् वरुणो वध्नातु ॥ वरुण मंडलं वरुण: सहपरिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं वरुण मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २ ऽचलंऽचलं ऽऽक्रम्यऽक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ऽऽ ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संकल्प

यथोक्त गुण विशेषण विशिष्टायां तिथ्यादि यथा नाम गोत्रस्य स्वस्य अन्यस्य च सकल रिष्ट ग्रह जन्य दुख ध्वंस पूर्वक भूत प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस वैताल सर्व दुष्टादिक भय निवारणार्थं एवं धनधान्य समृद्धि हेतवे श्री महाविद्यायाः सकल रक्षानुकूल महाशान्तिक नाम स्तोत्र पाठ पूजनमहं करिष्यामि।

मम यजमानस्य अमुक कार्यसिद्ध्यर्थे जपे पाठे च विनियोगः

संसिक्ताज्य माने	संसिक माने मिलाओ आज्य माने घी
बिलिप्तान माने	खूब मधु तिल मिलाओ
अश्वत्थार्क समिध	पीपल या मदार की लकड़ी में हवन करो
गोमयं माने	गोबर
स्थित्वा जपेत	खड़े होकर जपे
निखातं	खोदना
सर्पिषा	घी
जुहुयान्नरः	साधक हवन करे
वत्सराद	एक साल में
नियम	प्रतिज्ञा
नामयुक्तं	नाम के सहित

विनियोग

जैसे अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक राशौ शर्माहं वा वर्माहं वा गुप्ताहं सपत्नी पुत्र पौत्रादि सर्वेषां अमुकामुक राशास्थितानां अखिल दुख दौर्भाग्य नाशनाय परकृत यन्त्र मन्त्र तन्त्र डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाच गरा कृतादि दोष परिहाराय राज्य भीति शत्रु भीति निवारणाय महादशा विंशोत्तरी दशा अष्टोत्तरी काल चक्रादि दशादशासु मारक ग्रहाः शनि भौम राहवस्तथा व्ययाधिपति चतुर्थ सप्त अष्टमादि मारक स्थान स्थितास्तद् दोषोपरि मारक कारक दुर्योगादि निवारणाय कोटिव्य मणिक विंशत्याधिक संख्यां संख्याक श्रीमहाविद्या स्तोत्र पाठ ब्राह्मण द्वारा (स्वयं) करिष्ये मि

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेद मानास्तवास्ते
ॐ इमं मे तत्त्वायामि० ब्रह्मणा ~~वेद~~ ———— ———— नमोनो हविर्भिः
अहेड मानो वरुणेह वोध्युरुसऽवं समानऽप्रायुः प्रमोषी ॥ ॐ वर्षन्तु०

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायव्यां दिशि
वायुर्देवता, मृगारुढ़ो, धूम्रवर्णो, ध्वज हस्तो, ममशत्रून वायुर्वध्नातु ॥ वायु
मंडलं वायुः सह परिवारो देवता प्रत्याधि देवता सहितं, वायु मण्डलं,
प्रत्यक्षं बन्ध २, मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २ अचलंऽचलं
अाक्रम्यऽक्रम्य महा वज्र कवचायास्त्राय, शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्रा
मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों अ्रां ह्रीं
क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ६॥ ॐ तव वाय वृतस्पते त्वष्टर्जामातर अ्त
अावतस्यां वृणीमहे। होतारं विश्ववेदसम, अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ॐ वर्षन्तु

ॐ नमो भगवते रुद्राय
नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौवेर्यां दिशि ॥ कुबेरो देवता,
अश्वारुढ़ो, पीतवर्णो गदाङ्कुश हस्तः देवता मम शत्रून कुबेरो बध्नातु ॥ कुवेर मण्डलं
कुवेरः सहपरिवारो देवता प्रत्याधि देवता, सहितं कुबेर मण्डलं,
प्रत्यक्षं बन्ध २, मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २ अचलंऽचलं
अाक्रम्यअाक्रम्य महा वज्र कवचायास्त्राय शत्रु राज चौर सर्प सिंह
व्याघ्राग्र मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों
ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ७॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥१॥ ॐ वर्षन्तु०

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ ईशान्यां दिशि॥ ईशानो देवता, वृषारूढः स्फटिकवर्णः त्रिशूलहस्तः ईशानो बध्नातु॥ ईशान मंडलं ईशानः सह परिवारो देवता, प्रत्यधि देवता सहितं, ईशान मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २ प्रचलप्रचलं प्राक्रम्य प्राक्रम्य महावज्र कवचास्त्राय, शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ८॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्व मवसे हूमहे वयम्॥ पूषानो यथा वेदसाम सदबृधे रक्षिता पायुर दब्धः स्वस्तये॥१॥ ॐ वर्षन्तु०

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ ऊर्ध्वायां दिशि॥ ब्रह्मा देवता, हंसः रुढः, रक्तवर्णः, कमण्डलु हस्तो, ब्रह्मा बध्नातु॥ ब्रह्म मण्डलं ब्रह्म सहपरिवारो देवता, प्रत्यधि देवता सहितं ब्रह्म मण्डलं, प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवार कस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष प्रचलप्रचलं प्राक्रम्य क्रम्य महावज्र कवचास्त्राय, शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों फ्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ब्रह्मा देवा
न द वी: कवीनां मृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम ॥ श्येनो गृध्राणां
धितिर् वनानां सोम: पवित्र मत्येति रेभन् ॥ ॐ वर्षन्तु०
~~नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्यो~~ नम:
ॐ नमो भगवते रुद्राय नम: ॥ ॐ नमो भगवते
रुद्राय ॥ अधस्तात् दिशि ॥ वासुकि देवता, कूर्मा रुढ़:, पद्महस्त:, मम
वास्तुकि बध्नातु ॥ बासुकि मंडलं बासुकि:, सहपरिवारो देवता
प्रत्याधि देवता सहितं, बासुकि मण्डलं, प्रत्यक्षं बन्ध २, मम
सपरिवारकस्य सर्वतो, मामरक्ष २ अचलं मऽचलं आक्रम्य २
महावज्रकवचायास्त्राय, राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम
सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों फ्रां ह्रीं
क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ नमस्तु सर्पेभ्यो ॥ ~~ॐ वर्षन्तु~~०
नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथ्वीमनु । ये अन्तरिक्षे दिवि
तेभ्य: सर्पेभ्यो नम: ॥ ॐ वर्षन्तु० ॐ नमो भगवते रुद्राय नम: ॥ ॐ नमो
भगवते रुद्राय ॥ आवंतरस्यां दिशि ॥ विष्णुर्देवता, गरुड़ा
रुढ़ा, श्यामवर्ण: चक्र हस्त:, विष्णु बध्नातु ॥ विष्णु मण्डलं
विष्णु:, सहपरिवारो देवता, प्रत्याधि देवता सहितं विष्णु
मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २, मम सपरिवारकस्य सर्वतो, मां रक्ष
अचलं चलं आक्रम्य ऽक्रम्य महावज्रकवचाय...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ
मस्य पांसुरे स्वाहा ।

सर्प सिंह व्याघ्राग्नि, (मम) सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं
क्लीं क्लुं प्रों ज्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥११॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे
त्रेधा निधेदे पदं (समूढमस्य) पांसुरे (स्वाहा)। ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो
अभ्रस्य विद्युतः रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि
अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि इन्द्रः सह परिवारो देवता,
प्रत्यधिदेवता, स्तद्(एक)दृक्षु त्रिशूल को नाम राक्षसः शाकिनी डाकिनी काकिनी,
हाकिनी, याकिनी, राकिनी, वैताल, (जिन्द भैरवादि) कामिनी, (सर्व दुष्ट) ग्रहान् बध्नातु ॥ मम
सपरिवारकस्य सर्वतो, माम् रक्ष २ अचलम् अचलम आक्रम्य ऽक्रम्य
महावज्र कवचायास्त्राय (राज) राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रव
नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ज्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१
ॐ वर्षन्तु०

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ
नमो भगवते रुद्राय ॥ आग्नेय्यां दिशि ॥ अग्निः सह परिवारो देवता,
प्रत्यधिदेवता, स्तद्(एक)दृक्षु मारीच को नाम राक्षसस्तस्य अष्टादश कोटि,
भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्म राक्षस, शाकिनी, डाकिनी काकिनी हाकिनी याकिनी
राकिनी वैताल जिन्द भैरवादि, कामिनी, (सर्व दुष्ट) ग्रहान् बध्नातु ॥ मम
सपरिवारकस्य सर्वतो, मां रक्ष २ अचलं ऽचलं आक्रम्य ऽक्रम्य
महावज्र कवचायास्त्राय (राज) राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि (मम) सर्वोप

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ वर्षन्तु

नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥२॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ याम्यां दिशि॥
यमः सहपरिवारो देवता, प्रत्यधि देवस्तद्दिक्षु एक पिङ्गल को नाम राक्षस
तस्य, अष्टादश कोटि, भूत प्रेत पिशाच ब्रह्म राक्षस, शाकिनी डाकिनी
काकिनी हाकिनी, याकिनी, राकिनी, वैताल, जिन्द भैरवादि, कामिनी
दुष्ट
ग्रहान् बध्नातु॥ मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २ प्रचलं चलं
शत्रु
आक्रम्य आक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय राजचौर सर्प सिंह व्याघ्राग्निप्रम
सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा।
॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवोऽभ्रस्य विद्युतः रोहन्तु सर्व बीजान्यव
ब्रह्म द्विशो जहि अव ब्रह्मद्विशो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ
नमो भगवते रुद्राय॥ नैर्ऋत्यां दिशि॥ निर्ऋतिः सहपरिवारो देवता,
एक
प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु सत्य को नाम राक्षसस्तस्य, अष्टादश कोटि
भूत प्रेत पिशाच ब्रह्म राक्षस, शाकिनी डाकिनी, काकिनी हाकिनी
सर्व दुष्ट
याकिनी राकिनी वैताल, जिन्द भैरवादि, कामिनी ग्रहान् बध्नातु।
मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ प्रचलं प्रचलं आक्राम्य २ महा
शत्रु
वज्र कवचायास्त्राय राज चोर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि सर्वोपद्रव नाशनाय
॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ वर्षन्तु

ॐ नमो भगवते रुद्रा...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वारुण्यां

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ प्रतीच्यां दिशि॥ वरुणः सहपरिवारो देवता प्रत्योधि देवता, स्त्री एक क्षु-लम्ब को नाम राक्षसस्तस्य अष्टादश कोटि भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, शाकिनी, डाकिनी, काकिनी, हाकिनी, याकिनी, राकिनी वैताल जिन्द भैरवादि कामिनी सर्व दुष्ट ग्रहान् बध्नातु, मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २ अचलं ऽचलं आक्रम्य २ महा वज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वापद्र विनाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ज्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ क्षीं दुर्गे।

वायव्यां दिशि॥ वायुः सहपरिवारो देवता प्रत्योधि देवता स्त्री एक क्षु प्रलम्ब को नाम राक्षसस्तस्य, अष्टादश कोटि, भूत प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, काकिनी, हाकिनी, याकिनी, राकिनी वैताल, जिन्द भैरवादि, कामिनी सर्व दुष्ट ग्रहान् बध्नातु॥ मम सपरिवारकस्य सर्वता मां रक्ष २ अचलं ऽचलं आक्रम्य २ महा वज्र कवचायास्त्राय राज शत्रु चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वापद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ज्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ वर्षन्तु०

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः।

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ कौवेर्यां दिशि॥ कुबेरः सहपरिवारो [illegible] देवता स्त्री एक क्षु अक्ष काल को नाम राक्षसस्तस्य अष्टादश

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोटि, भूत प्रेत पिशाच, ब्रह्म राक्षस, शाकिनी डाकिनी, काकिनी हाकिनी याकिनी राकिनी, वैताल जिन्द भैरवादि, कामिनी सर्व दुष्ट ग्रहान् बध्नात् ॥ मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामं रक्ष २ ऽचलं ऽचलं ऽआक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्रीं क्लीं क्लुं प्रों ज्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावीर दिवो ऽभ्रस्य विद्युतः रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि ऽव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ॥ ईशानः सह परिवारो देवता, प्रत्याधि देवता, स्तद्दिक्षु एक उन्मत्तको नाम राक्षसस्तस्य, ऽष्टादश कोटि, भूत प्रेत पिशाच, ब्रह्म राक्षस, शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी याकिनी राकिनी, वैताल जिन्द भैरवादि, कामिनी सर्व दुष्ट ग्रहान् बध्नातु ॥ मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामं रक्ष २ ऽचलं ऽचलं ऽआक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि सर्वोपद्रव नाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्रीं क्लीं क्लुं प्रों ज्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ वर्षन्तु ०

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ ऊर्ध्वायां दिशि ॥ ब्रह्मः सह परिवारो देवता, प्रत्याधि देवता स्तद्दिक्षु एक ऽआकाशवासो नाम राक्षसस्तस्य, ऽष्टादश कोटि भूत प्रेत पिशाच ब्रह्म राक्षस, शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी याकिनी राकिनी, वैताल जिन्द भैरवादि, कामिनी सर्व दुष्ट ग्रहान बध्नातु

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सपरिवारकस्य सर्वतो, मामरक्ष २ अचलं ऽचलं आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥
ऊँ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ज्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ऊँ वर्षन्तु ॥ ऊँ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ऊँ नमो भगवते रुद्राय ॥

अधस्ताद्दिशि वासुकिः सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु एक पातालवासी नाम राक्षसस्तस्य, अष्टादश कोटि, भूत, प्रेत, पिशाच ब्रह्मराक्षस, शाकिनी, डाकिनी काकिनी हाकिनी, याकिनी, राकिनी, वैताल जिन्द भैरवादि, कामिनी, सर्व दुष्ट ग्रहान् बध्नातु ॥ मम सपरिवारकस्य सर्वतो, मामरक्ष २ अचलं ऽचलं आक्रम्य ऽक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ऊँ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ज्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ऊँ वर्षन्तु ०

ऊँ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ऊँ नमो भगवते रुद्राय ॥

आवन्तरस्यां दिशि ॥ विष्णुः सहपरिवारो देवता प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु एक महाभीम नाम राक्षसस्तस्य, अष्टादश कोटि भूत प्रेत, पिशाच राक्षस, ब्रह्मपिशाच, ब्रह्मराक्षस, शाकिनी, डाकिनी काकिनी हाकिनी, याकिनी, राकिनी वैताल, जिन्द भैरवादि, कामिनी, सर्व दुष्ट ग्रहान बध्नातु । मम सपरिवारकस्य सर्वतो, मामरक्ष २ अचलं ऽचलं आक्राम्य ऽक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय शत्रु राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि सर्वोपद्रव नाशनाय ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म्यां दिशि ॐ नमो भगवते यम कालदण्डहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां
रक्ष २ हुं जटी स्वाहा॥ प्रव०॥ वायव्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते वायवे ध्वजहस्ताभ्यां
मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २ हुं जटी स्वाहा॥

ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ...

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते
रुद्राय॥ प्राच्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राणी, वज्र हस्ताभ्यां, मम
परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष २ हुं जटी स्वाहा॥ प्रब ब्रह्म द्विषो जहि प्रब
ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
आग्नेयां दिशि॥ ॐ नमो भगवते अग्नि ज्वाल हस्ताभ्यां, मम सपरिवारकस्य
सर्वतो माम रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा॥ प्रब ब्रह्म द्विषो जहि प्रब ब्रह्म
द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ याम्यां
॥ ऊपर लिखा है।
नैर्ऋत्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते नैर्ऋति खड्ग (काल) हस्ताभ्यां, मम सपरिवार
कस्य सर्वतो माम रक्ष २ हुं जटी स्वाहा॥ प्रब ब्रह्म द्विषो जहि प्रब ब्रह्म
द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
वारुण्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते वारुणी पाश हस्ताभ्यां, मम सपरिवार
कस्य सर्वतो माम रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा॥ प्रब ब्रह्म द्विषो जहि प्रब
ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ वायव्यां
॥ ऊपर लिखा है देखो॥
कौबेर्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते कौबेरी गदाङ्कुश हस्ताभ्यां मम स
परिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ हुं जटी स्वाहा॥ प्रब ब्रह्म द्विषो जहि
प्रब (ब्रह्म) द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो ...
ईशान्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते ईशानी त्रिशूल ...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ हुं जटी स्वाहा॥ ज्रब ब्रह्म द्विषो जहि॥
ज्रब ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
ऊर्ध्वायां दिशि॥ ॐ नमो भगवते ब्रह्माणि स्रुक स्रुव कमण्डल वक्ष सूत्राङ्कुश
हस्ते, मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ हुं जटी स्वाहा॥ ज्रब ब्रह्म द्विषो
जहि ज्रब ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते
रुद्राय॥ अधस्ताद्दिशि॥ ॐ नमो भगवते पातालवासिनि विषगल हस्ताभ्यां,
मम सपरिवार कस्य सर्वतो माम रक्षरक्ष हुँ जटी स्वाहा॥ ज्रब ब्रह्म द्विषो
जहि ज्रब ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो
भगवते रुद्राय॥ आवन्तरस्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते श्री महालक्ष्मी
पद्मारूढा पद्म हस्ताभ्यां, मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष रक्ष हुं जटी
स्वाहा॥ ज्रब ब्रह्म द्विषो जहि ज्रब ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते
रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ शिरो रक्षतु ब्रह्माणि, मुखं
माहेश्वरि, तथा॥ कंठ रक्षतु वाराही, एन्द्री चैव भुज द्वयम्॥१॥
चामुण्डा हृदयं रक्षेत, कुक्षिं रक्षेच्च वारुणि, वैष्णावी रक्ष पादौ, मे
पृष्ठ देशे धनुर्धरी,॥२॥ यथा ग्रामे तथा क्षेत्रे, रक्षस्व माम पदे २
ॐ ह्रीं सर्व मङ्गल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रियम्बके
गौरी नारायणी नमोस्तुते ह्रीं ॐ॥ ॐ ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी,
वैष्णवी वाराही इन्द्राणी, चामुण्डे, सिद्ध चामुण्डेश्वरी, गणेश्वरी,
नारसिंही महालक्ष्मी, सर्वतो दुर्गे हुं फट् स्वाहा॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐं ह्रीं श्रीं दु हुं फट् स्वाहा॥ कनक वज्र वैडूर्य मुक्ता ... कृत भूषे
हि २ आगच्छ २ मम कर्णे प्रविशय २ भूत भविष्य वर्तमान काल ...
दूर श्रवणं ब्रूहि २ मम शत्रून अग्नि स्तम्भनं कुरु २ शत्रुमुखं स्त...
कुरु परेषांगति सर्व मति शत्रुणां वाग्जृम्भणं स्तम्भनं कुरु २ मम शत्रु
कार्य हानि करि ममशत्रून सर्व उद्योग विध्वंस करि मम कार्य सिद्ध करि चामुण्डे
नेहार कहारक धारिणि नगरी पुरी पट्टण आस्थान सम्मोहिनी
असाध्य साधिनी॥ ॐ ह्रीं श्रीं देवि हन हुं फट् स्वाहा॥ ॐ आं ह्रीं सौं ऐं
क्लीं हूँ सौं ग्लौं श्रीं क्रौं एहि २ भ्रम्भाम्बाहि सकल जगन मोहनाय मोहनाय सकला
ण्डज पिण्डजान भ्रामय २ जरा प्रजा वशंकरी सम्मोहे २ महामाये अष्टादश
पीठ रूपिणी अमलवार्यु स्फुर २ प्रस्फुर २ कोटि सूर्यप्रभा सुखि चन्द्र जटा
। रक्ष २ मम शत्रून भस्मी कुरु कुरु विश्व मोहिनी हुं क्लीं हुं हुं फट्
स्वाहा॥

ॐ नमो भगवते कामदेवाय, इन्द्राय, वसावणाय, इन्द्र संदीप वणाय,
क्लीं क्लीं सम्मोहन वणाय, ब्मूं ब्लूं सन्तापन बणाय, सः सः वशीकरण
वणाय, कम्पित २ हुं फट् स्वाहा॥ क्लीं क्लीं नमो भगवते काम
देवाय, सर्व जन प्रियाय, सर्व जन सम्मोहनाय, ज्वल ज्वल प्रज्वल
... २ वद २, तप २, सम्मोहय २, सर्व जन मे वश्यं कुरु २ स्वाहा॥
नमो विष्णवे॥ ॐ नमो नारायणे। ॐ जय जय गो...
स्वाहा॥ सहस्रसार ज्वालावर्त छमप्रों हन हन ...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ तत सवितुर्वरेणियम भर्गो देवस्य धीमही धीयो योनः प्रचोदयात् ॥
श्रीमन्नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ श्रीमते नारायणाय नमः
ॐ [illegible] ह्रीं क्षौं उग्रवीरं महाविष्णु ज्वलन्तं सर्वतो मुखं नृसिंहं
भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम क्ष्रौं ह्रीं ऐं ॐ ॥ भगवन् सर्व
विजय सहस्त्राराय राजितं ॥ शरणं त्वां प्रपन्नोस्मि श्री कंर श्री
सुदर्शनम् ॥ अरुणी वारुणि चैव स विग्रह निवारिणे ॥ सर्व कर्म
करी ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥
सिद्धि करने की विधि ॥ अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक ग्राहयित्वा ततो
महाविद्या सिद्ध्यति ॥ अशिक्षितं नोपयुञ्जीत ॥ अहं न जाने
न च पार्वतीश एक विंशतिवाराणि परिजाप्य शुचिर्भूत ॥
पत्रं पुष्पं फलं तोयं दद्यात् स्त्रियो वा पुरुषोऽपि वा ॥
अवश्यं वशमित्य दुरात्मना च परेण वा ॥ महाविद्यां [illegible] तां पुंसां
मनः क्षेत्रं करोति यः ॥ सप्तरात्रे व्यतीतायां शत्रुणां तद्विनश्यति ॥

॥ अन्य फलवती प्रयोग ॥

ज्वर में ॥ ॐ कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दि मानन्दि मावाह ज्वरं मृत्यु
[illegible] घोरं विषम नाशय मे ज्वर ॥
दिनाशं
ॐ भगवते रुद्राय हृदये अमृताभिवर्षाय मम ज्वर रोग शान्तिं
[illegible]

[illegible] काल दण्ड नमोस्तुते ॥ काल दण्ड निपातेन भूम्या मन्तर्हित

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज्वर प्रयोग ॥ समुद्रस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम राक्षसस्तस्य मूत्र पुरीषाभ्यां हुताशनं शमय शमय स्वाहा ॥

प्रसव जल्दी वास्ते ॥ हिमवतउत्तरे पार्श्वे चपला नाम यक्षणी तस्या नूपुर शब्देन विशल्या भव गर्भिणी ॥

गायत्री मन्त्र सूर्य का ॥ ॐ भास्कराये विद्महे महद्द्युतिकराय धीमही तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥ प्रतिकूल कारिणी नश्येत् ॥ अनुकूल कारिणी अस्तु ॥

~~महालक्ष्मी की गायत्री ॥ महा देवी विद्महे विष्णु पत्नि च धीमही तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्~~

महालक्ष्मी जी की गायत्री ॥ ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे विष्णु प्रियायै धीमही तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्

कामाख्या देवी की गायत्री ॥ ऐं कामेश्वरी विद्महे वागेश्वरीन् धीमहि तन्नो क्लीन्नः प्रचोदयात् ॥

इन्द्र की गायत्री ॥ ॐ तत पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात्

नन्दी जी की ॥ ॐ तत पुरुषाय विद्महे चक्र तुण्डाय धीमहि तन्नो नन्दिः प्रचोदयात

गणेश जी की ॥ ॐ तत पुरुषाय विद्महे वक्र तुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात

षडानन की ॥ ॐ तत पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि तन्नः षड्मुखः प्रचोदयात ॥

गरुण जी की ॥ ॐ तत पुरुषाय विद्महे स्वर्ण पक्षाय धीमहि तन्नो गरुड़ः प्रचोदयात

वासुदेव जी की ॥ ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात

ब्रह्मा जी की ॥ ॐ वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात

शंकर जी की = ॐ पंच वक्त्राय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(हनुमान जी की) गायत्री ... विद्महे वायु पुत्राय धीमही तन्नो मारुति प्रचोदयात् ॥

श्मशान काली की गायत्री ॥ ॐ क्रीं महा कालिके श्मशान वासिनी विद्महे धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात् ॥

कामदेव की गायत्री ॥ ॐ मन्मथेशाय विद्महे काम देवाय धी महि तन्नो अनंगः प्रचोदयात् ॥

नृसिंह जी की गायत्री ॥ ॐ वज्र नखाय विद्महे तीक्ष्ण दंष्ट्राय धीमहि तन्नो नृसिंह प्रचोदयात् ॥

अग्नि की ॥ ॐ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥

कात्यायनी जी की । ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्य कुमारी धीमहि तन्नो दुर्गी प्रचोदयात् ।

त्रिपुरसुन्दरी की ॥ वाग्भवं त्रिपुरा देव्यै विद्महे कामेश्वरी धीमहि तन्नो क्लिन्ने प्रचोदयात्

भुवनेश्वरी जी की ॥ ह्रीं भुवनेश्वरी विद्महे आद्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

अर्धनारीश्वर की ॥ ऐं ह्रीं श्रीं आनन्देश्वराय विद्महे सुरादेव्यै धीमहि तन्नोऽर्ध नारीश्वर प्रचोदयात् ॥

गुरु गायत्री ॥ ॐ गुरु देवाय च विद्महे ततपुरुषाय धी महि तन्नो गुरु प्रचोदयात्

तारादेवी की ॥ ॐ तारकायै विद्महे महाकालप्रियायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥

अष्टाक्षरी की ॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे, अष्टाक्षरायै धी मही तन्नः चण्डी प्रचोदयात् ॥

पशु गायत्री ॥ ॐ पशु पाशाय विद्महे विश्वकर्मणे धी मही तन्नो जीवः प्रचोदयात्

उग्रतारा गायत्री = ॐ उग्र तारे धी महि सिद्ध सारे च विद्महे तन्नो नीले प्रचोदयात् ॥

उग्र तारा की = ॐ शम्भु पुत्र्यै विद्महे महोग्रायै च धी मही तन्नस्तारे प्रचोदयात् ॥

नीलसरस्वती = तारादेवी की ॐ नील सरस्वती विद्महे श्री तारायै धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात् ॥

ॐ भग भवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शौरिः प्रचोदयात् (शनि गायत्री)

... कारिणी नश्येत् ॥ अनुकूल कारिणी अस्तु ॥ पञ्चम्यां च नवम्यां

... ॥ पठित्वा तु महा विद्या श्री कामः सर्वदा पठेत् ॥

ॐ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरा देवीं च विद्महे कामेश्वरीं च धी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पद्म राजाय [illegible]
ज्ञागलाग्नि देवताय विद्महे शिरसि [illegible] धी महि। तन्न श [illegible]

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं ईश्वरीं सर्व भू[illegible] [illegible]मिहो पह्वे
श्रियम्॥ श्रीर्मे भजतु अलक्ष्मीर्मे नश्यतु॥ यदन्ति यश्च दूरके [illegible]
विन्दति मामिह॥ पवमान वितज्जहि॥ यदुत्थितं दुःखं भवति ततसर्वं [illegible]
स्वाहा॥ ॐ गायत्र्यै स्वाहा॥ ॐ सावित्र्यै स्वाहा॥ ॐ सरस्वत्यै स्वाहा॥ सह[illegible]
परमा देवी शत मूला शताङ्कुरा सर्वं हरतु मे पापं दुर्वा दुःस्वप्न नाशिनी॥
काण्डात काण्डातप्ररोहन्ती॥ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णु क्रान्ते वसुन्धरे॥
शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मामपदे पदे॥ १२॥

॥ गौर सर्षपेन दिग्बन्धन॥

अत्रिणा त्वा क्रिमे हन्मि कण्वेन जमदग्निः विश्वावसोर्ब्रह्मणा हतः क्रुमीणां राजा
अप्येषां स्थ पतिर्हतः॥ अथो माता अथो पिता अथो स्थूरा अथो क्षुद्राः अथो
कृष्णाः अथो श्वेताः अथो आशातिका हताः श्वेताभिः सह सर्वे हताः आहरावद्य
शृतस्य हविषो यथा तत्सत्यं वदमुं यमस्य जम्भयोः आदधामि तथा हितत्
खण फणम्रासि ब्रह्मणा त्वा शपामि॥ ब्रह्मणस्त्वा शपथेन शपामि॥ घोरेण
भृगूणां चक्षुसा प्रेक्षे। रौद्रेण त्वाङ्गिरसां मनसा ध्यायामि॥ अघस्यत्वा
धारया विध्यामि॥ अधरो म तपद्यस्वासौ उच्छुदशि मिजा वीरे तल्पेजे तल्प
उच्छुदगिरीं रनु प्रवेशय मरीची रूप संनुद यावदितः पुरस्तादुदयाति सूर्यः
तावदितो ऽमुं नाशय यो ऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः खड्ग फट् जहि छिन्धि
भिन्धि हन्धि कटु इत वाचः क्रूराणि परि बाहिरीदं नमस्ते [illegible]
ज्वंसीः द्विषन्तं मे अभिनाशयतं मृत्वो मृत्वे तयअरि [illegible]
भञ्ज मञ्ज स्वाहा॥ ॐ श्रीं कृष्ण वासमे नारासिंह [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विद्युज्ज्वाला जिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे क्ष्रौं क्ष्म्यैं नमो
नारायणाय घ्रिणु: सूर्यादित्यों सहस्रांशु हुं फट्।। अब ब्रह्माद्रि फो जोहे
सूर्य उलूक काक कङ्क कपोतादि वृश्चिक कोग्र द्रंष्ट्रा करोग्र विषाने
महाभूत प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस जिन्द वैताल किल्विषादि
महारोगविषान्निरोग विषं कुरु स्वाहा।। प्रार्थना अक्षि स्पन्दं दुस्वप्नं भुज
स्पन्दं च दुर्मतिम् दुश्चिन्तां दुर्गतिं रोगभयं नाशय शांकरि ।।१४।।
प्रारम्भवी
महाविद्या कृतवतो योस्माकं द्वेष्टि योऽरिष्टं स्मरोति ।।
यावद् एकविंशतिंकृत्वा तावधिकं नाशय ।। ब्रह्मविद्यामिमां
देवीं नित्यं सेवेत यः सुधीः।। ऐहिका मुष्मिकं सौख्यं सिद्ध
(महात्म)
यस्विन्न संशयः ।।१५।। ऐनां विद्यां महाविद्यां यु दुषयोति मानवः ।।
सो अवश्यं नाशमाप्नोति षणमासाद चिरेण वै ।।१६।। अग्रतः
पृष्ठतः पार्श्वे ऊर्ध्वतो रक्ष मे सदा।। चण्ड घण्टा विरुपाक्षी
त्वां भजे जगदीश्वरीम् ।।१७।। एवं विद्यां महाविद्यां त्रिसन्ध्यं स्तौति
मानवः।। दृष्वा जनैर्दुष्टजनाः सर्व मोहवशं गताः ।।१८।।
तामग्नि वर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्म फलेसु जुष्टाम्।।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां दुःशमनायै नमः ।।१९।। मातर्मे
मधु कैटभघ्नि महिष प्राणाः पहारोद्यमे हेला निर्मित धूम्रलोचन
वधे हे चण्डमुण्डार्दिनि ।। निःशेषी कृत रक्तबीज दनुजे नित्ये
ध्वंसिनी संहराशु दुर्गितं दुर्गे नमस्ते अम्बिके।।२०।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वारिदलोचन सहपरिगीतं नास्या सुरकर निकरैः पूरित मेघ द्रुगानां [illegible]
सहोदरवत् ॥ अब ब्रह्म द्विषो जहि ॥

कालदण्ड परं मृत्यु विजया बन्धयाम्यहम् ॥ पञ्चयोजन [illegible]
मृत्योश्च मुख मण्डलं तस्माद् रक्ष महाविद्ये भद्रकालो नमोऽस्तु ते ॥२१॥
अब ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॥ सिद्ध लक्ष्मी स्वाहा ॥ ॐ क्लीं ह्रीं
श्रीं ॐ आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा चीरमात्मनः ॥ वासांसि मम
गावश्च अन्न पाने च सर्वदा ॥२२॥ ततो मे श्रियं आनिरिपाय श्रियं वयो
जरितृभ्यो दधाति ॥ श्रियं वसाना अमृतत्व मायन् भवन्ति सत्या
समिथा मितद्रौ श्रियं ॥ एवैनं तच्छ्रिया मादधाति संतत मृचा वषट्कृत्यं
संतत्यै संधीयते प्रजया पशुभिर्य एवं वेद ॥२३॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लुं
स्रों हुं फट् स्वाहा ॥ अब ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ सह नाववतु सह नौ
भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्वि नावधीत मस्तु मा विद्विषावहै ॥
ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॥ (अथर्वणरहस्योक्तं) शान्तिस्तवम् पठेत् ॥

ॐ दुर्गां शिवां शान्ति करीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्व लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि
सदाम्बिकाम् ॥१॥ मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्व
वन्द्याम् चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥२॥ सर्व देवमई देवी सर्व देव नमस्कृताम्
ब्रह्मेशा विष्णु नमितां प्रणमामि सदां उमाम् ॥३॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां
दिव्य स्थान निवासिनीम ॥ योगनीं योग विद्यां च चण्डिकां प्रणमाम्यहम्
॥४॥ ईशान मातरं देवी मीश्वरी मीश्वर प्रियां ॥ प्रणतोस्मि सदां दुर्गां
संसारार्णवतारिणीम ॥५॥ इदं यः पठते स्तोत्रं शृणुया आऽपि भक्तितः ॥ स मुक्तः
सर्व पापेभ्यो दुर्गा लोके महीयते ॥६॥ यस्या स्मरण मात्रेण पलायन्ते महा[illegible]
सर्वो पास्या सर्व माता शैवी शक्ति र्महाद्भुता ॥७॥ सर्व बुद्धेदा देवी मन्तर्यामि
स्वरूपिणी ॥ दुर्गा संकट हन्त्रीति दुर्गेति प्रथिता भुवि ॥८॥ वैष्णवानां [illegible]
शैवानां उपास्येयं च नित्यशः ॥ मूल प्रकृति रूपा सा सृष्टि स्थिति [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३५३

...फें ह्सौः हसक्षमल वरयूं सहसखफ्रें सहौं सहक्ष ... गुरु पारसमणि शक्ति सहितं श्री पादुकां पूजियामि नमः

(प्रणाम करने समय)

... मण्डलाकारम व्याप्तं एन चराचरम् ॥ तत्पदं दर्शितं एन ... श्री गुरुवे नमः। ४॥ नमोस्तु गुरुवे तस्मैये इष्ट देव ...पिणे। यस्य वाग मृतं हन्ति विषं संसार संज्ञकम् ॥ ५ ॥

(स्तुति)

नमस्ते नाथ भगवन ! शिवाय गुरु रुपिणे ॥ विद्यावतार संसिद्धये स्वीकृता नेकविग्रहः ॥ ६ ॥ नारायणस्वरूपाय पर्मार्थैक रुपिणे। सर्वज्ञान तमो भेद भानवे। चिद्घनायते ॥ ७ ॥ स्वतन्त्राय दया दयाक्लृप्त विग्रहाय शिवात्मने ॥ परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्य रुपिणे ॥ ८ ॥ बिवेको नाम बिवेकाय विमर्शाय विमर्शिणाम् ॥ प्रकाशीनां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञान रुपिणे ॥ ९ ॥ पुरस्तात्पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः ॥ सदामच्चित रुपेण विधेहि भवदासनम् ॥ १० ॥ त्वत प्रसादहं देव ! कृत कृत्योस्मि सर्वतः ॥ मायामृत्यु महा पाशाद्विमुक्तोस्मि शिवोस्मि च ॥ इति ॥

(गुरुस्तव)

...कृ समाभासं शरत्पंकज लोचनम् ॥ ईषद्धास्यं ... पूर्णेन्दु सदृशाननम् ॥ दिव्यरूप म्बरधरं दिव्य ...) सुरक्त शक्ति संयुक्तं वामभाग मनोहरम् ॥ ... लक्षणा लक्षितम् ॥ सहस्रसारे महापद्मे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

नमामि सद्गुरु शान्तं (गुरुसाधन तन्त्रे १ पटले)
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
प्रत्यक्षं शिव रूपिणाम् ।। शिरसा ... श्री गुरु परमानन्द वन्दे
योग पीठस्थ मुक्ति कामार्थ सिद्धये ।। श्री गुरु परमानन्द वन्दे
सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते परमं ।। अज्ञानतिमिरान्धस्य
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे

ॐ ब्रह्मस्थान सरोज मध्य विलसच्छीतांशु पीठ स्थितम् ।।
स्फूर्जत्सूर्य रुचिं वराभय करं कर्पूर कुन्दोज्वलम् ।। श्वेतः स्रग्
लेपनयुतं विद्युद्रुचा कान्तया ।। संश्लिष्टार्ध तनुं प्रसन्न वदनं
वन्दे गुरुं सादरं ।।१।। मोहध्वान्त महावृतां ग्रहवतां चक्षुश्च
चोन्मीलयन् ।। यश्चाचक्रे रुचिराणि तानि दयया ज्ञानांजनाद्यैः
नैः ।। व्याप्तं यन्महसा जगत्त्रयमिदं तस्य प्रबोधोदयं ।। तं वन्दे
शिव रूपिणां निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ।। २ ।। मातंगी
भुवनेश्वरी च बगला धूमावती भैरवी ।। तारा छिन्नमस्ता
... भगवती श्यामा रमा सुन्दरी ।। दातुं नः प्रभवन्ति
वांछित फलं यस्य प्रसादं बिना ।। तं वन्दे शिव रूपिणां निज
गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ।। ३ ।। काशी द्वार वती प्रयाग मथुरा
योध्या गया वन्तिका (मारा) (हरिद्वार) पुष्कर कांचि कोत्कलगिरी
श्री शैल विन्ध्यादयः ।। नैते तारयितुं भवन्ति कुशलाः यस्य
प्रसादं बिना ।। तं वन्दे शिव रूपिणाम् निज गुरुं सर्वार्थ
सिद्धि प्रदम् ।। ४ ।। रेवा सिन्धु सरस्वती त्रिपथगा सूर्यात्मजा
कौशिकी ।। गंगासागर संगमादितनया लोहित्य गोदादयः ।।
नालं प्रोक्त फल प्रदान समये यस्य प्रसादं बिना । तं वन्दे
शिव रूपिणां निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ।।
विमला यशः सुकविता पाण्डित्य मारोग्यता ।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेदे वाक्य पटुता कुले चतुरता गाम्भीर्य भक्तोमिता ।।
प्रागल्भ्यं प्रभुता गुणे निपुणता यस्य प्रसादाद्भवेत् ।।
वन्दे शिवरुपिणां निजगुरुं सर्वार्थ सिद्धिप्रदम् ।। ६ ।।
वाकेशो हरि रंबिकास्मर हरो माता पिताभ्यागता ।।
आचार्या: कुल पूजितो यतिवरा वृद्ध स्तथा भिक्षुका: ।। नैते
यस्य तुलां व्रजान्ति कलया कारुण्य वारां निधे, तं
वन्दे शिव रुपिणां निजगुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ।। ७ ।।
ध्यानं दैवत पूजनं गुरु तपो दानाग्नि होत्रादय: ।। पाठो
होमनिषेवनं पितृ मखाद्यभ्यागतार्चा वलिम् ।। येते
व्यर्थ फला भवन्ति नियतं यस्य प्रसादं बिना ।। तं वन्दे
शिव रुपिणां निजगुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ।। ८ ।।

(साधन)

पूर्वाशाभिमुखो कृतांञ्जलि पुट: श्लोकाष्टकं य: पठेत् ।
पौरश्चर्य विधिं विनापि लभते मन्त्रस्य सिद्धि पराम् ।।
नो विघ्नै: परिभूयते प्रति दिनं प्राप्नोति पूजा फलम् ।।
देहान्ते परमं पदम विशते यद्योगिनां दुर्लभम् ।।
वाम केश्वर तन्त्रे पार्वतीश्वर संवादे
...वराज शुभ भूयात् ।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

दुर्गा जी
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
ध्यान
मन्त्र

ॐ जटा जूट समायुक्तां मर्द्धेन्दु कृतलक्षणाम ।। लोचन संयुक्तां पद्मेन्दु सदृशाननाम्।। नीलपुष्प वर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम्।।१।। नव यौवन सम्पन्नां सर्वाभरणभूषिता ।।२।। सुचारु वदनां तद्वत्पीनोन्नत पयोधराम्। त्रिभंगस्थ संस्थान महिषासुर मर्दिनीम् ।।३।। त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्र क्रमादधः।। तीक्ष्ण वाणां तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत ।।४।। खेटकं पूर्ण चापं च पाशं अंकुशमूर्द्धवज घंटां वा परशुं वापि वामतः सन्निवेदयेत् ।।५।। अधस्तान् महिषं तद्वद् द्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् ।। शिरश्छेदोद्भवं तद्वद् दानवं खड्ग पाणिनम् ।।६।। हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्द्दे निर्दयन्त्र विभूषितम् ।। रक्त रक्तो कृताङ्गं च रक्तविस्फारिते क्षणम् ।।७।। वेष्ठितं नाग पाशेन भृकुटी भीषणाननम् ।। सपाश वाम हस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ।।८।। वमद रुधिरं वक्त्रं च देव्याः सिंहप्रदर्शयेत् ।। देव्यास्तु दक्षिणां पादं सम सिंहो परिस्थितम् ।।९ किंचिद् ऊर्ध्वं तथा वामं अंगुष्ठो महिषोपरि ।। स्तूयमानञ्च तद्रूपमरैः सन्निवेशयेत् ।।१०।। उग्रचण्डा प्रचंडा च चण्डोग्रा चण्ड नायका ।। चण्डा चण्डवती चैव चंड रूपाति चण्डनायिका ।। अभि शक्तिभिरष्टाभिः सततं परिवेष्ठितम् ।। चिंतयेत् जगतां देवीं धर्म कामार्थ मोक्षदाम् ।। (हाथ में फूल लेके)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ माम् बध्यनिं महा देवीं कुमारीं सिंह वाहिनीम् ॥ दानवांस्
तर्जयन्तीञ्च सर्व काम दुधाम शिवाम् ॥१॥ ध्यामि मनसा
दुर्गा नाभिमध्ये बिंबास्थितम् ॥ आगच्छ वरदे देवि ! दैत्य
दर्पनिपातिनीम् ॥२॥ पूजां गृहाण सुमुखि ! नमस्ते शंकर
प्रिये ॥ वस्ततीर्थ मयं वारि सर्व देव समान्वितम् ॥३॥ इमं
यन्त्र समागच्छ ।(इमं घटं समागच्छ)(इमं कुण्डं समागच्छ) तिष्ठ
त्व गणैः सह ॥ दुर्गे देवि ! समागच्छ सानिध्यं मिह कल्पय ॥४॥
बलिं पूजां गृहाणात्वम् मष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ रक्षां कुरु
सदां भद्रे ! विश्वेश्वरि नमोस्तुते ॥५॥ ऐहि दुर्गे दुर्तौघ
नाशिनी प्रचण्ड दैत्यौघ विनाश कारिणी उमे ! महेशार्द्ध
शरीर धारिणी स्थिरा भवत्वं साधन कर्मणी ॥ एहि दुर्गे
महा महाभागे मम यजमानस्य रक्षार्थं सर्वदा ॥ आवाह
याम्यहं देवि सर्वकामार्थ सिद्धये (आवाहयाम्यहं देवि
अमुक कार्य सिद्धये

कलश हो तो कलश में फूल डाल दो
यन्त्र हो या कुण्ड हो तो उसमें डाल दे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आवाहन = का तान्त्रोक्त मन्त्र। ॐ आगच्छ वरदे देवि! सर्व सिद्धि प्रदायिनी
यावत्वृतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥

आसन मंत्र = अनेकरत्न संयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ॥ कार्तस्वर मयं दिव्यं आसनं प्रति गृह्यताम् ॥

पाद्यमन्त्र = गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् ॥ तोयमेत सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रति गृह्यतां ॥

अर्घ मन्त्र = तिल सरसों जौ फूल दूब चन्दन आम के पत्ते चीनी डाल के एक फूल की थाली में या चांदी की थाली या गिलास में दे।

(ॐ निधीनां सर्व रत्नानां त्वमनर्घ गुणाह्यसि ॥ सिंहोपरिस्थिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ (मधुपर्क दे घी देशी शहद दही बराबर मिला के एक कटोरी में दे।

मधुपर्क मन्त्र = दधि मधु घृत समायुक्तं पात्र युग्म समन्वितम् ॥ मधुपर्क गृहाणात्वं शुभदा भव शोभने ॥

आचमन मन्त्र = कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभी स्वादु सुशीतलं । तोयं आचमनीयार्थं देवि! त्वं प्रति गृह्यताम् ॥

दुग्ध स्नान मन्त्र = कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पय: स्नानार्थं मर्पितम् ॥ फिर शुद्ध जल से स्नान करावे

दधिस्नानमन्त्र = पयस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशि प्रभम् । दध्यानीतं मया देवि! स्नानं प्रति गृह्यताम् ॥

फिर शुद्ध जल से स्नान करना चाहिये।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घृतस्नान मंत्र = नवनीत समुत्पन्नं सर्व संतोष कारकम् ॥
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ फिर शुद्ध जल से
मधुस्नान मन्त्र = तरु पुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ॥ तेजः
पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ फिर शुद्ध जल से
शक्कर से स्नान कराने का मन्त्र = इक्षुसार समुद्भूतं शर्करा पुष्टि कारिका
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ फिर शुद्ध जल से
पंचामृतस्नानमन्त्र = पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम ॥
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
लाल चन्दन के जल से स्नान कराओ = (मलियाचल संभूतं चन्दनागरु
संयवम् ॥ चन्दनं देवि देवेशि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शुद्ध जल
उबटन माई को प्रदान करो = फिर शुद्ध जल से स्नान करावे फिर
वस्त्र माई को प्रदान करे = (पट्टकूल युगं देवि ! कंचुकेन
समन्वितम् ॥ परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे ! दुर्गति नाशिनि प्रति
गृह्यताम् ॥
जनेऊ प्रदान करे = (ॐ स्वर्ण सूत्र मयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥
आचमन करावे =
मंगलसूत्र माई को प्रदान करे (ॐ सौभाग्य सूत्रं वरदे सवर्ण मणि संयुतम् ॥
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यम देहि मे सदा
कंठ सूत्र प्रति गृह्यताम् ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अष्टगंधचढ़ावे - ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषणीम। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पहावे श्रियम् ॥ चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्॥ विलेपनम च देवेशी! चन्दनं प्रतिगृह्यता

हल्दी चढ़ावे - (हरिद्रा रंजिते देवि! सुख सौभाग्यदायिनी॥ तस्मात्वं पूजयाम्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छ मे॥ हरिद्रां प्रतिगृह्यताम्॥

गुलाल चढ़ावे - कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनी काम सम्भवम्। कुम्कुमेनार्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरी॥ गुलालं प्रतिगृह्यतां॥

सिंदूर चढ़ावै - सिंदूरमरुणाभासं जपा कुसुम सन्निभं॥ अर्पितं मे मया देवी! प्रसीद परमेश्वरी सिंदूरं प्रतिगृह्यतां।

काजल चढ़ावे - चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे! शान्ति कारकम्॥ ज्योतिरुतपन्नं गृहाण परमेश्वरी॥

दुर्वा चढ़ावे - (दुर्वादले श्यामले त्वं महीरुपे हरिप्रिये॥ अतो दुर्वाभिर भवतीम पूजियामि सदा शिवे॥ दुर्वांकुर प्रतिगृह्यतां

बेलपत्ती चढ़ावे - अमृतोद्भव: श्री वृक्षो महादेवप्रिय: सदा॥ विल्व पत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरी॥ विल्वपत्रं समर्पयामि॥

पंचपल्लव चढ़ावे - आम पीपल बरगद पाकर शमी या आंवला इन पांच प्रकार की पत्तियों को प्रदान करे (इष्टदिव्ये पंचपल्लव प्रतिगृह्य

फलों की माला चढ़ावे - शरद्काले समुद्भूतां निशुम्भ... फलमालावरां देवि! गृहाण सुर पूजिते॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसाद चढ़ावे – (जदानानिर्मलान ... मुक्ता मणि समन्विताम् ॥
गृहाणत्वं महादेवी! देहि मे निर्मलांधियेम् ॥

सोने को माला चढ़ावे – (मुक्त फल युक्तां मालां रत्न वैडूर्य सुप्रभाम् ॥ मारीक्य
स्वर्ण ग्रथितां गृह्यतां वरदे! नमः ॥ स्वर्णमाला
॥ प्रतिगृह्यताम् ॥

फूलमाला मन्त्र = पद्म शंख पुष्पादि शत पत्रैर्विचित्रताम् ॥ पुष्पमाला
प्रयच्छामि गृहाणात्वं सुरेश्वरी!

खुला फूल चढ़ावे = पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः ॥ पूजा ते
कल्पते देवि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥

माई अलंकार गहना = (हार कंकरा केयूर मेखला कुण्डलादिभिः ॥
रत्नाढ्या कुण्डलोपेतं भूषरां प्रतिगृह्यताम् ॥

अंगपुजा करे = एक पुष्प ले के माई के मूर्ती या यन्त्र या कलश में
लगाकर यह यह मन्त्र बोलता जाय = माई के चरण से शुरु करे।
ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजियामि नमः ॥ ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ
पूजियामि नमः ॥ ॐ मंगलायै नमः जनुद्वयं पूजियामि नमः ॥ ॐ
कात्यायन्यै नमः उरुद्वयं पूजियामि नमः ॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं
पूजियामि नमः ॥ ॐ कमल वासिन्यै नमः नाभिं पूजियामि नमः ॥ ॐ
शिवायै नमः उदरं पूजियामि नमः ॥ ॐ क्षमायै नमः हृदयं पूजियामि नमः ॥
ॐ कौमार्यै नमः स्तनौ पूजियामि नमः । ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजियामि
नमः । ॐ महागौर्यै नमः दक्षिण वाहु पूजियामि नमः ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः
... पूजियामि नमः ॥ ॐ रमायै नमः स्कन्धौ पूजियामि नमः ॥
...यै नमः कंठं पूजियामि नमः ॥ ॐ महिष मर्दिन्यै नमः ॥ ॐ
... नमः ॥ ॐ सिंह वाहिन्यै नमः मुखं पूजेयामि नमः ॥ ॐ
...यै नमः ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

ॐ कात्यायन्ये नमः सर्वाङ्ग पूजयामि नमः ॥
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धूप दीप दिखाओ = (ॐ अग्निर्ज्योतिर ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ सूर्यो ज्योतिर ज्योतिर वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्वलम् ॥ दीपं दास्यामि देवेशि ! सुप्रीता भव सर्वदा ॥

नैवेद्य प्रदान करो = पांच ग्रास अपने हाथ से खिलाओ।

प्राणाय स्वाहा

अपानाय स्वाहा

उदानाय स्वाहा

व्यानाय स्वाहा

समानाय स्वाहा

अन्न चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्यचलं कुरु

आचमन मन्त्र = गंधतोयं समानीतं स्वर्ण कलशे स्थितम् ॥ हस्तप्रक्षालनार्थाय जलं निवेदयेत् ॥

ऋतु फल प्रदान करे = (द्राक्षा खजूर कदली पनिस आम्र कपित्थकम् ॥ नारिकेल इक्षु जंवादि फलानि प्रति गृह्यताम् ॥

ताम्बूल लौंग इलाइची दे ॥

एला लवंग कस्तूरी कर्पूरैः पुष्पवासितां बीटि-
कास्यार्थं समर्पयामि सुरेश्वरि ॥

ध्यान

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ सरस्वती कवच ॥

श्रृणु वत्स प्रवक्ष्यामि कवचं सर्व कामदम् ॥ श्रुतिसारं श्रुतिमुखं श्रुत्युक्तं
श्रुति पूजितम् ॥१॥ उक्तं कृष्णेन गोलोके मह्यं वृन्दावने ॥ रासेश्वरेण विभुना
रासने रास मंडले ॥२॥ अतीव गोपनीयं च कल्प वृक्षसमं परम् ॥ अश्रुताद्भुत
मन्त्राणां समूहैश्च समान्वितम् ॥३॥ यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मन् बुद्धिमांश्च बृहस्पतिः ॥
यद्धृत्वा भगवान्छुक्रः सर्व दैत्येषु पूजितः ॥४॥ पठनाद् धारणाद् वाग्मी
कविन्द्रो वाल्मिको मुनिः ॥ ५॥ स्वायम्भुवो मनुश्चैव यद्धृत्वा सर्वपूजितः ॥
कणादो गौतमः कणवः पाणिनिः शकटायनः ॥६॥ ग्रन्थं चकार यद्धृत्वा
दक्षः कात्यायनः स्वयम् ॥ धृत्वा वेद विभागं च पुराणान्यखिलानि च ॥७॥
चकार लीलामात्रेण कृष्ण द्वैपायनः स्वयम् ॥ ~~याज्ञवल्क्यश्चकार सः~~ ॥
सतातपश्च संवर्त्तो वशिष्ठश्च पराशरः ॥८॥ यद्धृत्वा पठनाद् ग्रन्थं
याज्ञवल्कश्च कारसः ॥ ऋष्यश्रृंगो भरद्वाज आस्तीको देवलस्थ ॥९॥
जैगीषव्योऽथ जावालि र्यद्धृत्वा सर्वपूजितः ॥ कवचस्यास्य विप्रेन्द्र ऋषिरेष
प्रजापतिः ॥१०॥ स्वयं बृहस्पतिश्छन्दो देवो रासेश्वरः प्रभुः ॥ सर्व
तत्त्व परिज्ञान सर्वार्थ साधनेषु च ॥११॥ कवितासु च सर्वासु विनियोगः
प्रकीर्तितः ॥ ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः ॥ १२॥ श्रीं वाग्देवतायै
स्वाहा भालं मे सर्वदावतु ॥ ॐ सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रं पातु निरंतरम् ॥
॥१३॥ ॐ श्रीं ह्रीं भारत्यै स्वाहा नेत्र युग्मं सदावतु ॥ ॐ ह्रीं वाग्वादिन्यै
स्वाहा नासां मे सर्वतोवतु ॥१४॥ ह्रीं विद्याधिष्ठातृ देव्यै स्वाहा ओष्ठं
सदावतु ॥ ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्म्यै स्वाहेति दन्तपंक्ती सदावतु ॥१५॥
ऐमित्येकाक्षरो मन्त्रो मम कण्ठं सदावतु ॥ १६॥ श्रीं विद्याधिष्ठातृ देव्यै
स्वाहा वक्षः सदावतु ॥१६॥ ॐ श्रीं ह्रीं मे ग्रीवां स्कन्धं मे श्रीं सदावतु ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मता ताम्र रजत शुभकारी। स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी।
जो यह शनि चरित्र नित गावे। कबहुं न दशा निकृष्ट सतावे।
हनुमान से बचन बद्ध ये। तेरे भक्त को नहीं सताये।
जो नित हनुमान को ध्यावे। उसके निकट न ये शनि जावें।
जो सहस्त्र नाम हनुमान का लेता। थर थर कांपे शनी देवता।
अद्भुत शनी दिखावें लीला। करे शत्रु के नाश बल ढीला।
जो पंडित सुयोग्य बुलवाई विधिवत शनि ग्रह शान्ति कराई।
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावे दीप दान दे बहु सुख पावे।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे। काले तिल का भोग लगावे।
परिक्रमा करे प्रेम से। बिनय करे नित बड़े प्यार से
तराम सुन्दर प्रभु दासा। शनि सुमिरत सब होत प्रकाशा।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रतिमा श्री शनिदेव की, लोह धातु बनवाय।
प्रेम सहित पूजन करे। सकल कष्ट कट जाय।
चालीसा नित नेम यह। कहहिं सुनहिं धर ध्यान।
निश्चय शनि ग्रह सुखद है। पावहिं नर सनमान।

=

कलशरखने के बाद कुमारीपूजन करना चाहिये

कन्यो को बैठा ले सामने (कुमारी पूजन) (आवाहन) का ध्यान फूल ले कर के करे

मन्त्राक्षर मयों लक्ष्मीं मातृणां रुपधारिणीम्॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यास्वरुपिणी आवाहयाम्यहम देवि सर्व कामार्थ सिद्धये॥ ऐहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थ मम सदा॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु॥ रक्षां कुरु सदां मे देवि विश्वेश्वरि नमोस्तुते॥ महिषघ्नि महामाये चामुंडे मुण्ड मालिनी द्रव्यं आरोग्य विजयं देहि देवि नमोस्तुते॥ भूत प्रेत पिशाचेभ्यश्च रक्षोभ्यश्च महेश्वरी॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्षमां सदा॥ सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके॥ शरण्ये त्रियम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवती देहि सर्वान कामान प्रदेहि मे॥ ॐ नमः पिशाचिनी करंकिनी त्रिशूल खड्ग हस्ते सिंहा... हे एहि आगच्छ २ इमां पूजां गृहाण गृहाण स्वाहा॥

... न्धसमारुढां नाना लंकार भूषितां॥ चतुर्भुजां महादेवीं ... वीतिनीम्॥ रक्तवस्त्र परीधानां बालार्क सदृशी ... मुनिगणैः सेवितां भव गेहिनीम॥ त्रिबलीबल ... सर्वेशीनीम्॥ रत्न द्वीपे महाद्वीपे सिंहासन

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

कलश निर्माण = बिधि ॥ वशीकरण में चांदी का कलश रखें

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible] का कलश धरे ॥

मारण में लोहे का

उच्चाटन में मिट्टी का

प्रफुल्ल कमला रुढां ध्यायेतां भव गेहिनीम् ॥

॥ विधि ॥

यदि कलश स्थान किया हो तो कलश स्थापन के बाद कुमारी पूजन करे ॥ पहले एक अष्टदल का कमल बना कर उसमें सो[illegible] बीच में बना दे। फिर उस पर लाल ऊनी आसना बिछावे उसपर ह्रीं कमलासनाय नमः कह कर आसन पुजन करे दे। फिर रेशमी कपड़ा बिछावे उसपर कुमारी ~~पर~~ को बिठावे ताकि ऊनी आसन चुभे नहीं फिर चरण एक सुन्दर थाली में धुलावे। पश्चात् नये तौलिये से चरण पोंछ कर प्रणाम करे। और हाथ में फूल लेकर आवाहन करे। उस कन्या के अन्दर माता दुर्गा जी को। बांये पेज पर आवाहन लिखा है फिर पाद्य प्रदान करे। अर्घ दे। मधुपर्क प्रदान करे। आचमन करावे चरण का स्नान करावे ॥ दूध दही घी शक्कर मधु से बिच में शुद्ध जल से चरण धोते जाना चाहिये। आखीरी में थाली हटा ले। और दुसरी थाली में शुद्ध जल से चरण मलर कर धोवे, फिर पोंछे। फिर चुन्नी उढ़ावे लंहगा पहनावे। दो वस्त्र प्रदान करना चाहिये। फिर माथे पर चरण में बारी २ अष्टगंध च[illegible] सिंदूर पीला, लाल सिंदूर, गुलाल, हल्दी चढ़ावे फलमाला, फूलमाला, मेवा माला, जनेऊ पी[illegible] पंचपल्लव चरण पर चढ़ावे फूल चढ़ावे [illegible] करावे चुन्नी के [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...ई भट् स्वाहा) यह मन्त्र बोल कर जल छिड़के । चाहिये
व फूल चढ़ाने चाहिये।

प्रथ्वी का ध्यान = पंचवर्णरजश्चित्रा नाना गन्ध समान्विता ॥
पुष्प प्रकर संकीर्णा घंटा चामर भूषिता ॥ बालार्क सदृशी रम्या
मनः संतोष कारिणी ॥ एवं भूमिसमाश्रित्य पूजयेत्परमेश्वरीम्

| प्रार्थना करे पुष्पांजलि दे कुमारी दुर्गा को। | नौबार पढ़े चिराग जला के |

शंकर नाशन स्त्रोत्र

परब... वेद गर्भान् ...मयीं शरण्ये त्वामहं वन्दे
...म् ॥१॥ कामा... कामदा श्यामां कामरूपां
त्वामहं वन्दे दुर्गा दुर्गति नाशिनीम् ॥२॥
...नेत्रां ... क्रां सर्वालंकार भूषितां ॥ विजयरूपामहं वन्दे
दुर्गा दु...म् ॥३॥ ब्रह्मादिभिः स्तूयमानां सिद्ध गन्धर्व
सेवितम् ॥ भवानी त्वामहं वन्दे दुर्गा दुर्गति नाशिनीम् ॥४॥ निशु
शुम्भमथिनीं महिषासुर घातिनीम् ॥ दिव्यरूपामहं वन्दे दुर्गा
दुर्गति नाशिनीम् ॥५॥ विंशत्यर्ध भुजां देवीं शुद्ध कान्चनसन्निभां
गौरी रूपामहं वन्दे दुर्गा दुर्गति नाशिनीम् ॥६॥ त्रिशूलं खड्ग ...
...शक्ति परश्वधम् ...धानां त्वामहं वन्दे दुर्गा दुर्गति
...॥७॥ जगन्मयीं महाविद्यां सृष्टि संहार कारिणीं ॥ स...
...र्गा दुर्गति नाशिनीम् ॥८॥ इदन्तु कवचं ...
... यः पठेन मानवे नित्यं भस्मद भक्ति...
...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

म... हीनं क्र... हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरी ॥ ...सर्व क्षम्य... परमे...री ॥ न्यून व्या व्याधिक वापि यन्मया मोहत: कृतम ॥ सर्व ... सम्पूर्ण त्वत प्रसादान महेश्वरी ॥

(आपद उद्धाराष्टक स्तोत्र)

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे नमस्ते जगत व्यापिके विश्व रूपे नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविंदे। नमस्ते ०॥ नमस्ते जगत चिन्त्य मानस्वरूपे नमस्ते महा योग विज्ञान रूपे॥ नमस्ते ... ...दानन्द रूपे नमस्ते जगत तारिणी त्राहि दुर्गे ॥२॥ ...ना...स्य ... ...तृषातुरस्य भयार्तस्य भीतस्य बधस्य जन्तो:॥ त्वमेका ... ... निस्तार कर्त्री नमस्ते जगत तारिणी त्राहि दुर्गे ॥३॥ अरण्ये र... ...णे शत्रुमध्ये ज...कटे राजगेहे प्रवासे॥ त्वमेका गतिर्देवि निस्तार हेतुर नमस्ते ०॥ प्रपोर ...दुस्तेरत्यन्त घोरे विपत सागरे मज्यतां देह भाजां॥ त्वमे... ...देवि निस्तार नौका ॥४॥ नमस्ते ० नमश्च चण्डिके चण्ड दोर्द... ...लाल समुत्खंडिता खंडला ...ष शत्रो: ॥ त्व... ...गति वि...संदेह हर्त्री ॥५॥ नमस्ते ०॥ त्वमेका सदारा...ता सत्य ...दिनी ...नेका खिला क्रोधिना क्रोधनिष्ठा ॥इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च ना... ॥६॥ नमस्ते ०॥ नमो देवि दुर्गे शिवे ...नोदे सदा सर्व सिद्धे प्रदात्र स्वरूपे ॥ विभूती सतां काल रा...स्वरूपे ॥ नमस्ते ०॥७॥ श...भोरे सुराणां सिद्ध विद्याधराणां॥ मुनि... ...वराणां व्याधिभि पीडितानां॥ ॥८॥ नृपाते गृह गतानां दस्युभिस्त्रा सितानां। त्वमारे शरण एक देवि दुर्गे प्र... ॥९॥ इदं स्तोत्रं म...ख्यातं ...पद ...राष्टकं ॥ त्रिसन्ध्यं ए... सन्ध्यं वा पठनादेव संकटात ॥ मुच्यते नात्र संदेहे भुवि स्वर्गे रसातल ॥१०॥ (सिद्धेश्वर तन्त्रे हरि गौरी सं... आपद उद्धाराष्टकं ... ...मं भूयात ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" शनि स्तोत्रक। दशरथ विरचित "

" शनि आवाहन "

काले अक्षत् बेलपत्र पुष्प हाथ में लेकर हाथ जोड़कर शनि ध्यान करके बुलावे

अष्टम्यां रेवती समन्विताया सौराष्ट्र जातं कश्यप गोत्रं लोह वर्ण धनुराकृतिं मण्डलात् पश्चिमऽशास्थं पश्चिमाभिमुखं गृध्रवाहनं संकर जातिं यमाधि देवतं प्रजापति प्रत्याधि देवत सातिं शनिमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शने इहागच्छ इहतिष्ठ इमं यज्ञ मभिरक्ष। इत्यावाह्य। ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः"। (पंचोपचार पूजन करो। काली कंडी चढ़ाओ। काले तिल का लड्डू भोग लगाना नीला फूल चढ़ाना काला चावल चढ़ाना शहद भोग लगाना तेल का पुआ भोग लगाना।

" वैदिक मंत्र "

शनि मन्त्र। ॐ शंन्नो देवीरभिष्टय आपोभवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।। तान्त्रिक मन्त्र ॐ शं शनिश्चराय नमः।।

विनियोगः। श्री गणेशाय नमः। ॐ अस्य श्री शनि स्तोत्र मन्त्रस्य कस्यप ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः सौरि देवता शं बीजं निः शक्तिः, कृष्ण वर्णेति कीलकं शनि देवता प्रशादार्थे चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

(करन्यासः)

शनिश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः। अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः। कृष्णाङ्गाय अनामिकाभ्यां नमः। शुष्कोदराय कनिष्ठकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

दीप निर्माण विधि॥ विवाद में विजय हेतु = गेहूं के आटे का दीप जलावे

स[illegible] Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri [illegible] या मूंग के आटे का दीप बनावे

सन्धि कार्य में नदी के दोनों किनारों की मिट्टी का बनाके सुखा फिर जलावे।

अभाव में तांबे का चिराग जलावे।

सर्व सिद्धि हेतु गाय का घृत जलावे॥

हृदयन्यास: । शनिश्चराय हृदयाय नम: । मन्दगतये शिरसे स्वाहा ।

अधोक्षजाय शिखायै वषट् ॥ कृष्णाङ्गाय कवचाय हुं । शुष्कोदराय नेत्र

त्रयाय वौषट् ॥ छायात्मजाय अस्त्राय फट् ॥

दिग्न्यास: । ॐ भूर्भुव: स्व: दिग्न्यास: । चुटकी बजाता हुआ चारों दिशा में के

॥ ध्यान ॥

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्द्धरम् ।

चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं । वन्दे सदाऽभिष्टकरं वरेण्यम् ॥

प्रणम्य देव देवेशं सर्वग्रहनिवारणम् । शनैश्चर प्रसादार्थं चिन्तयामास पार्थिव: ॥

= (स्तोत्र) =

रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथ: पुरा । चक्रवर्ती स विज्ञेय सप्तद्वीपाधिपोऽभवत् ।

कृत्तिकान्ते शनिं ज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि स: ।

रोहिणीं भेदयित्वातु शनिर्यास्यति साम्प्रतं ॥४॥

शकटं भेद्यमित्युक्तं सुरासुर भयंकरम् ।

द्वादशाब्दं दुर्भिक्षे भविष्यति सुदारुणम् ॥५॥

एतच्छ्रुत्वा तु तद्वाक्यं मन्त्रिभि: सह पार्थिव: ।

व्याकुलं च जगत् दृष्ट्वा पौरजान पदादिकम् ॥६॥

ब्रुवन्ति सर्व लोकाश्च भय मेतत् समागतम् ॥७॥

देशाश्च नगर ग्रामा भय भीता: समागता: ॥८॥

प्रपच्छ प्रयतो राजा वशिष्ठ प्रमुखान् द्विजान् ।

समाधानं किमत्रास्ति ब्रूत मे द्विज सत्तमा: ॥९॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वशिष्ठ उवाच

प्राजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्न कुतः प्रजाः।
अयं योगह्यसाध्यश्च ब्रह्म शक्रादिभिः सुरैः ॥९॥
तदा संचिंत्य मनसा साहसं परमं ययौ।
समाधाय धनुर्दिव्यां युद्ध समान्वितम् ॥१०॥
रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्र मंडलम्।
त्रिलक्ष योजनं स्थानं चन्द्रस्योपरि संस्थितम् ॥११॥
रोहिणी पृष्ठमासाद्य स्थितो राजा महाबलः।
रथे तु काञ्चने दिव्ये मणि रत्न विभूषिते ॥१२॥
हंसवर्णै हयैर्युक्ते महाकेतु समुच्छ्रिते।
दीप्यमानो महारत्नैः किरीट मुकुटोज्वलैः ॥१३॥
व्यराजत तदाकाशे द्वितिय इव भास्करः।
आकर्ण चापमाकृष्य सहस्त्रं नियोजितम् ॥१४॥
कृत्तिकान्तं शनिर्शौत्वा प्रविशतां च रोहिणीम्।
दृष्ट्वा दशरथं चाग्र तस्थौ तु भृकुटी मुखः ॥१५॥
संहारास्त्रं शनिर्दृष्ट्वा सुरासुर निषूदनम्।
प्रहस्य च भयात सौरिरिदं बचनमब्रवीत् ॥१६॥
" शनिरुवाच "
पौरुषं तव राजेन्द्र ! मया दृष्टं न कस्यचित्।
देवासुरा मनुष्याश्च सिद्ध विद्या धरोरगः ॥१७॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

घृत निर्णय – मारण में – भैंस का घी जलावे " या कड़वे तेल का जलावे

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विद्वेषण में – ऊँटनी का घी जलावे
शान्ति कार्य में – भेड़ी का घी जलता है।
उच्चाटन में बकरी का घृत
सर्वकार्य में काले तिल का तेल अति उत्तम होता है।

मया विलोकिता: सर्वे भयं गच्छन्ति तत्क्षणात्।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! तपसा पौरुषेण च ॥१८॥
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबल:।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिव:।
प्रसन्नो यदि मे सौरे! एकश्चास्तु वर: पर: ॥१९॥
रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन।
सरित: सागरा यावद्यावच्चंद्रार्क मेदिनी ॥२०॥
याचितं तु महासौरे! नाऽन्यमिच्छाम्यहं वरम्।
एवमस्तु शनि प्रोक्तं वरं लब्ध्वा तु शाश्वतं ॥२१॥
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्यो ऽभवत्तदा।
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरय सुव्रत ॥२२॥
प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनिं तदा।
न भेत्तव्यं न भेत्तव्यं त्वया भास्करनन्दनम् ॥२३॥
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं न कर्तव्यं कदाचन।
कीर्तिरेषा मदीया च त्रैलोक्ये स्थाप्य प्रभु ॥२४॥
एवं वरं तु संप्राप्य हृष्टरोमा स पार्थिव:।
रथोपरि धनु: स्थाप्य भूत्वा चैव कृताञ्जलि: ॥२५॥
ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणनाथं विनायकं।
राजा दशरथ: स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत् ॥२६॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

"दशरथ उवाच"

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठ निभाय च ।
नमः सुरूप गात्राय स्थूलरोम्णे नमो नमः ॥२७॥
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः ।
नमः कालाग्नि रूपाय कृशांङ्गाय च वै नमः ॥२८॥
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदृष्टे नमो नमः ।
नमोऽस्तु कोटराक्षाय दुर्भिक्षाय च वै नमः ॥२९॥
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने ।
नमो मन्दगते ! तुभ्यं भानुज ! भयदायिने ॥३०॥
अधोदृष्टे ! नमस्तेऽस्तु समवर्तकभयाय च ।
तपता दग्ध देहाय नित्यं योगरताय च ॥३१॥
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मज सूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥३२॥
सूर्य पुत्र नमस्तेऽस्तु सर्व भक्षाय वै नमः ।
देवासुर मनुष्याश्च पशुपक्षि सरीसृपाः ॥३३॥
त्वया विलोकिताः सर्वे दैन्यमाशु व्रजन्ति ते ।
ब्रह्मा शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः ॥३४॥
राज्यभ्रष्टाः पतन्त्येते त्वया दृष्ट्याऽवलोकिता ।
देशाश्च नगर ग्रामा द्वीपाश्चैव तथा द्रुमाः ॥३५॥
त्वया विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसादं कुरु हे सौरे ! वरदोभव भानुज ! ॥ ३६ ॥
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः ।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिवः ॥ ३७ ॥
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र ! स्तोत्रेणाऽनेन सुव्रत ।
एवं वरं प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते ॥ ३८ ॥
दशरथ उवाच — प्रसन्नो यदि मे देव ! वरं देहि ममेप्सितम् ।
अद्य प्रभृति पिंगाक्ष पीडा देयो न कस्यचित् ॥ ३९ ॥
प्रसादं कुरु मे सौरे ! वरोऽयं मे महेप्सितम् ।
शनिरुवाच — अदेयस्तु वरोऽस्माकं तुष्टोऽहं च ददामि ते ॥ ४० ॥
त्वा प्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्ति मानवाः ।
देवाऽसुर मनुष्याश्च सिद्ध विद्याधरोरगाः ॥ ४१ ॥
न तेषां बाधते पीड़ा मत्कृता वै कदाचन ।
मृत्यु स्थाने चतुर्थे वा जन्म व्यय द्वितीयगे ॥ ४२ ॥
गोचरे जन्म काले वा दशास्वन्तर्दशासु च ।
यः पठेद् द्वित्रिसन्ध्यं वा शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥ ४३ ॥
न तस्य जायते पीड़ा कृता वै ममनिश्चितम् ।
प्रतिमां लोहजां कृत्वा मम राजं चतुर्भुजाम् ॥ ४४ ॥
वरदां च धनुःशूल बाणाङ्कितकरां शुभाम् ।
आयुतं मेकजाप्यं च तद्दशांशेन होमतः ॥ ४५ ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृष्णास्तैः शमी पत्रैर्घृताक्तैर नीलपंकजैः।
पायसं शर्करायुक्तं घृत मिश्रं च होमयेत ॥४६॥
ब्राह्मणान भोजयेत् तत्र स्वशक्त्या घृत पायसैः।
तैले वा तिलराशौ वा प्रत्यक्षं च यथाविधि ॥४७॥
पूजनं चैव मन्त्रेण कुंकुमाद्यं च लेपयेत।
नील्या वा कृष्णा तुलसी शमी पत्रादिभिः शुभैः ॥४८॥
दद्यान्मे प्रीतये यस्तु कृष्णा वस्त्रादिकं शुभम्।
धेनुं वा वृषभं वाऽपि सवत्सां च पयस्विनीम् ॥४९॥
एवं विशेष पूजां च मद्वारे कुरुते नृप।
मन्त्रोद्धार विशेषे स्तोत्रेणाऽनेन पूजयेत् ॥५०॥
पूजयित्वा जपेत्स्तोत्रं भूत्वा चैव कृताञ्जलिः
तस्य पीडां न चैवाऽहं करिष्यामि कदाचन ॥५१॥
रक्षामि सततं तस्य पीडां चऽन्य ग्रहस्य च।
अनेनैव प्रकारेण पीड़ामुक्तं जगत भवेत् ॥५२॥
वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथस्तदा।
मत्वा कृतार्थ मात्मानं नमस्कृत्य शनैश्चर ॥५३
शनैश्चराभ्यनुज्ञातो रथमारुह्य वार्यवान।
स्वस्थानं च गतो राजा प्राप्त कामोऽभवत्तदा ॥५४॥
सर्वा सिद्धि मवाप्याच विजयी सर्वदाऽभवत्।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोणस्थः पिंगलोबभ्रु कृष्णो रौद्रान्त कोयमः ॥५५॥
सौरि शनैश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रय संस्थितः।
एतानि शनि नामानि जपेदश्वत्थ सन्निधौ ॥५६॥
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदापि भविष्यति।
अल्प मृत्यु विनाशाय दुःखस्योद्धारणाय च ॥५७॥
स्नात्वा नव्य तिल तैलेन धान्य माषादिकं तथा।
लोहं देयं च विप्राय सवर्णेन समान्वितम् ॥५८॥
शनि स्तोत्रं पठेद्यस्तु श्रृणुयाद्वा समाहितः।
विजयं च अर्थकामं चाऽरोग्यं सुखमवाप्नुयात् ॥५९॥
॥ इति श्रीदशरथ कृतं शनिस्तोत्रं शुभं भूयात् ॥

। महामृत्युञ्जय मन्त्रः ।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि
वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्
भूर्भुवः स्वः स्वरोम जूं सः ह्रौं ॐ ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शानात्मानं परमात्मानं दानं ध्यानं योगं ज्ञानम्।
जानन्नपि तत् सुन्दरि मातर्न गुरोरधिकं न गुरुरधिकम्
प्राणं देहं गेहं राज्यं भोगं मोक्षं भक्तिं पुत्रम्।
मन्ये मित्रं वित्त कलत्रं न गुरुरधिकं न गुरोरधिकम्॥
वानप्रस्थं यति विध धर्मं, पारमहंस्यं भिक्षुक चरितम्।
साधु सेवा बहुसुर भक्ति र्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥
विशेभक्ति: पूजन चरितं वैष्णव सेवा मातर भक्ति:।
विशेरिव पितृ सेवन योगो न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥
मित्याहारं च इन्द्रिय जेता प्राणायामं न्यास विधानम्।
इष्टे पूजा जपतप भक्ति र्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥
काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भीमा बगला पूर्णा।
श्री मातंगी धूमा तारा एता विद्या त्रिभुवनसारा॥ न गुरोरधिकं॰
मत्स्यं कौर्मं श्री बाराहं नरहरि रूपं बामन चरितं।
अवतारादिक मन्यत् सर्वं न गुरोरधिकम्॥
श्री रघुनाथं श्री यदुनाथं श्री भृगुदेवं बौद्धं कल्किम्।
अवतारादिक दशकं मन्ये न गुरोरधिकम्॥
गंगा काशी कांची द्वारा, माया योध्या वन्ती मथुरा।
यमुना रेवा परतर तीर्थं न गुरोरधिकम्॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोकुल गमनं गोपुर मरणम् । श्री वृन्दावन मधुपुर मटनम् ।
एतत सर्वं सुन्दरि मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।
तुलसी सेवा हरिहर भक्ति गंगासागर संगम मुक्ति: ।
किम परमधिकं कृष्णे भक्ति: एतत सर्वं सुन्दरि मातर ।। न गुरो०
एतत स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्षज्ञानी सोऽप्यधिधन्य: ।
ब्रह्माण्डान्तरे यद्यद ज्ञेयं सर्वं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।।
।। इति बृहत्पारमहंस्यां संहितायां श्री शिव पारवती
।। संवादे श्री गुरु स्तोत्रम् शुभं भूयात् ।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ श्री महाविद्या ॥

सविधी

ॐ अस्य श्री दुर्गा महामन्त्रस्य किरात रूपधर ईश्वर ऋषि: अनुष्टुप छन्द: अन्तरयामि नारायणा: किरात रूप धरेश्वरो नव दुर्गा गायत्री देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्ति: क्लीं कीलकं मम धर्मार्थ काममोक्षार्थे जपे विनियोग: ॥ (न्यास = हंसिनी ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: ॥ शंखिनी ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: । चक्रिणी ह्रूं मध्यमाभ्यां नम: ॥ गदिनी ह्रैं अनामिकाभ्यां नम: ॥ शूलिनी ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम: ॥ त्रिशूल धारिणी ह्र: करतल करपृष्ठाभ्यां नम: ((हंसिनी ह्रां हृदयाय नम: ॥ शंखिनी ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ चक्रिणी ह्रूं शिखायै वषट् । गदिनी ह्रैं कवचाय हुं ॥ शूलिनी ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ त्रिशूलधारिणी ह्र: अस्त्राय फट्))((हंसिनी ह्रां पूर्वस्यां नम: ॥ शंखिनी ह्रीं आग्नेय्यां नम: ॥ चक्रिणी ह्रूं याम्यां नम: ॥ गदिनी ह्रैं नैऋत्यां नम: ॥ शूलिनी ह्रौं वारुण्यां नम: ॥ त्रिशूलधारिणी ह्र: वायव्यां नम: ॥ हुं उत्तरस्यां नम: ॥ फट् ईशान्यां नम: ॥ हंसिनी शंखिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी त्रिशूलधारिणी ऊर्ध्वस्यां नम: ॥ हंसिनी शंखिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी त्रिशूलधारिणी भूम्यै नम:

ध्यान = अरि शंख कृपाण खेट बाणान्सु धनुषक शूल मथ कर्तरीं दधानां ॥ भजतां महिषोत्तमाङ्गं संस्था नव दुर्गा सदृशी तनूम श्रेयस्तु दुर्गा ॥ हेम प्रख्या मिन्दु खंडान्त मौलो शंखारि खेटा भीतिहस्तां त्रिनेत्रां ॥ हेमाब्जस्थां पीत वर्णां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥ (ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करवाह है ।। तेजस्वि नाव धीतमस्तु मा विद्विषाव है ।। ॐ शान्तिः ३
लं पृथिव्यात्मने नमः ।। हं आकाशात्मने नमः ।। ॐ यं वायवात्मने नमः
।। ॐ रं अग्न्यात्मने नमः ।। ॐ वं अमृतात्मने नमः ।। ॐ ह्रीं नमश्चण्डिकायै
नमः ।। (कवच) हेतुकं पूर्वे पीठे तु ।। आग्नेयां त्रिपुरान्तकम् ।।
दक्षिणे चाग्निवैतालं ।। नैऋत्यां यम जिह्वकं कालाख्यं वारुणे पीठे
वायव्यां तु करालिनम् ।। उत्तरे एकपादं तु ।। ईशान्यां भीम रूपिणी
म् = आकाशे तु निरालम्बे पाताले बडवानलम् ।। यथा ग्रामे तथा
अरण्ये रक्षस्व मां बटुकस्तथा ।। ॐ ह्रीं सर्व मंगल मांगल्ये शिवे
सर्वार्थ साधिके ।। शरण्ये त्रियम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते
ह्रीं ॐ ।। (ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः) १०८ बार ।। जपलो
ॐ नमः पिशाचिनी कारिंकिनी त्रिशूलखड्ग हस्ते सिंहारूढ़े
एहि २ आगच्छ २ मम हृदयं प्रविश्य २ स्वस्थानं कुरु २
आवाहयामि स्थापयामि नमः ।। पुजां गृहण २ ह्रीं चण्डिकायै
नमः ।। पाठं शृणु ।। मम सिद्धिं प्रदानं कुरु हुं फट् स्वाहा ।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ ब्राह्मण्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ बारुणी रवल्वि माहेश्वर्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ
कुलवासिन्यै कुमारिण्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ जयन्ती पुर साहि वारा
हिण्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ प्रष्ट महाकाली माहेश्वर्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ
चित्रकूट इन्द्राणन्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ त्रिपुर ब्रह्म चारिण्यै नमः स्वाहा ॥
ॐ एकवृक्ष शुभिण्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ
त्रिपुर ब्रह्माण्ड नायक्यै नमः स्वाहा ॥ ॐ एतानि क्षं क्षं त्रैलोक्य वशं
करााणि नमः स्वाहा ॥ ॐ एतन् बीजाक्षराणि नमः स्वाहा ॥ ह्रीं कुरु कुरु हुं फट्
स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलनर मुख भ्रमरीम् नमः स्वाहा ॥ ॐ क्लीं
ह्रीं सकलराज मुख भ्रमरीम् नमः स्वाहा ॥ ॐ क्रौं सौं सकल देवता
मुख भ्रमरीम् नमः स्वाहा ॥ ॐ क्लीं २ सकल कामिनी मुख भ्रमरीम्
नमः स्वाहा ॥ ॐ ईं सौं सकल देश मुख भ्रमरीम् स्वाहा ॥ ॐ ह्सरव्क्रें म
त्रैलोक्य चित्त भ्रमरीम् स्वाहा ॥ ॐ क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं
क्षं क्षः उग्र भैरवादि भूत प्रेत पिशाच चित्त भ्रमरीम् स्वाहा ॥ ॐ
हुं क्षु हुं क्लीं सिद्ध यन्त्र मन्त्र तन्त्र भ्रमरीम स्वाहा ॥ ॐ हुं क्षु हुं
क्लीं राज यन्त्र मन्त्र तन्त्र भ्रमरीम स्वाहा ॥ ॐ सकल सुरासुर सर्व
यन्त्र मन्त्र तन्त्र भ्रमरीम् स्वाहा ॥ ॐ सर्व क्षोभिणी स्वाहा ॥ ॐ सर्व
क्लेदिनी स्वाहा ॥ ॐ सकल मनोन्मादं करी स्वाहा ॥ ॐ प्रां
ह्रीं क्रौं परम कल्याणि स्वाहा । ॐ महा योगिनी स्वाहा ॥ ॐ महा विद्या
महा देवेन निर्मिताम् स्वाहा ॐ चिंतितां किरात रुपेणा स्वाहा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ मारणां हृदय नन्दिनीम् स्वाहा॥ ॐ उत्तमांङ्ग सर्व विद्यानाँ स्वाहा॥ ॐ सर्वभूतवशंकरीम् स्वाहा॥ ॐ सर्वपापक्षयकरी स्वाहा॥ ॐ सर्व शत्रुक्षय करीं स्वाहा॥ ॐ कुल करीं स्वाहा॥ ॐ गोत्र करीं स्वाहा॥ ॐ धन करीं स्वाहा॥ ॐ धान्य करीं स्वाहा॥ ॐ बलकरीं स्वाहा॥ ॐ पुष्टिकरीं स्वाहा॥ ॐ विजय करीं स्वाहा॥ ॐ यशस्करीं स्वाहा॥ ॐ पुत्र करीं स्वाहा॥ ॐ पौत्रकरीं स्वाहा॥ ॐ सबल बल बन्धिनीं स्वाहा॥ ॐ भव जाल बान्धिनीं स्वाहा॥ ॐ सर्व कृत्य कारिणी स्वाहा॥ ॐ सर्व लोक वशं करीं स्वाहा॥ ॐ सर्व राज वशं करीं स्वाहा॥ ॐ सर्व ग्रहोच्चाटिनीं स्वाहा॥ ॐ सर्व जन प्रमोदिनीं स्वाहा॥ ॐ सर्व सिद्धि दायिनीं स्वाहा॥ ॐ पर प्रयोग नाशिनीं स्वाहा॥ ॐ दैत्यदर्प नाशिनीं स्वाहा॥ ॐ अकाल मृत्यु हारिणीं स्वाहा॥ ॐ योगक्षेमवाहिनीं स्वाहा॥ ॐ सर्व कष्टहारिनीं स्वाहा॥ ॐ यमदुत दण्ड दायिनीं स्वाहा॥ ॐ काल दण्डिनीं स्वाहा॥ ॐ महाकाल दण्डिनीं स्वाहा॥ ॐ काल दण्ड त्रासिनीं स्वाहा॥ ॐ सर्व दुष्टजन संहारिनीं स्वाहा॥ ॐ भूतानां बिजृम्भिणीं स्वाहा॥ ॐ स्तम्भिनीं स्वाहा॥ ॐ मोहिनीं स्वाहा॥ ॐ द्राविणीं स्वाहा॥ ॐ सर्व मन्त्र प्रभंजि[illegible] स्वाहा॥ ॐ सर्व विद्या प्रमोदिनीं स्वाहा॥ ॐ सर्वज्वरो [illegible] स्वाहा॥ ह्रीं क्रौं रात्री ज्वर, दिवाज्वर, सायंज्वर, प्रातः ज्वर, [illegible] ज्वर, अपराज्वर तापज्वर विषमज्वर द्वंदज्वर [illegible]

राक्षस[illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पिशाचज्वर, प्रयोगज्वर, पापज्वर, तापज्वर, भीतज्वर, माण्डाज्वर, तपेदिक ज्वर, विसूचिकाज्वर, एकाहिकज्वर, त्र्याहिक्य ज्वर, चातुर्थिकज्वर, मासज्वर, त्रिमासज्वर, षाणमासज्वर, साम्वत्सरिकज्वर, बातज्वर, पित्तज्वर, श्लैश्मिकज्वर, सन्निपातिकज्वर, द्विष्टिज्वर, संततज्वर, दैहिकज्वर, दैविकज्वर, भौतिकज्वर, सर्वज्वराज्वरान् विनाशनाय स्वाहा॥ गण्डमाला, लूत तालु रोग विनाशनाय स्वाहा॥ ॐ वर्णानां त्रासिनो स्वाहा॥ सर्पानां त्रासिनीं स्वाहा॥ ॐ सर्पान त्रासिनौं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं शिरःशूल, अक्षिशूल, कुक्षिशूल, कक्षशूल, कर्णशूल, दन्तशूल, कंठशूल, घ्राणशूल, गण्डशूल, वक्षशूल, वाहुशूल, हृद्शूल, कटिशूल, नाभिशूल, पृष्ठशूल, जंघशूल, जानूशूल, गुदाशूल, योनिशूल, लिङ्गशूल, पादशूल, पादार्द्धशूल, शिरोर्धशूल, कंधशूल, हस्तशूल, अर्धाङ्गशूल, सर्वाङ्गशूल॥ विनाशनाय स्वाहा॥ मम अथवा यजमानस्य आत्मरक्षा, परोक्षरक्षा, प्रत्यक्षरक्षा, अग्निरक्षा, वायुरक्षा, उदकरक्षा, अमुक मित्ररक्षा, परिवाररक्षा, महा अंधकारोल्का, विद्युतानिल, ... अस्त्राशस्त्रास्ते, मां रक्ष रक्ष, सर्वतो प्रकारेन मां रक्ष २ फट् स्वाहा॥ ह्रीं दुर्गे परमन्त्र, परयन्त्र, परतन्त्र, विद्या ...भनी स्वाहा॥ स्वमन्त्र, स्वयन्त्र, स्वतन्त्र, विद्या विवर्धिनी ... पर प्रयोग नाशिनी पर प्रयोग नाशय २ स्वाहा॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा

ॐ हंसिनी, शंखिनी, चक्रिणी, गादिनी, शूलिनी, त्रिशूल धारिणी हुंफट् स्वाहा। ॐ महा देवस्य तेजसां भयंकराविष्ट देवता बंध्यामि स्वाहा॥ ॐ महादेवस्य पञ्चशीर्षेण पाणिना स्वाहा॥ ॐ महादेवस्य तेजसां सर्व शूलान् कह पिङ्गलेन स्वाहा॥ ॐ कण्टकमय रुद्राङ्गे स्वाहा॥ ॐ प्रंप्रा मातंगी स्वाहा॥ ॐ इंई मातंगी स्वाहा॥ ॐ उंऊं मातंगी स्वाहा॥ ॐ ऋंॠं मातंगी स्वाहा॥ ॐ लृं लॄं मातंगी स्वाहा॥ ॐ ऐं ऐं मातंगी स्वाहा॥ ॐ प्रोंप्रौं मातंगी स्वाहा॥ ॐ प्रंप्रः मातंगी स्वाहा॥ ॐ स्वर २ ब्रह्मदण्ड स्वाहा॥ ॐ बिश्वर २ रुद्रदण्ड स्वाहा॥ ॐ प्रज्वल २ वायु दण्ड स्वाहा॥ ॐ प्रहर २ इन्द्र दण्ड स्वाहा॥ ॐ मक्ष २ नित्रृति दण्डस्वाहा॥ ॐ हिलि २ स्वाहा॥ ॐ यमदण्ड नित्योपवादिनी स्वाहा॥ ॐ हंसिनी स्वाहा॥ ॐ चक्रिणी स्वाहा॥ ॐ गादिनी स्वाहा, ॐ शूलिनी स्वाहा॥ ॐ त्रिशूल धारिणी हुंफट् स्वाहा॥ ॐ आयु विद्या यसौभाग्यं धान्यं च धनमेव च। सदा गुरुं प्रीति भक्ति श्रद्धा बिश्वास देहि चण्डिके मे शुभे॥

ॐ ह्रां स्वाहा॥ ॐ ह्रां ह्रां स्वाहा॥ ॐ ह्रीं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं २ स्वाहा॥ ॐ ह्रूँ स्वाहा॥ ॐ ह्रूं २ स्वाहा॥ ॐ ह्रें स्वाहा, ॐ ह्रें २ स्वाहा॥ ॐ ह्रैं २ स्वाहा, ॐ ह्रैं स्वाहा॥ ॐ ह्रोंस्वाहा ॐ ह्रों २ स्वाहा ॐ ह्रौं २ स्वाहा॥ ॐ ह्रौं २ स्वाहा॥ ॐ ह्रं स्वाहा॥ ॐ ह्रं ह्रं स्वाहा॥ ॐ ह्रः स्वाहा॥ ॐ ह्रः २ स्वाहा॥ ॐ क्लं स्वाहा॥ ॐ क्लंक्लं स्वाहा॥ ॐ क्लां स्वाहा ॐ क्लां २ स्वाहा॥ ॐ क्लांक्लीं क्लूं क्लें क्लैं क्लों क्लौं क्लंक्लः स्वाहा॥ ॐ कं स्वाहा॥ ॐ कं २ स्वाहा॥ ॐ खं स्वाहा॥ ॐ खंखं स्वाहा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊँ गं स्वाहा।। ऊँ गं गं स्वाहा।। ऊँ घं स्वाहा ऊँ घं घं स्वाहा।। ऊँ ङं स्वाहा।।
ऊँ ङं ङं स्वाहा।। ऊँ चं स्वाहा।। ऊँ चं २ स्वाहा।। ऊँ छं स्वाहा।। ऊँ छं छं
स्वाहा।। ऊँ जं स्वाहा।। ऊँ जं जं स्वाहा।। ऊँ झं स्वाहा।। ऊँ झं २
स्वाहा।। ऊँ ञं स्वाहा।। ऊँ ञं ञं स्वाहा।। ऊँ टं स्वाहा।। ऊँ टं टं
स्वाहा।। ऊँ ठं स्वाहा।। ऊँ ठं २ स्वाहा।। ऊँ डं स्वाहा।। ऊँ डं डं स्वाहा।। ऊँ ढं स्वाहा
ऊँ ढं ढं स्वाहा।
ऊँ णं स्वाहा।। ऊँ णं णं स्वाहा।। ऊँ तं स्वाहा।। ऊँ तं तं स्वाहा।। ऊँ
थं स्वाहा।। ऊँ थं थं स्वाहा।। ऊँ दं स्वाहा।। ऊँ दं दं स्वाहा।। ऊँ
धं स्वाहा।। ऊँ धं धं स्वाहा।। ऊँ नं स्वाहा।। ऊँ नं २ स्वाहा।। ऊँ पं
स्वाहा।। ऊँ पं पं स्वाहा।। ऊँ फं स्वाहा।। ऊँ फं फं स्वाहा।। ऊँ बं स्वाहा।।
ऊँ बं बं स्वाहा।। ऊँ भं स्वाहा।। ऊँ भं भं स्वाहा।। ऊँ मं स्वाहा।। ऊँ मं मं
स्वाहा।। ऊँ यं स्वाहा।। ऊँ यं २ स्वाहा।। ऊँ रं स्वाहा।। ऊँ रं रं स्वाहा।।
ऊँ लं स्वाहा।। ऊँ लं लं स्वाहा।। ऊँ वं स्वाहा।। ऊँ वं वं स्वाहा। ऊँ शं
स्वाहा।। ऊँ शं शं स्वाहा।। ऊँ षं स्वाहा।। ऊँ षं षं स्वाहा।। ऊँ सं
स्वाहा।। ऊँ सं सं स्वाहा।। ऊँ हं स्वाहा।। ऊँ हं हं स्वाहा।। ऊँ दं
स्वाहा।। ऊँ दं दं स्वाहा।। ऊँ नमो भगवते रुद्राय भैरवाय
[illegible]शाय स्वाहा।। ऊँ दुर्गायै नमः स्वाहा।। ऊँ सैनिक भूत प्रेत
पिशाच, राक्षस, सर्व बैताल, सर्व लोक भय, विनाशनाय स्वाहा।।
ऊँ नमो भगवते रुद्राय नमः स्वाहा।। ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः
[illegible] ऊँ [illegible] पुष्प वर्षिनी स्वाहा।।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

ॐ उल्का मुखी नाग मुखी रुद्र गाति शिरावर धारिणी स्वाहा ॥ ॐ नमो ब्रह्मण रुद्र
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
मंडले रुद्राय आधारादशाय लोटके नामि रुद्राय वृषभारूढाय तुला हस्ताय परिवार सहिता
दिग्देवताधिपतये आधार मंडलं बध्नामि स्वाहा ॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ऐं क्लीं क्लूं प्रों श्रां ह्रीं क्रीं हुं फट् स्वाहा।

ॐ छायायै स्वाहा ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ हिलि स्वाहा ॥ ॐ पिलि स्वाहा ॥ ॐ हरं स्वाहा ॥ ॐ हरहरं स्वाहा ॥ ॐ गन्धर्वाय स्वाहा ॥ ॐ ॐ गन्धर्वाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ यक्षाय स्वाहा ॥ ॐ यक्षाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ रक्षे स्वाहा ॥ ॐ रक्षोधिपतये स्वाहा ॥ ॐ भू स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ ॐ उल्कामुखी स्वाहा ॥ ॐ रुद्रमुखी स्वाहा ॥ ॐ रुद्र जटी स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्म विष्णु रुद्र तेजसे स्वाहा ॥ ॐ भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षसानां दृष्टि, भय विनाशनाय स्वाहा ॥ ह्रीं दुर्गे ! (मम यजमानस्य) अथवा मम विघ्न बाधां भूत प्रेत पिशाच, राक्षस, ब्रह्म राक्षस, ब्रह्म पिशाच, ब्रह्मवीर, जिन्द, वैताल, आगिया बैताल, यक्ष, यमदूत, बीर भैरव, कलुवा, भूतिनी, शाकिनी, डाकिनी, पिशाचिनी, योगिनी, यक्षिनी, नागिनी, भैरवी, गन्धर्वनी, पन्नगनी, कामिनी, कूष्माण्डाश्चत्वारो राज पुरुषः कलह पुरुषो वातेषां दिशं बन्धयामि स्वाहा ॥ ह्रीं दुर्गे मम (यजमानस्य) अथवा मम दुर्दिन दुर्दिशो बन्धयामि स्वाहा ॥ मम (यजमानस्य) अथवाश्च शत्रून हस्तौ बन्धयामि स्वाहा ॥ चक्षुसो बन्धयामि स्वाहा ॥ श्रोत्रे बन्धयामि स्वाहा ॥ जिह्वां बन्धयामि स्वाहा ॥ घ्राणं बन्धयामि स्वाहा ॥ गतिं बन्धयामि स्वाहा ॥ मतिं बन्धयामि स्वाहा ॥ विचारं बन्धयामि स्वाहा ॥ अन्तरिक्षम् बन्धयामि स्वाहा ॥ [illegible] बन्धयामि स्वाहा ॥ पातालं बन्धयामि [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ नमः ब्रह्मणे रुद्रमण्डलरुद्राय आधार दिशायै लोटक नाम रुद्राय वृषभारुढ़ाय तुलाहस्ताय परिवार सहिताय दिग् देवताधिपतये आधारमण्डलबध्नामि स्वाहा॥ ह्रीं दुर्गे (अमुकरक्षार्थं)

पंचयोजन विस्तीर्णाम बन्धयामि स्वाहा॥ रुद्रो बध्नात्॥ रुद्र मंडलं रुद्रः सपरिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं रुद्रमण्डलं प्रत्यक्षं बंध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो भावेन मां रक्ष २ अचलं चलं आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि सर्वोपद्रवनाशनाय स्वाहा॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं ब्लूं प्रों आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा॥ ॐ त्रियम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनं। उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षिय मामृतात् स्वाहा॥१॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो विद्युता हन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि॥ स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा॥ प्राच्यां दिशि॥ इन्द्रो देवता ऐरावतारुढ़ो हेम वर्णाः वज्रहस्तः इन्द्रो बध्नातु॥ इन्द्रमण्डलं॰ सह॰ इन्द्रो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः अस्माकमस्तु केवलः॥ ॐ वर्षन्तु॰ ॐ नमो भगवते॰ आग्नेय्यां दिशि॥ अग्नि देवता मेषारुढ़ा रक्तवर्णाः ज्वालाहस्तः अग्निर बध्नातु॥ अग्नि मण्डलं अग्निं॰ सह॰॥ ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम॥ अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम॥ ॐ वर्षन्तु॰॥ ॐ नमो भगवते॰ याम्यां दिशि॥ यमो देवता महिषारुढ़ा नीलवर्णाः दण्ड हस्तः यमो बध्नातु॥ यममंडलम यम॰ ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्नि अरंकृत॥ ॐ वर्षन्तु॰॥ ॐ नमो भगवते॰ नैऋत्यां दिशि॥ नैऋत्य देवता प्रेता [illegible] खड्ग हस्तः नैऋत्य देवता बध्नातु। निर्ऋति मण्डलं

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निऋति: ०॥ ॐ मा वुरा: परावरा गि मृ त तृहणा न चोत ॥ पदाल्द तृसाया
॥ ॐ वर्षन्तु० ॥ वारुण्यां दिशि ॥ वरुणो देवता मकरारुढ़ा श्वेत वर्णा: पाश
हस्त: वरुणो बध्नात ॥ वरुण मण्डलं वरुण: सह० ॐ इमं मे तत्वायामि ॥ ब्रह्मा
वन्द मानस तदासास्ते ~~स्ते~~ जजमानो हविर्भि: ऽहेड मानो वरुणेह वोध्यु रुस
०ॐ नमो भगवते०
सामान ऽायु: प्रमोषी ॥ ॐ वर्षन्तु ते० ॥ वायव्यां दिशि ॥ वायुर्देवता
मृगारुढ़ो धूम्र वर्णो ध्वज हस्तो वायुर्बध्नातु ॥ वायु मंडलं वायु० ॥ सह०
ॐ तव वाय वृतस्पते त्वष्टुर्जा मातर भुत ऽावांस्या वृणी महे ॥ ॐ वर्षन्तु०
कौवेर्यां दिशि ॥ कुवेरो देवता ऽश्वारुढ़ा पीत वर्णा: गदांकुश हस्त: कुवेरो
बध्नातु ॥ कुवेर मण्डल कुवेर: सह० ॥० ॥ ॐ सोमो धेनुं सोमोऽर्वन्तु माशुं सोमो वीरं
कर्मण्यं ददाति सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृ श्रवणं यो ददाशदस्मै ॥
ॐ वर्षन्तु० ॥ ईशान्यां दिशि ॥ ईशानो देवता वृषारुढ़ा स्फटिक वर्णा: शूल
हस्त: ईशानो बध्नातु० ॥ ईशान मण्डलं ईशान: सह० ॥ ॐ तमीशानं जगतस्
तस्थुषस्पतिं धियं जिन्मव से हू महे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसाम
सद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये ॥ ॐ वर्षन्तु० ॥ ॐ नमो० ऊर्ध्वायाम्
दिशि ॥ ब्रह्मा देवता हंस: रुढ: रक्त वर्णा: कमण्डलु हस्तो ब्रह्मा बध्नातु ॥
ब्रह्म मण्डलं ब्रह्मा सह० ॥० ॐ ब्रह्मा देवानां पदवी: कवीनां मृषिर्विप्राणां
महिषो मृगाणां ॥ श्येनो गृध्राणां स्वधितिर वनानां सोम: पवित्र
मत्येति रेभन् ॥ ॐ वर्षन्तु० ॥ ॐ नमो भगवते ऽधस्तात् दिशि ॥ वासुकिर्देवता कूर्मारुढा
पद्म हस्त: वासुकि बध्नात ॥ बासुकि मण्डलम वासुकि सह० ॥ ऽस्तु
सर्पेभ्यो ॥ ॐ वर्षन्तु ॐ नमो० ॥ ऽावन्तरस्यां दिशि ॥ विष्णुर्देवता गरुड़ा
रुढा: श्यामवर्णा: चक्रहस्त: विष्णुर्बध्नातु ॥ विष्णु मण्डलं विष्णु० सह
॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निधदे पदं ऽसपाग्वं सुरे ॥ ॐ वर्षन्तु ते० ॥
ॐ नमो० प्राच्यां दिशि ॥ इन्द्र: सहपरिवारो देवता प्रत्याधि देवतास्त द्विक्षु एक त्रिशूल
को नाम राक्षस: तस्य० ऽष्टादश० शाकिनी डाकिनी हाकिनी याकिनी राकिनी वैताल
जिन्द भैरवादि कामिनी गृहानि बन्धयामि ॥ मम सपरिवारकस्य० ॥
वर्षन्तु० ॥ ऽाग्नेयां दिशि अग्नि: सहपरिवारो० एक मारीच को नाम
तस्य ऽष्टादश कोटि भुत प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्म राक्षस
डाकिनी काकिनी० कामिनी ग्रहान् बन्धयामि ॥
भगवते० ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रीं क्लीं ब्लूं ॥ ऽां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

... श्री कालिका कवचस्य ... [illegible] ... छन्दः कालो देवता सद्यः
शत्रुहननार्थे विनियोगः॥

काली
कवच

ॐ कालिका घोररुपाढ्या सर्व कामप्रदा शुभे।
सर्व देवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥ ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी
चैव ह्रीं ह्रीं एंहंगिनी तथा॥ ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपा सा सर्वदा
शत्रु नाशिनि॥ श्रीं ह्रीं रुपिणी देवी भवबन्ध विमोचिनी॥
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः॥ वैरिनाशाय
वन्दे तां कालिकां शंकर प्रियाम्॥ ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च
वाराही नारसिंहिका॥ कौमारी श्रीश्च चामुंडा खादन्तु मम
विद्विषान्॥ सुरेश्वरी घोररुपा चण्ड मुण्ड विनाशिनी॥
मुण्डमाला वृतांगी च सर्वतः पातु मां सदा॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
कालिके घोर दंष्ट्रे रुधिरप्रिये॥

॥ मन्त्र ॥

ॐ रुधिर पूर्ण वक्त्रे च रुधिरा वृतस्तनी मम शत्रून खादय २ हिंसय २
मारय २ भिन्धि २ छिन्धि २ उच्चाटय २ द्रावय २ शोषय २
यातुधानी चामुंडे ह्रीं २ वां वीं कालिकायै अमुक शत्रु समर्पयामि
स्वाहा॥

ॐ जहि जहि कीटे कीटे कीरे कीरे कटु २ मर्दय २ मोहय २
[illegible] २ मम रिपून ध्वंसय २ भक्षय २ त्रोटय २ यातु धानिका
[illegible] सर्व जनान् राज पुरुषान् राजश्रियं देहि २ नूतन २
क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं [illegible] स्वाहा।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस कवच का एक हजार पाठ पहले कर लेना चाहिये तब पाठ सिद्ध होता है। फिर जब प्रयोग करना हो तो चिता का अंगार जलता घर ले आवे। जब अंगार बुझ जाय तब शत्रु के पांव के स्पर्श का जल ले आवे उस जल में वही बुझा कोयला घिस के स्याही बनाले फिर लोहे की तीली से शत्रु की जमीन पर कुरूप मूर्ति बनावे। सिर मूर्ती का उत्तर की ओर करे पैर दक्षिण में करे। फिर उसके हृदय पर हाथ रख के कवच मन्त्र सहित पढ़े। मूर्ती की प्राण प्रतिष्ठा करे। पूजा करके चाकू से मूर्ती का सिर को काट दे। और उसके कटे धड़ सिर पर जलते अंगारे मले। तो ज्वर पीड़ित हो मरे।

यदि सिर ना काटे केवल उस मूर्ती का बांया पांव छेद दिया जाय तो दरिद्र होवे। (यदि केवल हृदय पर हाथ रख के १ पाठ रोज करदे तो उच्चाटन उसे हो जावे परदेश चला जाय। यदि सामान्य रूप से ही रोज इस पाठ को कोई किया करे तो उसके शत्रु नाश हों धन प्राप्त हो। सिद्धि आवें।

॥ और आगे पल्टो ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याम्यां दिशि यमः ... देवतास्त्वद्धिक्षु एक
पिङ्गलको नाम राक्षसतस्य अष्टादश कोटि भूत प्रेत पिशाच
राक्षस ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी ... किनी
राकिनी वैताल छिन्न भैरवादि कामिनी गृहान् बंधयामि॥ मम
स परिवारकस्य सर्वतो भावेन मां रक्ष अचलं ऽचलं आक्रम्य ऽक्रम्य
महा वज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम
सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लूं प्रें प्रां द्रीं क्रौं हुं
फट् स्वाहा॥ ॐ वर्षन्तु०॥ नैऋत्यां दिशि निऋतिः सह०॥ एक सत्यको
नाम राक्षसस्तस्य॥ अष्टादश० (प्रतिच्यां दिशि वरुणः सह०) एक लम्बको नाम राक्षस०
वायव्यां दिशि वायु सह०। एक प्रलम्बको नाम राक्षसतस्य० अष्टादश कोटि०
कौवेर्यां दिशि कुवेरः सह०॥ एक अश्वालको नाम राक्षसतस्य॥ ईशान्यां
दिशि ईशानः ईशानः सह०॥ एक उनमत्तको नाम राक्षसतस्य॥ अष्टादश०
ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा सह०॥ एक आकाश वासो नाम राक्षसतस्य॥ अष्टादश०
अधस्ताद्दिशि वासुकि सह०॥ एक पाताल वासो नाम राक्षसतस्य० अष्टादश०
आवन्तरस्यां दिशि विष्णु सह०॥ एक महा भीमको नाम राक्षस तस्य० अष्टादश
प्राच्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राणी वज्र हस्ताभ्यां मम स परिवारकस्य०
सर्वतो भावेन मां रक्ष २ हुं जटी स्वाहा॥ अब ब्रह्म द्विषोजाहि ॐ नमो भगवते०
आग्नेयाम दिशि॥ ॐ नमो भगवते आग्नि ज्वाल हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य०
नैऋत्याम दिशि॥ ॐ नमो भगवते नैऋत्य खड्ग हस्ताभ्यां मम सपरिवार०
वारुण्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते वारुणी पाश हस्ताभ्यां मम स०
कौवेर्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते कौवेरी गदाङ्कुश हस्ताभ्यां मम स०
ईशान्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते ईशानी डमरु हस्ताभ्यां मम स०
ऊर्ध्वायां दिशि॥ ॐ नमो भगवते ब्रह्माणी स्रुकस्रुव कमण्डलु अक्षसूत्रांकुश हस्ते। मम सपरिवारकस्य०
अधस्ताद्दिशि॥ ॐ नमो भगवते पाताल वासिनी विषगल हस्ताभ्यां मम०
आवन्तरस्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते श्री महालक्ष्मी पद्मा रुद्र पद्म हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य०

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

यदि किसी काम को शनिवार को शुरु करे तो पश्चिम मुख बैठे बुध को शुरु करे ईशान में पुरव बार को ... यह प्रयोग ... ठीक रहता है।
शनि वार को शनि का कोई पाठ या दान पुजादि करे तो पश्चिम मुख होके करे

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

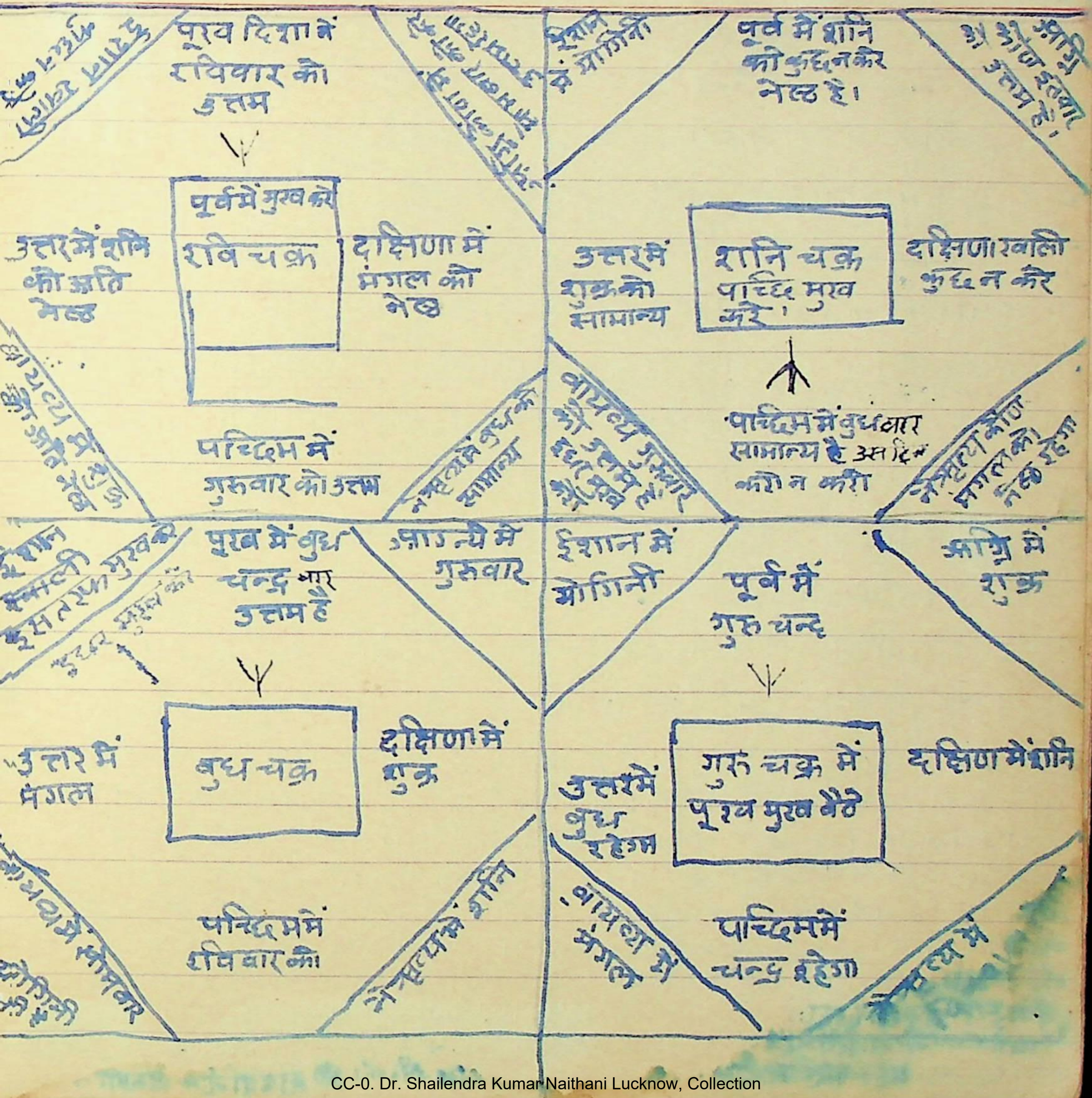

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कवचं- शिरोरक्षत ब्रह्माणी मख माहेश्वरी कण्ठ रक्षत् वाराही, ऐन्द्री चैव भुजद्वयं॥ चामुण्डा हृदयं रक्षत्॥ कुक्षि रक्षेद्य वारुणी॥ वैष्णवी रक्ष पादौ मे॥ पृष्ठ देशे धनुर्धरी॥ यथा ग्रामे तथा क्षेत्रे रक्षत्व मां पदे २
श्रीं सर्वमंगल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके॥ शरण्ये त्रियम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते॥ ॐ ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही, इन्द्राणी चामुण्डे सिद्ध चामुण्डेश्वरी गणेश्वरी क्षेत्रपाल नारसिंही महालक्ष्मी सर्वतो दुर्गे हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुं फट् स्वाहा॥ कनक वज्र वैडूर्य मुक्तालंकृत भूषणा एहि २ आगच्छ २ मम कर्णे प्रविश्य २ भूत भविष्य वर्तमान कालज्ञान दूरदृष्टिं दूरश्रवणं ब्रूहि २ मम शत्रून् अग्निस्तम्भनं कुरु २ मम शत्रून् मुखं स्तम्भनं कुरु २ परेषां गति सर्व मति शत्रूणां वाग् जृम्भणं स्तम्भनं कुरु २ मम शत्रून् कार्य हानि करि॥ मम सर्व शत्रून् उद्योग विध्वंस करि चामुण्डि मम कार्य सिद्ध करि चामुण्डि निहार कहारक धारिणी नगरी पुरी पट्टण आस्थान सम्मोहिनी असाध्य साधिनी॥ ॐ ह्रीं श्रीं दीव हन २ हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ आं ह्रीं सौं ऐं क्लीं हूं सौं ग्लौं श्रीं क्रौं ऐहि २ भ्रमराम्बाहि सकल जगन मोहनाय २ सकल ब्रह्माण्ड पिंडजान भ्रामय २ जरा प्रजा वशंकरी सम्मोहय २ अष्टदश पीठरूपिणी अमल वरयुं स्फुर २ प्रस्फुर २ कोटिसूर्य प्रभा सुरे चन्द्र जटा मां रक्ष २ सर्व प्रकारेन मां रक्ष २ मम सर्व शत्रून भस्मी कुरु २ विश्व मोहिनी हुं क्लीं हुं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते कामदेवाय, इन्द्राय वसावणाय इन्द्र संदीप वणाय, क्लीं २ सम्मोहन वणाय ब्लूं २ संतापन बणाय सः वशीकरणावणाय, काम्पितहुं फट् स्वाहा॥ क्लीं २ नमो भगवते कामदेवाय सर्व जन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल २ प्रज्वल ज्वल हन २ वद २ दप २ सम्मोहय २, सर्वजन मे वश्यं कुरु २ स्वाहा॥ ॐ विष्णवे॥ ॐ नमो नारायणे॥ ॐ जय २ गोपीजन बल्लभाय स्वाहा॥ ॐ ज्वालावर्त क्षम्प्रों हन २ हुं फट स्वाहा॥ (गायत्रीमन्त्रजपा) श्रीमन्नारा[illegible] शरणं प्रपद्ये॥ श्री मते नारायणे नमः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उग्र वीरं महा नृसिंह भीषणं भद्र मृत्यु २ नमाम्यहं क्षौं ह्रीं ऐं श्रीं। भगवान सर्व विजय [illegible] शरणं वां [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

अधिकार वृद्धि के लिये रवि चक्रानुसार बैठे सर्व बुध चक्रानुसार बैठे। सर्व मनोरथ सिद्धी के लिये गुरु चक्रानुसार बैठे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

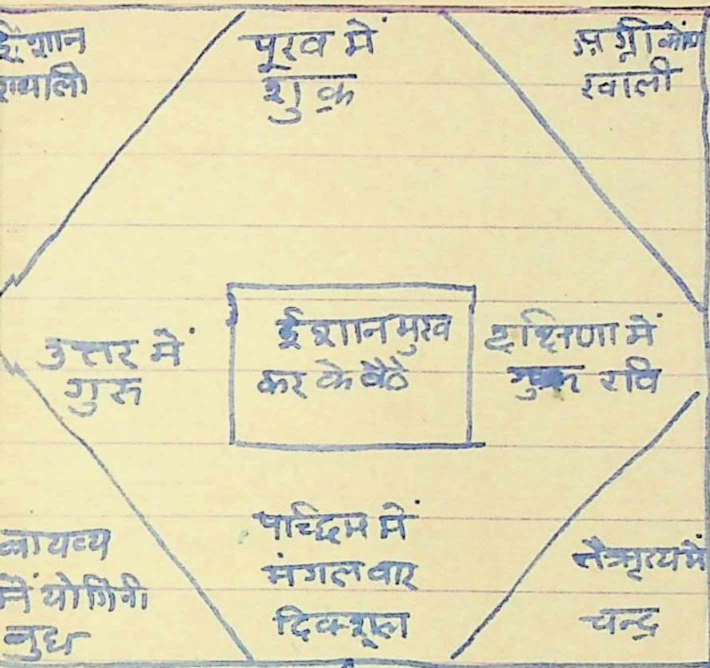

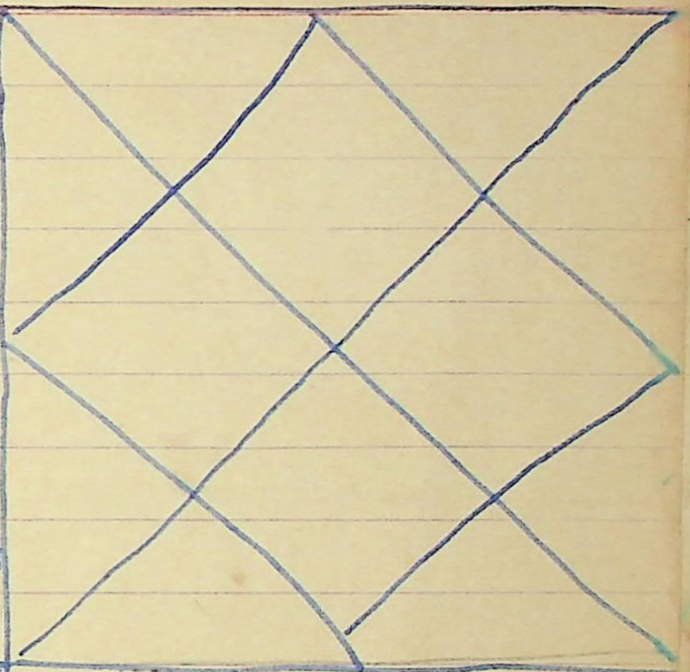

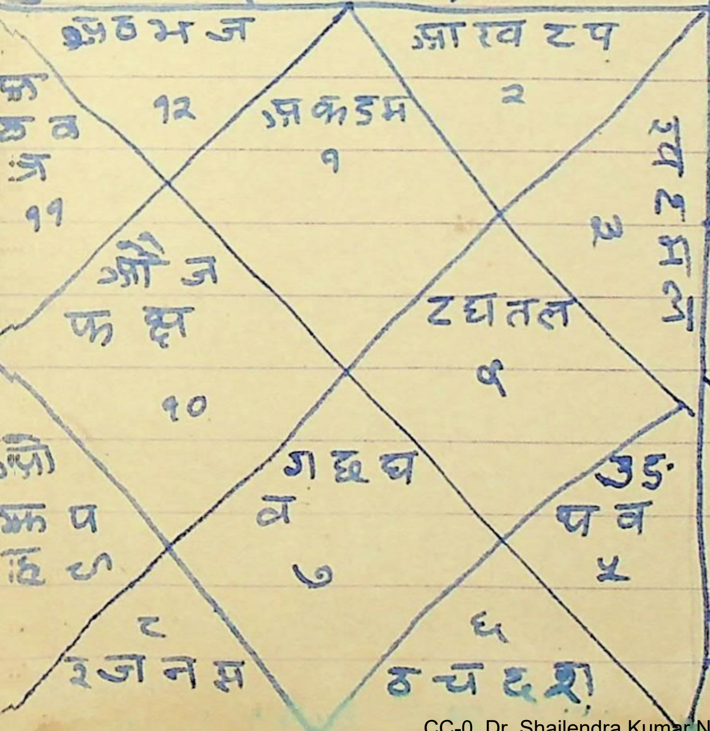

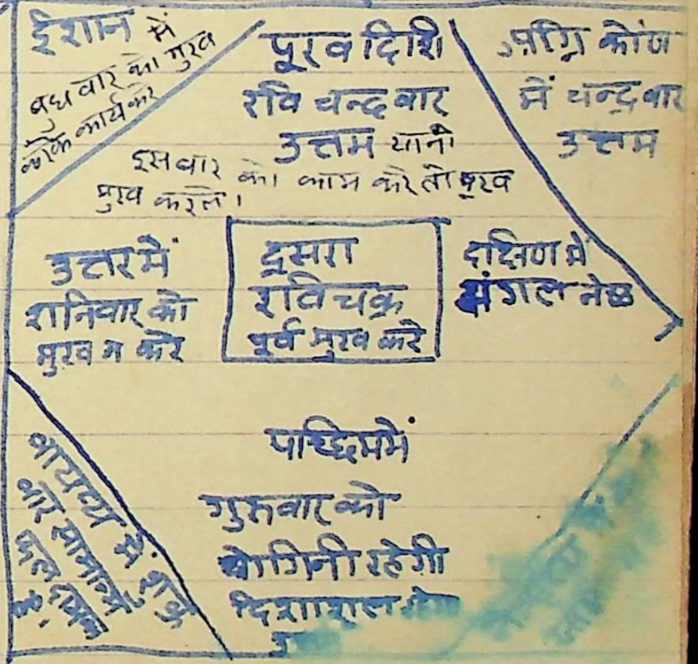

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरि। साध्य। सिद्धि। सुसिद्धि। अरि शत्रु भाव है इसमें काम सिद्ध नहीं होता है। साध्य प्रकृति भी काम बिगाड़ देती है। सिद्धि प्रकृति से भी काम बिलम्ब से होता है। सुसिद्धि प्रकृति का मंत्र बहुत शीघ्र सिद्धी प्रदान करता है। मन्त्र की प्रकृति जानने की बिधि अकडम चक्र से देखो। यदि अपने नाम के अक्षर के कोंण से मंत्र के शुरु ~~का~~ अक्षर का कोंण पहला पांचवा नवा कोंण पड़े तो मंत्र को सिद्धि प्रकृति का समझना चाहिये। और यदि अपने नाम के शुरु अक्षर वाले कोंण से मंत्र अक्षर का कोंण दुसरा छठा दसवां कोंण हो तो मन्त्र की साध्य प्रकृति समझना चाहिये। यदि - ३ - ७ - ११ वां हो तो सुसिद्धि प्रकृति जानों। यदि ४ - ८ - १२ वां कोंण हो तो अरि समझो मतलब यह मन्त्र सूट नहिं करेगा। त्रिपुरी मंत्र में जो बीज सुसिद्धि प्रकृति का हो उसे पहले लगादे।

जिसमें अन्त में स्वाहा हो वह देवी मन्त्र होते है। हुंफट् वाले पुरुष मन्त्र होते हैं। नमः अन्त में हो तो नपुंषक मन्त्र कहलाते हैं।

शान्ती कर्मों में मन्त्र के अन्त में नमः लगा दो। वशीकरण में अन्त में स्वाहा। स्तम्भन में वषट् लगादो [illegible] में वौषट् उच्चाटन में [illegible] में फट् अन्त में लगादे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अष्टवाकोटि भुजो सिंतो गणपतिर्मन्दिरात्नकः स्वर्गदः
क्रोडकाण्डमिदं गणस्य हरिणा प्रोक्तं विधाने पुरा ॥
एतच्छ्लोकसुपद्यकं प्रतिदिनं भक्त्या पठेद् यः पुमान
निर्वाणं परमं व्रजेत्, स सकलान् भुक्त्वा सुभोगानपि ।

मंगल विधान के लिये

गणपति विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिप,
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्
विश्वं तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित् ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन्त्र की चार प्रकृति होती है।

अरि। साध्य। सिद्धि। सुसिद्धि। अरि शत्रु भाव है इसमें काम सिद्ध नहीं होता है। साध्य प्रकृति भी काम बिगाड़ देती है। सिद्धि प्रकृति से भी काम बिलम्ब से होता है। सुसिद्धि प्रकृति का मंत्र बहुत शीघ्र सिद्धी प्रदान करता है।

मन्त्र की प्रकृति जानने की विधि अकडम चक्र से देखो। यदि अपने नाम के अक्षर के कोंण से मंत्र के शुरु अक्षर का कोंण पहला पाँचवा नवा कोंण पड़े तो मंत्र को सिद्धि प्रकृति का समझना चाहिये। और यदि अपने नाम के शुरु अक्षर वाले कोंण से मंत्र अक्षर का कोंण दुसरा छठा दसवां कोंण हो तो मन्त्र की साध्य प्रकृति समझना चाहिये। यदि - ३ - ७ - ११ वां हो तो सुसिद्धि प्रकृति जानों। यदि ४ - ८ - १२ वां कोंण हो तो अरि समझो मतलब यह मन्त्र सूट नहीं करेगा। त्रिक्षरी मंत्र में जो बीज सुसिद्धि प्रकृति का हो उसे पहले लगादे।

जिसमें अन्त में स्वाहा हो वह देवी मन्त्र होते है। हुंफट् वाले पुरुष मन्त्र होते हैं। नमः अन्त में हो तो नपुंसक मन्त्र कहलाते हैं।

शान्ती कर्मो में मन्त्र के अन्त में नमः लगा दो। वशीकरण में अन्त में स्वाहा। स्तम्भन में वषट लगादो [illegible] में वौषट उच्चाटन में [illegible] में फट् अन्त में लगादे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(पात्र वन्दना)

श्यामे श्यामरते शवासनगते मुण्डाब्जमालावृते। सद्यश्छिन्नमुक्त केचकशावृत कटि प्रान्ते विमुक्ताम्बरे। खड्गशछिन्न शिरो वराभय करे शावावतंसे मुदा। पात्रं त्वं प्रथमं गृहाण सुधया पूर्णां दया धीयताम्। क्रीं कालिकायै पात्रं समर्पयामि॥

तारे तारकुचे सवासनगते रक्त त्रिनेत्रान्विते। पिंगोगैक जटे विकाश वदने शार्दूल चर्मावृते॥ खर्बैकरतीरे कास मुण्ड नालिने राजत्करे नीलभे॥ मातः पात्रमिदं गृहाण सुधया पूर्णां द्वितियं मुदा॥ त्रीं तारायै पात्रं समर्पयामि नमः॥

बाले बाल दिनेशकोटि रुचिरे बालार्क बिम्बाम्बरे॥ पाशस्वास शरांकुशान्वित करे बालेन्दु राट शेखरे॥ हालाघूर्णित लोचनत्रय युते नाना विभूषान्विते॥ पात्रं पूर्णा मिदं गृहाण सुधया मातस्तृतियं मुदां श्रीं महाविद्यायै पात्रं समर्पयामि नमः॥

श्रोणे श्री भुवनेश्वरी त्रिनयने, बन्धुक पुष्पाम्बरे॥ पाशाभीतिवरांकुशान्वित करे तारेश भालस्थले॥ कांचो कुण्डल कण्कणांङ्गद रणमंजीर हारोज्वले॥ पीनोत्तुङ्ग कुचे सहास वदने पात्रं चतुर्थं भजे॥ श्रीं भुवनेश्वरी पात्रं समर्पयामि नमः॥

मातर भैरवी श्रोणभे शशि धरे स्मेराननेतोदरी॥ रक्ता लिप्त श्रोण बसने मुण्डाब्जमाला धरे॥ विद्याभीति वरां वटीं हस्तैर्दधाने शिवे॥ पात्रं पारिजात गृहाण ...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ पात्र वन्दना ॥

देवी छिन्नगले पतत्त्व रुधिरं पातुं विवृतानिनम् ॥ भालं मुक्तकचं
निजं निज करे वामे दधाने मुदा ॥ भानुस्थस्मरगे समीक्ष्य च
निजे सख्यौ च मोदान्विते ॥ पात्रं स्वीकुरु षष्ठमेतदमलं मातः
सुधापूरितम् ॥ ह्रीं छिन्नमस्तायै पात्रं समर्पयामि नमः ॥

धूमे रुक्ष ~~धूम्र~~ विलोचनत्रययुते क्षुद्व्याकुले चंचले ॥ दुशंचेत्ते ऽघोरे
भयावहे कलिरते म्लानाम्बरे रुक्षभे नित्यं मुक्त शिरोरुहे
सुदृशेन सूर्पादोर स्वोद्दिते ॥ पात्रं सप्तमिदं गृहाण सकलानन्द
प्रदन्ते नमः ॥ धूं धूमायै पात्रं समर्पयामि नमः ॥

माता श्री बगला मुखी त्रिनयने स्वराम्बरे स्वर्णभे।
सौवर्णासनगे सुधांशु मुकुटे चम्पकस्त्रजा सुप्रभे। पाशं मुद्
गरकं विशालरसना वज्रं दधाने करैः ॥ नाना भूषणभूषिते
प्रियतमं पात्रं गृहाणाष्टकम् ॥ बं बगलामुख्यै पात्रं समर्पयामि नमः

मातंगी श्याम देहे शुक कललीपते सावधाने दधाने॥
पाथोब्जे पादमेकं मधु मद मुदिते शंख पात्रावतंसे ॥ वीराण्
वादानुरक्ते ऽरुणा लसित पटे रत्नपीठे परिस्थिते ॥ मातः
... कार्यं मेतन्नव, ममालि/मृतं पात्रं ऽवद्द मौले मां मातंगायै
... र्पयामि नमः ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(द्वादश)

॥ पात्र वन्दना ॥

मातः श्रीकमले सरोरुहगते स्मेराननां भोरुहे ॥ कंजद्वय वर भयान्वितकरे विद्युद्विलासोज्वले ॥ पीनोत्तुङ्ग कुचे कटाक्ष विभवैश्चित्तं मरारेर्वशं कुर्वाणो दशमं गृहाण विमलं पात्रं सुहारान्विते ॥ कं कमलायै पात्रं समर्पयामि नमः ॥

देवं नागनिबद्ध सुन्दरजटां हस्तैः कृपाराभये बिभ्राणं त्रिशिखं वरं त्रिनयनं स्मेर पंचाननम् ॥ सुश्वेतं सरोरुहो परिगतं चर्माम्बराऽम्बराम् शम्भोः पात्र महं ददे सुधया चैकादशं पूरितम् ॥ शं शम्भवे पात्रं समर्पयामि

नानाभूषणभूषितं त्रिनयनम् लम्बोदरं तुन्दिलं ॥ प्रोद्यत् कोटि दिवाकर द्युतिनिभं मातङ्ग वक्त्रोज्वलं ॥ विद्या दश बाहुमेक दशनं राकेश भालस्थलम् ॥ दिव्यं द्वादशं उत्तमोत्तम महं पात्रं गणेशं भजे ॥ गं गणेशं भजे ॥ गं गणेशाय पात्रं समर्पयामि नमः ॥

श्रोण प्रोत सुकुण्डलं त्रिनयनं दंडं त्रिशूलायुधम् ॥ मुण्ड पुंज विराजमानवपुषं कर्पूर पुंजोज्वलम् ॥ बालं श्री बटुकं प्रसन्नवदनं स्वच्छाम्बरोल्लासितम् ॥ पात्रं स्वादुरसं त्रयोदशमहं सङ्ग्राहयामि प्रियं ॥ बं बटुकाय पात्रं समर्पयामि नमः ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ पात्र वन्दना ॥

सिंदुरारुण वस्त्र लेपन धरं हुंकार भी मानननम् ॥ श्यामां मोधरसन्निभं त्रिनयनं सर्पोल्लसत कुण्डलम् ॥ घंटा स्वच्छ कपाल भूषित कटिं दण्डं दधानं गदां॥ क्षेत्राधीश महं चतुर्दश मिदं पात्रं समभ्यर्चये॥ क्षें क्षेत्रपालाय पात्र मर्पयामि नमः॥

योगिन्यो मद्य मन्थरा: कुल परा: स्मेराननां भोरुहा ॥ रक्ता लेपन वस्त्र भूषरा धरा: कार्तस्वरा: ॥ स्वच्छा कारसार चतुरा: प्राज्य प्रमोदान्विता: ॥ पात्रं पंच दशं सुधार समृतं गृहणन्तु दत्तं मया॥ यां योगनिभ्य:॥ पात्रं समर्पयामि नम:॥

द्वन्दे नित्य शुद्दे निरवोधि नि:स्वरुपे निरीहे। निर्माये नि:कलंके निरुपम विषये निर्गुणो निर्विकारे॥ स्वच्छानुभूते परमतर शिवे षोडशं पात्रं मेतत पूर्णां विज्ञान वादा विमलतममहं स्वच्छ वृत्तिं जुहोमि पराऽम्बायै पात्रं समर्पयामि नम:॥

॥ कुण्ड प्रार्थना ॥

। श्री भुवनेश्वरी च कमला श्री राजेश्वरी पूर्णा भैरवभैरवी डुका तारा तथा कालिका॥ पूर्णा श्री बगला च धूम्र श्री छिन्नमस्ताम्बिका॥ पूर्णा श्री गुरु पादुकां कुं कुण्ड ... मि नम:॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यदत्र संस्थितं भूत (चिता पूजन विधी) अपसर्पन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेत

स्थान माश्रित्य सर्वदा। स्थान त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

(चिता बलियाँ
" देने की बिधी "

प्रथम

ये चात्र निवसन्त्यन्ये देवता भुवि संस्थिता: ॥ अपसर्पन्तु ते ये भूता भूमि संस्थिता:। ये विघ्न कर्तार: ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।

पीली सरसों काले तिल चावल बिखेर दे चारों तरफ।

(एक फूल हाथ में लेके) (भैरव जी का ध्यान प्रथम करे

॥ ध्यान ॥

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यं नुज्ञां दातुं मर्हसि ॥ ईशान में डाल दे।

(हाथ में जल ले के जमीन पर डाले) और कहे

(ॐ रक्ष २ हुं फट् स्वाहा॥

(जल से (त्रिकोण जमीन पर बनावे बीच में ह्सौ) लिख दे।

और यह मंत्र बोलता जाय = (ॐ आसुरेरवे वज्रेरवे हुं फट् स्वाहा)

फिर आसन उस पर बिछावे = फिर आसन के चारों कोनों पर पूजा करदे।

जब आसन बिछावे तो बोले(ॐ ह्रीं आधार शक्त्यै कमलासनाय नम:

नीचे आसन चित्र देखे

ॐ गं गणपतये नम: गणेश पूजन

ऐं सरस्वत्यै नम: सरस्वती

यह समझो आसन है।

आधार शक्ती का बीच में पूजन करदे।

ॐ ह्रीं आधार शक्त्यै कमलासनाय नम:

चिता मध्य में " हाथ में फूल लेके

ॐ क्षें क्षेत्रपालाय नम: क्षेत्रपाल

पुजारी

ॐ दुं दुर्गायै नम:

इष्ट ध्यान करे=

बालार्क मंडलाभासां चतुर बाहुं त्रिलोचनां पाशांकुश धनु र्बाणा धारयन्तिं शिवां श्रये ॥ बाले बाल दिनेश कोटि रुचिरे बालार्क बिम्बाम्बरे ॥ पाशेस्वास शरां कुशान्वित करे बालेन्दु राट शेखरे ॥ हाला घुर्णित लोचन त्रययुते नाना विभूषान्विते ॥ ऐं क्लीं बाला त्रिपुरा देव्यै शिवसहितं नमस्यामि ॥ (ॐ भूर्भुव: बाला त्रिपुरा देव्यै इहागच्छ इह तिष्ठ सन्निधेहि भव मे नमश्चण्डिकायै नम: ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

...लं सदना धारां मु... ...तभुजाम्
...क्यां मुण्ड माला विभूषणाम् । खड्गाभयवरां छिन्नं मुण्डं च दधतीं
...ः महामेघप्रभाम् श्यामां तथा चैव दिगम्बराम् ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चिता में ही पंचोपचार पूजन इष्ट का करदे । फिर मद्यमें बोर २ के
चिता में शुद्धी खण्ड प्रदान करे । कमसे कम १ पाव होना चाहिये ॥ वर्ना
५ पीस तो जरूर हो ॥ फिर मत्स्य, खंड मद्यमेंबोर कर प्रदान करे ॥
फिर मिठाई पूआखीर हलवा आदि की बली दे । फिर तर्पण करे मद्यसे ।
फिर पान लौंग हुआ प्रदान करे । इतर प्रदान करे । नारियल चुन्नी
में लपेट कर भेंट प्रदान करे । ऋतु फल प्रदान करे । आरती
कपूर की आरिवरी में करदे ।

चिता बलि मंत्र ये हैं। (प्रथम बलि इष्ट को करे प्रदान)

१) ऐं क्लीं सौं सायुधां सा वाहनां सवरां श्री शिव
सहितां इष्ट देव्यै बाला त्रिपुरायै श्री पादुकां पूजियामि नमः
बलिं समर्पयामि तर्पयामि नमः ॥

२) हसक्षमलवरयूं आनन्द भैरवाय वषट् सहक्षमलवरयीं
आनन्द भैरव्यै वौषट पादुकां पूजियामि नमः बलिं समर्प०
तर्पयामि नमः ॥

३) ॐ ऐं ह्रीं श्री हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं स हसखफ्रें सहक्षमल
वरयीं हसौं सहौं गुरु शक्ति सहितं श्रीपादुकां पूजियामि नमः ॥
बलिं समर्पयामि नमः तर्पयामि नमः ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं स हसखफ्रें सहक्षमलवरयीं
हसौं परम गुरु शक्ति सहितं श्री पादुकां पूजियामि नमः ॥
...र्पयामि नमः तर्पयामि नमः ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(६) (७)
(८) परात्पर गुरु। परमेष्ठी गुरु॥ आदिगुरु॥
(८) ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नमः पादुकां पूजयामि नमः बलिं स०त०
(९) ॐ ह्रीं रुरु भैरवाय नमः
(१०) ॐ ह्रीं चण्ड भैरवाय नमः
(११) ॐ ह्रीं क्रोध भैरवाय नमः
(१२) ॐ ह्रीं उनमत्त भैरवाय नमः
(१३) ॐ ह्रीं कपाल भैरवाय नमः
(१४) ॐ ह्रीं भीषण भैरवाय नमः
(१५) ॐ ह्रीं संहार भैरवाय नमः
(१६) ॐ ह्रीं श्मशान भैरवाय नमः (चिता के उत्तर में पूजा बलि दे।
(१७) ॐ वं बटुक भैरवाय नमः
(१८) ॐ गं गणेशाय नमः पादुकां पूजयामि नमः बलिं समर्पयामि नमः तर्पयामि नमः
(१९) ॐ क्षों क्षेत्र पालाय नमः
(२०) ॐ यां योगनिभ्यो नमः
(२१) सौं पराम्बाये नमः
(२२) भैं भैरव्ये नमः भैरव सहितं पादुकां पूजयामि नमः॥ बलिं स० त०

(१) प्रथम गुरु का ध्यान करे।
(२) बटुक भैरव का
(३) गणेश का ८ षोडशमातृ का
(४) ६४ योगनियों का ध्यान
भैरव का पूजन पूरब में
महाकाल का पूजन दक्षिण में
कालभैरव का पूजन पश्चिम में होता है।
तीन बली चिता के मध्य में दे।

भोग की हर वस्तु चौकोर मंडल जल से बना कर पत्तल पर रखले फिर
सोध कर उससे सब वस्तुयें अभिषिक्त कर (छिड़कदे)
ऐं क्लीं सौं फट् कह कर कारण सब पर छिड़के॥ अ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ कालिकास्तोत्र ॥

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषिताम्।
सद्यश्छिन्नशिरः खड्ग वामाधोर्ध्व कराम्बुजाम्।
अभयंवरदं चैव दक्षिणोर्ध्व अधोपाणिकाम्।
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बराम्।
कण्ठावसक्त मुण्डाली गलद् रुधिर-चर्चिताम्।
कर्णावतंसता नीत शव युग्म भयानकाम्।
घोरदंष्ट्रा ललज्जिह्वां पीनोन्नत पयोधराम्।
शवानां कर संघातैः कृत काञ्ची हसन्मुखीम्।
सृक्कद्वय गलद्रक्त धाराविस्फुरिताननाम्।
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालय वासिनीम्।
बालार्क मण्डलाकार लोचन-त्रितयान्विताम्।
दन्तुरां दक्षिणाव्यापि मुक्तालम्बिकचोच्चयाम्।
शवरूप महादेव हृदयोपरि संस्थिताम्।
महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम्।
सुप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम्।
...नी चक्र संहितां कालिकां भावयेत सदा।
...चिन्तयेत् कालीं सर्व कामार्थ सिद्धये।

(कालीतन्त्र)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...ओंका ध्यान = प्रत्यालीढ़ पदां घोरां मुण्डमाला विभूषिताम। चतर्भुजां ललज्जिह्वां महा...
...भीमां वरप्रदाम्। खड्ग कर्त्री धरा सव्य वाम मुण्डोत्पलान्विताम्। बालार्कमं...
...ला कारां लोचन त्रय भूषिताम्। पिंगोग्रैक जटां ध्यायेत मौला वक्षोभ्य
भूषिताम्॥

भगवती कालिका दहकती चिता मे प्रवेश कर रही हैं। शमशान अग्नि में मध्य में शव पर आरूढ़ हैं चारों प्रेत चिता के चारों तरफ हैं। ब्रह्मा, विष्णु रुद्र ईश्वर सदासिव बीच में मुर्दा है। यह पं... महाप्रेत कहलाते हैं।

॥ तारा माई का ध्यान॥

ॐ प्रत्यालीढ पदां घोरां मुण्डमाला विभूषिताम्।
खड्ग कर्त्री समायोगे सव्येतर भुजद्वयाम्।
कपालोत्पल संयुक्त सव्य पाणि युगान्विताम्।
पिङ्गोग्रैक जटां ध्यायेन् मौला वक्षोभ्य भूषिताम्।
अक्षोभ्यो हरमूर्द्धन्यस्त्रि मूर्त्ति र्नाग रूपधृक्।
चन्द्र सूर्याग्नि नयनां महापान प्रमत्तिकाम्।
प्रत्यालीढपदार्पितांघ्रि शवहृद् घोराट्टहासा ~~परा~~ खवा। ध्यान, आवाहन इससे करे
खड्गेन्दी वर कर्त्रि खर्परभुजा हुंकार बीजोद्भवा। (कर्त्री माने कैंची)
खर्वानील विशाल पिङ्गल जटाजूटै नागै र्युता। (नागै युता माने नाग जटा में लपेटे हैं।)
जाड्यं न्यस्य कपाल के त्रिजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्।
प्रत्यालीढ पदां देवीं महामायां त्रिलोचनाम् ॥ (प्रत्यालीढ माने शवारूढ़े)
सर्वालङ्कार भूषाढ्यां महानीलप्रभां पराम्।
खड्गं पाशं दक्षिणे च वामे न्दी वर मूर्ध्वतः।
दधतं चषकं देव्या भावयेत् साधको त्तमः।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह महाविद्या जो हम पाठ करते हैं उसी का यन्त्र यह है। रोज पंचोपचार से इस यन्त्र को ताम्ब्र या चांदी, या स्वर्ण, पात्र में अष्टगंध के अनार या स्वर्ण की कलम से लिख कर पूजन करना चाहिये। षट्कोण की देवि कुलाम्बिकायें कहलाती हैं। इनकी पूजा दुर्वा अक्षत जल चन्दन धूप दीप नैवेद्य माला लाल फूल को चढ़ावे अब पुष्पांजलि दें। पकोण की देवियों की पूजा पीलो लाल सिन्दुर अक्षत फूल धूप दीप से पूजन करे नैवेद्य दे। और पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। बीच में शिवा का पूजन षोडशो प्रकार से करें। सुहाग पिटारी चढ़ावे। फिर अष्टकमल की देवियों की पूजा करे। फिर अष्ट भैरवों की पूजा करे। फिर आठों आयुधों की पूजा करे। फिर चारों द्वारों के देवों, का पूजन करे। फिर बाहर के देवों का पूजन करे। फिर १ कन्या खिलावे, एक लांगुरा खिलावे। एक सुहागिन खिलावे। फिर २१ पाठ करे। (ध्यान

॥ कामतारापूजन)॥ आवाहन श्लोक

घोरहास्यां महादेवीं तारिणीं ताररूपिणीम् ॥
चषकेन्दीवरञ्चैव खड्गञ्चापि वरं तथा ॥ १८५
व्याघ्रचर्म परीधानां सर्वालङ्कार भूषिताम ॥
दासा नागहाराञ्च महायोग स्वरूपिणीम् ॥ १८६

यह एकजटा तारादेवी का प्राण प्रतिष्ठा मंत्र है

ह्रीं क्लीं स्वाहा हंस: श्रीमदएकजटा देवताया: प्राणा इह प्राणा:। एवं जीव इह ... सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि एवं वाङ्मनश्चक्षु: श्रोत्र घ्राण प्राणा इहागत्य ... स्वाहा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ महाविद्या यन्त्र निर्माण ॥

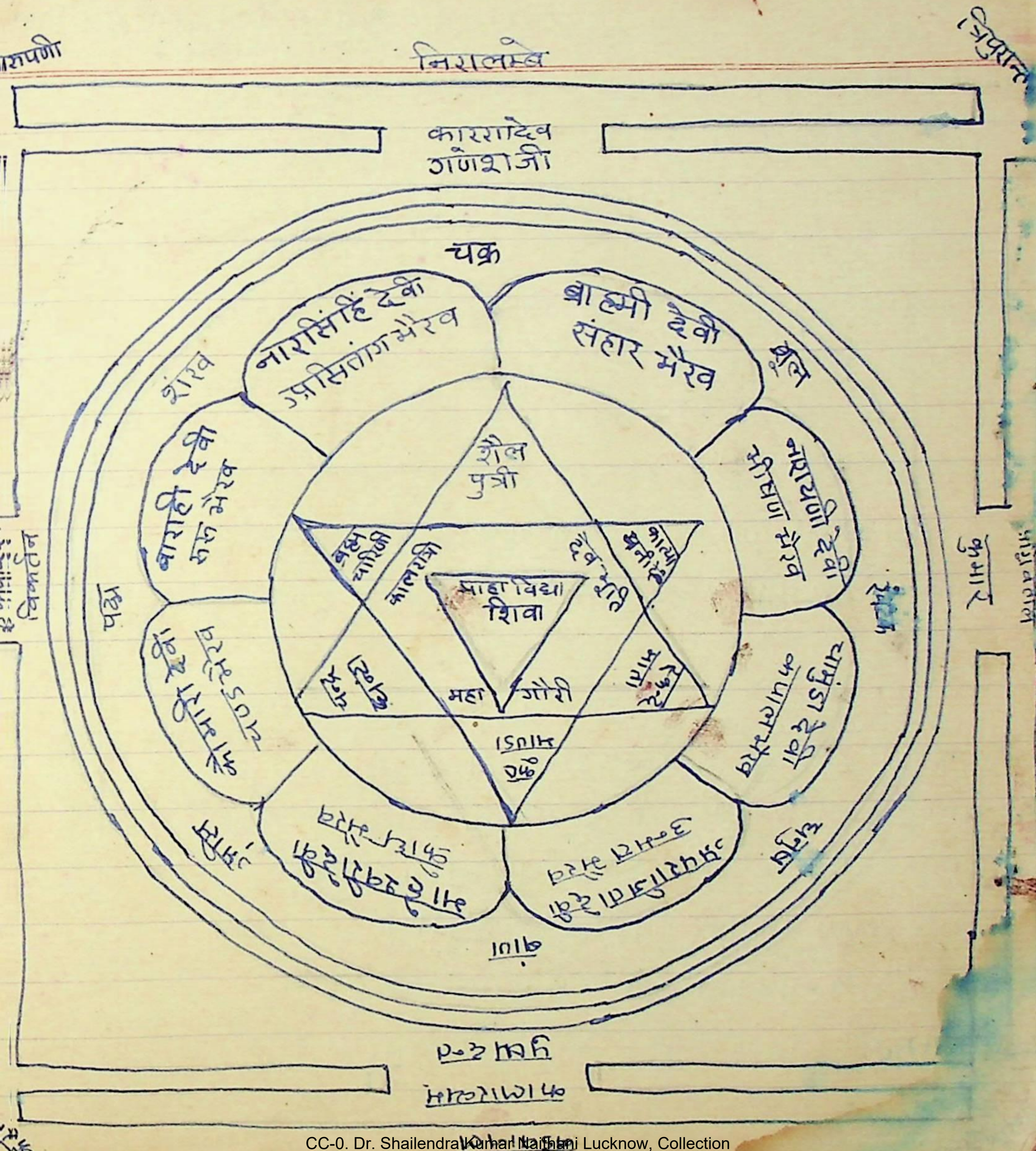

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ उग्रताराध्यान ॥ किसी नारी में करे तो ऐसी हो शक्ति
~~जैसा ध्यान में वर्णन है।~~

इच्छाज्ञान क्रियाञ्चापि कामिनीं कामदायिनीम् । १८७
रतिं रतिप्रियाञ्चैव रतिदां परिपूजयेत् ।
शवोपरि महादेवीं शवे हास्य संयुक्ताम् ।
विपरीत रतासक्ताम उग्रतारां परात्पराम् । १८८
कर्त्रिका खड्गसंयुक्तां दक्षिणेतारिणीं पराम् ।
वामभागे नील पद्मं चषकं तदधः स्मृताम् । १८९
मुण्डमाला वलीरम्यां रक्तधारा विभूषिताम् ।
घोर हास्यां त्रिनेत्राञ्च सर्वदा ज्ञानदायिनीम् । १९०
एकवेणिं महावेणिं फणिराजविभूषिताम् ।
स्वर्णमुकुटैर्युक्तां शुभ्रदन्त विभूषिताम् ॥ १९१ ॥

॥ नील सरस्वती का ध्यान ॥

नीलवाणीं सदा वन्दे नीलाञ्जनचय प्रभाम् ।
सर्व्वलङ्कार समोपेतां व्याघ्रचर्मावृतां कटौ । १९२
नागेना वेष्टितां देवीं फणिहारविधारिणीम् ।
फणिमस्तक योगेन दत्तपादं प्रपश्चितम् ॥ १९३
पादं शवे नाभौ रत्युल्लास हृदयान्विताम् ।
तां महतीं विश्वमोहिनीं घोरकामिनीम् । १९४

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिववक्त्रस्य भ्रमरा प्रत्यालीढपदां शुभाम् भ्रमरा केश संस्कार सदा जालतकुन्तला
नानामणियुतां शीर्ष महापाप विनाशिनीम्। कपालं चापि खड्गं च नील पद्मां सरस्वतीम्
भावयेत् सर्वसिद्ध्यर्थं नीलवर्णां कपित्थदाम्। १६६॥

षट कर्मों के देवता = शान्ती कर्म के अधिष्ठात्री रति देवी है। उत्तरमुख
वशीकरण की - अधिष्ठात्री सरस्वती देवी हैं। मुख पूरब में के
स्तम्भन की = - - लक्ष्मी देवी हैं।
विद्वेषण की = - - ज्येष्ठा देवी है। दक्षिणमुख के
उच्चाटन की = . . दुर्गा देवी है।
मारण की = . . काली देवी हैं। दक्षिणमुख
आकर्षण मोहन में मे उत्तरमुख

(विसर्जनमन्त्र)

उत्तिष्ठ देवि चण्डेशी शुभां पूजां प्रगृह्य च॥ कुरुष्व मम कल्याणि मष्टाभिः शक्तिभिः सहेति॥ उत्थाय गच्छ२ परम स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके॥ दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते संवत्सरे व्यतीते तु पुनारायाऽऽगमनाय वै॥ इमां पूजां मया देवि यथा शक्ति उपपादिताम्॥ रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानं उत्तमम्॥ (इति जलेन प्रवाहेत॥)

उत्तिष्ठ देवि गन्तव्यां प्रविश्य हृदयं मम॥ एह्येहि महाकाले महालक्ष्मी महासरस्वती मम हृदयं प्रविश्य२ स्वाहा॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

"दिक्षा विधान"

दिक्षा बेल के बृक्ष के नीचे ले या, शमशान में या, पर्वत पर या, नदी तट पर, या गुरु गृह में, या महापीठ, या सिद्धि पीठ पर, या शिवमंदिर में या तलाब पर, या वृषभहीन शिवालय में मन्त्र गुरु से ले और अनुष्ठान पुरश्चरण भी इन्हीं जगहों पर करे। जहां दस मील के अन्दर दूसरा शिवालय न हो तो एक ही शिव मान्दिर हो १० मील के अन्दर तो वहां अनुष्ठान करने से सिद्धि मिलती है। गंगा तट हो तो कहना ही क्या है अति सुन्दर हो। कोटि गुना फल होता है। सन्यासी से, पिता से, माता से, सहोदर भ्राता से, शत्रुपक्ष के विशेष व्यक्ति से, त्यागी से, पति पत्नि से, पिता पुत्री से, या पुत्री पिता से, या पुत्र पिता से, छोटे भाई से, दिक्षा कभी गृहण न करे।

दिक्षा ग्रहण करने के तीन दिन पहले शुभ कर्म करे खीर भोजन करे दूसरे दिन उपवास रहे। जिस दि[illegible] दिक्षा ले गुरु को प्रणाम करके पुष्पादि पूजन सामग्री लावे। ५ कलश मिट्टी के लावे पंचपल्लव आदि दवा के पांचो कलश में डालने वास्ते ५ रत्न लावे उसमें डाले। पांचो देवता पांचो मे स्थापित करे। मुक्ता या माणिक्य या गोमेद। (२) बज्र मूंगा) (3) नीलमणी) (४) मरकत मणी (५) पद्मराग मणि)(

इसके बाद गुरु स्वस्ति वाचन करे Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्त्रपात्॥ सभूमिगवं सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठ द्दशांगुलम्॥१॥ स्वस्तिना इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्व वेदा:॥ स्वस्तिनस्तार्द्ष्यो ऽरिष्ट नेमि: स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

मंत्र का पाठ करे। फिर शिष्य करन्यास, हृदयन्यास, तत्वन्यास करे शिष्य को स्नान चन्दन चर्चित पुष्प माला पहनावे। संकल्प दिक्षा का करावे हाथ में पुष्प अक्षत जल देकर। फिर पांचों घट के जल से शिष्य को अभिशिंचित करे। बाद में उसके सिर पर हाथ रख कर गुरु १०८ बार मूलमंत्र जपे जो उसे देना है। फिर दाहिने कर्ण में शिष्य को। यदि शिष्या हो तो बांयें कर्ण में एक बार मूलमंत्र कहे।

जो मन्त्र दे रहे हैं उनके, ऋषि, छन्द:, कीलक, शक्ति, बीज भी बोल दे कर्ण में (जैसे दुर्गा सप्तसती में प्रथम अध्याय में देखो लिखा है, महाकाली का आद्या चरित्रस्य, ब्रह्माऋषि:, महाकाली देवता, गायत्री छन्द:, नन्दजा शक्ति:, रक्तदन्तिका बीजं, अग्निस्तत्वम्, ऋगवेदस्वरूपं श्रीमहाकाली प्रसादात् आत्मनोऽभिष्टफल प्राप्त हेतवे प्रथम चरित्र पाठे विनियोग:॥) दूसरा मध्य चरित्र है। दुसरे अध्याय के विष्णु ऋषि:, महालक्ष्मिर्देवता, उष्णिक छन्द: शाकम्भरी शक्ति:, दुर्गा बीजं, वायुस्तत्वं, यजुर्वेद मूर्ति:, मनो, अभिलषित फल प्राप्त हेतवे पाठे विनियोग:॥

पांचवा उत्तम चरित्र है। = इसके रुद्र ऋषि:, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप छन्द:। भीमा शक्ति:। भ्रामरी बीजं, सूर्यस्तत्वं सामवेद स्वरूपं महासरस्वती प्रीत्यर्थे उत्तम चरित्र पाठे विनियोग:

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैसे ताराजी है तो इनके अक्षोभ्य ऋषि: बृहती छन्द:, लज्जा बीजं, कूर्च (हुं) शक्ति:, कीलक निजबीज तथा (स्त्रीं) है।

वाम पंथी की दीक्षा में पांच घट स्थापित होते हैं।

घट के पांचो देवताओं का नाम।

(1) गणेश की स्थापना
(2) सदाशिव की स्थापना
(3) सुन्दरी देवी की
(4) पर देवता की (मुख्य देवता की) स्थापना करे। जिसका मंत्र लेना है (यानी) या पूजे स्थापित करे
(5) गुरु सहित सर्व देवताओं की

आसन के नीचे महाप्रेत को स्थापित करते हैं। हसौं आसन के नीचे लिख के चिकाज करते हैं। (महाप्रेत की स्थापना करे) हसौं: सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नम: कहे।

पूर्व में	ॐ ह्रीं गां गणपतये नम:
दक्षिण में	ॐ ह्रीं वं वटुकाय नम:
पश्चिम में	ॐ ह्रीं क्षें क्षेत्रपालाय नम:
उत्तर में	ॐ ह्रीं यां योगिनीभ्यो नम:

चारों दिशा में इनका पूजन करे

घट स्थापन विधि क्रम

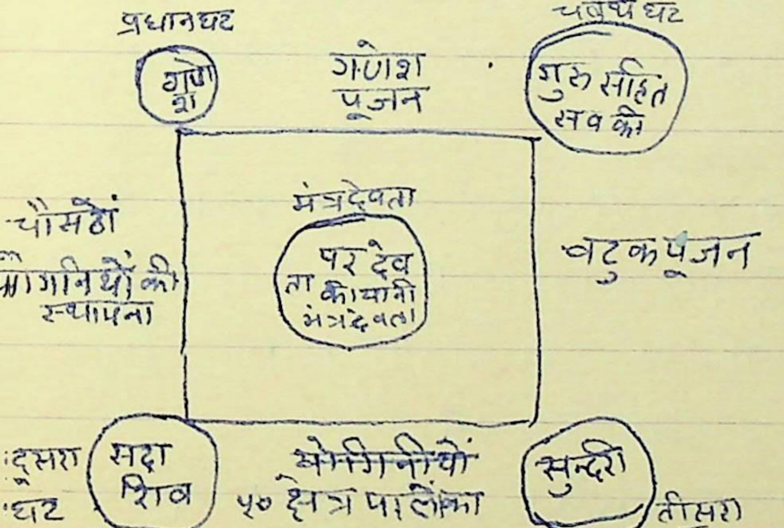

॥ घट में द्रव्य ॥

इलाइची, चन्दन, कपूर जाती पाटल, बेला बिल्वपत्र विष्णु कान्ता, (सहदेई) जौ, तिल, सरसों, वटपत्र आम्रपत्र सतावर जायफल, सुपारी पंचरत्नों, कुशा,

इस मंत्र को आसन के नीचे लिख दे
हसौं सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नम:

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ भैरों सिद्धि ॥

ॐ काली कंकाल महाकाली के पुत्र कंकाल भैरों हुक्म हाजिर रहे मेरा भेजा (परवाने की) रक्षा करे आन बांधू वान बांधू चलते फिरते की औसान बांधू दसा शूल बांधू नौ नारी बहत्तर कोठा बांधू (आज तुम्हें) फूल मे भेजूं फूल में राम के (चन्द्रलेखी जो) डेजी पड़े (उसकी ईंटा) पत्थर कांपे हल२ पड़े गिर२ पड़े उठ२ भागे बक२ करे मेरा भेजा सवा घड़ी पहले सवा दिन सवा मास सवा वर्ष का बावला न करे तो माता काली की सैया पर पग धरे वाचा दुखे तो उमा सूखे वाचा छोड़ कुवाचा करे ढोल की नाद चमार के कूड़े मेरा भेजा बावला न करे तो रुवा के नेत्र आंख की ज्वाला करे सिर की जटा टूटे भूं पर गिरे चाहे गिरे माता पारवती के चीर पर बिना हुक्म नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत नाम आदेस गुरु का ॥

विधि- इस मंत्र को काल रात्रि (दिवाली मे) या सूर्य ग्रहण (मे) (चन्द्र ग्रहण मे) की रात को सिद्ध करे
त्रिकोण चौका देकर दक्षिण की ओर मुख करके बैठे
एक हजार मंत्र जपे लाल कनेल की माला लड्डू सिंदूर
लौंग जोड़ा एक या एक हजार एक सौ एक ॥
तेल का चौमुखा दीपक रक्खे ॥ दशांस हवन
हवन सामग्री के साथ पीली गन्धक डाले ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजा के वशमें, और धनप्राप्ति में देशी घी का दीप उत्तर मुख रक्खे X 3 च्चाटन मारण में सरसों का तेल का दीप दक्षिण मुख रक्खे।

मंत्र हवन वास्ते = वशी, आकर्षण में बट पीपल की समिधा रहे। मारण उच्चाटन विद्वेषण कतल में नीम की समिधा X क्रूर कार्य मे मदार की लकड़ी रहे। शान्ति कर्म में आम की समिधा रहे।

ॐ धीर ध्यान करता अलख्यतो हांक देने हां जरत धवे बोल २ शब्द सांचा फुरो वाचा ॥ 'भूत बुलवाने की विधि'

विधि - लहसुन के रस मे हींग मिला कर मंत्र पढ़ कर अभिमंत्रित करले जिसके लगा हो उसके आंख में आंज दे तो फौरन बोले ॥ ॥ प्रेतादि बाधा बुलवाने का मंत्र ॥

दूसरा मंत्र - ॐ ह्रीं हस फुं समसाने कामिनी समसाने स्वाहा ॥

विधि - यदि स्त्री के लगा हो तो स्त्री की चिता की राख लावे और यदि पुरुष हो तो पुरुष के चिता की राख लावे॥ राख में पीली सरसों सिंदूर और इतर मिलावे और त्रिकोण चौका गोबर का लगा के उसको उस पर बिठावे और १०८ बार ऊपर लिखे मंत्र को जपे फिर उस द्रव्य को मंत्र पढ़ता हुआ उस पर डाले और अग्नि में डाले तो वह बोले ॥

(हाशिये पर: पहले इसे श्मसान पर जा लावे ... को सिद्ध करले।)

मृगी रोग का विधान - तीन वर्ष का पुराना गुड़ और पंचम की भस्मी एक चुटकी भर के गुड़ में मिला दे सात गोली अठन्नी भर के अन्दाज की बनाले हर इतवार मंगल को एक गोली प्रातः सूर्य उदय के समय अन टोके रोगी को खिला दे। इस प्रकार करके सातों गोली इतवार मंगल को खिला के खतम कर दे। तो मृगी जाय ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहले इस होली पर या जन्माष्टमी पर ५०० यन्त्र लिख के पूजन करके नदी में बहा दे तब सिद्ध हो जायगा तब प्रयोग करे।

भूतनाशक यंत्र

६	३	८४	८३
८०	८७	२	७
४	५	६०	६३
८६	८१	८	१

विधि प्रयोग

विधि- इस यंत्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर धूप देकर रखे तो भूतप्रेत का भय न हो तथा घर में भी न आवे॥

प्रेतबाधा दूर करने का यंत्र

इस यन्त्र को होली दिवाली की रात में ५०० यन्त्र लिख डाले फिर पूजा करके जल में नदी में बहा दे

प्रयोग

२	७	ॐ	ह्रीं
स्व	यं	८	१
६	३	क्रौं	क्रीं
लं	जं	कं	जी
तं	पं	सं	तं
४	ठं	५	ठं

विधि- इस यंत्र को भोजपत्र पर लिख कर रोगी के गले में बांधे तो बाधा दूर होती है॥

~~पहले~~ बीस हजार शुभ मुहूर्त में लिख डाले तब सिद्ध होवे। फिर प्रयोग करे।

यंत्र लिखते समय घृत रह खीर खायें जब तक यंत्र लिखे

बीसा

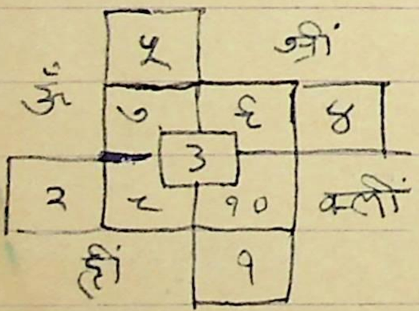

यह यन्त्र आकर्षण वशीकरण मोहन में काम आता है। पवित्र आसन पर बैठ के उत्तर मुख लाल ऊनी आसन पर बैठे। जिसको करना हो उसके नाम से योजना बना कर संकल्प करले शुरु में फिर ५०० यन्त्र बना कर आटे की गोली में लपेट ले। और १ बड़ी मछली बड़े घड़े में जल भर कर पाल ले उसी को खिला दे। ॐ ह्रीं ॐ बोल कर एक २ गोली मछली को देवे। तो वश होवे मछली बाद में नदी में छुड़ा दे। २

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अघोरमंत्र तांत्रिक

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोर अघोरतर तर प्रस्फुर प्रस्फुर प्रकट प्रकट कह कह शम शम जात जात दह दह पातय पातय ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रूं अघोरास्त्राय फट्॥ एक लाख मन्त्र श्मशान पर जपे रोज मसाने की पूजा करे तर्पण करे।

॥ अघोर मंत्र वेदोक्त ॥

अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

इस अघोर मंत्र को जपने से पहले महामृत्युंजय की एक माला जप लेना चाहिये॥ फिर सवा लक्ष अघोर मंत्र जप करे॥ वेदोक्त तन्त्रोक्त मंत्र को सूर्य उदय से सूर्यास्त तक जपने मात्र से एक पुरश्चरण हो जाता है॥ या सूर्यास्त से सूर्य उदय तक या एक शव जलने तक और मसान पूजन करे इस तरह २। पुरश्चरण करे। और वेदोक्त मंत्र के चार पुरश्चरण करे।

ब्राह्मण पर यदि प्रयोग करना हो तो गुरुवार को शुक्रवार को। क्षत्री पर मंगलवार को) (वैश्य पर सोम को) (शूद्र पर बुध को) (म्लेक्ष पर जैसे मुसलमान हो मेहतर हो कसाई हो) शनिवार को प्रयोग करे राजा पर यानी किसी जज पर मन्त्री पर राष्ट्रपती या गवर्नर पर। प्रयोग करे तो पत्रा में देखलो (रविहस्त हो) (पुष्य रवि हो) (श्रवण नक्षत्र ~~या मूल हो~~। व्यतिपात योग उस दिन न हो।

श्रवण मूल दोनों एक दिन में ना पड़े

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यन्त्र सोना या तांबा
किसी में भर कर पहना
जा सकता है। मर गले
में पहने।

यह पंचदशी यन्त्र भरने
की रीति यह यन्त्र देवताओं का दिया है।

शुरु में एक, २-३-४-५-६-७-८-९ जैसे बीच कोठा शुरु माना
जाता देखो बीच में १ एकवा है   महेश्वर हनुमान जी भी है।

शुरु

८	१	६
३	५	७
४	९	२

इस के लिखते समय (ॐ महेश्वर महं पूरय पूरय स्वाहा
महेश्वर भगवान शंकर जी है इस मन्त्र से आवाहन पूजा
अथवा यही लिखते समय बोले। पहले इस यन्त्र
को पीपल की कलम से या ढाक की कलम से किसी
रेशमी वस्त्र पर या भोज पत्र पर लिखले रोली से या लाल चन्दन कपूर
से स्याही बना कर लिखें पूजा षोडशोपचार से करें। और एकाग्र मन से
चार माला रुद्राक्ष के ऊपर जपले। (यह यन्त्र आखिरी में सोने में मढ़ा कर पहनले ना
जब तब यंत्र महिलों को दें तब बाद में।

विनियोग - ॐ अस्य महेश्वर मन्त्रस्य स्वर्णा कर्षण भैरव ऋषिः
विराट् छन्दः महेश्वर देवता ह्रीं बीजं महं शक्तिः पूरयेति कीलकं
महेश्वर प्रीतये जपे विनियोगः।

ऋषि: न्यासः - ॐ स्वर्णा कर्षण भैरवाय नमः (शिरसि) विराट् छन्दसे
नमः मुखे। महेश्वर देवतायै नमः (हृदि) ह्रीं बीजाय नमो (गुह्ये)
महं शक्तये नमः (पादयोः) पूरयेति कीलकाय नमः (नाभौ)
सर्वांगे विनियोगः। महेश्वर प्रीतये सर्वाङ्गे न्यास

कर न्यासः - ॐ महेश्वर (अंगुष्ठाभ्यां नमः) महं तर्जनीभ्यां नमः।
पूरय मध्यमाभ्यां नमः। महेश्वर अनामिकाभ्यां नमः। महं
कनिष्ठिकाभ्यां नमः। पूरय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयन्यास:

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

(ब्राह्मण के प्रयोग में भोजपत्र पर यंत्र लिखे) Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri (क्षत्रियों के प्रयोग में ताड़ के पत्ते पर यंत्र लिखे) (वैश्य के लिये कागज़ पर लिखे) (शूद्र के लिये भूमि पर लिखे) (मुसल्मान के लिये कागज़ पर लिखे) (वशी आकर्षण का प्रयोग एक ही तरह करें।)

शारदचन्द्र समाभासं बाला

इसके बाद ध्यान प्राणायाम गुरु अस्तव, इसके बाद ४ माला मूलमंत्र जप। फिर एक लेकर ९ अंक तक नौ दुर्गों की पूजा यन्त्र में करे। फिर नवों ग्रहों की क्रम से पूजा करे १ अंक पर सूर्य को २ अंक पर चन्द्र को ३ पर मंगल ४ पर बुध ५ पर गु ६ पर शुक्र ७ पर शनि को ८ पर राहु ९ पर केतु को पूजा करे। १ अंक पर शैल पुत्री दुर्गा को २ अंक पर ब्रह्मचारिणि को ३ पर चन्द्र घंटा को ४ पर कुष्माण्डा को ५ पर स्कंदमाता को ६ पर कात्यायनी ७ पर ~~कात्यायनी ८ अंक पर~~ कालरात्री को ८ पर महागौरी को पूजा ९ अंक पर सिद्ध दात्री को पूजा करे। ग्रहों का आवाहन पूजा इन मन्त्रों करे।

ॐ आदित्यायै नमः। ॐ चन्द्रमसे नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ जीवाय नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ शनैश्चरायै नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः। इसके बाद (ॐ इन्द्राय नमः) (ॐ अग्नेय नमः) (ॐ यमाय नमः) (ॐ नैऋत्यै नमः) (ॐ वरुणाय नमः) (ॐ वायवे नमः) (ॐ कुबेराय नमः) (ॐ ईशानाय नमः) ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः। अनन्त की पूजा नीचे पाताल में पश्चिम में करे ब्रह्मणे की पूजा ऊर्ध्व में पूर्व ईशान के बीच में ऊपर करे

फिर (ॐ वज्राय नमः) (ॐ शक्त्यै नमः) (ॐ दण्डाय नमः) (ॐ खड्गाय नमः) (पाशाय नमः) (ॐ अंकुशाय नमः) (ॐ गदायै नमः) (ॐ त्रिशूलाय नमः) (ॐ पद्माय नमः) (ॐ चक्राय नमः) (ॐ महेश्वराय नमः) (पद्म की पूजा ऊपर होगी महेश्वर की पूजा नीचे होगी)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वशी आकर्षण में पीपल की कलम से लिखे या चाँदी की कलम से ।(मोहन में सोने की कलम से या कौवे के पंख की कलम से ।(स्तम्भन में हल्दी की कलम से लिखे। या तांबे की कलम से लिखे।) उच्चाटन में विद्वेषण में लोहे की या नीम की कलम से। शान्ती कर्म में पीपल की कलम से।

सब को गुड़ के चूरमा से भोग लगावे गुगल की धूप दे चमेली का और घी का दीपक दिखावे। फिर प्रणाम करके १०८ बार जप महेश्वर मंत्र का करे। १५ हजार यंत्र लिखे फिर यंत्रों का पूजन करके १५ हजार जप करले। और पश्चात १५ सौ कनेर के लाल फूलों घी से हवन करले १५ माला से तर्पण, ५ बार अभिषेक करले। २ ब्राह्मण जिमादे फिर इष्ट का गुरु को प्रणाम करके यन्त्र गुटिका बना के जल में डाल दे जहां मछली होवे एक यन्त्र जो रेशमी वस्त्र पर लिखा है उसे चांदी तांबे के ताबीज में भर कर पहने रहे। फिर कार्य में प्रयोग करे।

यन्त्र अपनी रासी वाला लिखना चाहिये जैसे मेरी मिथुन है तो ३ अंक बीच में लिखो।

उल्टा यन्त्र लिखने का तरीका।

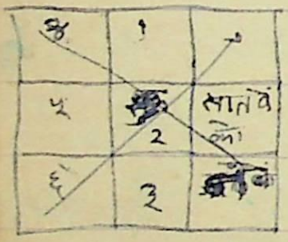

क्रम

२	७	६
९	५	१
४	३	८

पहले नवां कोष्ठ भरो

यह क्रम उल्टा भरने का है

उल्टा क्रम

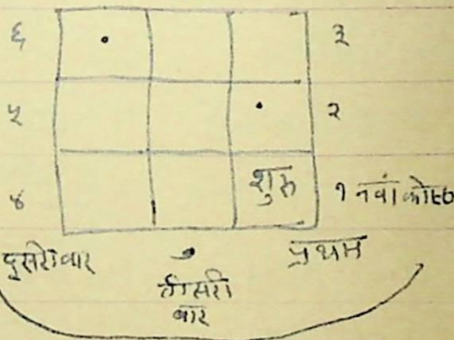

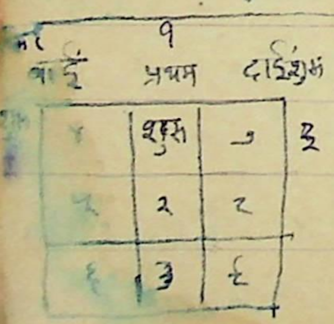

ये क्रम सीधा भरने का है।

बीच से शुरु कर खड़ी २ फिर बाईं तरफ का भरे खड़ी २ फिर दाईं तरफ का भरे सदा ऊपर से शुरु होती है

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हवन वाला कनेर के फूल घी से दशांश हवन करे। आम की समिधा में हवन करे। देवता के
पूजासमय घी और एक चमेली के तेल का दीपक देवे
रोज जब तक यंत्र लिखे। यंत्र लिखते समय
मूल मन्त्र बोलता जाय।

जब साधन शुरु करे तो
रवि हस्त को
रवि पुष्य में
रवि मूल में। या
गुरु वार को पुष्यनक्षत्र हो
अगहन चौदस को
दत्तात्रेय का अवतार हुआ है
या अगहन चौदस हो।

नक्षत्र
श्रवण हो
या शुभ वार हो

यंत्र जब लिखे जब सूर्य हस्त नक्षत्र पर हो। या पुष्य पर हो सूर्य। या सूर्य मूल नक्षत्र पर हो।

चमेली की कलम से एक पटरे पर वह पटरा बरगद, या गूलर, या पाकर, या कटहल की लकड़ी का बना हो। उसपर १५०० १५ हजार लिखो मिटाओ। रोली से लिखो या अष्टगंध से लिखो मिटाओ। १५ हजार जप. १५ सौ बार हवन १५० बार तर्पण १५ मार्जन १ ब्राह्मण। ५०० यंत्र लिखोगे तो ३० दिन में १५ हजार लिखेगा। ५० बार हवन रोज करदे कनेर के फूल घी से

(ऐसा यन्त्र यह है) ~~लिखा जाता है~~ गया

क्रम

८	३	४
१	५	९
६	७	२

रोजी यन्त्र ✓ पेट का दर्द ठीक हो, पेशाब चालू होवे। घोड़े के गले में बांध दे

६	७	२
१	५	९
८	३	४

पहले १०८ यन्त्र होली पर लिख के पूजन कर गुटिका बना के मदारी को देदे।

हनुमत खुश होवें ✓

८	१	६
३	५	७
४	९	२

इसे १५००० लिखे बांस के कागज पर चूरमा भोग लगावे मूल मन्त्र बोलता जावे

स्थान - सिद्धपीठ पर करे या श्मशान पर या या देवालय में या, अरण्य में या एकान्त में कुशासन या लाल ऊनी आसन लाल वस्त्र रेशमी पहन कर लाल चन्दन की माला रुद्राक्ष की माला से पूर्वमुख या उत्तर मुख बैठ कर प्रत्येक का विनियोग प्रार्थना पृथ्वी की, आचमन प्राणायाम भूतलिपि मंत्र (अ से लेकर ह तक बिन्दु लगा कर सोलहों प्रकार से महेश्वर शिव की पूजा करे फिर १०८ बार मूल मंत्र (महेश्वर का जप। न्यास करे पीछे पेज पर लिखे हैं। पूजा जब करे गुड़ चूरमे का भोग लगावे १५ हजार यंत्र लिखे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वशीकरण में लाल चन्दन से, आकर्षण में लाल चन्दन से या कस्तूरी के अष्टगंध से । स्तम्भन में हल्दी से, देवदर्शन में कपूर से, मारण में काले धतूरे के रस से। उच्चाटन में मुर्दे के कोयले की स्याही से, विद्वेषण में बहेड़े से, शान्ती कर्म में मलया गिरी चन्दन से।

यदि हनुमान जी का दर्शन करना हो तो ८ से शुरु करो या १ अंक से

यदि राजा वश करना हो तो २ से ... करो।

यदि व्यापार लाभ करना हो तो ३ से शुरु करो।

यदि उच्चाटन करना हो तो ५ से या ९ से शुरु करो।

यदि मारण करना हो तो ४ से

हनुमत दर्शन

१	८	६
५	३	७
९	४	२

शुरु

८	१	६
३	५	७
४	९	२

हनुमत दर्शन वास्ते क्रम भरने का

८ - ९ - ६
१ - २ - ४
३ - ५ - ७

पहले ८ अंक भरो फिर ९ अंक भरो फिर ६ अंक भरो फिर १-२-४ फिर ३-५-७ वां अंक भरो इसी क्रम से मारण भी होता है।

राजावशी करना हो तो २ से शुरु करो

~~य...~~ दुर्गा का।

शुरु

९	२	४
५	७	३
१	६	८

इसका शुरु क्रम २ - ३ - ४ । ५ - ६ - ७ । ८ - ९ - १ वां अंक रखवो फिर इस यंत्र को नर कपाल में रखदो यंत्र के पीछे राजा का नाम लिखदो कपाल को फिर छिपाकर रख दो ।

शुरु

५	३	७
६	४	२
१	८	६

(मृत्वत्सा । शुरु क्रम ३ - २ - ८ । ५ - ४ - ६ - १ - ६ - ७)

इसी से व्यापार लाभ होगा

यह मेरा यन्त्र है

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७	४	२
५	३	७
१	८	६

इस यन्त्र को कागज पर ५०० लिखे पीपल की कलम से बरगद के नीचे लिखे और पूजन करे शमशान में कहीं कोने में गाड़ दे तो सभी काम पूरे होवे धतूरे के रस से उल्टे क्रम से लिखो इसे। यह मारण यन्त्र।

शुरु

५	३	७
१	८	६
९	४	२

बन्ध्या को पुत्र वास्ते
मृतवत्सा के पुत्र जीवे
व्यापार लाभ वास्ते भी

शुरु क्रम ३-२-८। ५-४-९। १-६-७

इसी क्रम से लिखे

यह ऊपर से शुरु होकर नीचे खतम होता है।

~~यह उल्टे क्रम से लिखा है~~

शुरु

९	४	२
५	३	७
१	८	६

फिर चार नीचे ले

कैदी छूटे एक हजार शुरु क्रम ४ से है/ ४-३-८। १-५-९। २-७-६

इसी क्रम से मारण भी होगा।

यन्त्र कुल लिखे गुटिका मछली को देवे। इसी यंत्र को हजार बरगद के नीचे लिखे अनार की कलम से कागज़ पर तो भी कैदी छूट जाय।

७	५	३
२	९	४
६	१	८

धन प्राप्ति शुरु क्रम पांच से। ५-६-७। २-९-४। ३-८-१

१५ यंत्र लिखे १५ दिन पूजन करके गुटिका मछली को रोज दे। चाहे एक दम २२५ यंत्र लिख कर खतम करे काम इसी से उच्चाटन भी होगा एक

सम्मोहन में १० यन्त्र कुल लिखे

१	६	८
५	७	३
९	२	४

आकर्षण हेतु। शुरु क्रम ६ से शुरु करे। ६-७-२। ९-४-३। ८-१-५

चाहे मित्र हो चाहे दुश्मन आकर्षण होवे

बीस यंत्र ~~बीस दिन~~ लिखे कुल गुटिका मछली को दे। ५०० य[illegible] कुल लिखने से

सबके सहित उच्चाटन होगा

शुरु

५	७	३
१	६	८
९	२	४

उच्चाटन में शुरु सात से करे। ७-२-९। ४-५-६। १-२-[illegible]

बीच में सात पहले रक्खे फिर आठ संख्या रक्खे फिर ८ संख्या[illegible] फिर चार रक्खे फिर पांच रक्खे फिर [illegible] रक्खे।

५०० यन्त्र लिखे जल में बहावे पूजन[illegible]

कृष्णा पक्ष की चौदस को लिखे। या [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब यन्त्रा लिखना शुरु करे तो भूमि सैन करे ब्रह्मचर्य रहे । घृत रहे खीर खाय सासों घी। शक्कर चावल से हवन आम की या पीपल की समिधा में हवन करे भोजपत्र पर हल्दी रोली गुगल की स्याही से लिखे पूजा करदे जलमें डालदे तो वाक्य सिद्धी भी हो और देव तुल्य भी हो जाता है। यदि एक लाख लिखे, नियम से रहे हवन करे।

१० यन्त्र लिखे ~~दस दिन~~ और पूजन करे मछ्ली को गुटिका दे तो मोहन होवे

२० यन्त्र ~~बीस दिन~~ लिखे और पूजन करे ~~सवें दिन~~ मछली को दे । आकर्षण होवे

३० यन्त्र ~~तीस दिन~~ लिखे ~~३०~~ [3] यन्त्र कुल लिखना है —— विजय वास्ते

१० हजार यन्त्र कुल लिखो —— कैदी छुटाने वास्ते

२० हजार यन्त्र कुल लिखो —— विजय वा राज्य लौटाने वास्ते

४० हजार यन्त्र कुल लिखो —— शाप छुड़ाने में शापदेने में समर्थ होवे ~~साप देने में समर्थ होवे~~

५० हजार यन्त्र कुल लिखो वाक्यसिद्धि वास्ते

६० हजार यन्त्र लिखे राजा वस में हो जाता है। —— राजा वशी होने वास्ते

७० हजार यन्त्र लिखे विष्णु बन जाता है। —— विष्णु होने वास्ते।

८० हजार यन्त्र लिखे तो कर्मों में सिद्धी मिले। —— कर्मों में सिद्धि होवे।

१०००हजार यन्त्र लिखे तो —— शिव तुल्य बन जावे

१०००य। ५० यन्त्र लिखे —— सिद्धि मिले

१लाख यन्त्र लिखो तो —— पापमुक्त हो सौ वर्ष जीवे

> १ हजार जल से जमीन पर यंत्र लिखे मिटादे तो मुल्ज़िम कैद से छुट जाय।
>
> ६०००० हजार लिखे तो नव सिद्धियां प्राप्त होवें शिव बन जाता है।
>
> यदि जमीन में दोहजार लिखे वाक्यसिद्धि हो

(यह यन्त्र देवों का दिया हुआ है)

लाख लिखने बाद देवी वर देती है। जीवन मुक्त कर देती है। सब पाप दुख दरिद्रता से मुक्त हो लिखने का साधन करने बाद साधक। किसी यक्ष राक्षस पिशाच से जीवन भर काम ले सकता है। ५६ कलुआवों और ७२ वीरों को बुला कर दूध काला उरद काला तिल शक्कर घी प्याले में रख के पका के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को बुध बृहस्पत सोमबार इन दिनों में बला के बलि दे। तो सब वीर बश होवें।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(प्रयोग) यदि पंचदशी १५हजार

१) यदिइसतरह १ लाख लिखें।

यदि (रं) बीज उच्चारण करता हुआ यन्त्र लिखे तो और (रं) बीज बोलता हुआ एक२ बहावे तो जलों रहे मान होवे। यदि (ई) बोलकर लिखे फिर (रं) बोल कर

२) एक गड्ढे में गाढ़दे मिट्टि से ढांक दे तो सारी पृथ्वी का राजा हो जाता है। आठों सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। (यदि पंचम के वस्त्र पर लिख के (लुं) बीज बोलता हुआ और लुं बीज बोलकर दाहिनी हाथ में बांधे तो फांसी से छूटे। यन्त्र पूजन जरूर कर देना चाहिये। एक ही यन्त्र काफी है। १०८ बार जप मुस के बांये हाथ से।

) रविवार को मदार के दूध से मसान का यलसे लिखे स्याही घिस के बनाले। कागज में ही लिख दे पीछे जिसका नाम लिख के चिता में डालदे तो वह पागल हो (वे

५) यदि इस यन्त्र को उल्टा लिखे सन्ध्या समय पूजा करके कंठ में पहना दे पूजा कर के जिसे वश करना हो उसका नाम पीछे लिख दे

(स्त्री वश)

६) सोमबार को नाग केशर हल्दी पीली सरसों के तेल को मिला के यंत्र को लिखे। बत्ती मंत्र पढ़ते हुए डाल तेल में उसी तेल में जिससे यन्त्र लिखे है फिर नर कपाल पर काजल पार अपने नेत्र में लगावे। मनुष्य मोहित होवे।

कुल

७) (स्त्री वश) शुक्रवार को कपूर बच, कूट की स्याही से यंत्र लिखे पूजन करे, अपने बांधे पंत्र के पीछे उस स्त्री का नाम लिखे जिसे मोहित करना हो तो वे प्राण धन देवे। १०८ जप

मारण ८) शनि दिन चिता के कोयले से कागज पर उल्टा यन्त्र लिखे यंत्र लिखो शत्रु का नाम पीछे लिखो, पूजन कर के शमशान में ही १०८ जप

मारण ९) गाढ दे। यदि मुर्गे की आंख के खून से उल्टा यंत्र लिखे पूजा करके शमशान में गाढ़ दे तो भी मरे। १०८ जप जरूर करे

४ से शुरू करे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यदि यन्त्र को पूरब से लिखके पश्चिम में समाप्त करे तो यन्त्र सतोगुणी होता है
यदि दक्षिण से लिखे उत्तर मे समाप्त करे तो राजस कहलाता है। वायुयंत्र होता है।
यदि पश्चिम से पूरब मे समाप्त करे तो तामस यंत्र कहलाता है। विलोमयंत्र हो गया

प्रयोग

~~॥ प्रयोग हैं ये॥~~

(यदि बरगद के नीचे जमीन पर बरगद की कलम से चौदस को दस हजार यंत्र लिखे तो अर्थ धर्म काम मोक्ष मिले)(यदि बरगद के नीचे अनार की कलम से लिखे १ हजार यंत्र लिखे कागज़ पे तो कैदी जरूर छूटे)(यदि पीपल की कलम से बरगद के नीचे ५०० यंत्र लिखे पर लाल चन्दन से कागज़ पर लिखे और पूजा कर जमीन में गाड़ दे तो सर्व काम सिद्ध होवे)(यदि गाय के मूत्र और मैंसिल कपूर तगर की स्याही से भोजपत्र पर लिखे १ हजार यंत्र पीपल के नीचे बैठ के और पीपल की कलम से लिखे पूजन कर के जमीन में गाड़ दे तो इन्द्र समान धनी हो (यदि मैंन्सिल बेल का रस हरताल तीनों की स्याही से भोज पर बेल के नीचे बेल की कलम से दो हजार लिखे और जमीन में वहीं पूजा कर के गाड़ दे तो कार्य सिद्धि होवे)(यदि समशान में बैठ कर मदार के पत्ते पर मदार के पत्ते के रस से १ हजार ट यन्त्र लिखे। पीछे दुश्मन का नाम भी लिखता जाय। मदार वृक्ष में ही पूजन करके बांध दे शत्रु को ज्वर होवे शूल सम पीड़ा होवे।
(यदि एकान्त मे हल्दी से १०८ यंत्र भोज पत्र पर लिखे पूजन बगला मुखी का यन्त्र में करके दो पत्थर के बीच दबा दे स्तम्भन होवे।
पर शत्रु का नाम लिख दो जिसे स्तम्भन करना हो। इसी को यदि शत्रु द्वार पर गाढ़ दे तो उलांघते ही कलह होवे।
यदि इस यंत्र को भृंगराज के रस से भोजपत्र पर अनार कलम से लिखे पूजन करके गले में बांध ले तक बिवाद में जीते।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यदि पीपल के पत्ते पर यन्त्र लिख कर पीपल के नीचे गाड़ दे व यंत्र रोजाना २८ दिन तक गाढ़े तो २८ दिन मे सभी गृह शान्त होजाते है।

यदि लटजीरे के पत्ते के रस से भोज पत्र पर लिख के पूजन कर रोगी के गले में बांध दे तो सब प्रकार का ज्वर नाश होवे।

लिखने का तरीका लाल कोष्ठ बना दिया जिसकी खराब हो दशा उस ग्रह का नाम बीच में भर दे।

गृह शांन्तियाँ होती हैं इससे।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

इस पंचदशी यंत्र में जो गृह खराब हो उसके अंक में ह्रीं बीज लिखदो और उस गृह का आवाहन पूजन करदो और जातक के बांध दो। १ अंक सूर्य की दशा खराब चलने पर लिखे २ अंक बीच में चन्द की दशा में पूजनीय है। ३ अंक पर मंगल का पूजन करे। ४ अंक पर बीच में बुध का पूजन करे ५ अंक पर बीच में गुरु का पूजन करे। बीच कोष्ठ में ६ अंक पे शुक्र का पूजन करे। बीच में सात अंक पर शनि का पूजन ८ अंक पर राहु का पूजन करे ९ अंक पर केतु का पूजन करे। बीच कोष्ठ में नहीं अंक[illegible]

८	ह्रीं आदित्याय नमः १	६
३	५	७
४	९	२

शुरु

८	१ सू ह्रीं	६
३	५	७
४	९	२

शुरु

४	ह्रीं २ चं	९
३	७	५
८	६	१

शुरु

५	३ मं ह्रीं	७
१	८	६
९	४	२

शुरु

२	बुध ह्रीं ४	९
७	३	५
६	८	१

शुरु

३	गुरु ५ ह्रीं	७
८	१	६
४	९	२

शुरु

८	शुक्र ह्रीं ६	१
३	७	५
४	२	९

शुरु

३	ह्रीं ७ शनि	५
८	६	१
४	२	९

शुरु

१	८ ह्रीं राहु	६
९	४	२
५	३	७

शुरु

४	ह्रीं ९ केतु	२
३	५	७
८	१	६

पंचदशी के यह नवों गृहों के यंत्र निर्माण करादे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यदि २-७-६-६ \ ५-१-४-३-८ । ६-२-७- ६-५-१-४-३-८
इस क्रम से ५ हजार यन्त्र अष्ट गंध से लिखे भोजपत्र पर। और गुटिका मछली को देवे कलम चन्दन की हो तो २१ दिन में काम पूरा होवे।

काले धतूरे के रस से यानी पत्तों के रस से गोरोचन मिलाके कनेर की कलम से भोज पत्र पर पंचदशी यंत्र लिखे तथा उसका नाम लिखे फिर उसका पूजन कर कत्थे की लकड़ी पर तपावे। आकर्षण होवे

८	१	६
२	४	८
५		

शुरु

१	६	८
५	७ नाम	३
७	२	४

इसे ६ से शुरु करे लिखना
(६-७-२) फिर (६-४-३)
फिर (८-१-५) बीस दिन २०
यन्त्र रोज लिखे आटे में लपेट के मछली को खिलावे दुश्मन हो या मित्र आकर्षित होवे।

आकर्षण यंत्र

१५	७	६	२२	१८	११	८	५	२	नाम
ऐं	ह्रीं	क्लीं	श्रीं	श्रीं	भ्रीं	ग्रीं	धीं	ह्रीं	ह्रीं
८	४१	५	२८	७	१२	३	८	६	नाम

इसे रविवार के दिन कुंकुम गोरोचन से भोज पत्र पर लिखे घड़े के नीचे पर उसी रवि चौदस होवे

विदेशी बुलाने का मंत्र (ॐ क्लीं ग्लूं ॐ श्रीं ह्रीं हः हः
अमुकस्य शीघ्रं आनय २ ॐ।

इस मंत्र को पीपल के नीचे जप इसी के नीचे ११ आहुति से (सहस्रावर्ती) नारियल की खीर यानी गोले की खीर से हवन करे इसी मंत्र से।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ आकर्षण यन्त्र॥

६५	७२	२	८
७	३	६३	६८
७१	६३	६	१
४	६	६७	७०

आक की कलम से भोजपत्र पर लिख के पूजन करके माथे पर टोपी पर रक्खे देवता आकर्षण होवे।

परदेशी आकर्षण यन्त्र

यक्षिण्यै नमः	नमचारिण्यै नमः
त्रिपुरेश्वर्यै नमः	दुर्गायै नमः

इस यंत्र को काले धतूरे के पत्ते के रस से गोरोचन से सफेद कनेर की कलम से भोज पत्र पर कत्थे की लकड़ी में तपावे २१ दिन तक १० मिनट तक रोज़ तपावे। दूर से। तो सौ कोस तक की दूरी का लौट आवे।

॥ परदेशी आकर्षण॥ लाल चन्दन से लाल वस्त्र पर लिख के २१ दिन लगातार रोज पूजन करे और २ माला रोज इस मंत्र को २१ दिन जपे (ॐ नमो आदि रूपाय और (पंकजस्य शार्मणाः आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा)

गये हुए को बुलाने का यन्त्र॥

७	६	७८	४
२	३	७३	५
३	७६	८	७४
८	७५	४	७५

गये को बुलाने का यंत्र इसे रास्ते की धूल लाके घोल के कागज पर लिखे पूजन करके खूब कोड़ा मारे। २१ दिन में गया वापिस आवे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

यन्त्रलिखते सDigitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri पूरय २ स्वाहा)
बोलता जाय।

स्वाहा।

भूताकर्षण मन्त्र (ओं ह्रीं बं बं भुं भुवनेश्वरी मम भूतं वश्यं कुरु २
बबूल के नीचे तीन दिन मूल नक्षत्र में अकेले १०८ बार जपे यदि
भूत ना आवे तो १२ दिन जपे बराबर। प्रगट होके वर देगा।।
वचनं तीन लेके वर मांगे।

शवाकर्षण = मुर्दे के तलवे में राल जलादो तो हिलेगा।।

पंचटोटोंके कुछ अचूक प्रयोग = एक मजेदार प्रयोग
चैत्र मास में जब।। खपर में पीपल की कलमसे केशर की स्याहीसे यंत्रलिखदो। फिर पानी भरो।
पुष्य नक्षत्र आवे उस दिन प्रातकाल कोरे घड़े को बीच से फोड़
डालो फिर आधे खपड़ को फेंक दो नीचे के हिस्से में पानी भर दो और एक पेड़
पे टांग दो उस पानी को जितने पंक्षी पीयेंगे दिन भर पी लेने दो दूसरे दिन
उसपानी को एक शीशी में भर कर रख दो फिर साल भर के अन्दर घर में या
जिसके यहां आपस में बालक होवे उस जैसे स्नान करावें तैसे उस जल
की एक बूंद मुंह में डाल दो। तो उसे बड़े होने पर उतनी पंक्षियों की बोली
उसे आजायेगी जितने पंक्षियों ने पानी पिया होगा।

गर्भ जिसका नष्ट होजाता हो।।
उसकी कमर में आंवले की कलमसे हल्दी की स्याही से भोजपत्र लिखके
पूजन करके अष्ट धातु या सोने के तबीज में भर कर हस्त नक्षत्रमें पहनादे
इतना ध्यान रहे।। उस स्त्री का चन्द्र उसकी रासी से पूर्व नवें ३-११वें हो।
इतना करने पर गर्भ रक्षा होजायेगी।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसे खूब घाटा लग गया हो व्यापार में =

उसको बांह में अष्ट धातु में या सोने के तबीज में रख कर पीले रेशम के डोर में बांध कर हस्त नक्षत्र में पहना दे। इस यन्त्र को बेल के पत्ते पर बेल की कलम से सिंदूर की स्याही से हस्त नक्षत्र में लिखें।

जिसे मुकदमा जिताना हो =

उसको यंत्र शमी वृक्ष की कलम से गोरोचन केशर की स्याही से केले के पत्ते पर लिख कर लाल कपड़े में पूजन करके सिल दे और लाल डोरे में बांध कर पहना दे

जो यात्रा से सकुशल लौट कर आना चाहता हो = शुभ नक्षत्र दिन में

उसे (केसर (हल्दी)) की स्याही से भोजपत्र पर कुशा की कलम से लिख दे, पूजन करके तांबे में भर के, सफेद डोर से बांध कर पहना दे सकुशल घर आवे।

जिसको अपने अनुकूल रखना हो =।

तो पुष्यार्क में या हस्तार्क में या गुरुपुष्य में चम्पा की कलम से केशर की स्याही से लिख के पूजन करके गुगुल धूप दे दे और लाल डोरे में बांध दे

आकर्षण =

यह पंचदशी यन्त्र वाले

पंचदशी नर कपाल में गोरोचन या हल्दी से लिखे और पूजन कर कत्थे की लकड़ी में तपावे तीनों बेला में। तो उर्वशी भी चली आवे मनुष्य की तो क्या।

या यह मन्त्र लिख दे। (ॐ नमो आदि रुपाय अमुकस्या कर्षणां कुरु२ स्वाहा
नर कपाल में

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह बगला मुखी का यंत्र है।

बत्तीसा यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	६	८	१
४	५	१०	१३

इस यंत्र को हल्दी से कागज़ पर लिख दे फिर पूजन करके उसे रुई के अन्दर बट के बत्ती बना के इतवार को सरसों का तेल डाल कर दीपक जलावे और हल्दी की माला से ११ सौ मन्त्र जप रात में (ॐ ह्रीं हंसः इस मन्त्र को) ऐसे सात इतवार करे तो मनुष्य सब दुःख से छूट जाता है।

दूसरा बिधान जरा कठिन है। कांसे की थाली में हल्दी से लिखे फिर यंत्र पूजन करके उसके ऊपर चौमुखा दीप रक्खे फिर दीप का पूजन करदे फिर सूर्य जब उदय हो तब उस थाली को उठाओ सूर्य के सामने खड़े हो और (ॐ ह्रीं हंसः) बोलते रहो सूर्य जिधर २ घूमे उधर २ घूमते जाओ जब सूर्य अस्त होने लगे तो सूर्य को दुध जल से अर्घ दो खड़े २। उसके वाद मीठा भोजन करो ब्रह्मचर्य रहो भूमि पर सो फिर इसी तरह सातों इतवार करो चाहे जितना कठोर काम होगा हो जायेगा। काम तो पहले ही हो जायेगा पर सात इतवार जरूर साधन करना।

नं	ध्वं	जं	चं
टं	दं	चं	चं
जं	ध्वं	जं	वं
ध्वं	नं	जं	हं

यह हनुमान यन्त्र है। इसे सवा लाख लाल चन्दन से कागज पर अनार कलम से लिखे पूजन करके नदी में बहा दे या आटे की बटी बना के मछलीं को दीजिये तो हनुमान खुश होते हैं।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(ॐ पार्श्वनाथाय नमः) पढ़ते हुए

इसे आम के पटरे पर अनार की कलम से रोली से लिखे। ७२ यंत्र रोज मंत्र लिखता जाय, और यह मन्त्र पढ़ कर मिटाता जाय (ॐ नमः काम देवाय महाप्रभावाय ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा) लिखने के बाद इसी कामेश्वरी मंत्र को २१सौ जप दे। जब ७२ दिन पूरे हो जायें तब दशांश हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन करादे। जौ की रोटी बथुये का साग अलूना खाय। ब्रह्मचर्य रहे मौन रहे जमीन पर सोवे। तो यह सिद्ध होता है।

यह बहत्तीसा यन्त्र है।

६	४२	२४
१२	४८	३०
१८	नाम	३६

जब प्रयोग करना हो तो कागज़ पर लिखे शुरु में बीच का कोष्ठ भरे ६-१२-१८ फिर बांयें हाथ की तरफ का कोष्ठ भरे २४-३०-३६ फिर दाहिने हाथ की तरफ वाला कोष्ठ भरे। ४२-४८-नाम। उदाहरण देकर दिखा दिया यन्त्र के पीछे लिखो ७२ टके चलन बाजार (८) बस पूजन कर के अपने आसन के नीचे रख दो जहां बैठो। और एक माला कामेश्वरी मन्त्र की जप दो। बहत्तर टके रोज आ जायेंगे

२४	६	४२
३०	१२	४८
३६	३०	नाम

कागज़ पर अनार की कलम से रोली से भरे अपना या जिसे देना हो उसका नाम

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०	नाम	४२

राजकोप निवारक

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	नाम		ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इस यंत्र से राज दरबार का कोप खतम हो जाता है। इसे भोजपत्र पर लाल चन्दन केसर गोरोचन अनामिका का खून की स्याही से लिख के मांस मदिरा से पूजन सोडशोपचार से कर के कन्या ब्राह्मण खिला दे योगिनियों का पूजन कर नमस्कार करे। फिर कचहरी बांह में बांध कर जावे जज का कोप शान्त होवे

दीवाली या होली पर १०८ यंत्र लिख के जल में मछली को गोली बना दे दे। पूजन यन्त्रों का करे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विक्री वृद्धि करन

यं	ॐ	गें
ह्रीं	देहि	श्रीं
कं	नमः	ह्रीं

पहले सिद्ध करले दिवाली पर १० लिखके फिर गल्ले में या अन्न की कोठरी में लाल कपड़े में सिल कर रखदे। भोजपत्र पर लाल चन्दन से अनार की कलम से लिखे।

॥ स्त्राकर्षण यन्त्र ॥

(डाकिनी आवन यन्त्र ॥ रोज ५०० यन्त्र लिखे १ मास तक तो डाकिनी आयेगी।

७६	७४	८	१
६	७३	७६	७५
४	५	७३	७६
७०	७७	२	७

इस यन्त्र को कत्थे के कोयले से लोहे की कलम से चमड़े पर लिखे अमावस को रात से शुरु करे लिखना १ मास तक मसान पर बैठ कर लिखे या बबूल के नीचे बैठ कर लिखे

पंचदशी वशीकरण

८	१	६
३	५	७
४	९	२
मेष	कर्क	तुला

इस यन्त्र को सोमवार को सफेद दूब से केसर से लरजीरे की पत्ती गाय के दूध में घिस कर स्याही बनाले सायं विलोम भाव से लिखे पूजन करे कंठ में पहनादे जिसके बस में करना हो। राजा को उसके गले में तो काम बने

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ मसान जगाने का यन्त्र ॥

८५	८४	६	१
७	३	८४	३
४	६	८२	८५
८५	८४	६	१

यह यन्त्र मुर्दे की खोपड़ी पर चिता भस्म से लिखकर बांध दो, और मदिरा से स्नान करो मुर्दे को मस्तक से तो रात भर में मसान जागे हां हां शब्द होने लगे तो समझो मसान जगा सुबह मुर्दे को बहा दे जल में।

॥ मसान भगाने का यन्त्र ॥

	१०८	१०८	१०८	
७	३३४	३३४	३३४	८
७	१०८	१०८	१०८	८
७	३३४	३३४	३३४	८

इस यन्त्र को लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर पूजन मसान मन्त्र से करके रोगी के गले में बांध दे मसान दूर हो जावे।

गूगल लहसुन सांप की केंचुल बन्दर के रोम मोर मुर्गे की विष्ठा कबूतर विष्ठा इसकी धूनी दे। तो भूत पिशाच डाकिनी पूतना को बुखार हो तो भाग जाय॥

॥ विषम ज्वर नाशक यन्त्र ॥

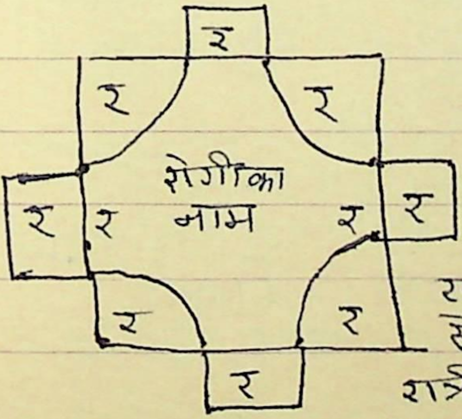

इस यन्त्र को श्मशान में बैठ कर मुर्दे की खोपड़ी पर धतूरे की पत्ती के रस से लोहे की कलम से लिखे कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चौदस की रात्री में पंचोपचार से विधिवत पूजन करे और वहीं श्मशान में गाड़ दे तो शीघ्र ज्वर छूटे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ उच्चाटन यन्त्र ॥

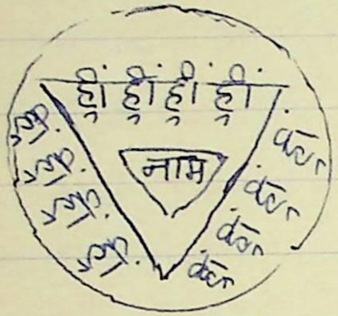

इस यन्त्र को काले कुत्ते के खून से भोज पत्र पर मंगलवार को लिख कर पूजन करके उसे लाल वस्त्र में लपेट कर किसी कुत्ते के गले में बांध दे कुत्ता जैसे२ दौड़ेगा वह व्यक्ति भागेगा।

॥ उच्चाटन यन्त्र ॥

ॐ गं गणपति प्रहितं
हुं गं देवदत्त नाम
हुं गं धं स्वाहा।

इस यन्त्र को कृष्णा पक्ष की चौदस की रात को १२ बजे यन्त्र लिखने वाला लाल वस्त्र पहन के लाल फूल माला पहन कर अपनी अनामिका का खून निकाल कर यह यन्त्र लिखे। लाल फूलों से पूजन करे फिर सुबह ब्राह्मण भोजन करा के दक्षिणा दे फिर इस यन्त्र को टुकड़ा२ कर के जूठ भात में मिला के शमशान में कौवों को खिलादे। उच्चाटन होवे।

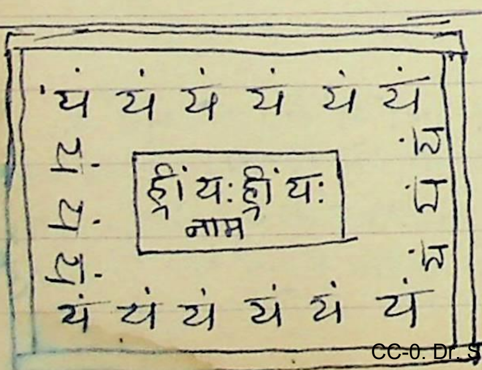

इस यन्त्र को गोरोचन कुमकुम से लिखे यन्त्र के मध्य में नाम लिखे जिसे उच्चाटन करना हो। उसका नाम लिखे। फिर पूजन करके गधे के ~~बीच~~ मूत के बीच में रखे तो अवश्य उच्चाटन होवे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रवि यंत्र — पन्द्रहया

६	ह्रीं १	८
७	५	३
२	९	४

चांद्र यंत्र — अठारहा यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

भौम यंत्र — इक्कीसा यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध — चौबीसा

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

गुरु — सत्ताइस

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र — तीसा यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

॥ इतवार या मंगल को ॥

श्री राम गर्भ होय	श्री राम	श्री राम गर्भ होय
श्री राम गर्भ होय	बांझ का नाम	श्री राम गर्भ होय
श्री राम गर्भ होय	श्री राम	श्री राम गर्भ होय

जिसके बच्चा ना होता हो उसको पहनावे। अष्टगंध से अनार की कलम से लिखके अष्टगंध से पूजन करे जिस स्त्री को पहनाना हो उसके हाथ से नौ हाथ कच्चा सूत नपवा लो फिर नौ बल देकर बट दे एक गांठ लगा दे उस तागे की पूजा करके उसे पहना दे

॥ बुरे स्वप्न इस यन्त्र से ना दिखें ॥

दं	जं	यं	चं
टं	मं	पं	नं
जं	धं	षं	टं
कं	सं	ह्रीं	सः

इस यन्त्र को लाल चन्दन से अनार की कलम से लिख कर पूजन करके सिरहाने रखले कभी बुरे स्वप्न ना दिखें।

(ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः) ७ हजार जप उदयकाल

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः चन्द्रमसे नमः। ११ हजार जप संध्या

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। १० हजार जप

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। १६ हजार जप करे

ॐ ज्रां ज्रीं ज्रौं सः गुरवे नमः। १९ हजार जप।

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः शुक्राय नमः। ६ हजार

ॐ श्रों श्रीं श्रौं सः शनिश्चराय नमः। २३००

ॐ ड्रां ड्रीं ड्रौं सः राहवे नमः। १८ हजार जप

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः। १७ हजार

शनि यंत्र — तैंतीसा यंत्र

१२	[illegible]	१४
१३	११	९
८	१५	१०

केतु — उन्तालिसा

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

राहु यंत्र — छत्तीसा

१३	[illegible]	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिस दिन जो बार होता है उसी दिन सूर्योदय से एक घंटा तक तो उसी होरा माना जाता है। जैसे इतवार है, आज है तो सूर्य उदय हुआ ५।३५ पर तो रहेगा। फिर बुध का ८।३५ तक रहेगा फिर चन्द्र का ९।३५ तक रहेगा।

	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं
बार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
सूर्य	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं
चंद्र	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु
भौम	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु
बुध	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु
गुरु	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श
शुक्र	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू
शनि	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं

मुकदमें में या किसी अफसर से या किसी नेता मंत्री कलेटर जज प्रिंसपल से मिलने जाओ तो सूर्य के होरा में जाओ। मुकदमा सूर्य के होरा में दायर करो। यात्रा करनी हो तो शुक्र के होरा में करो ज्ञानार्जन बुध के होरा में जैसे स्कूल भर्ती होना हो। इम्तहान देना हो बुध के होरा में फारम भरो। कतल डकैती चोरी जारी दुष्ट काम मारण आदि करना हो तो मंगल के होरा में करो शान्ती पुष्टि कार्य पूजन आदि चन्द के होरा में करो।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बार का होरा होता है। फिर एक घंटे बाद बदल जाता है एक घंटे दूसरे वार का समझो ६ बजके ३५ मिनट तक सूर्य का होरा रहेगा। फिर ७ ३५ तक शुक्र का इसी तरह चौबीसों घंटे समझे।

घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु
चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु
मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु
बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श
गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू
शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं
श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं

पूरव में चन्दा	पश्चिम में चन्दा	उत्तर में चन्दा	दक्षिण में चन्दा
मेष	कन्या	कुम्भ तुला	कर्क वृश्चिक
सिंह	वृष मकर	मिथुन	मीन
धनु			

प्रलय के अन्त में पहले सूर्योदय हुआ इसलिये पहले सूर्य का होरा माना गया उसके निकट शुक्र है उसके निकट बुध है उसके निकट चन्द्र है चन्द्र के निकट शनि गृह है उसके निकट गुरु है। उसके निकट मंगल गृह है। यही क्रम होरा का है।

सू - शु - बु - चं - श - गु - मं - इसलिये इसी क्रमसे होरा बना।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौघड़ी महूर्त बनाने की "रीति"

एक चौघड़ी २४ घंटे का १६वां हिस्सा है। इसे समझने के लिये जिस दिन की चौघड़ी निकालनी हो पत्रे में दिनमान देखो जैसे दिन उसदिन ३१।१५ है इसे ८ से भाग दे दो जो दंड पल विपल आवेंगे वही १ चौघड़ी का मान होगा।

उदाहरण

	दंड	पल	वि	प्रति वि	
	३	५४	२२	३०	पहली चौघड़ी
			२×		
	७	४८	४५	०	दूसरी चौघड़ी
	३	५४	२२	३०	
			३×		
	११	४३	७	३०	तीसरी चौघड़ी
	३	४५	२२	३०	
			४×		
	१५	०	३०	०	चौथी चौघड़ी

८)३१।१५(३
२४
७×६०
४२०
१५+
८)४३५(५४
४०
३५
३२
३×६०
८)१८०(२२
१६
२०
१६
४
६०×
८)२४०(३०
२४०
×

६)१०८(७
६०
४८

६)१६३(२
१२०
४३

६)१२०(२
१२०
०

६)६०(१
६०
३०

६)१८०(३
१८०
×

यह चौघड़ी अभी दंड पलों में है। इसे घंटा मिनट में बदल लो। जिस चौघड़ी में जाना हो देखलो जैसे दूसरी में जाना है तो देखो

७।४८।४५।० दूसरी चौघड़ी दंडपलमें है
२×
५)१४।३७।३०।०(२
१०
४×६०
२४०
३७+
५)२७७(५५
२५
२७
२५
२

घं मि। सै।
२।५५।३०
५।२५+सूर्योदय का
८।२०।३० मान जोड़दो

२×६०
१२०
३०+
५)१५०(३०
१५
०

६०
६०
३०

[illegible] दिन में ८ बजके २० मिनट ३० सैकिंड तक चले जाओ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ यदि रात में जाना हो तो रात का चौघड़ा बनालो ॥

विधि देखो

रात्री मान निकल आवेगा।

६० में से दिन मान घटा दो। ८ से भाग दो

६० दंड चौवीसों घंटे का मान है इसमें से
३१।१५ – दिन मान घटा दिया साठ में से एक दंड उधार लिया ६० पल बना ६० पल से १५ घटा दिया ४५ बचे

२८।४५ यह रात्री का मान निकल आया अब इसमें

८) २८।४५ (३
२४
३×६०
१८०+४५
८) २२५ (२८
१६
६५
६४
१×६०
८) ६० (७
५६
४×६०
८) २४० (३०
२४
०
×

दं. प. वि.
३।२८।७। रात का प्रथम चौघड़ा हुई। यदि इसमें जाना है तो दो से गुणो ५ से भाग दो घंटे बन जायेंगे।
२×

५) ६।५६।१४ (१
५
१×६०
६०
५६
५) ११६ (२२
११०
६
६०×
३६०
१४+
५) ३७४ (७४
३५
२४
२०
४×६०
५) २४० (४८
२४०
×

१ घंटा २२ मि. ७४ सै. बना।

१।२२।७४
६।२६ + सूर्यास्त इसमें जोड़ दो।
७।४८।१४

७४
६० (१
१४

इसका मतलब रात को
७ बजके ४८ मिनट १४ सैं के अन्दर चले जाओ।
रात का प्रथम चौघड़ी इतने टाइम तक रहेगी। फिर दुसरी लग जायेगी।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" तन्त्र विद्या "

प्रीतवशाकरन तन्त्र = गोरोचन योनी कार कू केले के रस में मिला कर माथे पर बिन्दी लगाले प्रीत देखे तो वश होवे।

लोक वश — परेवा के दिन परेवा पक्षी मार लावे १०८ बार यह मन्त्र पढ़े उसके मांस को रखके
(ॐ हुं हुं छुंछां छां छांछः)
फिर इस मांस को मटर भर पान में देदे। जिसे वस करना हो।

" तीनों काल की बतावे "

जिह्वा यक्षिणी प्रयोग = (ॐ ॐ कर मुखे विधु जिह्वे ॐ हुं ह्रीं चटके जय स्वाहा)

इस मन्त्र को बट के नीचे रोज १०८ बार जपले एक मास तक और रोज खीर १ पाव बना कर सकोरे में चढ़ावे बट पूजन करदे। तो तीनो काल की बतावे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिद्दा देवी की सिद्दी = चम्पा वृक्ष के नीचे ३२ हजार जप करले गुगुल धूप देता रहे एक रोज, एक बार पूजन करले देवी का

मन्त्र
ॐ ह्रीं क्रूं क्रूं २ कुटु २
मूलिका देवी
वरदे सिद्ददा भव ॐ फट् । सातवें दिन आवेगी, आधी रात में तो चन्दन के जल से अर्घ्य देना भोग खीर का देना। वर देगी।

ॐ ऐं क्रौं ह्रीं ब्रीं क्लीं क्रौं कुरू २ स्वाहा
सवा लाख जप सफेद लटजीरे के पेड़ के निकट बैठ के

सोंठ के फूलों में घी दही मिला के दशांश हवन करे आम की समिधा में

जया यक्षिणी साधन = आक के पेड़ के नीचे अरण्य में चुपचाप जप ४० हजार जप कर मौन रहे। बृत कर फल फूल दूध खाय जमीन पर सोवे ब्रह्मचर्य रहे। मंत्र इस का यह है।
(ॐ ऐं जया यक्षिण्यै सर्व कार्य साधन कुरु २ स्वाहा।)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होरा का क्रम कैसे शुरु हुआ =

प्रलय के अन्त में पहले सूर्य उदय हुआ इसलिये पहले सूर्य का होरा सुरु हुआ। सूर्य के निकट शुक्र है इसलिये शुक्र का होरा इसके बाद माना। शुक्र के निकट बुध है इसलिये इस के बाद बुध का होरा माना। इसी तरह बुध के निकट चन्द्र है। चन्द्र के निकट शनि है। शनि के निकट गुरु है। गुरु के निकट मंगल है। मंगल के निकट सूर्य है। फिर ९ वां होरा शुक्र का १० वां बुध का ११ वां चन्द्र का १२ वां शनि का १३ वां गुरु का १४ वां मंगल का १५ वां। फिर सूर्य का फिर १६ वां शुक्र १७ वां बुध का १८ वां चन्द्र का १९ वां शनि का २० वां गुरु का २१ वां मंगल का २२ वां सूर्य का २३ वां शुक्र का २४ वां बुध का होरा होता है। इसके बाद फिर सूर्य उदय होगा।

इतवार के दिन से गिनो

सू	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल
१	२ रा	३ रा	४	५ वां	६ ठा	७ वां
८ वां	९ वां	१० वां	११ वां	१२ वां	१३ वां	१४ वां
१५ वां	१६ वां	१७ वां	१८ वां	१९ वां	२० वां	२१ वां
२२ वां	२३ वां	२४	.	.	.	.

इस चक्र में पहला ८ वां १५ वां २२ वां होरा सूर्य का है। इसी तरह शुक्र का दूसरा ९ वां १६ वां २३ वां शुक्र का है।

चन्द्र वार दूसरे दिन का हुआ तो पहला चन्द्र का

चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	,	,	,	.

तीसरे दिन मंगल आयेगा तो १ घंटा मंगल का होरा रहेगा। शुरु में फिर सूर्य का इसी क्रम से होरा चक्र बनाया गया है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

।। गर्भ योग ।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोचर मे जब शनि अपनी जन्मरासी से ५ वे या ७वे स्थानपर आवेगा। या जन्म रासी से शनि ९ वी रासी पर (ये कहा) जिसवर्ष गोचर मे पड़े उसीवर्ष गर्भ रहेगा। स्त्री की कुण्डली मे यदि नवे स्थान के अंक की रासी से शनि ५ वे या ७ वें स्थान पर यदि ११ अंक के साथ हो तो निश्चय गर्भ रहेगा। उससमय के अन्दर पुत्र होगा।

।। यात्रा जानने का विचार ।।

जिसवर्ष शनि शुक्र चन्द्र ३ - ६ - ११ - ९ - १० वें स्थान पर उच्च का हो कर बैठे तो यात्रा कहीं जरूर हो। जैसे वृष का चन्द्र हो अथवा मीन का शुक्र हो या तुला का शनि हो यह उच्च के शनि शुक्र चन्द्र हुए जिसवर्ष गोचर में ३ - ६ - ११ - ९ - १० वें स्थान में अपनी रासे से बैठे हो तो कुछ न कुछ उन्नति जरूर होगी।

यदि जन्म रासी से गोचर में पापग्रह २ - ४ - ७ - ८ - १२ वें स्थान पर आवे तो अशुभ समझो। यदि पापग्रह अपने नवांश में या नवांश की रासी में में पड़े या मित्र के घर हो तो शुभ समझो। जैसे सूर्य पाप ग्रह है तो इसका मित्र (मं गु चं हैं) इनके घर बैठे हों तो शुभ होंगे। जैसे चन्द्र का मित्र (सूर्य बुध है) मंगल पापग्रह है इसके मित्र (चं गु सूर्य हैं) बुध के मित्र (सूर्य शुक्र हैं। गुरु के मित्र (सूर्य मं चं हैं) शुक्र के मित्र (बुध शनि हैं। शनि पापग्रह है। इसके मित्र (बुध शुक्र राहु) मित्र हैं। राहु पापग्रह है इसके मित्र (शु.श. हैं) केतु पापग्रह है इसके मित्र (सूर्य चन्द्र मंगल हैं।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ गर्भ योग की जानकारी ॥

स्त्रियों की जन्म राशी से ३-६-११-१० वे स्थान को चन्द्रमा और मंगल देखता हो जब भी पत्र में तो समझो इस वर्ष गर्भ धारण करेगी। और पुरुष की राशी से ३-६-१०-११ वें स्थान को चन्द्रमा गुरु देखता हो तो उसकी नारी गर्भ धारण करेगी (गर्भ सम्भव योग) शनि मंगल शुक्र सूर्य अपने नवांश में स्थित हो या जन्म रासी से ~~स्थित~~ हो ३-६-११-११ वे स्थान में स्थित निजांश में होवे या गुरु ६-५-११ वे स्थान में हो तो गर्भ सम्भव होवे।

यदि भग्येश यानी नवें स्थान के अंक का स्वामी जन्म कुण्डली में केन्द्र में बैठा हो तो बाल्य अवस्था में भाग्योदय होगा। यदि त्रिकोण में उच्च का हो कर भाग्येश बैठा हो तो युवा में भाग्योदय होवे। यदि भाग्येश स्व क्षेत्रिय या मित्र क्षेत्र में बैठा हो तो वृद्धा अवस्था में भाग्योदय होगा।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यदि नवें स्थान पर कुण्डली में सूर्य हो तो २२वें वर्ष भाग्योदय होगा।
" " " " " " चन्द्र हो तो २४वें वर्ष . . . .
" " " " " " मंगल हो तो २८वे वर्ष . . . .
" " " " " बुध हो तो ३२सवें वर्ष . . . . . .
" " " " " " गुरु हो तो १६वें वर्ष . . . . . .
" " " " " " शुक्र हो तो २५सवें वर्ष . . . . . .

यदि शनि भाग्येश होकर ६वें ही घर में हो अथवा लग्नेश भाग्यभाव में हो तो जातक जन्मभर भाग्य शाली होता है ६वां घर भाग्य भाव कहलाता है (यदि भाग्येश अपनी राशी के स्वामी से युक्त हो या देखा जाता हो) तो अपने देश में भाग्य का फल मिलता है। यदि भाग्येश लग्नेश अन्य शुभग्रहों से युक्त हों या देखे जाते हों तो दूसरे देश में फलित होता है यदि भाग्य स्थान में उच्च ग्रह हो तो सब जगह फल प्राप्त होता है। यदि भाग्य स्थान मे पापग्रह उच्च के बैठे हो तो हीनता के ही फल देंगे। यदि भाग्य स्थान पर पापग्रह की दृष्टि हो तो समझो सदा दुखित रहेगा जातक।

रवि मंगल यदि अपने अंक का हो और चन्द्रमा से युक्त हो के भाग्य स्थान में हो तो राजमन्त्री बनेगा।

यदि शनि १ अंक के साथ ८वें स्थान पर या छठे स्थान पर हो तो उन्नतिकारक होगा। मेष का शनि ६-८-१२वे स्थान पर मे हो तो भी खराबी नहीं करेगा। यदि मेष का शनि ३- या १०वें स्थान पर होगा तो खराबी पैदा करेगा। शनि जन्म समय कुण्डली में जिस स्थान पर रहता है फिर ३० वर्ष बाद उस स्थान पर आता है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

शनि पूजन आदि में दक्षिणा मूर्ति हनुमान का पूजन करे

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दशवें स्थान पर शनि राहु बुध शुक्र लाभ कर होते है

राहु यदि कन्या का हो या मिथुन का हो और कुंडली में
१-४-७-१०-९-१२-५-६ वें स्थान में कहीं भी हो
जातक धनी भोगी निरोगी दाता होगा समझो।

दशवें घर में मंगल शत्रु रासी का हो तो उसका बाप जल्दी
मरजाता है।

(लगन मे गुरु (दूसरे में शनि सूर्य भौम हो तो बिवाह में पिता मरेगा।
तीसरे में गुरु ११ वें में चन्द्रमा हो तो वह बालक लोक
प्रसिद्ध मान्यता प्राप्त होता है। कुल का दीपक होगा।

मंगली होने का विचार =
१-४-७-८-१२ वे स्थानों पर मंगल हो तो मंगली होता,
यदि मेष वृश्चिक मकर का मंगल होता है तो जातक
महामंगली कहलायेगा।

मेष का सूर्य केवल १० अंश तक उच्च का माना है
वृष का चन्द्र केवल ३ अंश तक परम उच्च है
मकर का मंगल २८ अंश तक उच्च है।
कन्या का बुध १५ अंश तक
कर्क का गुरु ५ अंश तक
मीन का शुक्र २७ अंश तक
तुला का शनि २० अंश तक
राहु १५ अंश तक उच्च का है

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गृहों की पूरा दृष्टि

सूर्य = ७ वें घर को
चन्द्र = ७वे घर को
बुध = ७ वे घर को
मंगल = ७वें घर को ८ वें चौथे को
गुरु = ७ वे घर को। ५वें ९ वें घर को
शुक्र ७ वे घर को
शनि ७ वें घर को। तीसरे १० वें घर को देखता है
राहु ७ वें १२वे ९वें को
केतु ७वें तीसरे १०वें को

गृहों की रासी

सूर्य की सिंह रासी है।
चन्द्र की कर्क ....
मंगल की वृश्चिक
बुध की मिथुन रासी कन्या
गुरु की मीन रासी।
शुक्र की तुला रासी
शनि की कुम्भ रासी
१-८ अंक का मंगल स्वामी है
२-७ अंक का शुक्र स्वामी है।
९-१२ अंक का गुरु स्वामी है
३-६ अंक का बुध स्वामी है
५ अंक का स्वामी सूर्य है
४ अंक का स्वामी चन्द्र
१०-११ अंक का शनि है।

गृहों की नीच उच्च

मेष का सूर्य उच्च का होता है
तुला का सूर्य नीच का
वृष चन्द्र उच्च का होता है
वृश्चिक का नीच का होवे
मकर का मंगल उच्च का
कर्क का मंगल नीच का
कन्या का बुध उच्च का
मीन का बुध नीच का
कर्क का गुरु उच्च का
मकर का गुरु नीच का
मीन का शुक्र उच्च का
कन्या का शुक्र नीच का
तुला का शनि उच्च का
मेष का शनि नीच का
मिथुन का केतु उच्च का
कन्या का राहु उच्च का

मेष-वृष-मिथुन-कर्क-मकर यह राशिये रात्री में बलवान होती हैं। बाकी दिन में बली होती हैं।

हस्त, चित्रा, स्वाती, बिसाखा, अनुराधा, पुष्य, धनिष्ठा, रेवती, अश्वनी, तीनों उत्तरा, पुनर्वसु रोहिणी, ये नक्षत्र शुभ हैं।

(बिवाह में गुरुबल देखो)(राजदर्शन में सूर्य बल देखो)(युद्ध में मंगल का बल देखो)(विद्यारम्भ में बुध का बल देखो)(यात्रा में शुक्र का बल देखो)(दिक्षा में शनिबल देखो)(सब कार्य में चन्द्र बल देखो)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ राहु की जानकारी करना ॥

सीधा हिसाब जब राहु १८ मास में ३० अंश चलता है तो एक अंश कितने दिन में चलेगा। तो ऐसे निकालो। १८ बटा ३० रक्खो बराबर काटो ६ से कटा ३ बटा ५ आया इस ३ को ६० से गुणो और ५ से भाग दे दो ३६ दिन निकल आये समझो राहु ३६ दिन में एक अंश चलेगा। ३६ दिन का मतलब १ मास ६ दिन हुआ

इसे काटो ६ से काटो

$\frac{18}{30} = \frac{3}{5}$ (इस तीन को ६० से गुणो)

3×60

५) १८० (३६ दिन
१८०
×

अब पत्रे में देखलो राहु कितने अंश भोग चुका पता चलजायेगा राहु का कितना समय बीतगया कितना बीतेगा। सूर्य का १ अंश एक मास में बीतता है। तो ६ दिन और ले के राहु का बीत जायेगा। जब सूर्य के १८ अंश बीत जायें तो समझो राहु के ३ मास १८ दिन बीत गये कैसे देखो उदाहरण अठ्ठारह को ६ से गुणा करदो तीस से भाग देदो क्यों की ३० दिन का एक मास होता है। इसलिये तीस से भाग दिया।

18×6

३०) १०८ (३ मास
९०
१८ दिन

अब आसानी से पता चलजायेगा जातक पर राहु कितने मास और रहेगा। सूर्य अंशों से पता लग जायेगा।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिद्ध योग हैं यह

॥ तिथियें ये हैं ॥

नंदा तिथि १-६-११ शुक्र के दिन परे तो सिद्ध योग समझो
भद्रा तिथि २-७-१२ बुध वार को परे ,, ,, ,, ,,
जया तिथि ३-८-१३ मंगल वार को परे ,, ,, ,, ,,
रिक्ता तिथि ४-९-१४ शनिवार को परे ,, ,, ,, ,,
पूर्णा तिथि ५-१०-१५ में गुरुवार को परे तो सिद्ध योग समझो

नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
शुक्र	बुध	मंगल	शनि	गुरुवार

यह भी सिद्ध योग हैं प्रथम नन्दा के॥
परिवा को नन्दा दइज को भद्रा तीज को जया चौथ को रिक्ता पंचमी को पूर्णा फिर छठ को क्रमशः नन्दा सप्तमी को भद्रा अष्टमी को जया नौमी को रिक्ता दशमी को पूर्णा फिर एकादशी को नन्दा शुरु होगी इसी तरह दोनों पक्ष में जानो।

द्वितिय नंदा के सिद्ध योग

नं	भद्रा	नंदा	जया	रिक्ता	भद्रा	पूर्णा
र	चं	मं	बु	बृहस्पति	शुक्र	शनि

॥ नक्षत्र बार युक्त सिद्धयोग चक्रम् ॥

रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
हस्त	मृगसिरा	अश्वनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

इन नक्षत्र बारों में पंचमी ना पड़े तब सिद्ध योग होगा। विवाह में गुरु पुष्य ना होना चाहिये।

होपर ...चमीन ...ला।

गृहप्रवेश में मंगल को अश्वनी न पड़े तब गृह प्रवेश करे। यात्रा में शनि रोहिणी वर्जित है।

पत्रे में यदि एक बार में तीन तिथि स्पर्श करें तो उसदिन शुभ काम न करे। और एक तिथी तीन वार तक चले तो भी उसमें शुभ काम न करे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ सिद्धयोग॥

इतवार को	हस्त	अश्वनी	मूल	धनिष्ठा	तीनों उत्तरा	अष्टमी तिथि हो	
सोमवार को	श्रवण	पुष्य	अनुराधा	रोहिणी	मृगशिरा	दशमी नवमी हो तो	
मंगलवार को	अश्लेषा	अश्वनी	मूल	मृगासिरा	तेरस तीज या छठ या अष्टमी हो		
बुधवार को	पुष्य	अनुराधा	कृतिका	मृगासिरा	रोहिणी	दुइज या सप्तमी द्वादशी	
गुरुवार को	पुष्य	अनुराधा	विरवा	अश्वनी	रेवती	पुनर्वसु	दशमी पूर्णिमा हो
शुक्र को	पूर्वाषाढ़	चित्रा	रेवती	अश्वनी	पुनर्वसु	श्रवण	परिवा छठ एकादशी
शनि को	पूर्वा फाल्गुनी	स्वाती	श्रवण	मृगासिरा	रोहिणी	चौथ नवमी चौदस हो तो सिद्ध योग होवे।	

॥ विद्या शुरु करने के महूर्त॥ | शतभीषा। तीनों पूर्वा। इन नक्षत्रों में

मृग | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | अश्लेषा | मूल | हस्त | चित्रा | स्वाती | अश्व | श्रवण | धनिष्ठा

रविवार | गुरुवार | शुक्र | बुधवार | इन वारों को शुरु करे।

दिशावली

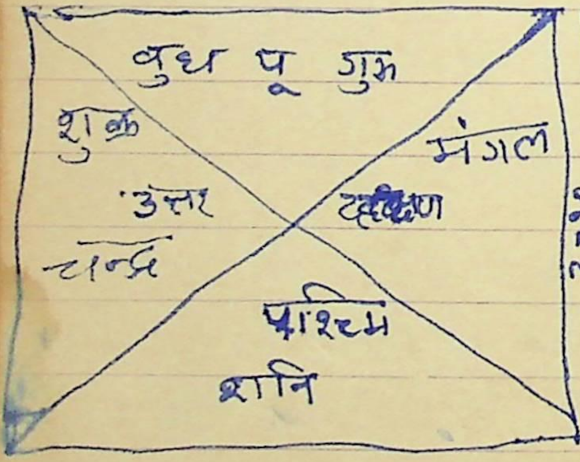

सन्मुख तिथि सहित
योगिनी विचार

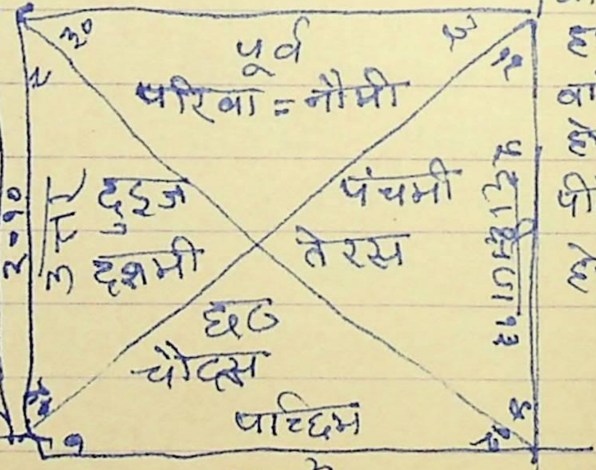

सामने रण करावे हरावे बायें अशुभ होती है। पीछे शुभ होती है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालराहु चक्र

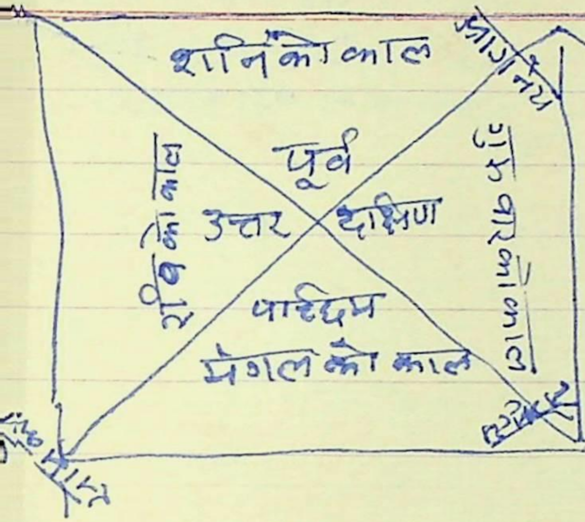

दिक्शूल

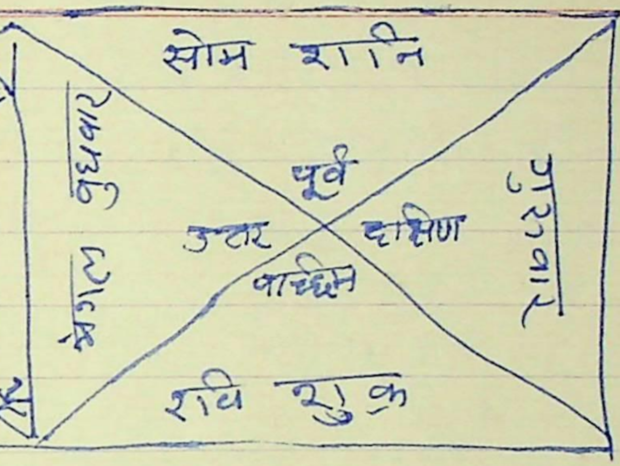

लग्न में दिगबल

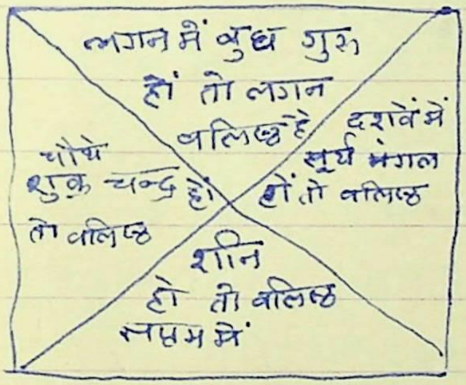

निर्बल लग्न

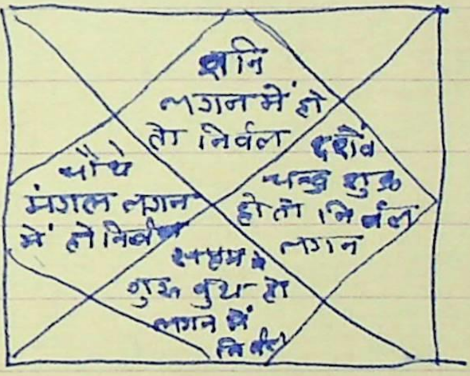

योगिनी विचार से पूरब में जाना हो तो १४-६ तिथि को जाओ पश्चिम में जाना हो तो १-६ तिथि को जाओ। दक्षिण में जाना हो तो २-१० तिथि को उत्तर जाना हो तो ५-१३ तिथि को जाओ। योगिनी सामने करके जाने से लड़ाई हो मृत्यु हो हार हो कलंक हो जूआ हो हार हो यह होगा पीछे करके चले हमेशा विजय होगी। या दाहिने करके चले।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चन्द्र गुरु का बड़ी मित्रता
सूर्य से
मंगल सूर्य का बड़ी मित्रता
राहु शनि का ॥ मित्रता
राहु से

शत्रुता
सूर्य - शनि = का बड़ी शत्रुता
सूर्य = राहु = का ॥ शत्रुता
गुरु = शुक्र = का ॥ शत्रुता
चन्द्र बुध का बड़ी शत्रुता

ग्यारह स्थान पर सभी ग्रह शुभ हैं।

३-६-१०वें स्थान पर सूर्य शुभ हैं।

६-३-११वें मंगल शुभ हैं राहु केतु शुभ

९-१०-७-३-६-११वें चन्द्रमा शुभ है। शुक्लपक्ष में ९-२-५वें चन्द्र शुभ

२-४-६-८-१०वें बुध शुभ है

२-५-९-७वें स्थान पर गुरु शुभ

१-२-३-४-५-८-९-११वें १२वें शुक्र शुभ होते हैं।

॥ गोचर में देखो ॥

कुण्डली में जन्म समय सूर्यादि ग्रह जिस अंक पर होते हैं उसी अंक को राशी का ग्रह माना जाता है। जैसे कुण्डली में सूर्य ५ अंक पर है तो सिंह का सूर्य जन्म का माना जायगा। तो पत्र में ५ अंक जहां हो वहां से गिनो जहां पर सूर्य बैठा हो इस चक्र में देखो दशवें सूर्य बैठा है। ५ अंक से गिना दशवें स्थान पर सूर्य है। यदि यह सूर्य ५ अंक पर होता तो जन्म का सूर्य

कहलाता (गोचर में जन्म का सूर्य होय तो यात्रा करावे। दुसरे स्थान पर हो तो हानि करावे तीसरे धन प्राप्ति करावे। चौथे रोग। पांचवें दरिद्र बनावे छठे सुख सातवें यात्रा। आठवें हो तो रोगी करे। नवें हो तो पाप करावे। १०वें पर सुखी करे ११वें पर धर्म करावे। १२वें पर पीड़ा देवे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...में जन्म राशी का राहु हो तो = हानी हो। दूसरे पर खर्च। तीसरे [illegible] धन मिले। चौथे
बैर करे। पूर्वे पर शोक करे। छठे पर धन। सातये विपत्ति मिले। आठवें रोग
नौमें पाप करावे। १० वें पर बैर करावे। ११ वें पर धन मिले। १२ वें पर कष्ट है

(जन्म का चन्द्र: पुष्ट करे। दूसरे धन दे। तीसरे लक्ष्मी दे। चौथे में
रोग। पाचवें में सुख। छठे में लाभ। सातवें आनन्द दे। आठवें रोग
करे नौवें मान। दशमें सुख दे। ११ वें लक्ष्मी दे बारहवें पीड़ा दे।

(जन्म का मंगल: हो तो भय हो। तीसरे लक्ष्मी दे। दूसरे हानी हो। चौथे
बैर करावे। पांचये रोगी करे। छठे लाभ करे। ७ वें खांसी करे। ८ वें भय
९ वें पीड़ा ९ वें १० वें शोक ११ वें पर लाभ १२ वें हानि करे॥

(जन्म का बुध – हो तो जेल करावे। लाभ। तीसरे शत्रु भय चौथे धन
लाभ। पूर्वे शोक छठे लक्ष्मी। सातये क्षयरोग हो। आठये धन।
९ वें रोग हो १० वें पर भोग होय ११ वें सुख होय। बारहवें बाधा।

(जन्म के बृहस्पत हो तो = भय हो दूसरे लाभ। तीसरे रोग होवे।
चौथे खर्च हो। पूर्वे पर लाभ। छठे पर खर्च शोक हो। सातयें सुखी
करे। आठयें रोगी करे। नौवें मान करे। १० वें पर दरिद्र बनावे
११ वें धन दे बारहवें रोगी करे फजूल खर्च करावे। दुखी करे

(जन्म का शुक्र हो तो = सुखी करे। दूसरे पर धन मिले। तीसरे पर धन
चौथे में सुख। पांचवें पर रोग। छठे पर पीड़ा। सातयें पर विपत्ती हो
८ वें पर सुखी हो नवें पर धर्म करावे। १० वें पर दुखी करे।
११ वें पर लाभ दे १२ वें पर लाभ दे।

(जन्म का शनिश्चर हो तो भय हो = दूसरे में शोक हो। तीसरे में लक्ष्मी दे
चौथे में दुख दे। पूर्वे पर हानि। छठे पर सुख। सातयें भय। ८ वें पर रोग
९ वें में पाप। १० वें में शो[illegible] मिले।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ ज्योतिष प्रमाण ॥

१ घंटे में १५० पल
६० विपल का एक पल
६० पल का एक दंड
१ दंड की एक घड़ी
१ घड़ी का एक दंड
२½ घड़ी का एक घंटा
६० घड़ी का २४ घंटा
२½ पल का १ मिनट
६० सैकिंड का १ मिनट
६० मिनट का १ घंटा

अब राशी अंश में देखो

एक अंश में ६० कला
६० कला का एक अंश
६० विकल की १ कला
१ कला में ६० विकला
३० अंश की एक राशी
एक राशी में ३० अंश
१२ राशी में ३६० अंश
१ अंश मे ६० कला

६० कला मे १ अंश
१ राशी मे १२० कला
एक राशी बीती तो ३० अंश बीता
एक राशी बीती तो सवा दो नक्षत्र गया
९ अक्षर की एक राशी
९ चरण की एक राशी
४ चरण का एक नक्षत्र
२४ घंटे में एक नक्षत्र कभी दो कभी २ तीन नक्षत्र स्पर्श होते हैं

ढाई घड़ी का मतलब
२ घड़ी ३० अंश समझो।

सूर्य एक मिनट में
१ हजार मील चलता है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ भारतवर्ष में समय का ज्ञान ॥

कोमल कमल के दल मे एक सुई चुभोने मे जितना टाइम लगता है उसके प्रमाण को त्रुटि कहते हैं। ऐसी १०० त्रुटि के प्रमाण को एक लव कहते हैं। ३० लव का एक निमेष २७ निमेष का एक गुरु अक्षर प्रमाण हुआ। १०० गुरु अक्षर का एक प्राण होता है। ६ प्राण की एक विघटिका होती है। ६० विघटिका का १ घटिका यानी एक दंड प्रमाण होता है। ६० दंड का २४ घंटा या पूरा दिन रात। पूरे दिन रात में अंग्रेजी हिसाब से २. १७८९६०००००० सैकिंड होते हैं। दूसरी रीति गिनने की

६० तत्परस का एक परस
६० परस की एक विलिप्ता
६० विलिप्ता की एक लिप्ता
६० लिप्ता की एक विघटिका
६० विघटिका की एक घटिका
६० घटिका की एक दिनरात

कलयुग से चौगुना सतयुग
सतयुग की उमर १७२८००० वर्ष
कलयुग से तिगुना
त्रेतायुग की उमर १२९६००० वर्ष
कलयुग से दुगना
द्वापर की उम्र ८६४००० वर्ष
एक गुना
कलयुग की उम्र ४३२००० वर्ष
महायुग की उम्र ४३२००००×७१ गुना
(वर्ष ३०६७२००००)
मनवन्तर ३०६७२००००×१४ गुना
कल्प की अवधि ४३२००००००००
महायुग की उम्र ४३२००००×१०००

२४ घंटे में ४६६५६०००००० तत्परस
एक सैकिंड में ५४००००० चौवनलाख तत्परस
ब्रह्मा की आयु १५५५२०००००००००० वर्ष की
१ मन्वन्तर ७१ युग का होता है। (१४ मन्वन्तर का एक कल्प होता है। २७ महायुग का एक कल्प होता है। जब अट्ठाइसवें महायुग का तीन युग बीत जाने पर कलि का प्रथम चरण माना जाता है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पृथ्वी की आयु १९५५८८५०३१ वर्ष की हो गई।
१ शंख ९५ करोड़ ५८ लाख ८५ हजार ३१ वर्ष की हुई।

बिना प्रलय के मन्वन्तर का प्रमाण ३०६७२०००० वर्ष का है
संकल्प में जो श्वेत १२ कल्प कहा जाता है इसका मतलब
६ मन्वन्तर बीत गये सातवां वैवश्वत मन्वन्तर बीत
रहा है। प्रलय काल १७२८००० वर्ष का होता है।
इसी प्रलय काल के प्रमाण को सातगुना कर दो तो
१२०९६००० वर्ष होगा तो तुम समझो इतने वर्ष बाद
वैवश्वत मन्वन्तर लगा।
एक मन्वन्तर ७१ युग का होता है।
१ महायुग ४३२०००० वर्ष का होता है। सतयुग द्वापर त्रेता
का जोड़
३८८८००० वर्ष बीत चुका कलियुग प्राय ५०३१ वर्ष हुआ
सन १९३० तक ५०३१ वर्ष कलियुग का समय हो चुका।
चारों युग का योगफल ५९६६८८००० वर्ष होता है।
कलि की उत्पत्ती भाद्रपद कृष्णा १३ रविवार को अश्लेषा
नक्षत्र में व्यतिपात योग में अर्ध रात्री को हुई।
सम्बत् १९८७ शाका: १८५२ सन १९३० तक कलि
गत वर्ष हुआ। इसलिये ५०३१ वर्ष हो गया कलियुग
क्राइस्ट के जन्म के पहले ३१०२ वर्ष पूर्व १८ फरवरी
आधी रात को हुआ। उस समय सातों ग्रह मेष राशी
पर थे। क्राइस्ट के जन्म के ५७ वर्ष पहले विक्रमादित्य
राजा हुए।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कलियुग के 3000 वर्ष बीतजाने पर विक्रमादित्य राजा हुए थे। स्कन्ध पुराण में लिखा है। इसी राजा ने विक्रम सम्बत् चलाया। ईश्वी साल के 1930 प्रमाण में ~~सम्बत् जोड़दे~~ 57 जोड़ दो तो 1987 विक्रमसम्बत् बन जाता है। क्राइस्ट के 78 वर्ष बाद एक शालि वाहन राजा हुए हैं। उसी समय से शाकाः शुरू हुआ 1930 से 78 घटा दो तो 1852 शाकाः हो जायेगा। विक्रमसम्बत् 1987 के पहले शुरू हुआ।

=

सूर्य चन्द्र पूर्णिमा के दिन एक सीधी रेखा पर आते हैं। तो समुद्र में ज्वार भाटा आता है। एक खास बात है चन्द्र में स्वयं चमक नहीं होती सूर्य का प्रकाश जिधर 2 पड़ता है उसी भाग में चन्द्र चमकने लगता है। चन्द्रमा चाहे जिस स्थिति में रहे इस का पीछे का भाग कभी पृथ्वी के सामने नहीं आता वहां वायू नदी समुद्र नहीं वह भाग मृत्यु लोग सा है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाख
सूर्य की चौड़ाई लम्बाई ८,६४,००० मील की दूरी में है।
इसका ऊपरी सतह का तापमान लगभग ११००० डिग्री है
पृथ्वी से ९,३० ००००० नौ करोड़ तीस लाख मील दूरी पर है
यह सूर्य पृथ्वी से १३००० गुना लम्बा चौड़ा है। पृथ्वी
से ३,३३ ००० गुना भारी है। यह ठोस पदार्थ नहीं है
एक आग का गोला सा है।
चन्द्र का व्यास २ हजार १६० मील दूरी पर है।
चन्द्रमा पृथ्वी से २ लाख ८ हजार मील दूर है।
सबसे दूर शनि है इसकी दूरी ८८ करोड़ मील के ऊपर है
यह सूर्य की एक परिक्रमा ३० वर्ष में लगा पाता है। यह मन्द ग्रह है।
शनि से नीचे वृहस्पति है। पृथ्वी से ४८ करोड़ मील
से भी कुछ दूर है। यह सूर्य की परिक्रमा १२ वर्ष में लगा पाते है
मंगल की दूरी ६ करोड़ मील है। इसके नीचे शुक्र है
शुक्र की दूरी पृथ्वी से करीब ६ करोड़ मील पर है ऊपर।
बुध पृथ्वी से ३।। करोड़ मील ऊपर है। ८६ दिन में
परिक्रमा कर पाता है।
चन्द्रमा पृथ्वी से ढाई करोड़ मील ऊपर है। यह २९
दिन में परिक्रमा कर पाता है। २९ दिन ४४ मिनट ५ से.
में पूरी सूर्य का परिक्रमा कर लेता है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

"महूर्त गणपति में लिखा है"

गोचरमें

१ जन्म का सूर्य होय तो यात्रा करावें। गोचर में दूसरे सूर्य हो तो हानि अवश्य होवे। तीसरे सूर्य हो तो धनप्राप्ति। चौथे पर रोगी करे। पांचवें पर दरिद्र करे छठे पर सुखी करे। सातयें हो तो यात्रा करावे। आठयें सूर्य रोगी करे। नवें पर आवे तो पाप करावे। दशयें पर सुखी करे ११वें पर धर्म करावे। १२वें पर पीड़ा दे

जन्म समय में कुण्डली में जिस राशी का चन्द्र हो उस राशी के चन्द्र को जन्म का चन्द्रमा कहते हैं। जैसे चन्द्र ५ अंक पर है तो पांचवें अंक को सिंह राशी कहते हैं तो सिंह का चन्द्र कहलायेगा इसी तरह हर अंक को राशी जान लेना।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उच्चाटन में = धतूरे के रस में मुर्दे के कोयले की स्याही मिलावे १०८ यंत्र कुल लिखे कागज़ पर पूजन करके शमशान में गाढ़ दे या हवा में उड़ा दे। शमशान में ही। यदि बहेड़े का पेड़ हो। उसी में बांध दे फौरन उच्चाटन होवे चाहे इन्द्र भी रक्षा करे उच्चाटन ना रुके। प्रयोग समय जिधर हवा बहती हो उधर ~~मुख~~ मुख करके लिखे, उड़ावे गाढ़े जो करे।

उच्चाटन मन्त्र = जपता रहे जैसे ॐ भद्रेश्वर भद्रं रामचन्द्रस्य तेली सपरिवारकस्य उच्चाटय२ स्वाहा जिसके नाम से योजना करोगे वह उच्चाटित होगा। १०८ यन्त्र लिखे।

आकर्षण करने का मन्त्र = अथवा विद्वेषण मारण मोहन वशीकरन में
ॐ भद्रेश्वर भद्रं अमुकस्य आकर्षय २ स्वाहा। १०८ यन्त्र लिखे जपे
ॐ भद्रेश्वर भद्रं अमुकस्य अमुकेन विद्वेषणं कुरु २ स्वाहा। १०८ यन्त्र
ॐ भद्रेश्वर भद्रं ~~मारण~~ अमुकस्य मारणं कुरु २ स्वाहा। इसी तरह सब कुछ वृद्धि करने के लिये पूर्व में मुख करके लिखे और मोहन वशी में ईशान मुख करके लिखे। मारण में १ हजार यन्त्र लिखे॥ पीछे शत्रु का नाम लिख दे हर यन्त्र पर। फिर यन्त्र पूजन करके सब को कालसूत में लपेट कर चिताग्नि में जला दे तो मरे। यदि तपावे तो ज्वर से जले शत्रु॥

॥ वशीकरन में॥

कुम्हार के यहां से नया सकोरा लावे अष्टगंध से फिर उसे बांये पैर से उल्टा कर दे फिर उसका पूजन कर दे और मन्त्र योजना बना के जप दे १०८ बार फिर शमशान में गाढ़ दे उस सकोरे को इस पंचदशी को आक के १५ पत्तों पर धतूरे के रस प्रेतांगार से लिखे नीम की कलम से। १५ दिन तक और चिताग्नि में जला दे। तो शत्रु नाश होवे। शनिवार से शुरु करे कृष्ण पक्ष में लिखे। और इसी यन्त्र को उल्टा नीचे नाम और राशी शत्रु की लिख दो। और इसी यन्त्र को यन्त्र है सोमबार के दिन सफेद दूधी, केशर, सफेद लज्जीरा की पत्ती कपिला गाय का दूध इस पंचदशी को विलोम भाव से साम के समय मंगल को काक पंख काक रक्त से मृतक वस्त्र पर लिखकर ... गाढ़ दे।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पंचदशी लिखने के पहले ऐसा कोष्ठ बनावे और इन कोष्ठों में इतने देवताओं की पूजा करे फिर ४ माला मूल मंत्र (महेश्वर) का जपे तब लिखना शुरू करे। १५ हजार बालिक चतुर्गुण लिखे ६० हजार।

शुद्ध यन्त्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

हनुमत दर्शन यन्त्र

क्रम ३-२-८
५-४-९
१-६-७

५	३	७
[illegible]	४	२
[illegible]	८	६

ईशान — अनन्त — पूर्व — आग्नेय

८ महागौरी का पूजन राहु गृह का ईशान इन्द्र का त्रिशूल आयुध	१ शैल पुत्री का पूजन सूर्य गृह का इन्द्र का वज्र आयुध का	६ कात्यायनी का शुक्र गृह का वायव्ये इन्द्र का अंकुश आयुध का पूजन
३ चन्द्र घंटा का मंगल गृह का यम इन्द्र का दण्ड आयुध का	५ स्कन्दमाता का महेश्वर प्रधान देवता का पूजन गुरु का वरुण का पाश आयुध का	७ कालरात्री का शनि गृह का कुबेर इन्द्र का गदा आयुध का
४ कूष्माण्डा का [illegible]	९ सिद्ध दात्री का केत गृह का ब्रह्मणी इन्द्र का पद्म आयुध का	२ ब्रह्म चारिणी का चन्द्रमा का आग्नेय इन्द्र का शक्ति आयुध का

उत्तर — दक्षिण

बुध गृह का
नैऋत्य का
खड्ग की
पूजा

वायव्य — चक्र आयुध — पश्चिम — नैऋ

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" चक्र पूजन विधि "

एक बड़े कमरे में समस्त साधक आचार्य के साथ बैठते हैं, चारों तरफ साधक बैठते हैं। बीच में भैरवी चक्र बना कर घट स्थापन करके उस पर दीप जला दिया जाता है। कुछ भोजन सामिग्री साधकों के समक्ष रहती है। घट में मां का आवाहन करते हैं। घट के नीचे ऐसा यंत्र बनावे - फिर इस यत्र सामानार्ध्य से को प्रोक्षण करे। विन्दु में (ॐ ह्रीं आधार शक्तिये नमः) बोल कर पंचोपचार से विन्दु का पूजा करे। फिर फट् ३ बोल कर एक त्रिपदी धो कर नमः ३ बोले उस समय। फिर यह मंत्र पढे त्रिपदी पर रं वह्नि मण्डलाय धर्मप्रद दश कलात्मने नमः) कह कर फिर त्रिपदी का पूजन करे। उसे

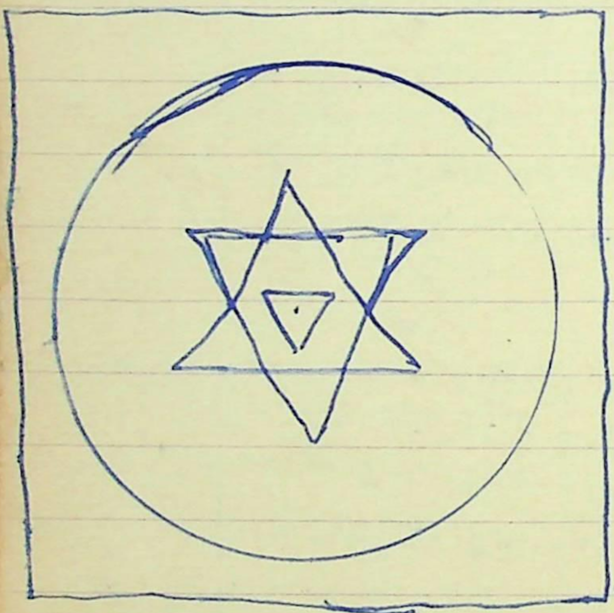

अग्नि मण्डल कहते हैं। फिर फट् ३ बोल कर कलश को धो कर (नमः ३) बोल कर कलश को त्रिपदी पर रक्खे। फिर मंत्र पढ़ के सूर्य मंडल का पूजन करे। (ॐ अं अर्कमण्डलाय अर्थ प्रद द्वादश कलाय नमः। यह सूर्य मंडल का मन्त्र है। पंचोपचार पूजन करके घट में कारण भरे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शोधनमंत्र = ऊँ एकमेव परब्रह्म स्थूल सूक्ष्म मयं ध्रुवम्।
कचोद्भवाम ब्रह्म हत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्। ऊँ वेदानां प्रणवे
बीजं ब्रह्मानन्द मयं यदि तेन सत्येन हे देवि ब्रह्म शापं
व्यपोहतु ॥ १० बार करे इसे। फिर १० बार इसे ऊँ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रम्ह
शाप विमोचितायै सुधा देव्यै नमः। फिर १० बार (ऊँ सूर्य मण्डल सम्भूते
वरुणालये सम्भवे। प्रमाबीज मये देवि शुक्र शापाद् विमुच्यताम्॥
ऊँ शां शीं शुं शैं शौं शः शुक्र शाप विमोचितायै सुधा देव्यै नमः।
ऊँ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुरे कृष्ण शाप विमोचय २ अमृतं स्रावय २
स्वाहा। (दस बार) ऊँ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्र शाप विमोचितायै सुधा देव्यै नमः
१० बार बोले। ऊँ पवमानः परमानन्दः पवमानः परो रसः। पवमानं परं ज्ञानं
तेन ते चावयाम्यहम्॥ ३ बार बोले (ऊँ कृष्ण शापाद् विमुक्ता त्वं विमुक्ता
ब्रम्ह शापतः। विमुक्ता रुद्र शापश्च पवित्रा भव साम्प्रतम्। ३ बार "
तिरस्करणी विद्या = तीन बार पढ़ = नील हयं समाधि रूह्यपरः प्रयाति
॥ नीलां शुकाभरणा माल्य विलेपनाढ्या। निद्रा पटेन भुवनानि
तिरो दधानां ॥ खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान्" ऊँ ह्रीं श्रीं
नमो भगवती माहेश्वरी सर्व पशु जन मनश्चक्षुस्तिरस्कारणं कुरु
स्वाहा। प्रार्थना = ऊँ ह्रीं परम प्रकाशिनी परमाकाशशून्य
निवासिनी सूर्य चन्द्राग्नि भक्षिणी पात्रं विश २ स्वाहा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विलोम मात्रिका = दं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं
नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं
ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं । मूलमंत्र पढ़के कारण
कलश भरे । लाल वस्त्र डाले लाल फूल माला से कलश सजावे ।
ऊपर चन्दन से कलश पर लेपन करे । फिर कलश द्रव्य में
चन्द्र मंडल का पुजन करे । (ॐ सोम मंडलाय षोडस कलात्मने
नमः । फिर द्रव्य मध्य में त्रिकोण अंगुली से बनावे । फिर उसमें
प्रेतबीज लिखे । प्रेतबीज यह है । (हसौं मण्डलाय नमः) फिर
घट में आनन्द भैरवी का ध्यान करे ।

पूजन मंत्र
॥ ध्यान ॥ हसक्षमलवरयूं आनन्द भैरवाय (वषट्)

ॐ सूर्य कोटि प्रतीकाशं चन्द्र कोटि सुशीतलम् ।
अष्टादश भुजं देवं पंच वक्त्रं त्रिलोचनम् ।
अमृतार्णव मध्यस्थं ब्रम्ह पद्म परिस्थितम् ।
वृषारूढ़ नीलकण्ठं सर्वाभरण भूषितम् ।
कपाल खट्वांग धर घण्टा डमरू वादिनम् ।
पाशांकुश धरं देवं गदा मूसल धारिणम् ।
खड्ग खेटक पट्टीश मुद्गरं शूल दण्ड धृक ।
विचित्र खेटक मुण्डं वरदाभय धारिणम् ।
लोहितं देव देवेश भावयेत् साधकोत्तमः ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ आनन्द भैरवी का ध्यान और मंत्र।

॥ (हसदमलवरयीं आनन्द भैरव्यै वौषट्) पूजन मंत्र।

ध्यान :- भावयेच्चु सुधां देवीं चन्द्र कोटि युत प्रभाम्।
हिम कुन्देन्दु धवलां पंचवक्त्रां त्रिलोचनाम्।
अष्टादश भुजैर्युक्तां सर्वानन्द करोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम्।

विलास की कल्पना करे (ऐं प्लूं स्त्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतं स्त्रावय २ स्वाहा) आठ बार पढ़े।

ॐ हंसः शुचिषत् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषद्‌तिथिर्दुरोणसत्। नृप द्वर सद् ऋृत सद् व्योम सदब्जा गोजा ऋृतजा अद्रिजा ऋृतं वृहत्॥ (आनन्द भैरवी की गायत्री) १० बार

(ऐं ह्रीं श्रीं आनन्देश्वरी विद्महे सुधा देव्यै धीमहि तन्नः अर्धनारीश्वरी - प्रचोदयात्)। ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुः मत्पार्थिवं ॐ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिर मधुमान्अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः मधु मधु मधु॥ इस वेद मंत्र से माँ सुरा देवी को अभिमन्त्रित करे। (श्री महाविद्या मंत्र से भी (ऐं क्लीं सौं त्रिपुरा देव्यै नमः) बोल कर अभिमन्त्रित करे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस मंत्र द्वारा तीर्थों का आकर्षण करना।
"मैं करे' अंकुशमुद्रा द्वारा"

फिर- गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती नर्मदे सिन्धु कावेरी द्रव्येऽस्मिन सन्निधिं कुरु। फिर वं वं वं से धेनु मुद्रा दिखावे। हुं हुं हुं से मत्स्यमुद्रा दिखा कर अवगुंठन करे। (ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरादेव्यै नमः) बोलकर योनी मुद्रा दिखावे और प्रणाम करे। वं वरुण बीज है इसे आठ बार जपे कारण पर

" एक अलग विशेषार्घ्य पात्र स्थापन करे "

अपने और प्रतिमा के बीच इसे त्रिकोण षट्कोण वृत्त चतुष्कोण वाला मंडल बना कर (इस मन्त्र से मंडल का पूजन करे। (ॐ श्री बाला त्रिपुरा देव्यै विशेषार्घ्य मण्डलाय नमः) फिर आधार रक्खे और आधार का पूजन करे इस मन्त्र से (ॐ रं वह्नि मंडलाय नमः धर्मप्रद द्वादश कलात्मने श्री बालाया: विशेषार्घ्याधाराय नमः) आधार को धो कर तीन बार फट् फट् फट् बोल कर रक्खे। फिर ॐ अं अर्क मण्डलाय अर्थप्रद द्वादश कलात्मने श्री बालाया: विशेषार्घ्य पात्राय नमः बोलकर स्तुति करे और द्रव्य भरे विशेषार्घ्य में। ऐं क्लीं सौः श्री बाला त्रिपुरा देव्यै नमः गाता जाय बोलता जाय। फिर कारण द्रव्य का जो विशेषार्घ्य में द्रव्य का इस मन्त्र से पूजन करे। जो आगे लिखा है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ उं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने श्री बालायाः विशेषार्घ्य पात्राय नमः) फिर उसी विशेषार्घ्य में पांच रत्नों की कल्पना करे पूर्व में गोमेध का ध्यान करे इस मन्त्र द्वारा (ॐ ग्लूं गोमेद रत्नाय नमः)
दक्षिण में स्वर्ण का ध्यान करे ...... (ॐ स्लूं स्वर्ण रत्नाय नमः)
पश्चिम में। पद्मराग का ध्यान करे .... (ॐ प्लूं पद्मरागाय नमः)
उत्तर में। (ॐ न्लूं नील रत्नाय नमः)
मध्य में। (ॐ म्लूं माणिक्य रत्नाय नमः)

विशेषार्घ्य पात्र के द्रव्य में भी त्रिकोण षट्कोण का ध्यान करे और त्रिकोण के तीनों कोनों में (ऐं नमः क्लीं नमः सौं नमः) कहकर तीनों शक्ति का ध्यान करना चाहिये। फिर षट्कोण में छहों इन देवियों का ध्यान करे ॥ (देखें बगल में देखलो। फिर

ऐं हृदय शक्तिये नमः क्लीं शिर शक्तिये नमः सौं शिखा शक्तिये नमः ऐं कवच शक्तिये नमः क्लीं नेत्र शक्तिये नमः सौं अस्त्र शक्तिये नमः	ॐ स्लूं ग्लूं प्लूं न्लूं प्लूं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतं स्त्रावय २ स्वाहा। यह बोलकर सहस्त्रसार से चन्द्र बिम्ब से बहती हुई अमृतधारा नासिका द्वार से पात्र में गिरावे। फिर (ऐं क्लीं सौं) आठ बार जपे वं बीज ८ बार जपे। धेनु मुद्रा दिखावे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

" पञ्चमकार शोधन क्रिया "

पात्र
मांस को उसी प्रकार का मंडल बना कर रखके फिर दायें हाथ पर बायां हाथ रख कर वायु बीज पढ़ें तीन बार यं (यँ ३) फिर बांये पर दाहिना हाथ रखके तीन बार अग्नि बीज पढ़े (रं ३) फिर धेनु मुद्रा दिखाकर वरुण बीज तीन बार पढ़े (वं ३) फिर समानार्घ्य का जल उस पर छिड़के और यह मंत्र बोले
मंत्र - ॐ छागलाज्येण मत्स्यान्त्र कृतरूपाय विशोव ।
बल्यप देव देव्योश्च पवित्रो भव साम्प्रतम् ।
ॐ प्रत द्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमेणध्व धिक्षयन्ति भुवनानि विश्वा

॥ मीन सोधन ॥

कृतावतारो हरिणा वलिना पीड़ितं जगत् ।
वलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च ।
भैरवी परितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवद् हरिः ।
ॐ त्रियम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् ।
ऊर्वा रुकमिव बन्धनान् मृत्यो मुक्षिय मामृतात "

॥ मुद्रा शोधन ॥

श्री देव्यर्चन काले तु यानि यानीह साम्प्रतम् ।
... सूनि सौरभेयानि पवित्राणीह सिद्धये ॥
ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सूरयः दिवीव चक्षुराततम् ॥
तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते ।
विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नवग्रहों का विवरण

सूर्य का दान उदय काल में प्रातः करे सात हजार जप प्रेम से करावे ॐ ह्रां ह्रीं सूर्याय नमः	सोना तांबा गेहूं घी गुड़ केशर लालवस्त्र लालफूल मूंगा गाय लाल लाल चंदन दान करे ब्राह्मण को मिठाई खिलाके पान दक्षिणा दे माला पहनावे, आरती करे मस्तकपर चन्दन लगावे।
चन्द्र की पूजा अग्नि कोण में करे और सन्ध्या काल में करे दान ११ हजार जप करावे (ॐ ऐं ह्रीं	मोती ~~सोना~~ चांदी चावल दही सफेद कपड़ा सफेद फूल शंख कपूर सफेद बैल श्वेत चन्दन बांस की पिटारी जल भर के घड़ा दान करे।
दक्षिण में मंगल की पूजा करे साढ़े सात बजे सुबह दान दे। दस हजार जप करावे। ॐ हूं श्रीं मंगलाय नमः	लाल कपड़ा लाल गुड़ घी लाल फूल कस्तूरी लाल चन्दन सोना मूंगा तांबा मसूर की दाल लाल बैल
बुध की पूजा ईशान कोण में करे। सुबह आठ बजे दान करे १६००० जप करे। ईशान में मुख करके दान करे (ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः)	हरा कपड़ा मूंग पन्ना सोना कांसा खांड घी हरा फूल कपूर हाथी दांत शस्त्र मीठा दान दे।
गुरु की पूजा उत्तर में दान करे १६ हजार जप। सन्ध्या काल में दान दे। (ॐ ऐं क्लीं बृहस्पते नमः) दान का समय सन्ध्या।	पुखराज सोना कांसा चने की दाल घी खांड़ पीला फूल पीला कपड़ा हल्दी पीला फल
शुक्र की पूजा पूर्व में करे। सूर्योदय के समय दान दे। ६ हजार जप (ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः)	हीरा सोना चांदी चावल मिश्री दू सफेद घोड़ा सफेद चन्दन

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शनि का पूजा पश्चिम में करे २३ हजार जपे। होम सन्ध्या में करे। (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः)	नीलम सोना लोहा उड़द कुलथी तेल काला कपड़ा काला फूल काली गौ कस्तूरी छाता खड़ाऊँ। तिल का लड्डू पूड़ी। गुड़ दक्षिणा। पान
राहू का पूजा नैऋत्य में करे रात में दान दे। १८ हजार जपे। (ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः)	गोमेद सोना सीसा तिल सरसों का तेल ~~सफेद~~ कपड़ा, नीला ~~काला~~ फूल कम्बल घोड़ा सूप मीठा पूड़ी खीर दक्षिणा पान तांबा।
केतु की पूजा वायव्य में करे। दान सूर्यास्त के बाद करे १७ हजार जपे। (ॐ ह्रीं केतवे नमः)	लहसुनिया सोना लोहा तिल सतनजा तेल धूमिल कपड़ा नारियल कम्बल बकरा चाकू मीठा पूड़ी खीर दक्षिणा पान नीला फूल चाकू

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्गला कीलक कवच क्यों करना चाहिए।

अर्गला दुख: का नाश करती हैं। कीलक फल देता हैं। कवच नित्य रक्षा करता हैं। अर्गला माने जंजीर कीलक माने ताला लगा देना, कवच माने किबाड़ बंद कर देना, (आत्मरक्षा)

अर्गला का निर्माण विष्णु भगवान ने किया हैं।

कीलक की रचना शंकर जी ने की हैं। कवच की रचना ब्रह्मा जी ने की हैं। दुर्गा जी के पाठ नौ तरह से होते हैं।

(१) महा विद्या (२) महा तन्त्री (३) चण्डी (४) सप्तसती (५) मृत संजीवनी (६) महा चण्डी (७) रूपदीपीका (८) चतुष्षष्ठी योगीनी (९) पराचण्डी पाठ।

महा विद्या के पाठ का क्रम = पहले (प्रथम चरित्र) इसमें १ अध्याय शुरू का माना गया हैं फिर इसे पढ़कर मध्यम चरित्र दूसरा चरित्र पढ़े इसमें तीन अध्याय माने गये हैं सो पढ़े, फिर उत्तम चरित्र पढ़े, इसमें नौ अध्याय माने गये हैं। पाँचवा छठा सातवा आठवा नवां दशवां ग्यारहवा बारहवा तेरहवां पढ़े। फिर रहस्य तीनों पढ़े।

महातन्त्री पाठ का क्रम = प्रथम उत्तम, मध्यम पढ़े। शुरू में पहला पढ़े अध्याय फिर पाँचवे पाठ से तेरहवें अध्याय तक। पश्चात दूसरे अध्याय से चौथे तक फिर तीनों रहस्य पढ़े।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चण्डीपाठ क्रम = आदि मध्य अन्त। शुरू में पहला अध्याय फिर दो से चार तक फिर ५ से १३ वें अध्याय तक पश्चात् तीनों रहस्य पढ़े।

सप्तसती पाठ क्रम = मध्यम चरित्र शुरू में दूसरे से चौथे तक, फिर पहला अध्याय, फिर पाँचवे से तेरहवें तक (उत्तम चरित्र)। (मध्यम, आदि अन्त का क्रम है) फिर रहस्य।

मृत संजीवनी के पाठ का क्रम = (अन्त आदि मध्य) ५ से १३ वें तक, फिर पहला अध्याय, फिर दूसरे से चौथे तक अध्याय तक पढ़ लें। फिर रहस्य तीनों पढ़े।

महाचण्डी क्रम = (अन्त मध्य आदि) ५ वें से १३ अध्याय तक, फिर दूसरे से चौथे तक, फिर प्रथम अध्याय पढ़ ले तीनों रहस्य जरूर पढ़े बाद में।

रूपदीपिका रूपचण्डी क्रम =

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि कह कर प्रति श्लोक पढ़े परन्तु नवार्ण मन्त्र से सम्पुट कर दें। फिर रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि। जैसे उदाहरण देखो रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ऊँ ह्रीं शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमो स्तुते ह्रीं ऊँ ऐं [illegible] देहि जय देहि०

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चतुष्षष्ठी यानी ६४ योगिनी पाठक्रम = चौंसठ योगिनी स्तोत्र मन्त्र से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करना चाहिए।
पराषष्ठी पाठक्रम = परा बीज (सौः) से हर श्लोक को सम्पुटित करे। इन नवों पाठ का क्रमशः अलग२ क्रम और अलग२ नाम हैं।
नवों पाठों की अधिष्ठात्री अलग २ हैं।

१) पहले पाठ की अधिष्ठात्री = जया देवी
दूसरे - - - - - - - - - - = विजया
तीसरे - - - - - - - - - - = भद्रा देवी
चौथे - - - - - - - - - = भद्र काली
पांचवे - - - - - - - - = सुमुखी
छठे - - - - - - - - = दुर्मुखी
सातवें - - - - - - - - - = प्रज्ञा
आठवें - - - - - - - - = व्याघ्रमुखी
नवें की - - - - - - - - = सिंह मुखी

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाराही तन्त्र में कामना पूर्ति हेतु पाठ संख्या ।

उपद्रव शान्ति हेतु = तीन सम्पूर्ण पाठ करे । चण्डी क्रमसे

ग्रहों की शान्ति हेतु = ५ पाठ
महाभय दूर करने हेतु = 6 पाठ
मन शान्ति के लिए = ७ पाठ
राजा को वशीकरण हेतु = ११ पाठ
ऐश्वर्य प्राप्ती हेतु = ११ पाठ
मनोरथ सिद्धि हेतु = १२ पाठ
बैरी नाश हेतु = १२ पाठ
स्त्री शत्रु वश हेतु = १४ पाठ
मंगल हेतु = १५ पाठ
पुत्र पौत्र धन धान्य हेतु = १६ पाठ
राज भय नाश हेतु = १6 पाठ
विपक्ष उच्चाटन हेतु = १८ पाठ
कर्ज मुक्त हेतु = २० पाठ
जेल से छूटने हेतु = २५ पाठ
जय बृद्धि हेतु = १०० पाठ
राज बृद्धि हेतु = १०० पाठ
मनचाही सिद्धि हेतु = १०८ पाठ

स्थिर लक्ष्मी रहे इस हेतु = १००...
समस्त सिद्धि प्राप्ति हेतु = ५० पाठ रोज

और संकट असाध्य रोग, जाति भ्रष्ट हो गई हो कुल भ्रष्ट हो गया हो, आयु क्षय हो गई हो, शत्रु बढ़ रहे हों धन नाश हो गया हो, व्याधियां बढ़ती जा रही हो । महा भय उत्पन्न हो गया हो, दैविक दैहिक भौतिक कोई व्याधि लग गई हो इसके निवारण हेतु = १०० पाठ करना चाहिए ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रूद्रा वृत्ति का मतलब ११ पाठ	वाग भवं त्रिपुरा दिव्यै विद्महे
ाकी वृत्ति का मतलब १२ पाठ	कामेश्वर्यै च धीमहि तन्न:
नु वृत्ति का मतलब १४ पाठ	क्लिन्ने प्रचोदयात्
कल्पा वृत्ति का मतलब १६ पाठ	

वसु लक्षं = माने = आठ लाख

॥ अर्थ सहित समझो ।

अमृतीकरण मन्त्र = ऐं ब्लूं ह्सौं जूं स: अमृते अमृतोद्भवे अमृते श्वरि अमृत वर्षिणी अमृतं स्रावय २ स्वाहा ।

ऐं वाग बीज है। ब्लूं बशीकरण बीज है। ह्सौं जूं स: ...धारामृत है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सप्तशती पाठारम्भे शापोद्धारादिक्रम कर्तव्यं
तत्प्रकार उक्त; केरलौ स्तन्त्रा च ॥
अंत्या १३ द्या १, कै १२, द्वि २, रूद्र ११, त्रि ३, दिग १०,
ऋपं ४, के ९ विं ५, म ट र्तव: ६, अश्वो ७ श्र्व ७ इति
सर्गाणां शापोद्धारे मनो: क्रम इत्युक्ते स्त्रोयो दश-
प्रथमौ, द्वादश-द्वितीयौ, एकादश-तृतीयौ, दशम-चतुर्थौ,
नवम-पंचमौ, अष्टम षष्ठावध्यायौ पठित्वा सप्ततम मध्यायं
द्वि: पठेदिति शापोद्धार प्रकार: ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गणेशकवच सर्व विघ्न हरण

सूर्यपुत्र को गणेश कवच का उपदेश देते हुये

संसार मोहनस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ।
ऋषिश्छन्दश्च बृहती देवो लम्बोदरः स्वयम् ॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
सर्वेषां कवचानां च सारभूतमिदं मुने ॥
ॐ गं हुं श्रीं गणेशाय स्वाहा मे पातु मस्तकम् ।
द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो ललाटं मे सदावतु ॥
ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं गमिति वै सततं पातु लोचनम् ।
तालुकं पातु विघ्नेशः सततं धरणीतले ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीमिति च सततं पातु नासिकाम् ।
ॐ गौं गं शूर्पकर्णाय स्वाहा पात्वधरं मम ।
दन्तानि तालुकां जिह्वां पातु मे षोडशाक्षर
ॐ लं श्रीं लम्बोदरायेति स्वाहा गण्डं सदावतु
ॐ क्लीं ह्रीं विघ्ननाशाय स्वाहा कर्णं सदावतु
ॐ श्रीं गं गजाननायेति स्वाहा स्कन्धं सदावतु
ॐ ह्रीं विनायकायेति स्वाहा पृष्ठं सदावतु
ॐ क्लीं ह्रीमिति कंकालं पातु वक्षःस्थलं च गम्

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रौ कालो सदा पातु सर्वाङ्गं विघ्ननिघ्नकृत्
ाग्नेय्यां लम्बोदरः पातु चाग्नेय्यां विघ्ननायकः
दक्षिणे पातु विघ्नेशो नैरृत्यां तु गजाननः
पश्चिमे पार्वतीपुत्रो वायव्यां शंकरात्मजः
कृष्णस्यांशश्चोत्तरे च परिपूर्णतमस्य च ।
ऐशान्यामेकदन्तश्च हेरम्बः पातु चोर्ध्वतः ।
अधो गणाधिपः पातु सर्वपूज्यश्च सर्वतः
स्वप्ने जागरणे चैव पातु मां योगिनां गुरुः
इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहे
संसार मोहनं नाम कवचं परमाद्भुतम्
श्री कृष्णेन पुरा दत्तं गोलोके रास मण्डले ।
वृन्दावने विनीताय मह्यं दिनकरात्मज ।
मया दत्तं च तुभ्यं च यस्मै कस्मै न दास्यसि
परं वरं सर्वपूज्यं सर्व संकटतारणम् ।
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं धारयेत यः
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सोऽपि विष्णुर्न संशय ।
अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानि च
ग्रहेन्द्र कवचस्यास्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इदं कवचमज्ञात्वा सो मन्त्रं च छंकरात्मजम्
शतलक्षं प्रजप्तोऽपि न मन्त्रसिद्धिदायकः ॥
इति ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...कृष्ण ...ऽङ्गानां व्याहृत्या ...

... क्रम योगेन त्रिगुन: सर्वाभिष्टद:

(श्रीं ह्रीं गतह्रद्र सौप्रत्ताङ्गी सफलवार्ता

...भिमन ह्रीं स्वाहा।) मूलमन्त्र है। इसका पु...

... में होता है कलियुग में चार...

... के ... 10 बार

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ गायत्री तन्त्रम्

नारद उवाच-

नारद जी ने प्रश्न किया — हे नारायण! गायत्री के शान्ति आदि के प्रयोग को कहिये।

नारायण उवाच— यह सुनकर श्री नारायण ने कहा कि— नारद! आपने अत्यन्त गुप्त बात पूछी है, परन्तु उसे किसी दुष्ट या पिशुन (छलिया) से नहीं कहनी चाहिए। द्विजों को शान्ति प्राप्ति करने के लिए हवन करना आवश्यक है तथा शमी की समिधाओं से हवन करने पर भूत-रोग एवं ग्रहादि की शान्ति होती है। दूध वाले वृक्षों की आर्द्र समिधाओं से हवन करने पर ग्रहादि की शान्ति होती है। अतः भूत रोगादि की शान्ति के लिए सम्पूर्ण प्रकार की समिधाओं से हवन करना आवश्यक है। सूर्य को हाथों द्वारा जल से तर्पण करने पर शान्ति मिलती है तथा घुटनों पर्यन्त पानी में स्थिर होकर जपने से सब दोषों की शान्ति होती है। कण्ठ पर्यन्त जल में खड़ा होकर जप करने से प्राणों के नाश होने का भय नहीं रहता, इस लिए सब प्रकार की शान्ति प्राप्त करने के लिए जल में प्रविष्ट होकर ही जप करना श्रेष्ठ है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुवर्ण, चाँदी, ताँबा, दूध वाले वृक्ष की लकड़ी से बने या छेद रहित मिट्टी के बर्तन में पञ्चगव्य रखकर दुग्ध वाले वृक्ष की लकड़ियों से प्रज्वलित अग्नि में हवन करना चाहिए। प्रत्येक आहुति में पञ्चगव्य का स्पर्श करना चाहिए तथा मन्त्रों का उच्चारण करते हुए कुशाओं द्वारा पंचगव्य ही से सम्पूर्ण स्थान का मार्जन करना चाहिए।

पश्चात् बलि प्रदान कर देवताओं का ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार ध्यान करने से अभिचारोत्पन्न कृत्य और पाप की शांति होती है। देवता, भूत और पिशाच आदि को वश में करने के लिये भी उपर्युक्त कही हुई विधि करनी चाहिए। इस प्रकार की क्रिया से देवता, भूत पिशाच सभी अपना-अपना घर, ग्राम, नगर और राज्य छोड़कर वश में हो जाते हैं।

चतुष्कोण मण्डल में गन्ध से शूल लिख कर और पूर्वोक्त विधि द्वारा सहस्र गायत्री का जप कर गाड़ देने पर ~~सब~~ सब प्रकार की सिद्धि मिलती है।

सोना, चाँदी, ताँबा, मिट्टी आदि में से किसी एक का छेद रहित घड़ा लेकर सूत्र से ढक कर बालुकायुक्त

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थान में स्थापित कर श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा चारों दिशाओं से लाये हुए जल से भरे। इलायची, चन्दन, कपूर, जाती, पाटल, बेला बिल्व-पत्र, बिष्णुक्रान्ता, देवी (सहदेई), जौ तिल, सरसों और दुग्ध निकालने वाले वृक्षों के पत्ते लेकर उसमें छोड़े। इस प्रकार सबको छोड़कर कुशा की कूँची बनाकर तथा उसे भी घड़े में छोड़कर स्नान करके एक हजार बार मन्त्र का जप करना चाहिए। धर्मादि के ज्ञाता ब्राह्मण द्वारा मन्त्रों से पूतीकृत इस जल से भूत आदि की बाधा से पीड़ित पुरुष के ऊपर मार्जन करे तथा पिलावे यथा गायत्री मन्त्र के साथ इसी जल से अभिषिंचन करे।

इस प्रकार अभिषिंचन करने पर मरणासन्न हुआ मनुष्य भी भूत व्याधी से मुक्त होकर सुखी हो जाता है।

हे मुने! अधिक समय तक जीने की इच्छा वाला विद्वान राजा इस कार्य को अवश्य करावे तथा इस अभिषेक के समय ऋत्विजों को सौ गायों की दक्षिणा देनी चाहिए या ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करने वाली

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरी दक्षिणा देनी चाहिए अथवा अपनी शक्ति के अनुसार जो हो सके, वह देनी चाहिए।

शनिवार के दिन जो ब्राह्मण पीपल के नीचे बैठकर सौ बार जप करता है, वह निःसन्देह भूत बाधा आदि से विमुक्त होता है। जो द्विज गुर्च (गिलोय) की समिधाओं को दूध में डुबा डुबाकर हवन करता है, वह सम्पूर्ण व्याधाओं से छुटकारा पा जाता है।
ज्वर के शान्ति के हेतु दूध में डालकर आम्र, पत्तों से द्विजों को हवन करना चाहिए। यह मृत्यु को जीतने वाला होम है। दुग्ध में बच को अभिषिक्त कर हवन करने से क्षय रोग विनष्ट होता है तथा दुग्ध, दधि एवं घृत इन तीनों का अग्नि में हवन करने से राजयक्ष्मा का विनाश होता है। दूध की खीर बना कर सूर्य को अर्पण करे तथा हवन शेष बची हुई खीर को राजलक्ष्मा के रोगी को सेवन करावें तो रोग की शांति होती है।

अमावस्या के दिन सोमलता (छेउटा) की डाली से होम करने पर क्षय रोग निवारण होता है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शङ्ख , वृक्ष (कोडिला) के पुष्पों से यदि हवन किया जाय तो कुष्ट रोग का विनाश होता है। तथा अपमार्ग के बीजों से हवन करने पर अपस्मार रोग का विनाश होता है। क्षीर वृक्ष की समिधाओं से हवन करने पर उन्माद रोग नहीं रहता तथा औदुम्बर (गूलर) की समिधाओं से हवन किया जाय तो महा-प्रमेह विनष्ट होता है। प्रमेह की शांति के लिए मधु अथवा शर्बत से भी हवन करना चाहिए और मसूरिका रोग मधुत्रय (दुग्ध, घृत, दधि) से हवन करने पर नहीं रहता।

कपिला गौ के घी से हवन करके भी मसूरिका को दूर करना चाहिए। गाय के सभी रोगों की शांति के लिये गूलर, हाथी के रोग-निवारण के लिये पाट और घोड़े के रोग दूर करने के लिये पिप्पल की समिधाओं से हवन करना लाभदायक है।

चींटी तथा शहद की मक्खियों द्वारा घर में छत्ता रख लेने पर शमी (छोंकर) की समिधाओं से हवन करना उत्तम है। साथ ही अन्न और घी भी होना चाहिए।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिजली की कड़क से पृथ्वी में कम्प उत्पन्न होता हो तो वनवेत की लकड़ियों से हवन करना चाहिए। इससे उत्पन्न भय शान्त होता है।

किसी भी दिशा में यदि दिग्दाह हो तो सात दिन पर्यन्त मन्त्र जपकर उस दिशा में जिधर दाह होता हो, तो ढेला फेंकना चाहिए इस प्रकार शांति उत्पन्न होती है। एक सप्ताह तक इस क्रिया को करने से राज्य और राष्ट्र में सुख-समृद्धि होती है।

बन्धन में ग्रसित मनुष्य गायत्री मन्त्र का मन में ही जाप करने पर बन्धन मुक्त हो जाता है।

भूत रोग तथा विष आदि से व्यथित पुरुष को गायत्री मन्त्र जपना चाहिए।

(कुश से जल को स्पर्श करता हुआ गायत्री मन्त्र का जप करे। फिर इस जल को भूत, प्रेत तथा पिशाच आदि की पीड़ा से पीड़ित मनुष्य को पिला दिया जाय तो वह रोगमुक्त हो जाता है।)

गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म लगाने से भूत-प्रेत की शांति होती है। मन्त्र का उच्चारण करते

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुए अभिमन्त्रित भस्म को पीड़ित व्यक्ति के मस्तक और सिर में लगाना चाहिए।

श्री और सौन्दर्य की कामना करने वाले पुरुष को रक्त कमल के फूलों से हवन करने पर श्री की प्राप्ति होती है।

(लक्ष्मी की आकाँक्षा करने वाले पुरुष को गायत्री मन्त्रोच्चारण के साथ पुष्पों से हवन करना चाहिए।)

जाती के पुष्पों से हवन किया जाय तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इस लिये लक्ष्मी की अभिलाषा वाले पुरुष को नवीन जाती के पुष्पों से हवन करना चाहिए। शाली चावलों से हवन करने पर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

बिल्व वृक्ष की जड़ की समिधा, खीर तथा घी इनसे हवन करने पर लक्ष्मी की प्राप्ती होती है, अथवा केवल जड़ का प्रयोग करने के स्थान में बिल्व वृक्ष की लकड़ी, पत्ते, पुष्प तथा फल सबको सुखाकर और कूट कर सामग्री बना ले और तब घी और खीर मिलाकर हवन करें।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मधुत्रय मिलाकर लावा से सात दिन तक सौ-सौ आहुतियाँ देकर हवन करने पर सुन्दर कन्या की प्राप्ति होती है। इस विधि से होम करने पर कन्या अति सुन्दर और अभीष्ट बर प्राप्त करती है। सात दिन पर्यन्त लाल कमल के फूलों से हवन करने पर सुवर्ण की प्राप्ति होती है।

सूर्य के मण्डल में जल छोड़ने से जल में स्थित सुवर्ण का प्राप्ति होती है। अन्न का होम करने पर अन्न की प्राप्ति होती है।

बछड़े के गोबर की होम करने से पशुओं की प्राप्ति होती है। काकुनि की खीर व घृत के होम से अभीष्ट प्रजा की प्राप्ती होती है।

सूर्य को होम पूर्वक पयस अन्न अर्पण करके ऋतुस्नान की हुई स्त्री को भोजन कराने से पुत्र की प्राप्ति होती है। पलास की सामिधा से होम करने पर आयु की बृद्धि होती है। क्षीर वृक्षों की सामिधा से हवन किया जाय तो भी आयु-वृद्धि होती है।

पलास सामिधा के होम करने से तथा यवों के

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होम करने से मधुरत्रय से और व्रीहियों से सौ आहुतियाँ
देने से सुवर्ण और आयु की प्राप्ति होती है।
सुवर्ण कमल के होम से पुरुष शतंजीवी होता
। दूर्वा, दुग्ध, मधु (शहद) और घी से सौ-सौ
आहुतीयाँ देने पर अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता।
शमी (छौंकर) की समिधाओं से, दूध से तथा घी से
हवन करने पर भी अप मृत्यु होने का डर नहीं रहता।
वट वृक्ष की समिधाओं से सौ- सौ बार आहुत देने से भी
अप मृत्यु का भय नहीं रहता।
वट वृक्ष की समिधाओं से केवल एक सप्ताह तक
दुग्धाहार करके सौ-सौ आहुतियां दी जायें तो पुरुष
मृत्युजित् हो जाय।
तीन रात्रि बिना खाये हुए रहकर मन्त्र-जप करने
से मृत्यु के भय से भी मुक्त हो जाता हैं। जल में
निमग्न होकर गायत्री जप करने से तत्क्षण ही मृत्यु
से विमुक्ति हो जाती है।
एक मास तक बिल्व वृक्ष के नीचे आसन
लगाकर जप करने से राज्य की प्राप्ति होती है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिल्व वृक्ष का जड़, फल, फूल और पत्तों से एक साथ हवन करने पर भी राज्य मिलता है।

एक मास पर्यन्त यदि कमल से हवन किया जाय तो राज्य की प्राप्ति होती है। शालि से युक्त यवागु (हलुआ) से हवन किया जाय तो ग्राम की प्राप्ति होती है।

पीपल की समिधाओं से हवन करने पर युद्ध में विजय प्राप्ति होती है। आक की समिधाओं से हवन करने पर सर्वत्र ही विजय होती है।

बेत वृक्ष के फूलों से अथवा पत्र मिलाकर खीर से हवन करने पर वृष्टि होती है।

नाभि पर्यन्त जल में खड़े होकर एक सप्ताह तक गायत्री जपने से वृष्टि होती है और जल में सौ बार हवन करने से अतिवृष्टि का निवारण होता है।

पलास की समिधाओं से हवन करने पर ब्रह्मतेज की अभिवृद्धि होती है और पलाश के कुसुमों से हवन करने पर अपने सभी इष्टों की उपलब्धि होती है।

दूध का हवन करने से तथा घृत की आहुतियाँ

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देने से बुद्धि-वृद्धि होती है। मन्त्रोच्चारण करते हुए ब्राह्मी के रस का पान करने से चिर ग्राहिणी बुद्धि होती है।

पुष्प का होम करने पर वस्त्र और डोड़ा के होम से भी उसी प्रकार का वस्त्र मिलता है। नमक मिले हुए शहद से होम करने पर इष्ट वश में हो जाता है।

लक्ष्मी पुष्पों से मिले हुए शहद का होम करने पर इष्ट वश में होता है। जल में स्थिर होकर अंजलि द्वारा अपना अभिषेक करने को अंजलि में जल लेकर अपने ऊपर (छिड़कने) से भी उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति होती है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हविष्यान्न स्वाहा रात्रि में ॐ ह्रीं हूं
भूर्भुवः पाताय [illegible] [illegible] [illegible],

१०००, मंत्र

निवेदन, ॐ नमो नारायणाय विद्महे वासुदेवाय
महालक्ष्मी,
वासुदेव. विष्णवे सर्वाधिपतये नमः।
विष्णु [illegible] मे तत्त्व, तव [illegible]
[illegible]॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रयोग बिधि पंचदशी यन्त्र को =

सूर्य जब हस्त नक्षत्र में हो या पुष्य या मूल या श्रवण पर हो तब सुन्दर बार में सुन्दर महूर्त में कि सिद्धि पीठ पर बैठ कर या श्मशान में, या मन्दिर में या गौशाले में, या अरण्य में, कुशासन पर या लाल ऊनी आसन पर, उत्तर मुख या पूर्व मुख कर के बैठे लाल वस्त्र धारण कर लाला माला रुद्राक्ष या लाल चन्दन की भूत शुद्धि कर प्राणायाम आचमन, आसन शोधन पृथ्वी सोधन न्यास विनियोग कर। संकल्प कर सर्व विघ्न निवारणार्थ भूतलिपी मंत्र जप करिये १०८ बार यह भूत लिपि करे

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं॥ इसके जप के बाद गूलर वृक्ष या पीपल की लेखनी से पलास की लेखनी से या चमेली की कलम से क्षीर पट्ट पर या दूध वाले वृक्ष के पत्तों पर रोली से लिखे नवकोष्ठ बना कर। इस क्रम से भरे अंक

पूर्व

ईशान	८	१	६	आग्नेय
उत्तर	३	५	७	दक्षिण
वायव्य	४	९	२	नैऋत्य

पश्चिम

ॐ मंद्रेश्वर मंद्रं पुरयर स्वाहा १०८ बार जप ले शुरु में तब भरे

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विनियोग = ॐ अस्य मद्रेश्वर मन्त्रस्य। स्वर्णाकर्षण भैरव ऋषि:। विराट छंद: मद्रेश्वरो देवता, ह्रीं बीजं मद्रं शक्ति: । पूरयेति कीलकम्। मद्रेश्वर प्रीतये जप बिनियोग:। ॐ स्वर्णाकर्षण भैरवाय नम: शिरसि, विराट् छन्दसे नम: मुखे, मद्रेश्वर देवतायै नम: हृदि। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये। मद्रं शक्त्ये नम: पादयो:। पूरयेति कीलकाय नम: नमौ। विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ॥ इति ऋषि न्यास: ॥ करन्यास: =

ॐ मद्रेश्वर अंगुष्ठाभ्यां नम: ॥ मद्रं तर्जनीभ्यां नम: ॥ पूरय मध्यमाभ्यां नम: मद्रेश्वर अनामिकाभ्यां नम:। मद्रं कनिष्ठकाभ्यां नम:। पूरय २ करतल कर पृष्ठाभ्यां नम: । हृदन्यास: ॐ मद्रेश्वर हृदयाय नम:। मद्रं शिरसे स्वाहा। पूरय शिखाय वषट्। मद्रेश्वर कवचाय हुं मद्रं नेत्रत्रयाय वौषट। पूरय २ अस्त्राय फट् ३ बार बोले। अथ मन्त्र (ॐ मद्रेश्वर मद्रं पूरय २ स्वाहा) अब पहले अंक से नव दुर्गा की पूजा करो (शैलपुत्री)(ब्रम्हचारिणी)(चन्द्रघंटेति)(कुष्माण्ड)(स्कन्दमाता)(कात्यायनी)(कालरात्री)(महागौरी) (सिद्धिदात्री) फिर पहले अंक से नवग्रहों की पूजा। फिर लोकपाल की पूजा (इन्द्राय नम:)(ॐ अग्नये नम:)(ॐ यमाय नम:)(ॐ नैऋत्यै नम:) (ॐ वरुणाय नम:)(ॐ वायवे नम:)(ॐ कुवेराय नम:)(ॐ ईशानाय नम:) ॐ ब्रह्मणे नम:)(ॐ अनन्ताय नम:)(फिर आठ आयुधों की पूजा करे ॐ वज्राय नम:)(शक्त्ये नम:)(ॐ दण्डाय नम:)(ॐ खड्गाय नम:)(ॐ पाशाय नम:)(ॐ पाशाय नम:)(ॐ अंकुशाय नम:)(ॐ गदायै नम:)(ॐ त्रिशूलाय नम:)

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ पद्मायनमः (ॐ चक्रायनमः) फिर मंड्रेश्वराय की पूजा सुगन्धित तेल या घी का दीप जलावे गुड़ की पूड़ी भोगलगावे। पूजा करके १०८ बार माला से जप मंड्रेश्वर जी का फिर लिखे १५ हजार इस यन्त्र को कागज पर, भोजपत्र पर, लिखे १५ हजार लिखे १५ हजार जप करे फिर दशांश, हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन करावे हवन कनेर के पुष्पों से या गड़हल के फूलों से घी से होता है। पश्चात् एक यन्त्र को पूजन करके त्रिलोह में भरा कर गले में जीवनभर के लिये पहन ले। शिवरहस्य में लिखा है क्षीर पट्ट पर रोली से चम्पा की कलम से लिखे।

प्रयोग में राजा पर यानी जज तहसीलदार अफसर वर्ग पर प्रयोग रविपुष्य या रविहस्त जब पत्र में पड़े उसी दिन करे। श्रवण मूल संयुक्त हो तो और अच्छा हो। व्यतिपात योग वर्जित है।

गुरुवार शुक्रवार को ब्राह्मण पर करे। मंगल को क्षत्री पर। बुध को शूद्र पर करे। सोमवार को वैश्य पर करे। ध्यान रहे।

म्लेच्छ यानी मेहतर मुसलमान चमार पासी पर शनिवार को

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(कलम प्रादेश प्रमाण की होनी चाहिए)

राजा वशीकरण के लिये यन्त्र लिखे तो या धन प्राप्ति के लिये लिखे तो दीप की बत्ती उत्तर की तरफ रहे। उच्चाटन मारण में दीप की बत्ती दक्षिण में करे। वशीकरण मोहन धनप्राप्ति में गौ घृत का दीप उच्चाटन मारण में तेल का दीप जलावे लाही के तेल का दीप रहै। ब्राह्मण के लिये भोजपत्र पर लिखे। क्षत्री के लिये ताड़ के पत्तों पर वैश्य के लिय केवल कागज पर लिखवे दो १५ हजार। शूद्र के लिये भूमि पर। मलेच्छ यवन लोगों के लिये कागज पर सिर्फ १५ हजार ब्राह्मण के प्रयोग में पीपल की कलम से लिखे। वैश्य के प्रयोग में जाति की कलम (   ) से लिखे। (मोहन) (वशीकरण) स्वर्ण की कलम से (सर्वाकर्षण) में चांदी की कलम से। मोहन में कौवे के पंख की कलम से भी लिखते हैं। स्तम्भन में तांबे की कलम हो या हल्दी के पेड़ की कलम हो। उच्चाटन में लोहे की कलम से विद्वेषण में भी लोहे की कलम से लिखते हैं। ॥ सर्वाकर्षण में कस्तूरी को घिस के स्याही बनावे। खरक से वशीकरण ॥ हल्दी से सर्वाकर्षण ॥ केसर से देवता दर्शन हो ॥ धतूरे के रस से मारण ॥ मुर्दे के कोयले से शत्रु उच्चाटन हो ॥ विद्वेषण में बेहड़ा की स्याही से लिखे ॥ लाल सफेद चन्दन से शान्ती कर्म वास्ते

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक, फ़ंक से भरेगा तो हनुमान दर्शन होगा।
दो, फ़ंक से शुरु करे तो राजा वश हो।
तीन, फ़ंक से शुरु करे तो व्यापार लाभ करे
चार से भरे तो मारण हो।
पांच से भरना शुरु करे तो शत्रु उच्चारन हो।
छै से भी मारण होता है।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कलह निवारण हेतु गणपति स्तोत्र
विरचित शंकराचार्य

सुवर्ण वर्ण सुन्दरं सितैकदन्त बन्धुरं
गृहीत पाशकाङ्कुशं वर प्रदाभय प्रदं
चतुर्भुजं त्रिलोचनं भुजङ्गमोपवीतिनं
प्रफुल्ल वारिजासनं भजामि सिन्धुराननम्
किरीट हार कुण्डलं प्रदीप्त बाहु भूषणं
प्रचण्ड रत्न कंकणं सुशोभिताङ्घ्रि यष्टिकम्
प्रभात सूर्य सुन्दराम्बर द्वय प्रधारिणम्
सरत्न हेम नूपुर प्रशोभिताङ्घ्रि पङ्कजम्
सुवर्ण दण्ड मण्डित प्रचण्ड चारु चामरं
ग्रह प्रदेन्दु सुन्दरं युगक्षण प्रमोदितम्
कवीन्द्र चित्तरञ्जकं महा विपत्ति भञ्जकं
षडक्षर स्वरूपिणं भजे गजेन्द्र रूपिणं
विरिञ्चि विष्णु वन्दितं विरूप लोचन स्तुतं
गिरीश दर्शनेच्छया समर्पितं पराम्बया
निरन्तरं सुरासुरैः सपुत्र वाम लोचनैः
महामखेष्ट कर्मसु स्मृतं भजामि तुन्दिलम्

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कदापि लुब्ध चंचलालिमञ्जु गुञ्जितारवं
प्रबुद्ध चित्तरंजकं प्रमोद कर्ण चालकम्
अनन्य भक्ति मानवं प्रचण्ड मुक्ति दायकम्
नमामि नित्य मादरेण वक्रतुण्ड नायकम्

दारिद्र्यविद्रावणमाशु कामदं
स्तोत्रं पठेदेवदनं समादरात् ।
पुत्री कलत्र स्वजनेषु मैत्री पुमान्
भवेदेकवर प्रसादात् ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गणेश स्तोत्र

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्वसौख्य प्रदायिने ।
दुष्टारिष्ट विनाशाय पराय परमात्मने ॥
लम्बोदरं महावीर्यं नाग यज्ञोपशोभितम्
अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्नव्यूह विनाशकम् ॥
ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमोनमः ।
सर्व सिद्धि प्रदोऽसि त्वं सिद्धि बुद्धि प्रदो भव ॥
चिन्तितार्थ प्रदस्त्वं हि सततं मोदक प्रियः ।
सिन्दूरारुण वस्त्रैश्च पूजितो वर दायकः ॥
इदं गणपति स्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः ।
तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुञ्चति ॥

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विघ्नजाश के लिये गणेश स्तोत्र

परं धामं परम ब्रम्ह परेशं परमीश्वरम
विघ्नोविघ्नकरं शान्तं पुष्टकान्त मनन्तकम
सुरासुरेन्द्र सिद्धेन्द्रै: स्तुतं स्तौमि परात्परम
सुरपद्म दिनेशं च गणेशं मंगलायनम
इदं स्तोत्र महापुण्यं विघ्न शोक हरम परम
य: पठेत प्रातरुत्थाय सर्व विघ्नात प्रमुच्यते।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये।

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा यतो
निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेद भिन्नम्
सदा तं गणेशं नमामो भजामः।
यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत्तथाब्जासनो
विश्वगो विश्वगोप्ता॥
तथेन्द्रादयो देव सङ्घा मनुष्याः
सदा तं गणेशं नमामो भजामः
यतो वह्निभानू भवो भूर्जलं च
यतः सागराश्चन्द्रमा व्योमवायुः
यतः स्थावरा जङ्गमा वृक्ष सङ्घाः
सदा तं गणेशं नमामो भजामः
यतो दानवाः किन्नरा यक्ष सङ्घा
यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च।
यतः पक्षकीटा यतो वीरुधश्च
सदा तं गणेशं नमामो भजामः
यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षो यतः सम्पदो
भक्त सन्तोषिकाः स्युः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यतो विघ्ननाशः यतः कार्य सिद्धिः
सदा तं गणेशम् नमामो भजामः
यतः पुत्रसम्पद् यतो वांछितार्थो
यतो भक्त विघ्नास्तथानेक रूपाः ।
यतः शोक मोहौ यतः काम एव
सदा तं गणेशं नमामो भजामः
यतो अनन्त शक्तिः स शेषो बभूव
धरा धारणेऽनेक रूपे च शक्तः
यतोऽनेकधा स्वर्ग लोका हि नाना
सदा तं गणेशं नमामो भजामः
यतो वेद वाचो विकुण्ठा मनोभि-
सदा नेति नेतीति यता गृणन्ति
परब्रह्म रूपं चिदानन्द भूतं
सदा तं गणेशं नमामो भजामः

फल

जो मनुष्य तीन दिनमें तीनसंध्या के समय
पाठ करेगा उसके सारे कार्य सिद्ध होंगे
जो आठ दिनो तक आठ श्लोका
का एक मास पाठ करेगा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ श्री महाकालिके श्मशान वासनी विद्महे अम्बिके धीमहि तन्नो घोरे प्रचोद

और चतुर्थी को आठ बार इस श्लोक को पढ़ेगा वह आठ सिद्धियों को प्राप्त करेगा। जो एक मास तक प्रतिदिन दस २ बार इस श्लोक का पाठ करेगा। वह कारागार में बंधे हुये तथा राजा के द्वारा वध दण्ड पाने वाले कैदी को भी छुड़ा लेगा इसमें संशय नहीं है इस श्लोक का २१ बार पाठ करने से विद्यार्थी विद्या को पुत्रार्थी पुत्र को तथा कामार्थी समस्त मनोकामनाओं को प्राप्त करेगा। जो मनुष्य परम भक्ति से पाठ करेगा वह गजानन का परम भक्त होगा।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१।२०।।६० ।६०।।६०।

०।।२५।।३५। २५।४५।

०म ४। २४। ४। १५

(गणेश न्यास)

सर्व विघ्न रक्षार्थे

ॐ श्री गणेशाय नमः ।। आचमन्य प्राणायामं कृत्वा ।
दक्षिण हस्ते वक्रतुण्डाय नमः । वाम हस्ते शूर्पकर्णाय नमः ।
ओष्ठे विघ्नेशाय नमः । सम्पुटे गजाननाय नमः । दक्षिण पादे
लम्बोदराय नमः । वाम पादे एक दन्ताय नमः । शिरसि
एकदन्ताय नमः । चिबुके ब्रह्मणस्पतये नमः । दक्षिण
नासिकायाम् विनायकाय नमः । वाम नासिकायाम्
ज्येष्ठराजाय नमः । दक्षिण नेत्रे विकटाय नमः । वाम नेत्रे
कपिलाय नमः । दक्षिण कर्णे धरणी धराय नमः । वामकर्णे
आशापूरकाय नमः । नाभौ महोदराय नमः । हृदये धूम्र
केतवे नमः । ललाटे मयूरेशाय नमः । दक्षिण बाहौ स्वानन्द
वासिकारकाय नमः । वाम बाहौ उच्चल सुखदायके नमः ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोक्षप्राप्ति हेतु

श्री विघ्नेश पुराण सार मुदितं व्याजाय धागापुरा
तत्खण्ड प्रथमं महागणपतेश्चोपासनाख्यं यथा।
संहर्तुं त्रिपुरं शिवेन गणपस्यादौ कृतं पूजनम्
कर्तुं सृष्टिमिमां स्तुतः स विधिना व्यासेन बुद्धयाप्तये
संक्षेपाश्च विनायकस्य च मनो व्याणस्य तीर्थस्य वै
कुर्वाणो महिमानं मुक्त चरितं तत्पापविध्यापनम्
तस्मै यैर्यद् मोक्षितम् गणपतिस्तत्तत्प्रतुष्टो ददौ।
ततः सर्वो न समर्थ एव कथितं ब्रह्मा कुरुते नायकः
क्रीडाकान्ता मयो वदे कृतयुगे श्वेतद्दलीव काश्यपः
सिंहाङ्कः स विनायको दशभुजो भूत्वाथ काशीं ययौ।
हत्वा तत्र नरान्तकं तदनुजं देवान्तकम् दानवं
त्रेतायां शिवनन्दनो रसभुजो जातो मयूरध्वजः ॥
हत्वा तं कमलासुरं च सगणं सिन्धुं महादैत्यपं।
पश्चात् सिद्धिमती सुते कमलजस्तस्मै च ज्ञानं ददौ ॥
द्वापरे तु गजाननो युगभुजो गौरी सुतः सिन्दुर
संमर्द्य स्वकरेण तं निजमुखे चाखुध्वजो लिप्तवान्
गीतायाः उपदेश एव हि कृतो राज्ञा वरेण्याय वै
तुष्टायाथ च धूम्रकेतु रभिधो विप्रः अधर्माधिकः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो कृष्णागुरु सकर्पूर सिन्दूर चन्दन माता को प्रदान करता है वह
शिव लोक जाता है। जो घीगुगुल से पूजा करता है वह सहस्त्र गौ
देने का फल पाता है। जो अगरधूप से पूजा करे वह सर्व यज्ञों का फल ले
जो सितागुरु से पूजा करता है वह नर सुखी रहता है। घृतगुगल विशेष है
यदि (शुक्ल नौमी को महिषाक्षं घृताक्तं तु दग्ध्वा विल्वमथापि वा
उसे बाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। सूर्य लोक में निवास करता है
जो सन्ध्या काल में नवमी को महिष की बलि देता है वह चंडिका के
पास जाता है। (गुड़ खण्डाज्य संमिश्रमन्नं) देने से
वैश्नाव सुकुल को प्राप्त होता है सूर्य लोक मे जाता है।
जो (गुड़ खण्ड घृतानां च तथा शर्करया) से जो पूजा करे वह।
ब्राह्मणपद को पाता है।
जो आम खजूर कच्ची गरी बीजपूरकं) प्रदान करे घी का दीप
जलावे। सौ अश्वमेध यज्ञ का फल पावेगा। जो सि मां का अनुचर होगा
जो तेल का दीप प्रदान करे नाग लोक जाके किन्नरों के साथ रहेगा।।
जो नवमी के दिन ~~कार्तिक~~ जो श्रद्धा से मां को दीपदान करे वह हजार
वर्ष ब्रह्मलोक मे रहेगा।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इन पुष्पों से पूजन करने से चण्डिका का अनुचर हो जाता है। चन्द्रलोक में जाता है

शुक्ल पुष्पैः -
कुशैः स्वापिफलैः -
भृंगिरसैः
मल्लिका मुत पलपत्रं -
शमीपुन्नाग चम्पकम् -
करीर कार शोकैः
द्रोणं पुष्पं विशेषतः - अगस्त
चन्दनं च जपा पुष्पं = गुड़हल
नाग केशरम् -
ऋतुकालोद्भवैः पुष्पै मल्लिका - माला
जाति कुंकुमैः = चमेली
सित रक्तैस्तथा पुष्पैः सफेद लाल
नील पुष्पैश्च पाण्डुरैः = श्वेत पीला
किंशुकै = पलास टेसू
केशरैः,
कङ्कैः = कंकोल
चम्पकैः = चम्पा
कपिबीज = कैथा

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

न्द्र लोक मे जाता है । महेश्वरी लोक मे जाता है ।
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बकुलै

मन्दारैः = मदारके फूल

कुन्द पुष्पैः = कुन्द पुष्प

कुरण्टकैः

करवीर = कनेर

अर्क पुष्पै = मदार पुष्प

विशेष अपराजिता का फूल =

धतूरे का पुष्प -

अगस्त का पुष्प -

तर्मि ब्रह्म वृक्षस्य

दूर्वांकुरैः कोमलैः

कुशानां मंजरीभि

बिल्व पत्रैः

सुर द्रुम

लीलोपवन

कृष्णागुरु = मैरना गुगुल

अगुरु = लाल गुगुल

वन्यपुष्प = जल मे होने वाला फूल कमल कुमुद

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो पञ्चगव्य से स्नान कराता है वह गौलोक जाता है।
जो कपिला के पञ्चगव्य से स्नान कराता है। वह देवों के पास जाता है।
जो रक्त से स्नान कराता है। वह विष्णु लोक में जाता है।
जो श्रद्धा से गुरु को दूध कर्पूर से स्नान कराता है वह इन्द्रलोक जाता है।
जो मधु और पायस से स्नान करावे। उसके पितृ दो सौ वर्ष तृप्त रहते हैं।
जो रोज दूध से स्नान कराता है। वह हजार अश्वमेध सौ राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त करता है।
जो घी खीर दही से मां का स्नान कराता है
पूरे वर्ष बेलपत्र चढाता है इतर लगाता है। वह एक हजार गौ दान का फल पाता है॥
जो महिष का मांस दान करें मां को और रुधिर से पूजा करे। वह सौ वर्ष ब्रह्मा के

ॐ ह्रूं नमः दक्षिण नासापुटे। ॐ ह्रूं नमः वाम नासापुटे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नवार्ण मंत्र :- ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे नमः

विनियोग :- ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राः
गायत्री उष्णिक अनुष्टुप छन्दांसि श्री महाकाली महालक्ष्मी
महासरस्वती देवता: नन्दाशाकम्भरी भीमा: शक्तयः रक्त
दन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि अग्नि वायु सूर्यास्तत्वानि
ऋग्यजुः सामवेदा ध्यानानि सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोग:

प्रथमन्यास :- ॐ अं नमः शिरसि। ॐ आं नमः मुखे, ॐ इं नमः
दक्षिण नेत्रे। ॐ ईं नमः वामनेत्रे। ॐ उं नमः दक्षिण कर्णे।
ॐ ऊं नमः वाम कर्णे। ॐ ऋं नमः वाम कपोले। ॐ ॡं नमः
वाम कपोले। ॐ एं नमः उर्ध्वोष्ठे। ॐ ऐं नमः अधरौष्ठे।
ॐ ओं नमः उर्ध्वदन्त पंक्तौ। ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ
ॐ अं नमः मूर्ध्नि। ॐ अः नमः मुखवृत्ते। ॐ कं नमः दक्षिण
बाहु मूले। ॐ खं नमः दक्षिणकूर्परे। ॐ गं नमः दक्षिणमणिबन्धे
ॐ घं नमः दक्षिण हस्तांगुलिमूले। ॐ ङं नमः दक्षिणहस्तां
गुल्यग्रे। ॐ चं नमः बाहु वामबाहु मूले। ॐ छं नमः वाम
कूर्परे। ॐ जं नमः वाम मणिबन्धे। ॐ झं नमः वाम
हस्तांगुलिमूले। ॐ ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐ टं नमः दक्षिण पाद मूले। ॐ ठं नमः दक्षिण जानुनि
ॐ डं नमः दक्षिण गुल्फे। ॐ ढं नमः दक्षिण पादांगुलि मूले
ॐ णं नमः दक्षिण पदांगुल्यग्रे। ॐ तं नमः वाम पाद मूले
ॐ थं नमः वाम जानुनि। ॐ दं नमः वाम गुल्फे।
ॐ धं नमः वाम पदांगुलि मूले। ॐ नं नमः वाम पदांगुल्यग्रे।
ॐ पं नमः दक्षिण पार्श्वे। ॐ फं नमः ~~पृष्ठे~~। वाम पार्श्वे।
ॐ बं नमः पृष्ठे। ॐ भं नमः नाभौ। ॐ मं नमः उदरे।
ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि। ॐ रं असृगात्मने नमः
दक्षांसे। ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि। ॐ वं मेदात्मने नमः
वामांसे। ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम्।
ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम्।
ॐ सं शुक्रात्मने ~~नमः~~। ॐ दक्षपादान्तम्।
ॐ हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम्।
ॐ परमात्मने नमः जठरे। ॐ क्षं प्राणात्मने नमः ॐ

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वितीय न्यास: ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नम: कनिष्ठयो। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
नम: अनामिकयो। ऐं ह्रीं क्लीं नम: मध्यमयो।
ऐं ह्रीं क्लीं नम: तर्जन्यो। ऐं ह्रीं क्लीं नम: अंगुष्ठयो।
ऐं ह्रीं क्लीं नम: करतलयो। ऐं ह्रीं क्लीं नम: करपृष्ठयो।
ऐं ह्रीं क्लीं नम: मणिबन्धयो:। ऐं ह्रीं क्लीं नम: कूर्परयो:
ऐं ह्रीं क्लीं नम: हृदयाय नम:। ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा।
ऐं ह्रीं क्लीं शिखायै वषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट्
मातृकागणन्यास — ह्रीं ब्राह्मी पूर्वत: मां पातु।
ह्रीं माहेश्वरी आग्नेय्यां मां पातु। ह्रीं कौमारी दक्षिणे
मां पातु। ह्रीं वैष्णवी नैऋत्ये मां पातु। ह्रीं वाराही
पश्चिमे मां पातु। ह्रीं इन्द्राणी वायव्ये मां पातु।
ह्रीं चामुण्डा उत्तरे मां पातु। ह्रीं महालक्ष्मी ऐशान्ये मां
पातु। ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वे मां पातु। ह्रीं सप्तद्वीपेश्वरी
भूमौ ~~मां~~ मां पातु। ह्रीं कामेश्वरी पाताले मां पातु।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चतुर्थ न्यास विधि :— ॐ कमलांकुशमण्डिता नन्दजा पूर्वांगं मे पातु । ॐ खड्ग पात्र करा रक्तदन्तिका दक्षिणांग मे पातु । ॐ पुष्पपल्लव संयुता शाकम्भरी पृष्ठांग मे पातु । ॐ धनुर्बाण करा दुर्गा वामांग मे पातु । ॐ शिर: पात्र करा भीमा मस्तकाच्चरणान्त मे पातु । ॐ चित्रकान्ति भृद् भ्रामरी पादादि मस्तकान्तं मे पातु ।

ब्रह्म न्यास = पंचम न्यास =

ॐ ब्रह्म सनातन: पादादि नाभि पर्यन्तं मां पातु । ॐ जनार्दन: नाभिविशुद्धि पर्यन्तं मां पातु । ॐ रुद्रस्त्रिलोचन: विशुद्धि ब्रह्म रन्ध्रान्तं मां पातु । ॐ हंस पादद्वयं मे पातु । ॐ वैनतेय करद्वयं मे पातु । ॐ वृषभश्चक्षुषी मे पातु । ॐ गजानन: सर्वाङ्गानि मे पातु । ॐ आनन्द मयो हरि परापरौ देह भागौ मे पातु ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

षडङ्गन्यास:

ॐ अष्टादश भुजा युक्ता महालक्ष्मी मध्यं मे पातु। ॐ अष्टभुजा युक्ता सरस्वती ऊर्ध्वं मे पातु। ॐ दशभुज बाहु समन्विता महाकाली अध: मे पातु। ॐ सिंह: हस्तद्वयं मे पातु। ॐ परंहंसोऽक्षियुग्मं मे पातु। ॐ दिव्य महिषारूढयम: पदद्वयं मे पातु। ॐ महेशाचण्डिका युक्ता: सर्वांगानि मे पातु।

नातृमन्त्र न्यास:-

ॐ ऐं नम: ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ह्रीं नम: दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नम: वामनेत्रे। ॐ चां नम: दक्षकर्णे। ॐ मुं नम: वामकर्णे। ॐ डां नम: दक्षनासापुटे। ॐ यै नम: वाम नासा पुटे। ॐ विं नम: मुखे। ॐ च्चे नम: मूलाधारे।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अष्टम न्यास :

ॐ च्चे नमः मूलाधारे । ॐ विं नमः मुखे । ॐ यै नमः वामनासा पुटे । ॐ डां नमः दक्षिण नासापुटे । ॐ मुं नमः वाम कर्णे । ॐ चां नमः दक्षिण कर्णे । ॐ क्लीं नमः वाम नेत्रे । ॐ ह्रीं नमः दक्षिण नेत्रे । ॐ ऐं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ।

नवम न्यास : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे च मस्तकाच्चरणान्तं पूर्वांङ्गे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे मस्तकाच्चरणान्तं दक्षिणाङ्गे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे मस्तकाच्चरणान्तं पृष्ठे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे मस्तकाच्चरणान्तं वामाङ्गे । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे च मस्तकाच्चरणातम । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे चरणात्मस्तकावधि ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दसमन्यास : ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हृदयाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे शिखायै वषट्। ऐं ह्रीं क्लीं
चामुण्डायै विच्चे कवचाय हुम्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै
विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे
अस्त्राय फट्।

मूल षड्न्यास : ऐं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा।
क्लीं शिखायै वषट्। चामुण्डायै कवचाय हुम्।
विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये
विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यास : ऐं नमः शिखायाम्। ह्रीं नमः
दक्षिणनेत्रे। क्लीं नमः वामनेत्रे। चां नमः दक्षिणकर्णे।
मुं नमः वामकर्णे। डां नमः दक्षिण नासायाम्।
यैं नमः वाम नासायाम्। विं नमः मुखे। च्चै नमः गुह्ये।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ध्यान

खड्ग चक्रगदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डी शिर:
शंख सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांग भूषावृताम्
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्
नीलाश्मद्युतिमास्यपाद दशकां सेवे महाकालिकाम्।
१४४

अक्षस्रक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां।
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्
१७५

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छीतांशु
तुल्य प्रभाम्
गौरी देहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां
महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे
शुम्भादैत्यार्दिनीम्।

जप = ९ लाख

हवन – खी। पातिल

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समौसा 56/43.

मयात् 30/14.

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

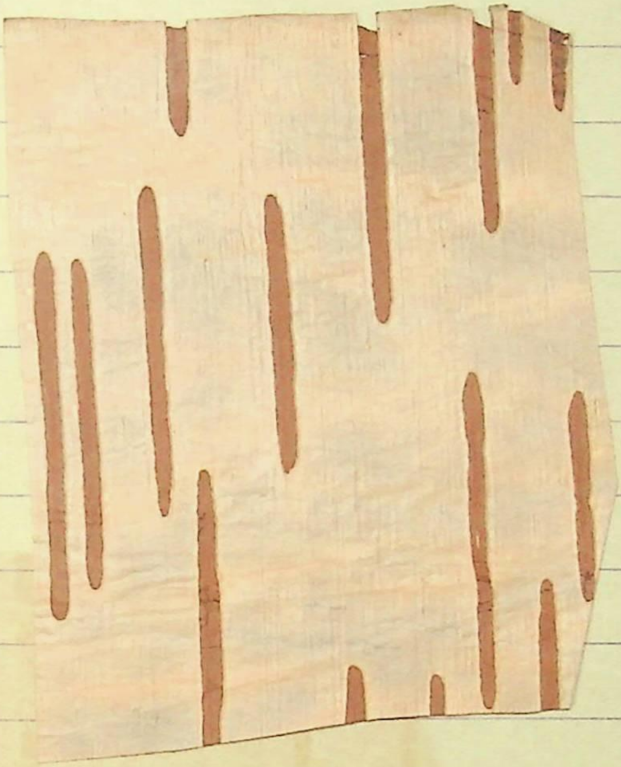

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

AUG. 1982	IMPORTANT MATTERS

11 Wednesday दुग्ध २ - ६ में १०-

शुल्क ५-

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

IMPORTANT MATTERS

AUG. 1982

श्री:

श्री गणेशाय नमः । श्री शुभ संवत् २०१० शाके १८७५ मार्गशीर्षे मासे शुक्ले कृष्ण पक्षे तिथौ ८ नवाम्यां रविवासरे ५८॥४४ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रे तत्र श्री सूर्योदयादिष्टं ३६॥४६॥३० तत्समये कर्क लग्नोदये श्रीमान् सेठ रामप्रसाद जी तत्यात्मज श्रीमान् बाबू द्वारकाप्रसाद जी अग्रवाल गृहे कन्या जाता । उत्तरा फाल्गुनी प्रथम चरणे जन्म । गर्ग गोत्र ।

॥ जन्मांक निदेश ॥

Tuesday 10

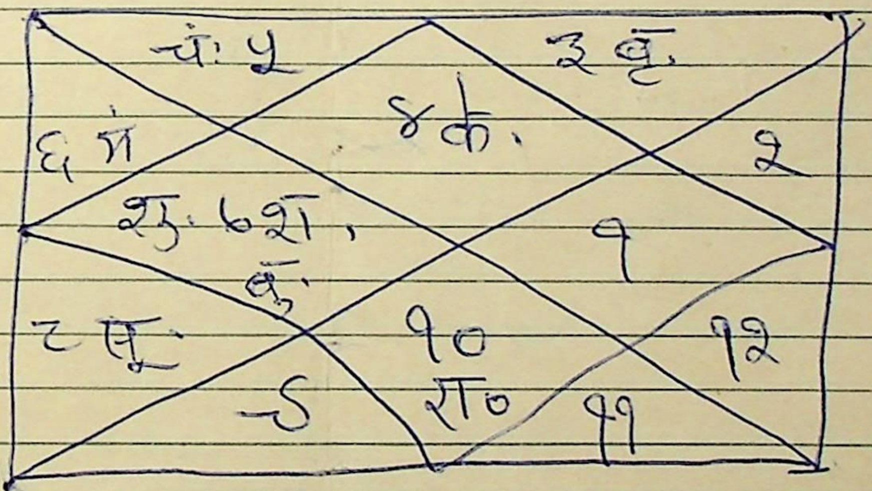

S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14
15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
29 30 31

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

बन्धुक = जवाकुसुम - जपा,

दाडिम = अनार

४	६	२
५	१	३
८	७	९

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सरकार मां

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. Dr. Bhu... Naithani Lucknow. Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ESTIMATE

प्रिय [illegible] जी

सादर प्रणाम

आपका पत्र मिला यहाँ सब ठीक है
मैंने अपने प्रोग्राम के 20-21 ता. तक
आने को लिखा है सो वो आप
आ जाइयेगा, आप का घर है
इसमें तकलीफ की क्या बात है
आने से पहले पत्र लिखने की कृपा
करेंगे. ताकि स्टेशन पर लेने आ
सकें.

बाकी आपकी कृपा है
योग्य सेवा लिखियेगा

आपका [illegible]

[illegible]
[illegible]

With Best Compliments From :-

BATRA BRUSH INDUSTRIES

Manufacturers of : HIGH CLASS PAINTING & ARTIST BRUSHES

Loco Shade, MORADABAD-244001.

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

... मन्त्रे.

श्रीं ह्रीं शतरुद्र द्रौं प्रस्ताद्रीं

कर्णि पिशुन ह्रीं स्वाहा

ऋषि:- सहदेव: गटविश्वाय अनुष्टुप् छन्द इति

श्री सत्यकर्णिक्ष्य पिशुनो महालक्ष्मी च

वाग्भवं बीजमाख्यातं शक्ति: स्या: का...

...रां बीजं कीलकं स्यान्मम शत्रु मुमुच्चरेत्

...कर्णी पदं प्रोच्य स्वाहान्त पदमुद्धरेत्

... विनियोग: ...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...नहीं है। जो तिथि आदि अथवा अन्तमें अथा... ...आरम्भ या समाप्तिमें दूसरी तिथिसे संस्पृष्ट हो वह ...कहलाती है और उसके निर्णयकी आवश्यकता होती है। ...'तिथिवेध' कहा जाता है। यह 'वेध' प्रातः सूर्योदयसे पहिले तथा सायंकालमें ३ मुहूर्त या दो मुहूर्तका माना जाता है। मुहूर्त २ घटिकाका नाम है। अन्य सर्वकार्योंमें स्व-स्व-काल व्यापिनी तिथिका ग्रहण है। एकाहारी व्रतमें मध्याह्न-व्यापिनी तिथि ग्रहण करनी चाहिए। दो दिन हो अथवा तिथि-क्षय हो तो भी पूर्वदिन ही लेना। रात्रिव्रतमें प्रदोषकाल-व्यापिनी ग्रहण की जाती है। (सूर्यास्तके बाद '३ मुहूर्त' प्रदोषकाल कहलाता है)। दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो परतिथि ग्रहण करना। यह 'अतिसंक्षिप्त' निर्णय है। इस सम्बन्धमें कुछ विशेष ज्ञातव्य है यथा—

प्रतिपदा—शुक्लपक्षकी मध्यान्होत्तरकालपर्यन्तकी लेना। कृष्ण पक्षकी पूर्वान्हव्यापिनी श्रेष्ठ है।

द्वितीया—हेमाद्रिके मतसे कृष्णपक्षकी पूर्वाह्णव्यापिनी और शुक्लपक्षकी पराह्णव्यापिनी लेना। माधवाचार्यके मतसे परा ही श्रेष्ठ है।

तृतीया—दोनों ही पक्षोंमें मध्याह्नोत्तरकाल पर्यन्तकी लेना। दो दिन हो तो परदिन ही श्रेष्ठ है। 'गौरी' व्रतमें परा ही लेना।

चतुर्थी—गणेश व्रतमें 'तृतीया विद्धा' पूर्वा लेना अर्था... चन्द्रोदयकालव्यापिनी श्रेष्ठ है। दो दिन हो तो पूर्वा। अ... व्रतोंमें 'परा' लेना।

पञ्चमी—'माधव' के मतसे दोनों पक्षकी पूर्वा ही लेना...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

PHONES { 44292
48655

MANSAROVAR EYE HOSPITAL

VIDHAN SABHA MARG, LUCKNOW-226001

CHIEF MEDICAL OFFICER
Dr. HANS RAJ
M.B.B.S., L.O.

SURGEON
Dr. SURESH HANSRAJ
M. B. B. S.
M. S. (OPHTH.)
D.O.R.C.P. & S. (LONDON)

For Sri Vidya

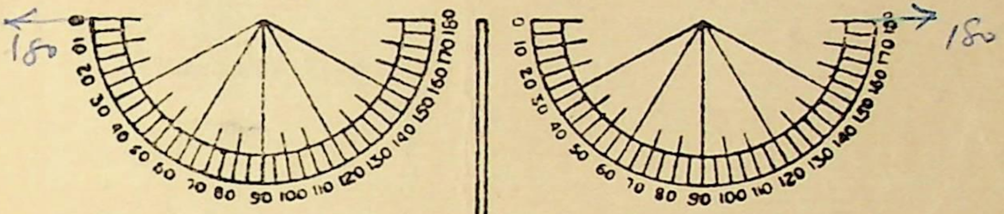

	R SPH.	R CYL	R AXIS.	L SPH.	L CYL	L AXIS
DISTANCE	+1.0	+0.75	180	+1.50	+0.75	180
READING	+3.50	+0.75	180	+4.0	+0.75	180

Vision 6/36 p Remarks 6/6

P. D.

Lenses Bifocal in crystal glass

Date 11.1.83

S. Hansraj

Please bring this on future visits.
कृपया दोबारा आते समय साथ लावें ।

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस्य श्री बटुक भैर...

बृहदारण्यक ऋषिः अनुष्टु...

बं बीजम् ह्रीं शक्तिः प्रण...

प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः प्रयड्...

1- ॐ भैरवाय नमः	27- ॐ श...
2- ॐ भूतनाथाय नमः	28- ॐ ख...
3- ॐ भूतात्मने नमः	29- ॐ का...
4- ॐ भूतभावनाय नमः	30- ॐ चू...
5- ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः	31- ॐ त्र्यम...
6- ॐ क्षेत्रपालाय नमः	32- ॐ नैर...
7- ॐ क्षेत्रदाय नमः	33- ॐ भू...
8- ॐ क्षत्रियाय नमः	34- ॐ पि...
9- ॐ विराटाय नमः	35- ॐ च...
10- ॐ स्मशानवासिने नमः	36- ॐ च...
11- ॐ मांसाशिने नमः	37- ॐ च...
	38- ॐ प्री...

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...ष्टोत्तरशत नाम मंत्रस्य
...प् छन्दः श्री वटुक भैरवो देवता
...वः कीलकम् श्री वटुक भैरव
...नाम मंत्रेण हवने विनियोगः ॥

...ल पाणयेनमः	58- ॐ भूताध्यक्षाय नमः
...ड पाणयेनमः	59- ॐ पशु पतये नमः
...पालिनेनमः	60 ॐ भिक्षुकाय नमः
...त्र लोचनायनमः	61- ॐ परिचारकायनमः
...रवे नमः	62- ॐ धूर्ताय नमः
...वीनाथाय नमः	63- ॐ दिगंबराय नमः
...त पाय नमः	64- ॐ शूराय नमः
...गिरि पतये नमः	65- ॐ हरिणे नमः
...दाय नमः	66- ॐ पांडुलोचनाय नमः
...हारिणे नमः	67- ॐ प्रशांताय नमः
...नवते नमः	68- ॐ शांतिदाय नमः
...र्पनाय नमः	69- ॐ सिद्धाय नमः
	70- ॐ शंकरप्रियबांधवाय नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

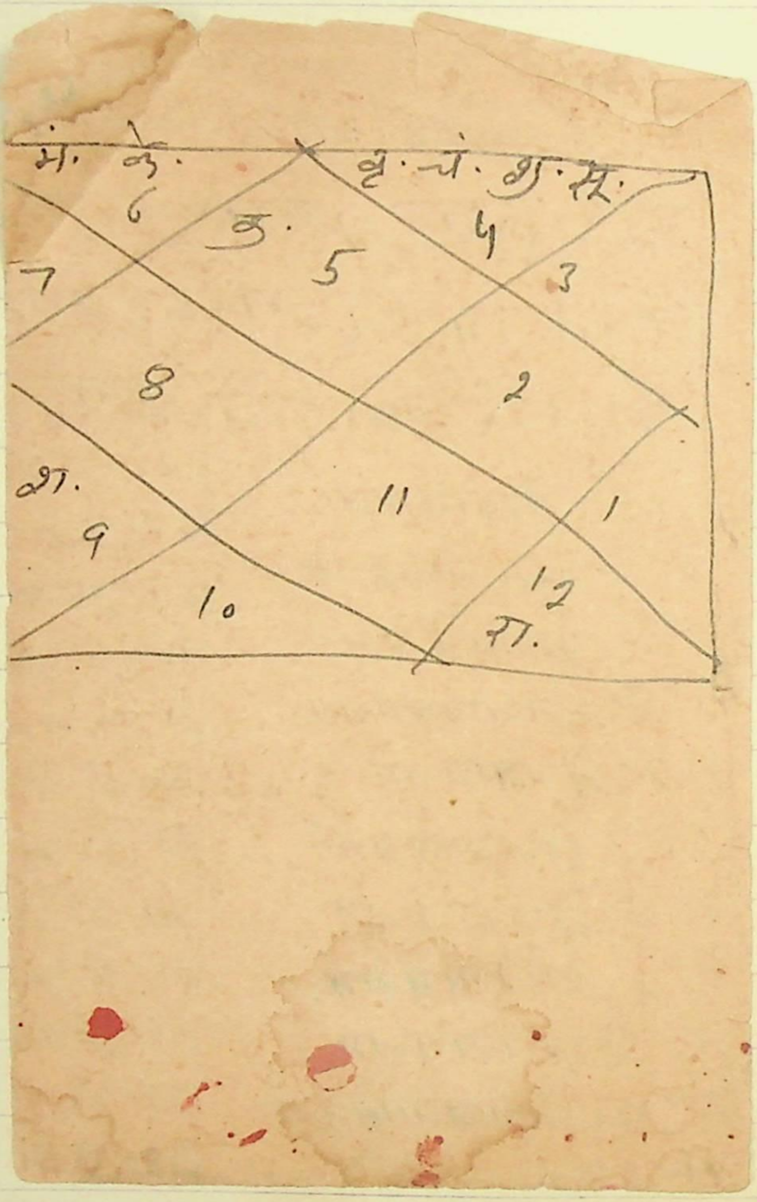

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९१- ॐ शुद्धनीलांजन प्रख्यायनम:
९२- ॐ दैत्यघ्ने नम:
९३- ॐ मुंड भूषितायनम:
९४ ॐ वलिभुजेनम:
९५- ॐ वलिभुङ्नाथायनम:
९६- ॐ बालायनम:
९७- ॐ बाल पराक्रमायनम:
९८- ॐ सर्वापत्तारणायनम:

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- ॐ दुर्गाय नमः

0 - ॐ दुष्ट भूत निषेविताय नमः

101 - ॐ कामिने नमः

102 - ॐ कलानिधिने नमः

103 - ॐ कान्ताय नमः

104 - ॐ कामिनी वशकृद्वशिने नम

105 - ॐ सर्वसिद्धि प्रदाय नमः

106 - ॐ वैद्याय नमः

107 - ॐ प्रभवे नमः

108 - ॐ विष्णवे नमः

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Luckn

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

12- ॐ खर्पराशिने नमः

13- ॐ स्मरांतकाय नमः

14- ॐ रक्तपाय नमः

15- ॐ पानपाय नमः

16- ॐ सिद्धाय नमः

17- ॐ सिद्धिदाय नमः

18- ॐ सिद्धि सेवितायनमः

19- ॐ कंकालाय नमः

20- ॐ कालक्षमनायनमः

21- ॐ कलाकाष्ठायनमः

22- ॐ तनवे नमः

23- ॐ कवये नमः

24- ॐ त्रिनेत्रायनमः

25- ॐ बहुनेत्रायनमः

26- ॐ पिंगललोचनायनमः

39- ॐ ना

40- ॐ नाग

41- ॐ व्यो

42 ॐ क

43- ॐ का

44- ॐ कप

45- ॐ क

46- ॐ क

47- ॐ त्रि

48- ॐ ज्व

49- ॐ त्रि

50- ॐ त्रि

51- ॐ त्रि

52- ॐ डि

53- ॐ श

54- ॐ शं

55- ॐ व

5

5

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

...हाराय नमः
...पाशाय नमः
...मन्हेशाय नमः
...ाल भूते नमः
...नाय नमः:
...ाल मालिने नमः
...नीयाय नमः:
...ानिध्यये नमः:
...लोचनाय नमः
...लन्नेत्राय नमः:
...शिरवेने नमः:
...लोकपाय नमः:
...नेत्रतनयाय नमः:
...ंभाय नमः
...ंताय नमः:
...जनप्रियाय नमः:
...वाय नमः:
...वेशाय नमः:
...ांगधारकाय नमः:

71- ॐ ...भूताय नमः
72- ॐ निधीशाय नमः:
73- ॐ ज्ञान चक्षुषे नमः:
74- ॐ तपोमयाय नमः:
75- ॐ जगदाधाराय नमः:
76- ॐ शिखाधाराय नमः:
77- ॐ सर्पयुक्ताय नमः:
78- ॐ शिखिसखाय नमः:
79- ॐ भूधराय नमः:
80- ॐ भूधराधीशाय नमः:
81- ॐ भूपतये नमः:
82- ॐ भूधरात्मजाय नमः:
83- ॐ कंकालधारिणे नमः:
84- ॐ मुंडिने नमः:
85- ॐ व्यालयज्ञोपवीतिने नमः:
86- ॐ जृम्भणाय नमः:
87- ॐ मोहनाय नमः:
88- ॐ स्तंभिने नमः:
89- ॐ मारणाय नमः:
90- ॐ क्षोभणाय नमः:

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जूठे हाथ से ही जप किया, कोई
[illegible]त नहीं है,
[illegible]लाह से 10000 (दस हजार) जप किया
विधान से सर्वतोभद्र मण्डल पर हवन किय[illegible]

[illegible]डवेलन व सरसों से करने पर [illegible] होता है।
[illegible]र के फुलावों से करने पर इच्छित वस्तु प्राप्त होती है
[illegible] के लिये शक्कर मधु युक्त पायस,
[illegible]स्वला स्त्री के वस्त्र ~~से हवन करने पर~~ को रखी [illegible]
[illegible] मेवों की व शहद को मिलाकर हवन करने से [illegible]
[illegible] होता है, उल्लू के पंखों से हवन करने पर स्त्री [illegible]

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

यहाँ से काटिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

श्री कमला सरकार मौं [redacted]

[redacted] सतगुरु भवन पुराना डाकखाना

[redacted] गणेश गंज

लखनऊ

पिन PIN

OND FOLD

CC-0. Dr. Shailendra Kumar Naithani Lucknow, Collection

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२।८।४५।१०
१।२१।५०।२० -
।१०।५६।४३

२।८।४५।१०
८।३।३४।४८ -
५।१२।२२

३१
२१
१०

६५०
१०६

१०६
५६०
५६